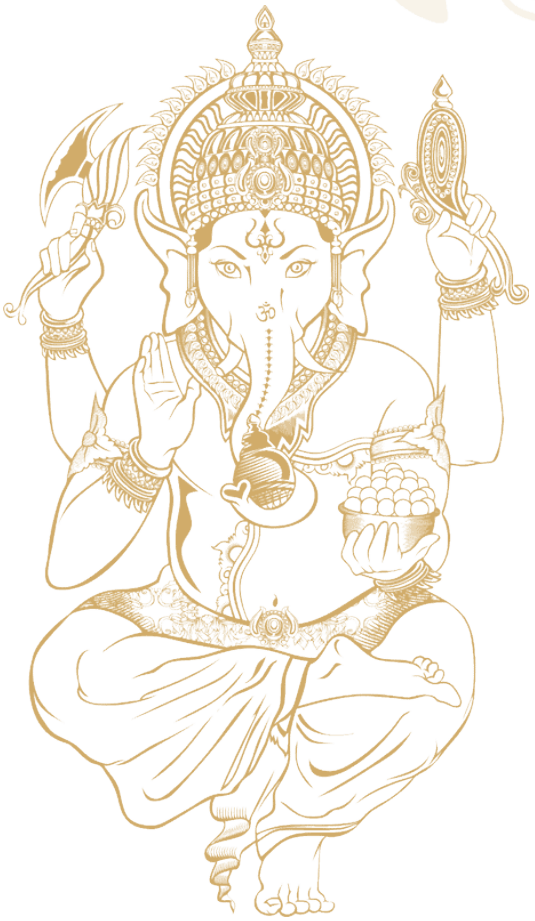

Richa

11 Dec 1983

08:45 AM

Saharanpur

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 119177401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**11/12/1983**
दिन	रविवार
जन्म समय	**08:45:00 घंटे**
इष्ट	04:09:46 घटी
स्थान	**Saharanpur**
देश	India

अक्षांश	29:58:00 उत्तर
रेखांश	77:33:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:19:48 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	08:25:12 घंटे
वेलान्तर	00:07:01 घंटे
साम्पातिक काल	13:42:19 घंटे
सूर्योदय	07:05:05 घंटे
सूर्यास्त	17:20:29 घंटे
दिनमान	10:15:24 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	हेमन्त
सूर्य के अंश	24:52:24 वृश्चिक
लग्न के अंश	16:50:31 धनु

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	धनु - गुरु
राशि-स्वामी	**कुम्भ - शनि**
नक्षत्र-चरण	**शतभिषा - 1**
नक्षत्र स्वामी	राहु
योग	हर्षण
करण	गर
गण	राक्षस
योनि	अश्व
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	अन्त्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	गो-गौतमी
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	धनु

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1905	मार्गशीर्ष	20
पंजाबी	संवत : 2040	मार्गशीर्ष	26
बंगाली	सन् : 1390	मार्गशीर्ष	25
तमिल	संवत : 2040	कार्तिगई	25
केरल	कोल्लम : 1159	वृश्चिकम	25
नेपाली	संवत : 2040	मार्गशीर्ष	26
चैत्रादि	संवत : 2040	मार्गशीर्ष	शुक्ल 7
कार्तिकादि	संवत : 2040	मार्गशीर्ष	शुक्ल 7

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 7
तिथि समाप्ति काल _____: 29:26:12
जन्म तिथि _____: 7
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: शतभिषा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 29:56:31 घंटे
जन्म योग _____: शतभिषा
सूर्योदय कालीन योग ____: हर्षण
योग समाप्ति काल _____: 12:59:26 घंटे
जन्म योग _____: हर्षण
सूर्योदय कालीन करण ____: गर
करण समाप्ति काल _____: 16:10:31 घंटे
जन्म करण _____: गर
भयात _____: 14:25:42
भभोग _____: 67:24:28
भोग्य दशा काल _____: राहु 14 वर्ष 1 मा 24 दि

घात चक्र

मास _____: चैत्र
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: गुरुवार
नक्षत्र _____: आर्द्रा
योग _____: गण्ड
करण _____: किंस्तुघ्न
प्रहर _____: 3
वर्ग _____: मूषक
लग्न _____: मिथुन
सूर्य _____: वृष
चन्द्र _____: मिथुन
मंगल _____: मिथुन
बुध _____: वृष
गुरु _____: कर्क
शुक्र _____: सिंह
शनि _____: मेष
राहु _____: कन्या

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

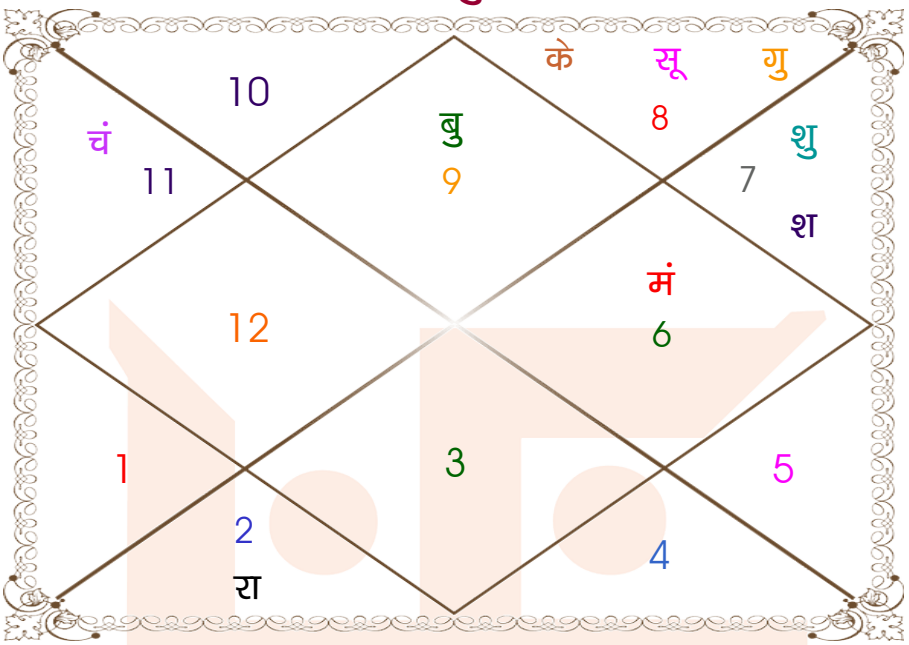

चन्द्र कुंडली

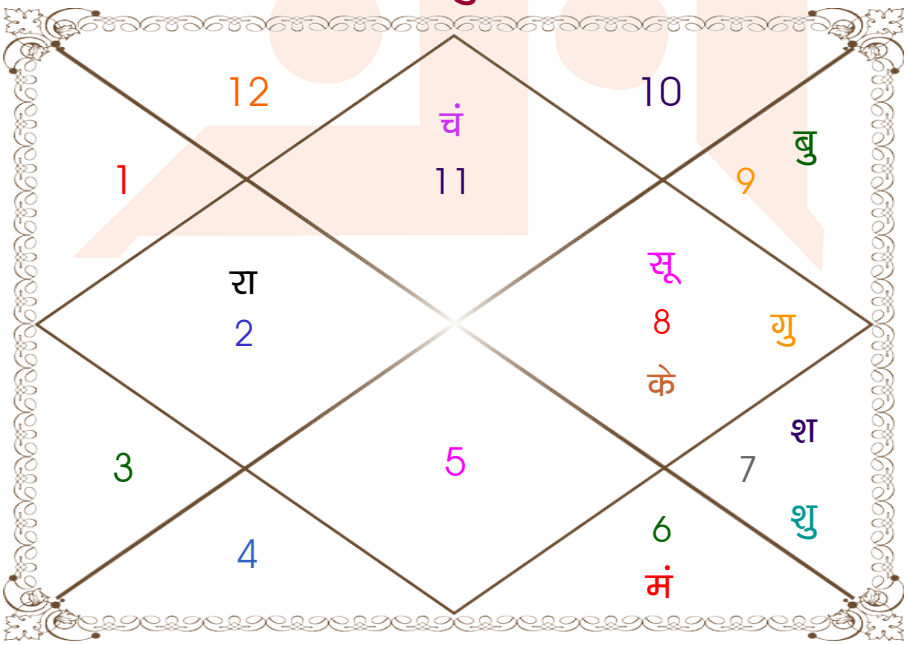

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

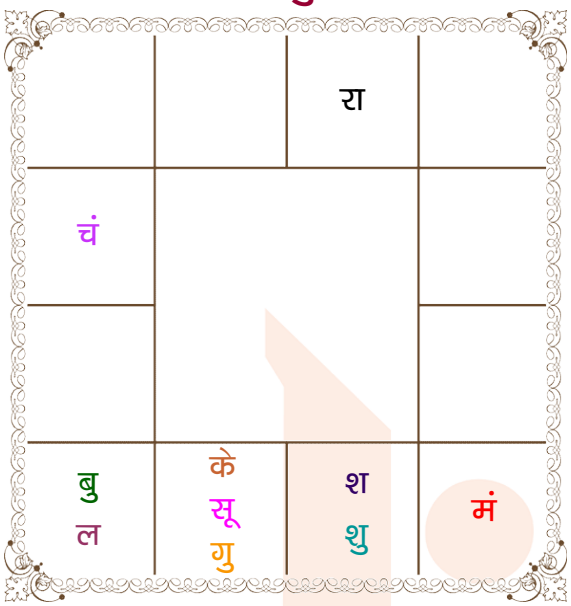

लग्न कुंडली

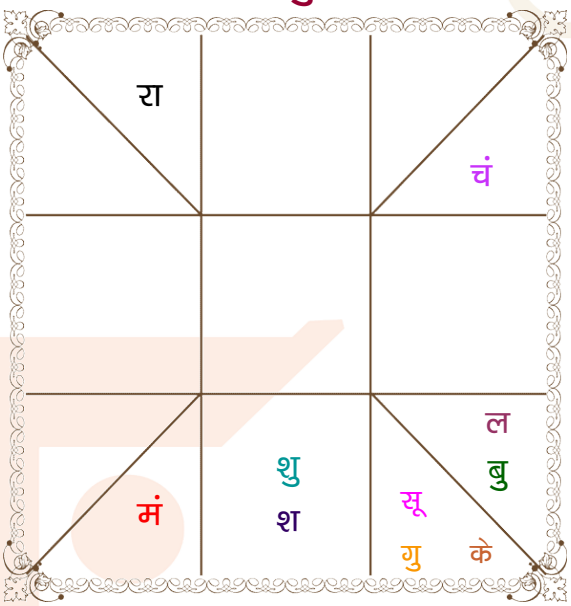

विंशोत्तरी
राहु 14वर्ष 1मा 24दि

राहु

11/12/1983

04/02/2100

राहु	03/02/1998
गुरु	03/02/2014
शनि	03/02/2033
बुध	03/02/2050
केतु	03/02/2057
शुक्र	03/02/2077
सूर्य	04/02/2083
चन्द्र	03/02/2093
मंगल	04/02/2100

योगिनी
धान्या 2वर्ष 4मा 9दि

भ्रामरी

20/04/2022

20/04/2026

भ्रामरी	30/09/2022
भद्रिका	21/04/2023
उल्का	20/12/2023
सिद्धा	29/09/2024
संकटा	20/08/2025
मंगला	29/09/2025
पिंगला	20/12/2025
धान्या	20/04/2026

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			धनु	16:50:31	351:30:34	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	चंद्र	---
सूर्य			वृश्चि	24:52:24	01:01:00	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	मित्र राशि
चंद्र			कुंभ	09:31:06	11:51:32	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	सम राशि
मंगल			कन्या	19:30:42	00:33:59	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	शत्रु राशि
बुध			धनु	15:08:11	01:11:41	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	सम राशि
गुरु		अ	वृश्चि	27:33:25	00:13:37	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	गुरु	मित्र राशि
शुक्र			तुला	11:32:21	01:09:52	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	मूलत्रिकोण
शनि			तुला	18:19:35	00:06:17	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	चंद्र	उच्च राशि
राहु	व		वृष	22:16:10	00:00:03	रोहिणी	4	4	शुक्र	चंद्र	शुक्र	मित्र राशि
केतु	व		वृश्चि	22:16:10	00:00:03	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	चंद्र	मित्र राशि
हर्ष			वृश्चि	16:16:54	00:03:40	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	गुरु	---
नेप			धनु	04:55:56	00:02:14	मूल	2	19	गुरु	केतु	मंगल	---
प्लूटो			तुला	07:37:52	00:01:48	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	राहु	---
दशम भाव			तुला	03:55:21	--	चित्रा	--	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:37:41

लग्न-चलित

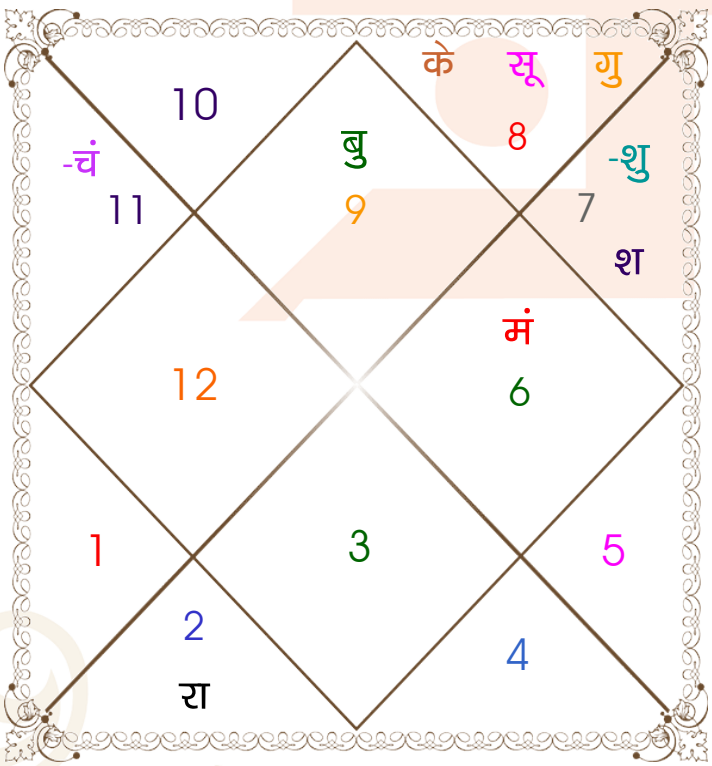

चन्द्र कुंडली

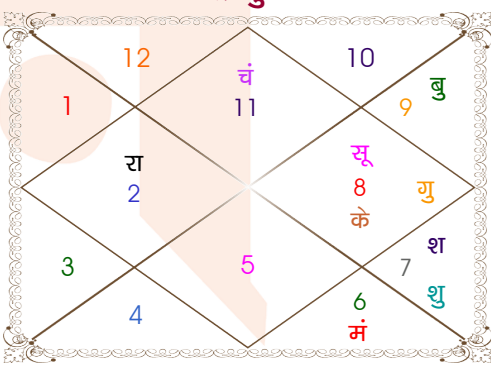

नवमांश कुंडली

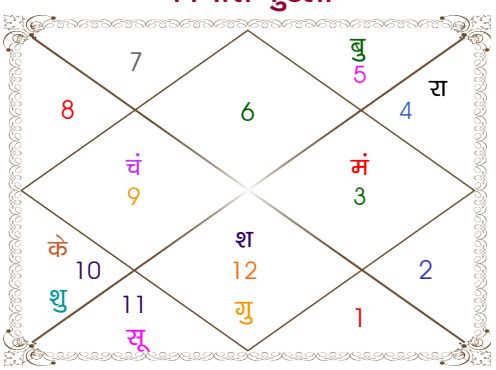

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	धनु	04:41:20	धनु	16:50:31
2	मकर	04:41:20	मकर	22:32:08
3	कुम्भ	10:22:56	कुम्भ	28:13:44
4	मीन	16:04:33	मेष	03:55:21
5	मेष	16:04:33	मेष	28:13:44
6	वृष	10:22:56	वृष	22:32:08
7	मिथुन	04:41:20	मिथुन	16:50:31
8	कर्क	04:41:20	कर्क	22:32:08
9	सिंह	10:22:56	सिंह	28:13:44
10	कन्या	16:04:33	तुला	03:55:21
11	तुला	16:04:33	तुला	28:13:44
12	वृश्चिक	10:22:56	वृश्चिक	22:32:08

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	16:50:31
2	मकर	23:14:35
3	मीन	01:06:52
4	मेष	03:55:21
5	वृष	00:32:34
6	वृष	23:40:46
7	मिथुन	16:50:31
8	कर्क	23:14:35
9	कन्या	01:06:52
10	तुला	03:55:21
11	वृश्चिक	00:32:34
12	वृश्चिक	23:40:46

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा

चलित कुंडली

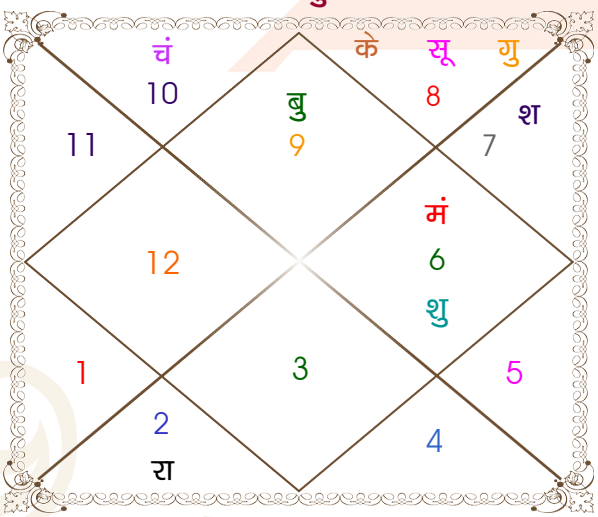

भाव कुंडली

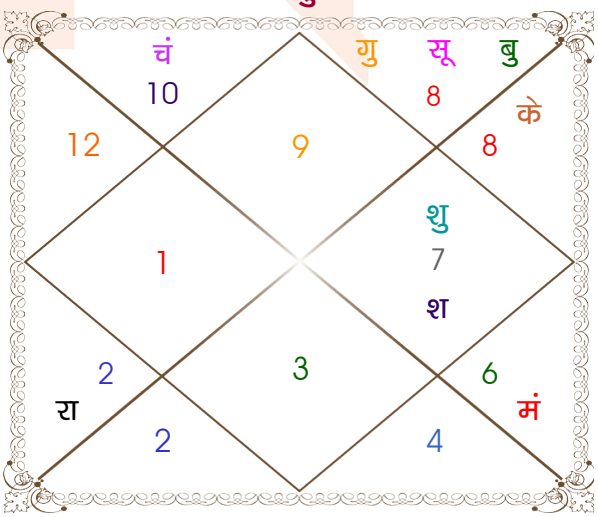

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	अमात्य	पितृ	बाल	मुदित	शयन	3.32	25 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	कुमार	शक्त	शयन	2.41	16 %
मंगल	भ्रातृ	भ्रातृ	कुमार	खल	सभा	1.43	58 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	युवा	निपीदित	गमन	3.00	53 %
गुरु	आत्मा	धन	बाल	विकल	सभा	0.00	18 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	कुमार	स्वस्थ	शयन	1.29	35 %
शनि	मातृ	आयु	वृद्ध	दीप्त	सभा	14.86	58 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	मुदित	भोजन	0.00	2 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	मुदित	सभा	0.00	2 %
कुल						26.32	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा

चलित कुंडली

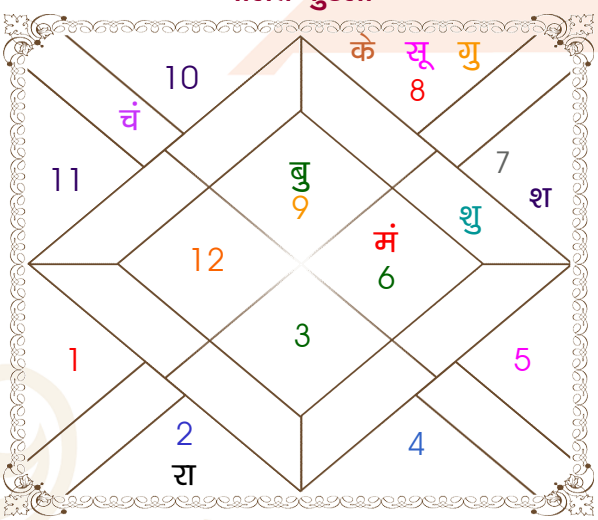

लग्न-चलित

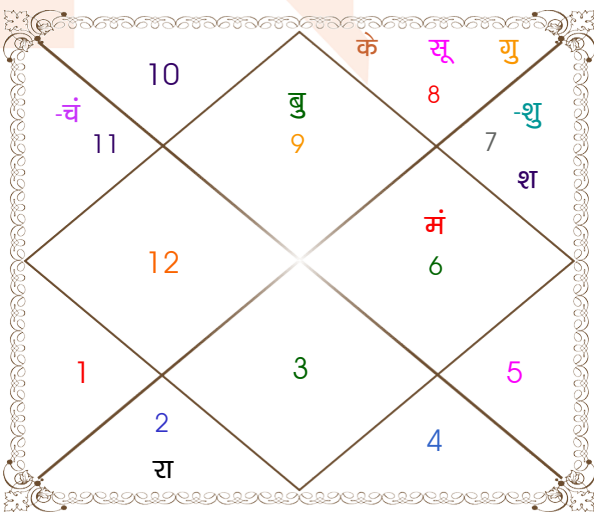

सुदर्शन चक्र

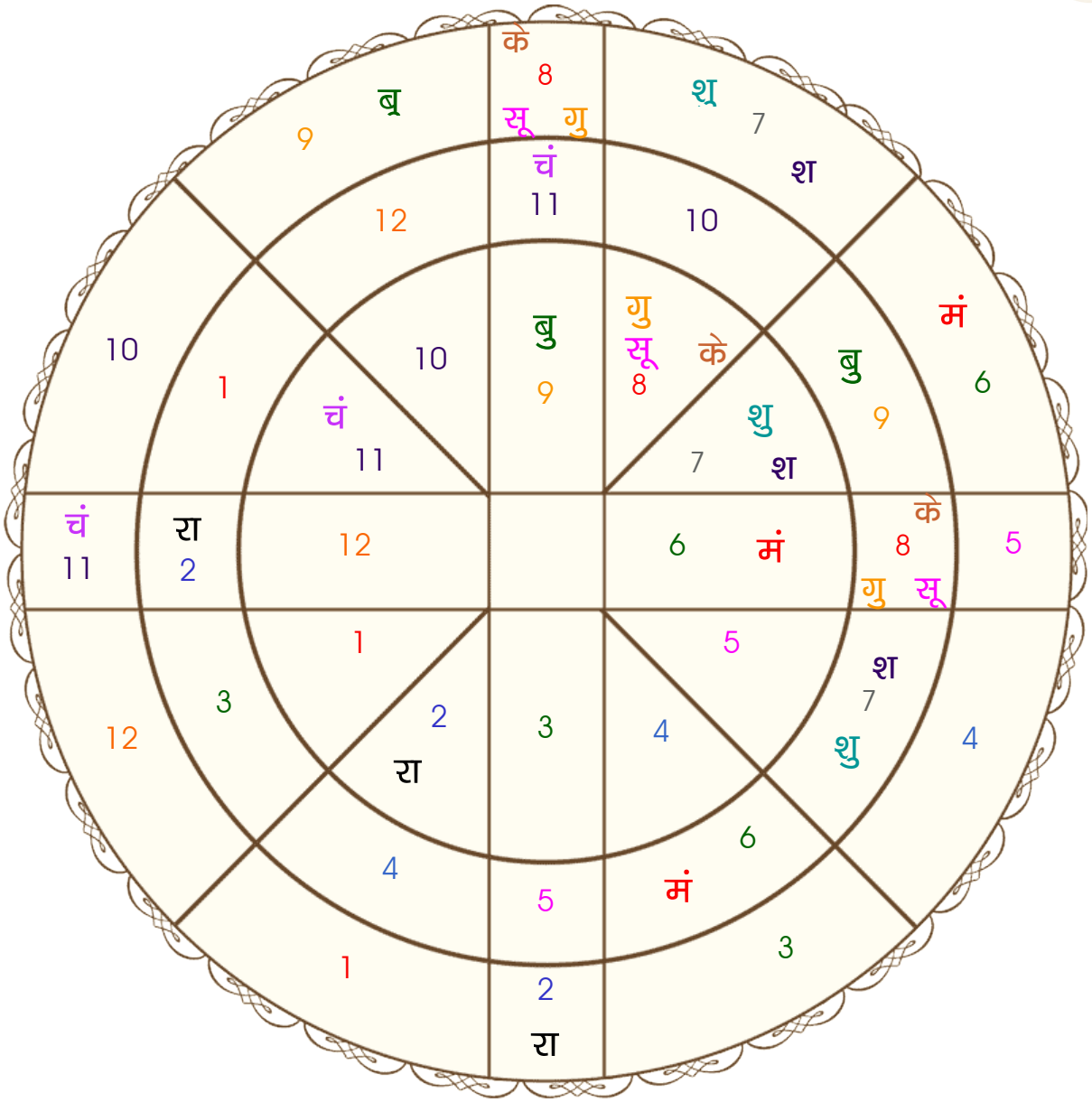

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

भोग्य दशा काल : राहु 14 वर्ष 0 मास 6 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		वृश्चि	24:58:18	मंगल	बुध	राहु	शनि
चंद्र		कुंभ	09:37:00	शनि	राहु	गुरु	शुक्र
मंगल		कन्या	19:36:36	बुध	चंद्र	बुध	शनि
बुध		धनु	15:14:05	गुरु	शुक्र	शुक्र	बुध
गुरु		वृश्चि	27:39:19	मंगल	बुध	गुरु	राहु
शुक्र		तुला	11:38:14	शुक्र	राहु	शनि	सूर्य
शनि		तुला	18:25:29	शुक्र	राहु	चंद्र	राहु
राहु	व	वृष	22:22:04	शुक्र	चंद्र	शुक्र	बुध
केतु	व	वृश्चि	22:22:04	मंगल	बुध	चंद्र	मंगल
हर्ष		वृश्चि	16:22:47	मंगल	शनि	गुरु	मंगल
नेप		धनु	05:01:49	गुरु	केतु	मंगल	गुरु
प्लूटो		तुला	07:43:46	शुक्र	राहु	राहु	बुध

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	धनु	16:56:25	गुरु	शुक्र	चंद्र	बुध
2	मक	23:20:28	शनि	मंगल	मंगल	मंगल
3	मीन	01:12:46	गुरु	गुरु	मंगल	शुक्र
4	मेष	04:01:14	मंगल	केतु	चंद्र	गुरु
5	वृष	00:38:28	शुक्र	सूर्य	राहु	शुक्र
6	वृष	23:46:40	शुक्र	मंगल	मंगल	बुध
7	मिथु	16:56:25	बुध	राहु	शुक्र	शनि
8	कर्क	23:20:28	चंद्र	बुध	मंगल	मंगल
9	कन्या	01:12:46	बुध	सूर्य	राहु	मंगल
10	तुला	04:01:14	शुक्र	मंगल	शुक्र	गुरु
11	वृश्चि	00:38:28	मंगल	गुरु	मंगल	राहु
12	वृश्चि	23:46:40	मंगल	बुध	मंगल	बुध

के.पी. अयनांश : 23:31:47

फॉरच्युना : मीन 01:35:07

लग्न कुंडली

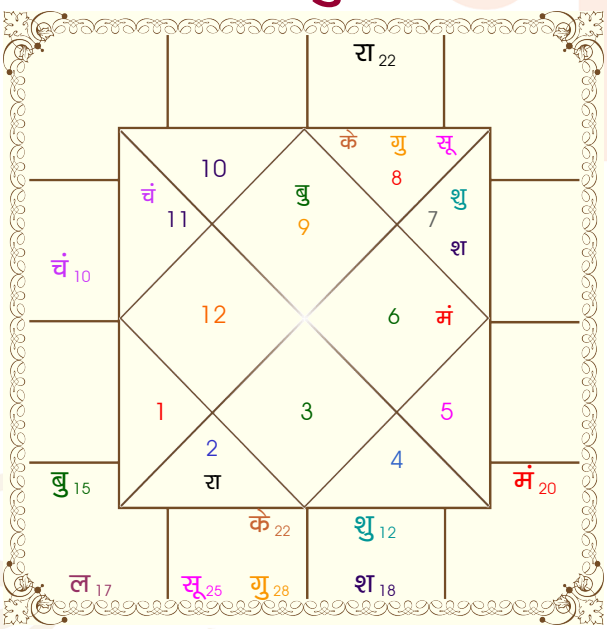

भाव कुंडली

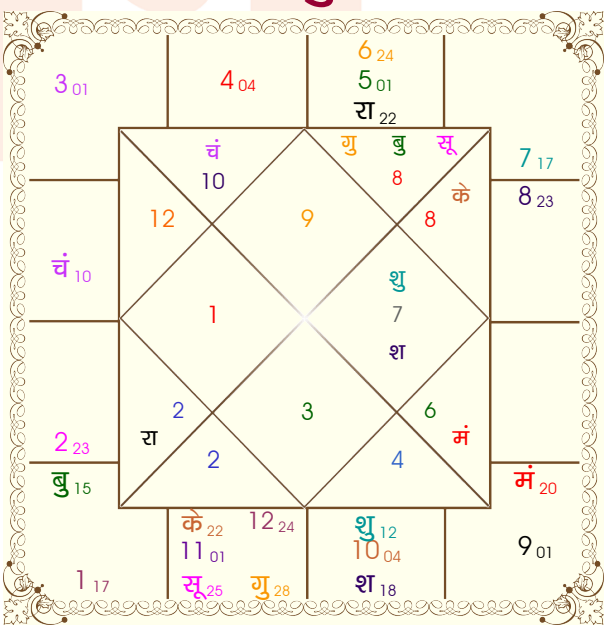

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	गुरु-
2	चंद्र, मंगल, शनि- राहु,
3	गुरु-
4	मंगल-
5	चंद्र, बुध- शुक्र+ शनि, राहु,
6	बुध- शुक्र-
7	सूर्य- बुध- गुरु- केतु-
8	चंद्र- मंगल- राहु-
9	सूर्य- मंगल, बुध- गुरु- केतु-
10	बुध+ शुक्र, शनि,
11	मंगल- केतु,
12	सूर्य+ मंगल- बुध, गुरु+ केतु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	7- 9- 12+
चंद्र	2, 5, 8-
मंगल	2, 4- 8- 9, 11- 12-
बुध	5- 6- 7- 9- 10+ 12,
गुरु	1- 3- 7- 9- 12+
शुक्र	5+ 6- 10,
शनि	2- 5, 10,
राहु	2, 5, 8-
केतु	7- 9- 11, 12,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शुक्र
लग्न राशि स्वामी	गुरु
राशि नक्षत्र स्वामी	राहु
राशि स्वामी	शनि
वार स्वामी	सूर्य
लग्न अन्तर स्वामी	चन्द्र
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	--	गु
2	मं रा	चं	--	श
3	--	--	--	गु
4	--	--	--	मं
5	चं शु श	रा	बु	शु
6	--	--	बु	शु
7	--	--	सू गु के	बु
8	--	--	मं रा	चं
9	--	मं	सू गु के	बु
10	बु	शु श	बु	शु
11	--	के	--	मं
12	सू गु के	सू बु गु	--	मं

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	---	5,9	वृश्चिक	12
चंद्र	8	---	कुम्भ	2
मंगल	4,11,12	2,6,10	कन्या	9
बुध	7,9	8,12	धनु	12
गुरु	1,3	3,11	वृश्चिक	12
शुक्र	5,6,10	1	तुला	10
शनि	2	---	तुला	10
राहु	---	7	वृष	5
केतु	---	4	वृश्चिक	11

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	7,9	8,12	12	---	7	5
चंद्र	---	7	5	1,3	3,11	12
मंगल	8	---	2	7,9	8,12	12
बुध	5,6,10	1	10	5,6,10	1	10
गुरु	7,9	8,12	12	1,3	3,11	12
शुक्र	---	7	5	2	---	10
शनि	---	7	5	8	---	2
राहु	8	---	2	5,6,10	1	10
केतु	7,9	8,12	12	8	---	2

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	234.87	309.52	169.51	255.14	237.56	191.54	198.33	52.27	232.27	226.28	244.93	187.63
सूर्य	--	--	--	--	युति	--	--	सप्त	युति	युति	युति	--
234.87	0.00	0.00	0.00	0.00	9.61	0.00	0.00	9.63	9.63	6.22	4.95	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
309.52	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	तृती	--	--	4था	--	--	--	--	तृती	तृती	4था	--
169.51	0.50	0.00	0.00	8.97	0.00	0.00	0.00	0.00	2.25	1.99	0.44	0.00
बुध	--	तृती	--	--	--	--	--	--	--	--	युति	--
255.14	0.00	0.30	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.81	0.00
गुरु	युति	पंचा	--	--	--	--	--	सप्त	युति	युति	युति	--
237.56	9.61	1.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.51	8.51	3.80	7.16	0.00
शुक्र	--	पंच	--	तृती	--	--	युति	--	नवां	--	--	युति
191.54	0.00	2.59	0.00	1.76	0.00	0.00	7.58	0.00	0.41	0.00	0.00	9.17
शनि	--	--	--	3रा	नवां	युति	--	--	--	--	3रा	युति
198.33	0.00	0.00	0.00	9.45	0.35	7.58	0.00	0.00	0.00	0.00	1.67	4.36
राहु	सप्त	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	सप्त	सप्त	सप्त	अष्टां
52.27	9.63	0.00	2.25	0.00	8.51	0.00	0.00	0.00	10.00	8.10	2.42	0.84
केतु	युति	--	--	--	युति	--	--	सप्त	--	युति	युति	--
232.27	9.63	0.00	0.00	0.00	8.51	0.00	0.00	10.00	0.00	8.10	2.42	0.00
हर्ष	युति	--	--	--	युति	--	--	सप्त	युति	--	--	--
226.28	6.22	0.00	0.00	0.00	3.80	0.00	0.00	8.10	8.10	0.00	0.00	0.00
नेप	युति	तृती	--	युति	युति	--	--	सप्त	युति	--	--	--
244.93	4.95	1.09	0.00	4.81	7.16	0.00	0.00	2.42	2.42	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	पंच	--	--	--	युति	युति	--	अष्ट	--	तृती	--
187.63	0.00	2.64	0.00	0.00	0.00	9.17	4.36	0.00	0.84	0.00	2.28	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	256.84	292.54	328.23	3.92	28.23	52.54	76.84	112.54	148.23	183.92	208.23	232.54
सूर्य	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
234.87	0.00	2.46	1.91	0.00	0.00	9.70	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.70
चंद्र	--	--	--	तृती	--	--	--	--	--	--	--	--
309.52	0.00	0.00	0.00	0.32	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	4था	पंच	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	--	तृती
169.51	9.61	2.11	0.00	0.62	6.11	0.00	0.00	0.00	0.00	0.62	0.00	2.11
बुध	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
255.14	9.84	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.84	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	तृती	चतु	5वां	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति
237.56	0.00	0.76	2.95	7.86	0.00	8.65	0.00	8.65	0.00	0.00	0.00	8.65
शुक्र	तृती	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	नवां
191.54	0.54	0.00	0.00	6.98	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.98	0.00	0.01
शनि	3रा	चतु	--	सप्त	सप्त	--	--	10वा	--	युति	युति	--
198.33	9.88	1.36	0.00	0.62	5.09	0.00	0.00	9.04	0.00	0.62	5.09	0.00
राहु	--	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	--	--	सप्त
52.27	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.03	0.00	0.00	10.00
केतु	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
232.27	0.00	2.99	0.03	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00
हर्ष	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
226.28	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.93	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.93
नेप	युति	--	--	पंच	--	सप्त	सप्त	--	--	--	--	युति
244.93	3.18	0.00	0.00	2.90	0.00	2.69	3.18	0.00	0.00	0.00	0.00	2.69
प्लूटो	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
187.63	0.00	0.00	0.00	9.26	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.26	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	256.84	293.24	331.11	3.92	30.54	53.68	76.84	113.24	151.11	183.92	210.54	233.68
सूर्य	--	तृती	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
234.87	0.00	2.73	0.00	0.00	0.00	9.92	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.92
चंद्र	--	--	--	तृती	--	--	--	--	--	--	--	--
309.52	0.00	0.00	0.00	0.32	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	4था	पंच	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	--	तृती
169.51	9.61	1.68	0.00	0.62	4.04	0.00	0.00	0.00	0.00	0.62	0.00	1.38
बुध	युति	--	--	--	अष्टां	--	सप्त	--	--	--	--	--
255.14	9.84	0.00	0.00	0.00	0.80	0.00	9.84	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	तृती	चतु	5वां	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति
237.56	0.00	1.28	1.79	7.86	0.00	9.19	0.00	9.00	0.00	0.00	0.00	9.19
शुक्र	तृती	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
191.54	0.54	0.00	0.00	6.98	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.98	0.00	0.00
शनि	3रा	चतु	--	सप्त	सप्त	--	--	10वा	--	युति	युति	--
198.33	9.88	0.84	0.00	0.62	2.87	0.00	0.00	8.70	0.00	0.62	2.87	0.00
राहु	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त
52.27	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.89	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.89
केतु	--	तृती	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
232.27	0.00	2.90	0.00	0.00	0.00	9.89	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.89
हर्ष	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
226.28	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.15	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.15
नेप	युति	--	चतु	पंच	--	सप्त	सप्त	--	--	--	--	युति
244.93	3.18	0.00	1.62	2.90	0.00	3.82	3.18	0.00	0.00	0.00	0.00	3.82
प्लूटो	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
187.63	0.00	0.00	0.00	9.26	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.26	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

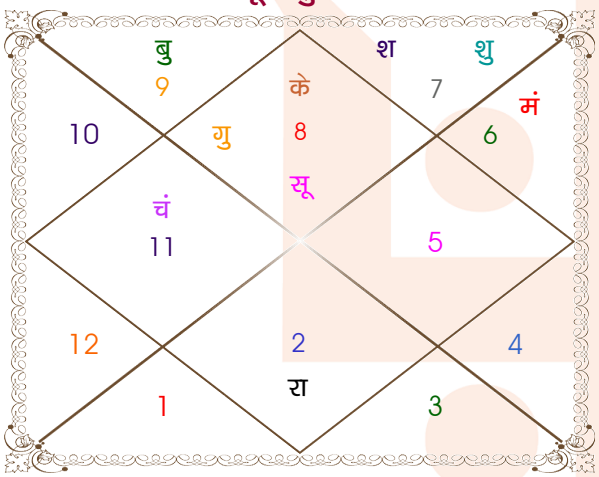

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

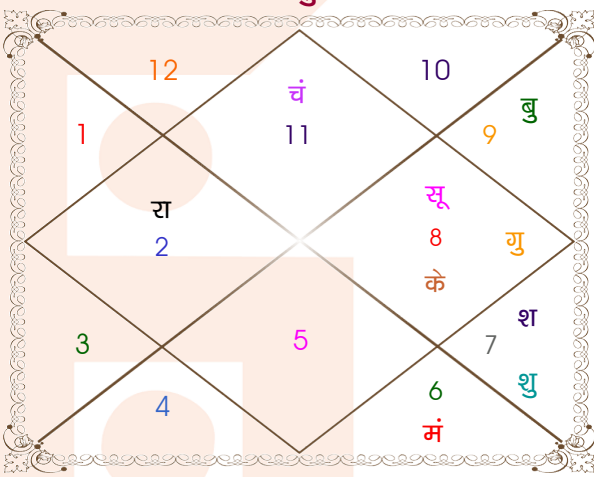

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

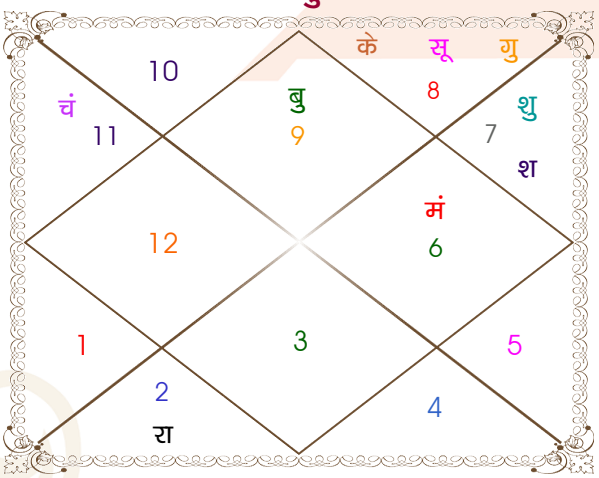

देह विचारः

होरा कुंडली

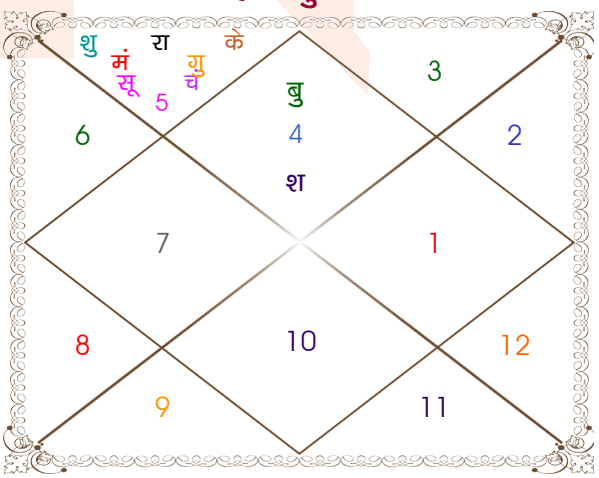

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

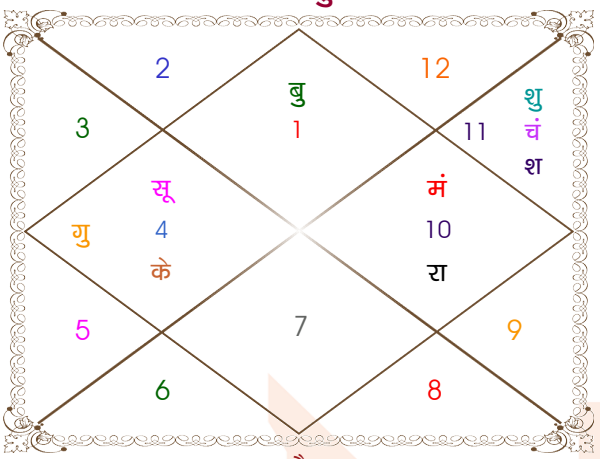

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

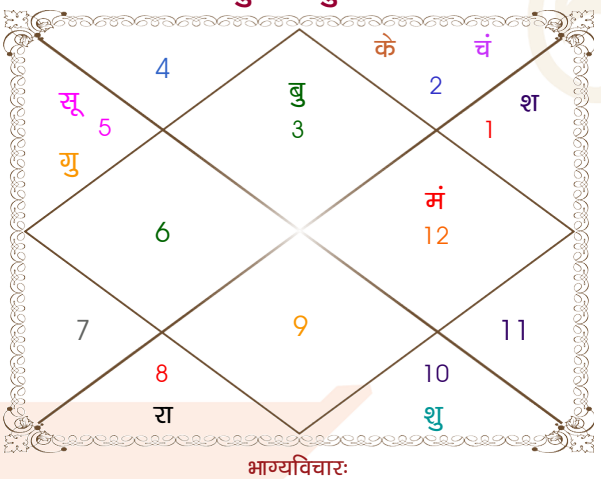

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

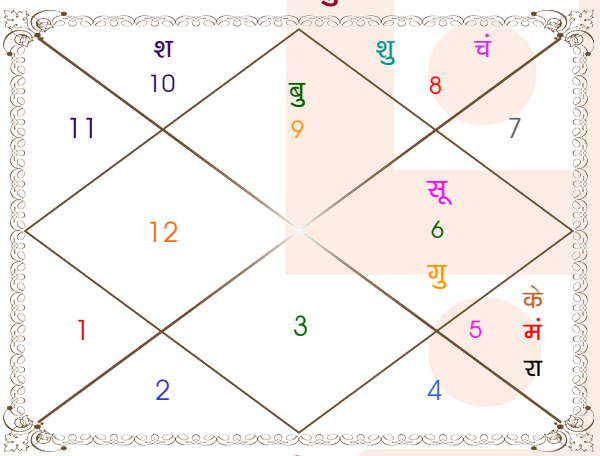

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

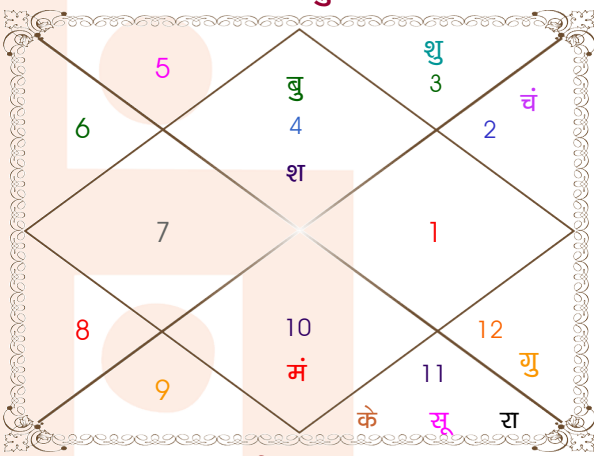

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

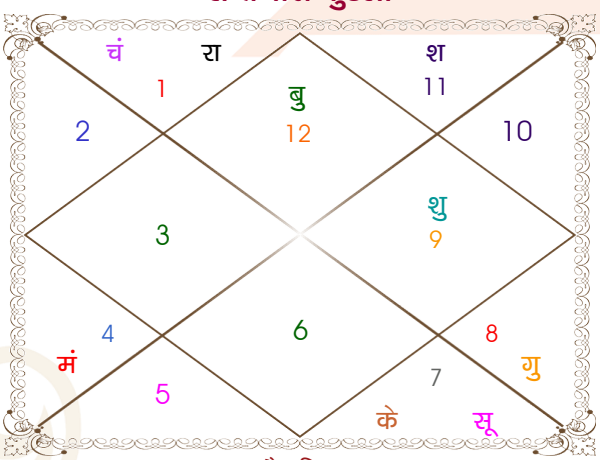

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

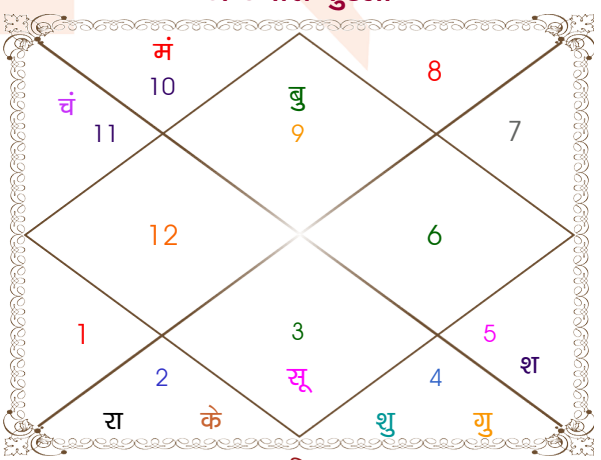

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

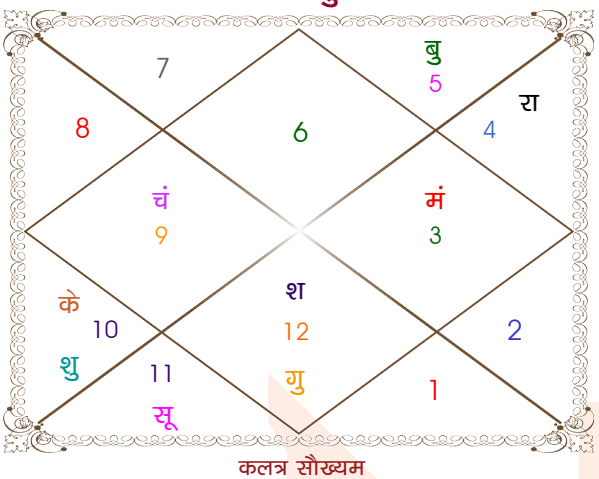

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

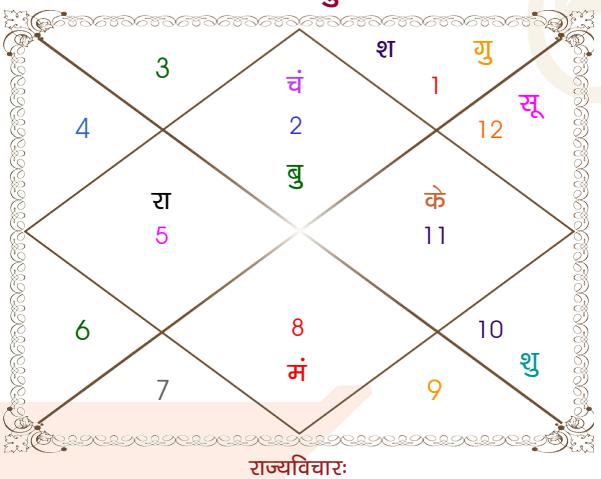

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

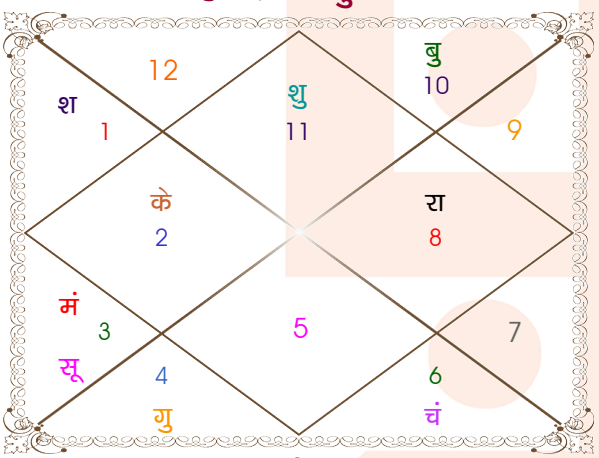

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

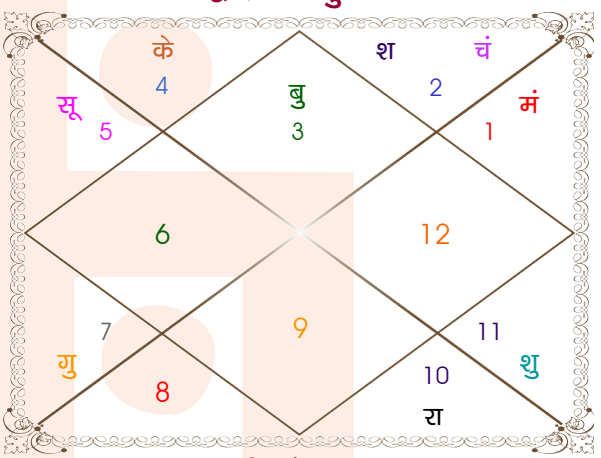

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

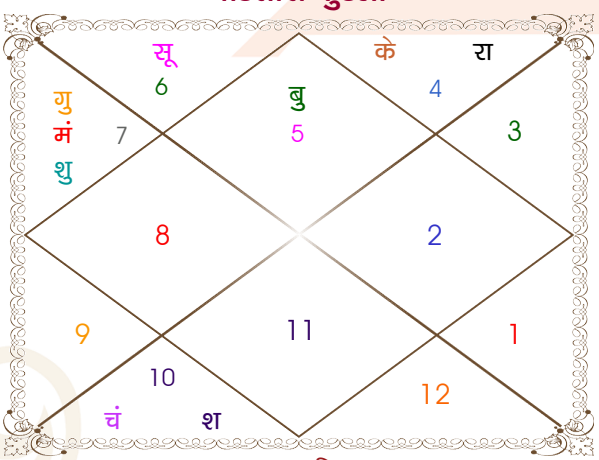

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

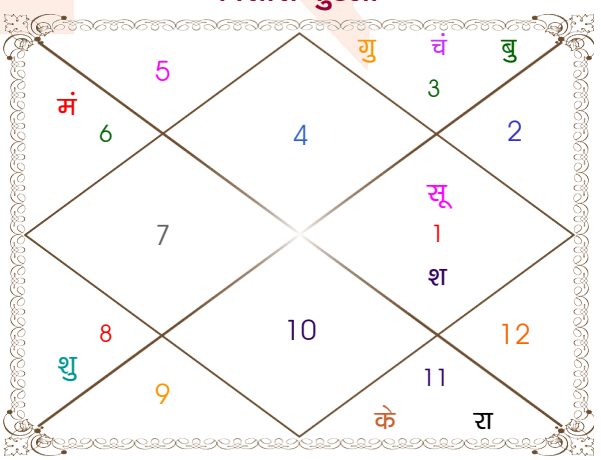

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

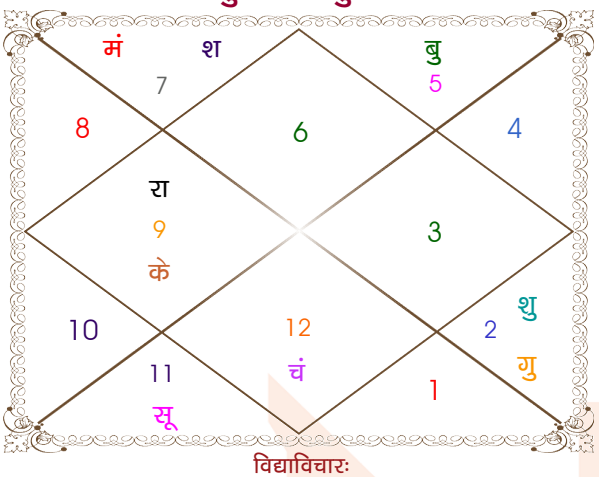

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

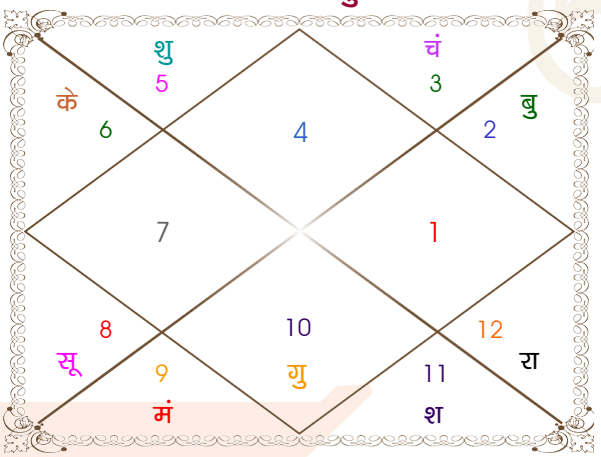

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

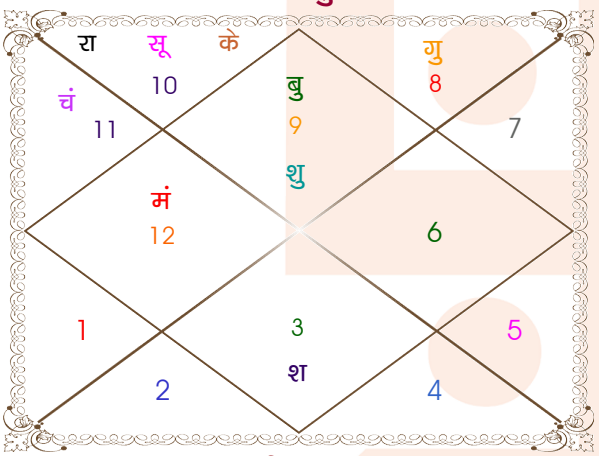

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

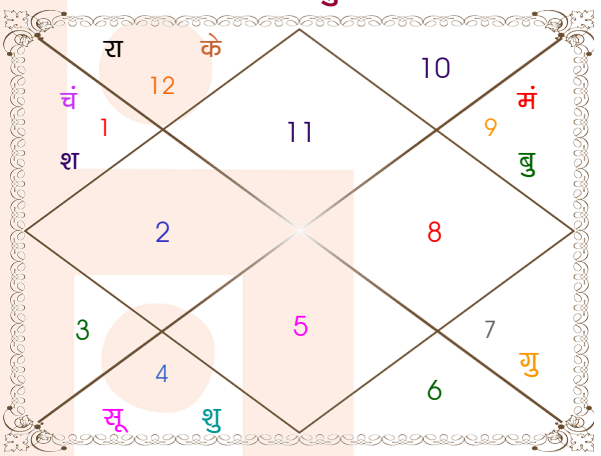

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

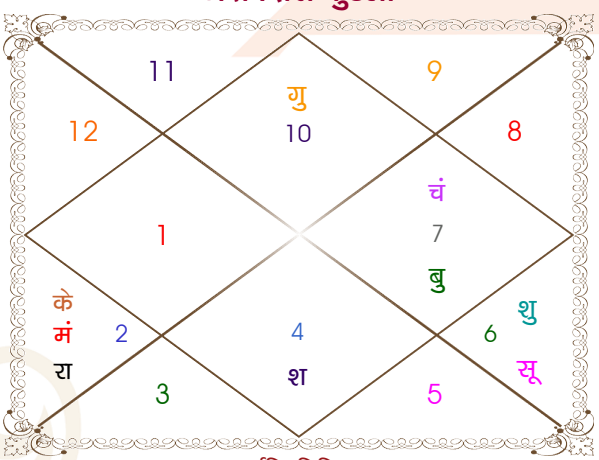

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

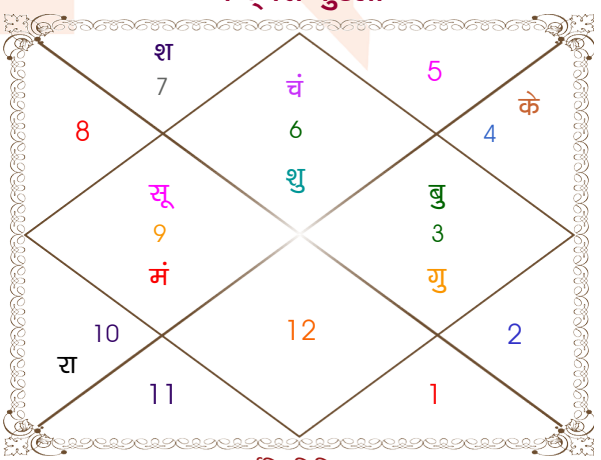

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	धनु	वृश्चि	कुंभ	कन्या	धनु	वृश्चि	तुला	तुला	वृष	वृश्चि
होरा	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	मेष	कर्क	कुंभ	मक	मेष	कर्क	कुंभ	कुंभ	मक	कर्क
चतुर्थांश	मिथु	सिंह	वृष	मीन	मिथु	सिंह	मक	मेष	वृश्चि	वृष
सप्तमांश	मीन	तुला	मेष	कर्क	मीन	वृश्चि	धनु	कुंभ	मेष	तुला
नवमांश	कन्या	कुंभ	धनु	मिथु	सिंह	मीन	मक	मीन	कर्क	मक
दशमांश	वृष	मीन	वृष	वृश्चि	वृष	मेष	मक	मेष	सिंह	कुंभ
द्वादशांश	मिथु	सिंह	वृष	मेष	मिथु	तुला	कुंभ	वृष	मक	कर्क
षोडशांश	सिंह	कन्या	मक	तुला	सिंह	तुला	तुला	मक	कर्क	कर्क
विंशांश	कर्क	मेष	मिथु	कन्या	मिथु	मिथु	वृश्चि	मेष	कुंभ	कुंभ
चतुर्विंशांश	कन्या	कुंभ	मीन	तुला	सिंह	वृष	वृष	तुला	धनु	धनु
सप्तविंशांश	कर्क	वृश्चि	मिथु	धनु	वृष	मक	सिंह	कुंभ	मीन	कन्या
त्रिंशांश	धनु	मक	कुंभ	मीन	धनु	वृश्चि	धनु	मिथु	मक	मक
खवेदांश	कुंभ	कर्क	मेष	धनु	धनु	तुला	कर्क	मेष	मीन	मीन
अक्षवेदांश	मक	कन्या	तुला	वृष	तुला	मक	कन्या	कर्क	वृष	वृष
षष्ट्यंश	कन्या	धनु	कन्या	धनु	मिथु	मिथु	कन्या	तुला	मक	कर्क

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	4 नागपुष्प
चन्द्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
मंगल	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	3 कुसुम
बुध	1 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
गुरु	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक
शुक्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
शनि	2 किंसुक	3 व्यंजन	5 सिंहान	7 कल्पवृक्ष
राहु	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
केतु	0 ---	0 ---	0 ---	2 भेदक

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	16.00	10.10	13.20	15.75	16.90	13.25	13.15	9.50	11.90
सप्तवर्ग	15.20	9.90	12.95	15.68	16.85	13.38	13.78	8.88	12.50
दशवर्ग	13.68	11.18	15.45	16.93	14.35	15.00	12.85	8.88	11.43
षोडशवर्ग	14.03	11.70	14.50	17.18	14.35	15.18	12.78	9.15	11.73

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	मित्र
राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	सम	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	सम
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	सम	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	सम	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	---	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	सम	सम	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	मित्र	सम	---	सम	सम
राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	15	32	17	30	12	5	59
सप्तवर्गज बल	128	56	113	120	135	105	114
ओजयुग्मक बल	15	0	15	30	0	15	15
केन्द्र बल	15	15	60	60	15	30	30
द्रेष्काण बल	0	0	0	15	0	0	15
कुल स्थान बल	172	103	205	255	162	155	234
कुल दिग्बल	43	42	55	59	54	3	20
नतोन्नत बल	43	17	17	60	43	43	17
पक्ष बल	35	70	35	25	25	25	35
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	0	15	0	0	0	0	0
मास बल	30	0	0	0	0	0	0
वार बल	45	0	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	0	60	0
अयन बल	1	44	23	60	0	13	50
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	154	146	76	205	128	140	102
कुल चेष्टाबल	0	0	28	38	2	30	14
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-6	-1	-6	-9	-6	-7	-6
कुल षट्बल	423	342	374	574	374	364	372
रूप षट्बल	7.1	5.7	6.2	9.6	6.2	6.1	6.2
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.4	0.9	1.2	1.4	1.0	1.1	1.2
संबंधित पद	1	7	3	2	6	5	4

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	7.57	28.29	21.80	33.77	4.60	12.07	29.23
कष्ट फल	50.30	31.26	37.20	25.67	52.63	40.64	5.05

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	374	372	372	374	374	364	574	342	423	364	364	374
भावदिग्बल	30	40	40	0	10	20	0	20	50	30	40	10
भावदृष्टि बल	-9	5	56	71	-7	33	87	47	22	-3	-6	-6
कुल भाव बल	394	417	468	445	377	417	660	409	496	391	398	378
रूप भाव बल	6.6	7.0	7.8	7.4	6.3	7.0	11.0	6.8	8.3	6.5	6.6	6.3
संबंधित पद	9	5	3	4	12	6	1	7	2	10	8	11

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

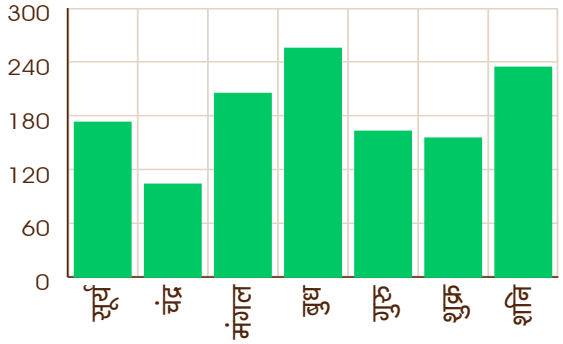

दिग्बल

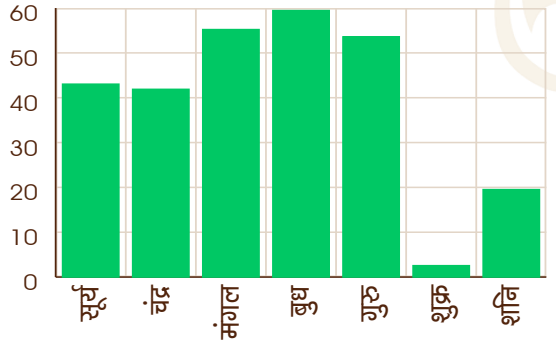

कालबल

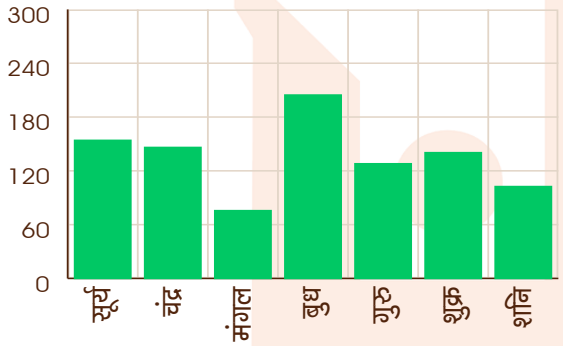

चेष्टाबल

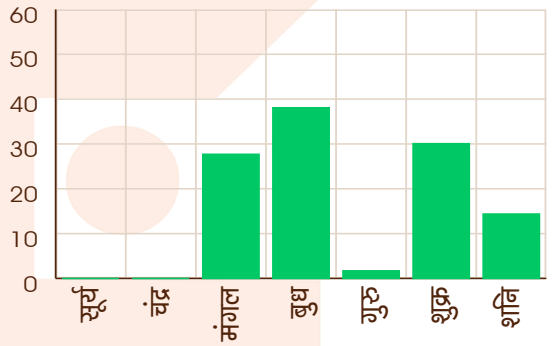

नैसर्गिक बल

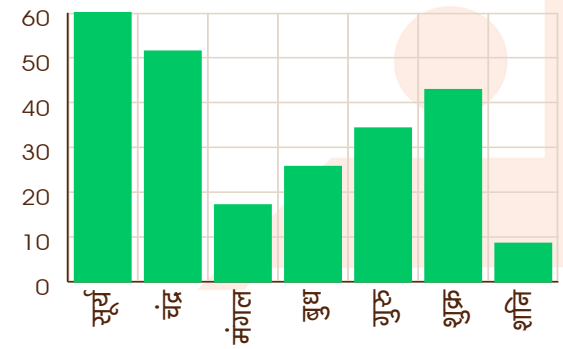

दृग्बल

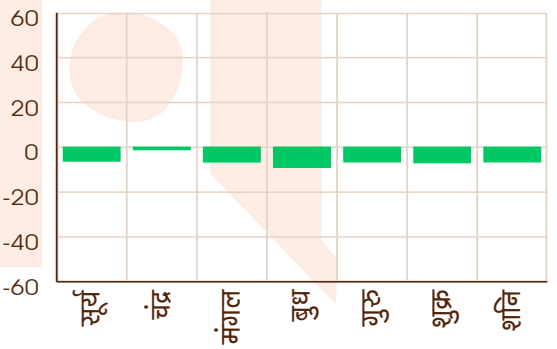

रूप षट्बल

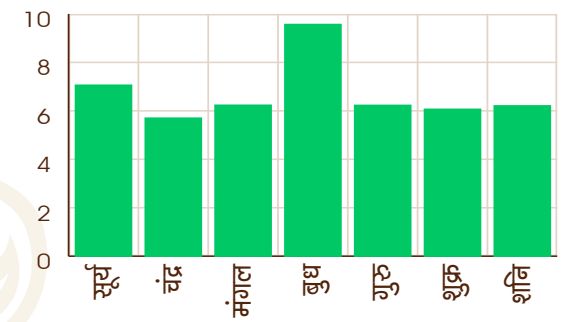

न्यूनतम षट्बल

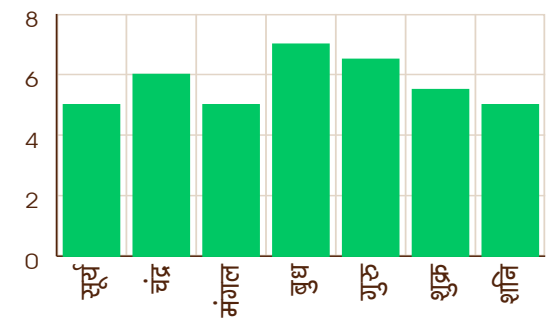

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

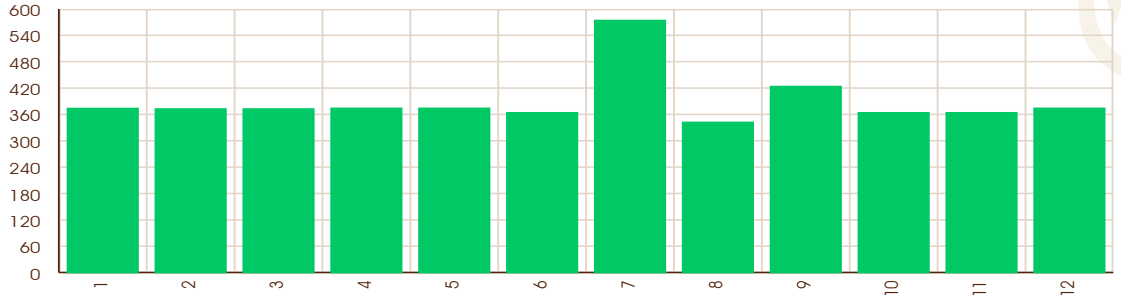

भावदिग्बल

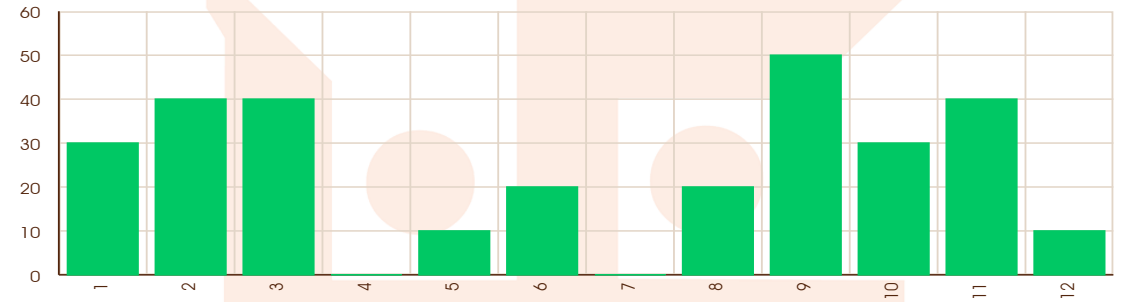

भावदृष्टि बल

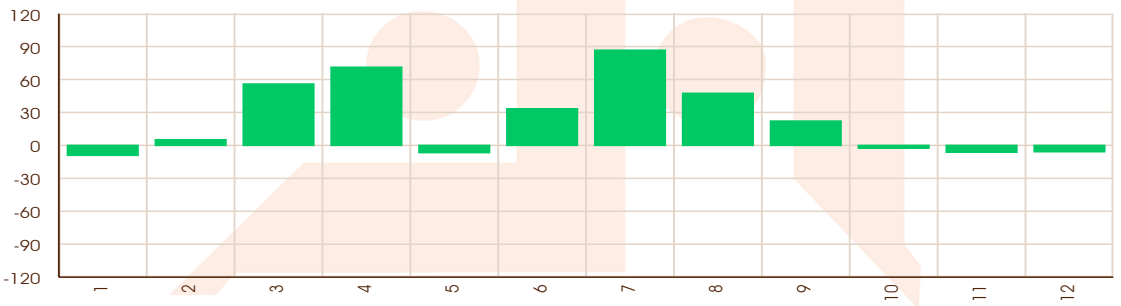

भाव बल

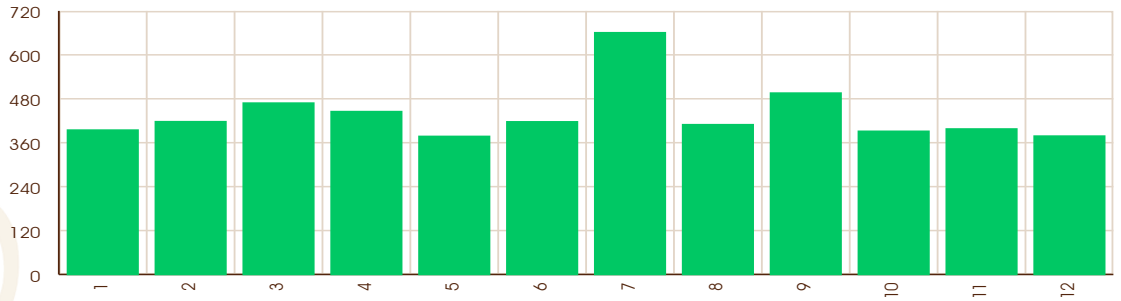

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

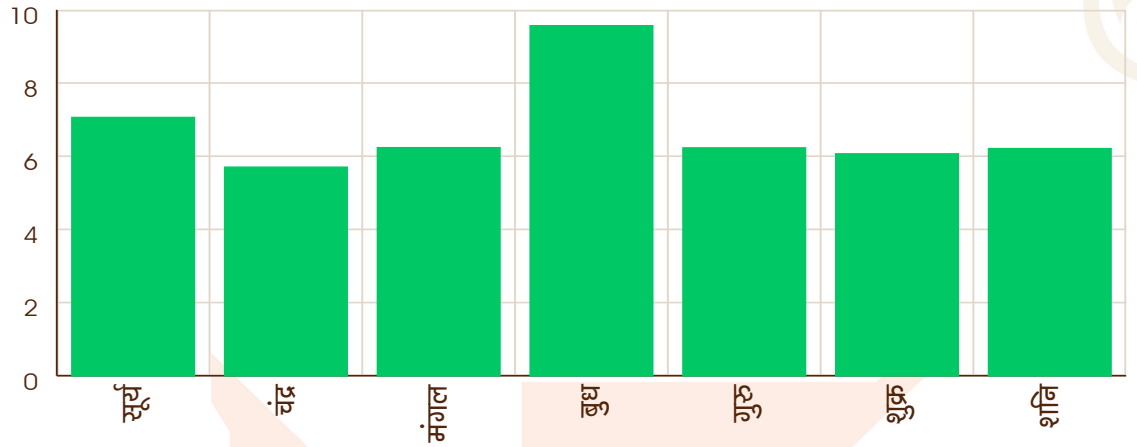

इष्ट - कष्ट फल

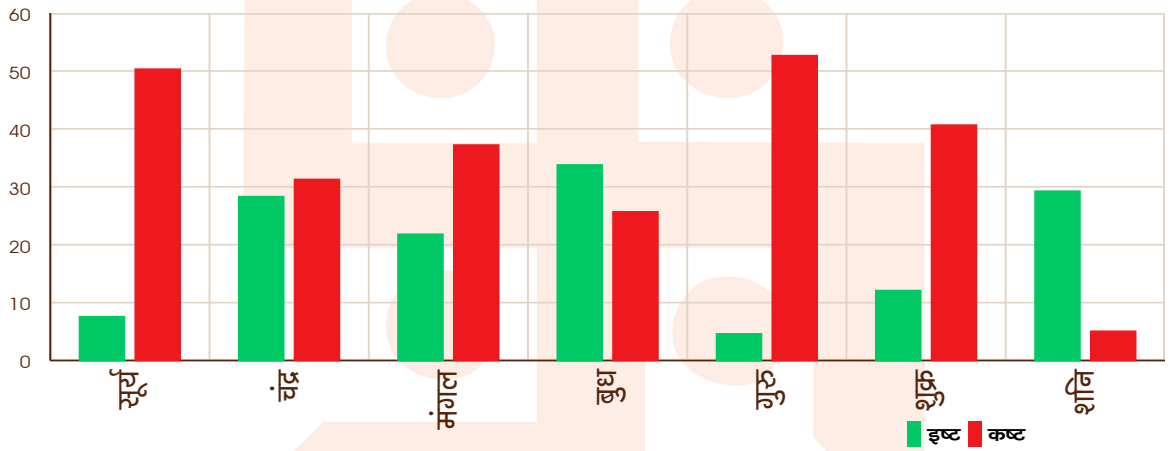

रूप भाव बल

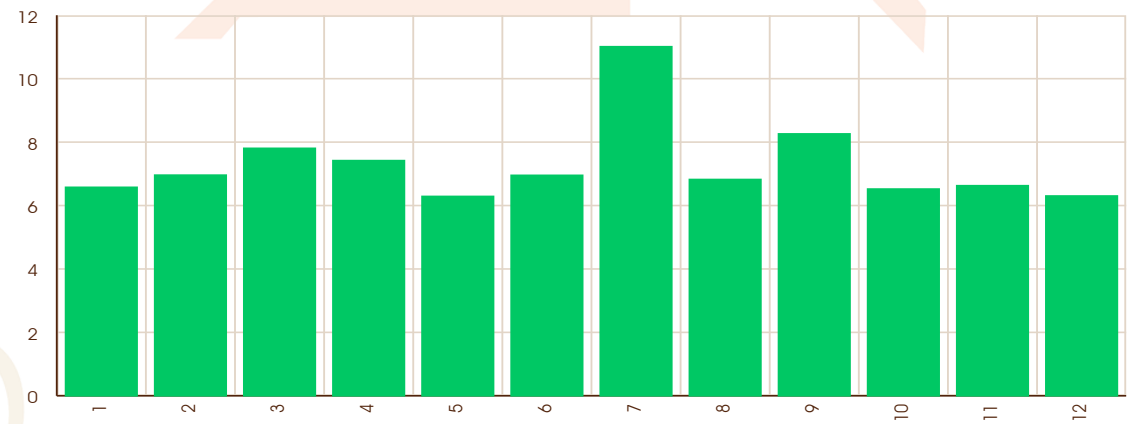

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	धनु	16:50:31	--	--	पूर्वाषाढ़ा	2	20
गुलिक	गु	वृष	06:33:04	--	--	कृतिका	3	3
काल	का	धनु	11:19:47	--	--	मूल	4	19
मृत्यु	मृ	मक	23:09:21	--	--	श्रवण	4	22
यमघंटक	यम	मीन	16:48:08	--	--	रेवती	1	27
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कुंभ	18:57:46	--	--	शतभिषा	4	24
धूम	धू	मेष	08:12:24	--	--	अश्विनी	3	1
व्यतिपात	व्य	मीन	21:47:36	--	--	रेवती	2	27
परिवेश	परि	कन्या	21:47:36	--	--	हस्त	4	13
इन्द्रचाप	इ	तुला	08:12:24	--	--	स्वाति	1	15
उपकेतु	उप	तुला	24:52:24	--	--	विशाखा	2	16

प्राणपद	:	धनु	14:24:05	कारकाँश लग्न	:	मीन	08:00:44
भाव लग्न	:	धनु	19:50:59	होरा लग्न	:	मक	14:49:34
घटी लग्न	:	मीन	29:45:19	वर्णद लग्न	:	तुला	01:40:05

उपग्रह कुंडली

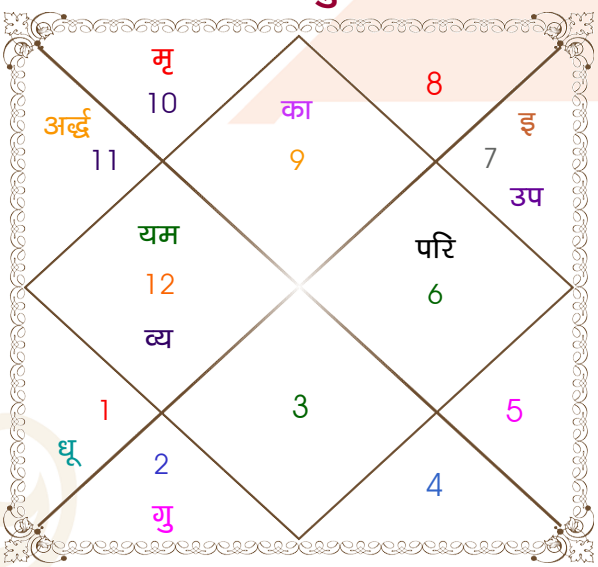

आरूढ़ कुंडली

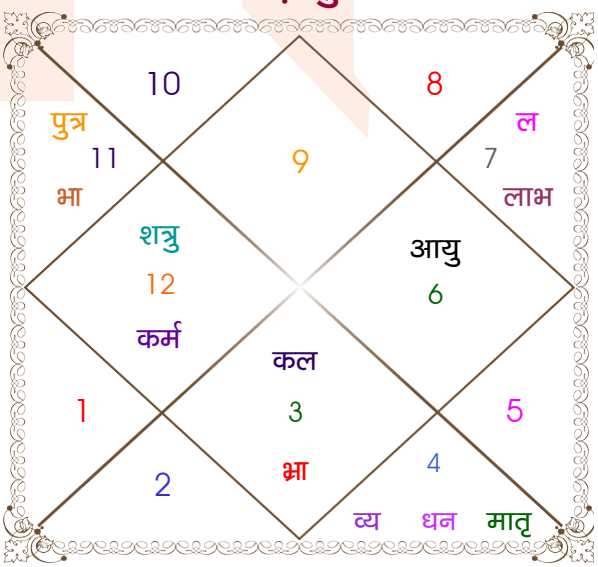

षन्नाडी चक्र

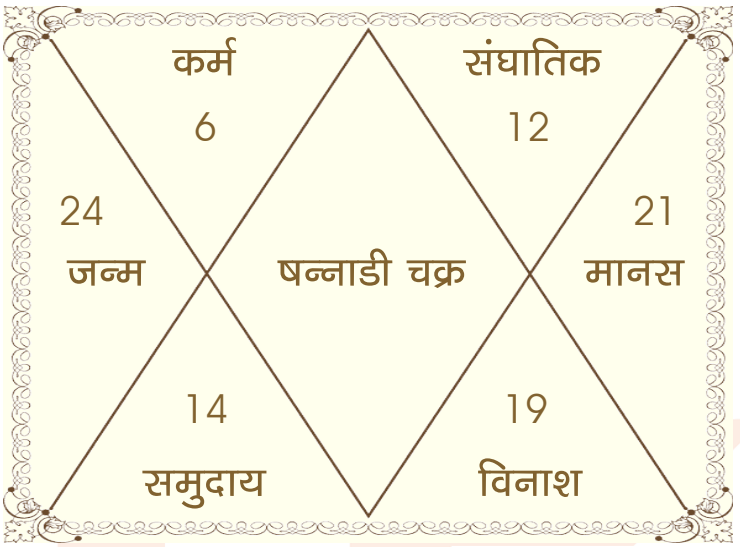

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु
केतु कुंडली	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु
गुरु कुंडली	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र
केतु कुंडली	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु
गुरु कुंडली	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
केतु कुंडली	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु
गुरु कुंडली	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	4
मंगल	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	7
चंद्र	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4
लग्न	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
कुल	5	3	1	3	4	6	5	3	5	3	6	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुल
शनि	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
मंगल	1	0	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	6
सूर्य	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	6
शुक्र	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	4
कुल	7	2	4	3	5	4	5	4	4	3	5	3	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कुल
शनि	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	7
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	5
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
बुध	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	4
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5
कुल	5	5	0	3	2	2	3	6	4	2	3	4	39

बुध का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	5
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	7
कुल	5	3	2	4	5	6	4	5	3	6	7	4	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
सूर्य	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	9
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	6
बुध	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	5
लग्न	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
कुल	3	7	4	4	6	3	4	6	3	6	6	4	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	5
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	5
चंद्र	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	9
लग्न	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
कुल	5	2	5	4	6	3	3	5	5	5	6	3	52

शनि का अष्टकवर्ग

	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	6
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	3
बुध	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	6
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	3
लग्न	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
कुल	3	3	4	1	4	4	2	3	2	3	5	5	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
गुरु	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	9
मंगल	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	5
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	6
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	7
चंद्र	1	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	5	5	5	3	3	4	2	5	3	5	5	4	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	3	2	3	5	5	3	3	4	1	4	4	39
गुरु	3	4	6	3	6	6	4	3	7	4	4	6	56
मंगल	6	4	2	3	4	5	5	0	3	2	2	3	39
सूर्य	6	5	3	5	3	6	4	5	3	1	3	4	48
शुक्र	3	5	5	5	6	3	5	2	5	4	6	3	52
बुध	5	6	4	5	3	6	7	4	5	3	2	4	54
चंद्र	4	3	5	4	5	4	4	3	5	3	7	2	49
बिन्दु	29	30	27	28	32	35	32	20	32	18	28	26	337
रेखा	27	26	29	28	24	21	24	36	24	38	28	30	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	2	0	0	3	4	1	0	2	0	2	1	15
गुरु	0	0	2	0	3	2	0	0	4	0	0	3	14
मंगल	3	2	0	3	1	3	3	0	0	0	0	3	18
सूर्य	3	4	0	1	0	5	1	1	0	0	0	0	15
शुक्र	0	2	0	3	3	0	0	0	2	1	1	1	13
बुध	2	3	2	1	0	3	5	0	2	0	0	0	18
चंद्र	0	0	1	2	1	1	0	1	1	0	3	0	10
रेखा	8	13	5	10	11	18	10	2	11	1	6	8	103

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	0	0	3	4	1	0	2	0	2	0	13
गुरु	0	0	0	0	3	2	0	0	4	0	0	0	9
मंगल	3	0	0	3	1	3	3	0	0	0	0	3	16
सूर्य	2	3	0	1	0	5	1	1	0	0	0	0	13
शुक्र	0	2	0	3	3	0	0	0	2	0	1	0	11
बुध	2	0	0	1	0	3	5	0	2	0	0	0	13
चंद्र	0	0	0	2	1	1	0	1	1	0	3	0	9
रेखा	7	6	0	10	11	18	10	2	11	0	6	3	84

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	88	73	115	86	76	91	107
ग्रह पिंड	67	43	60	94	36	15	64
शोध्य पिंड	155	116	175	180	112	106	171

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

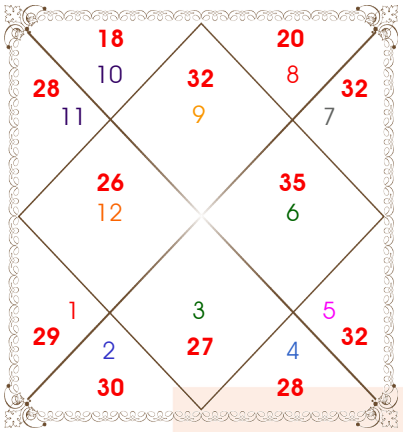

सूर्य का अष्टकवर्ग

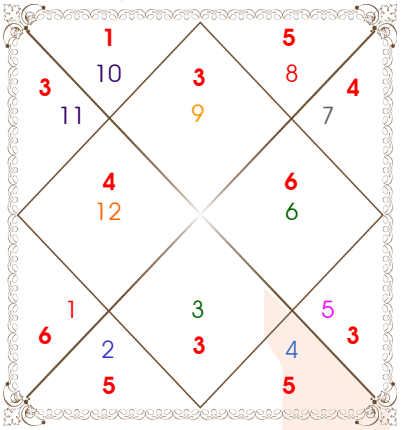

चंद्र का अष्टकवर्ग

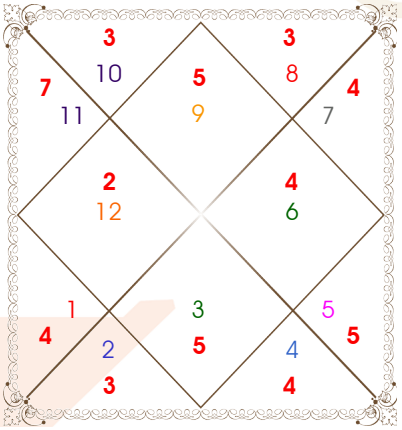

मंगल का अष्टकवर्ग

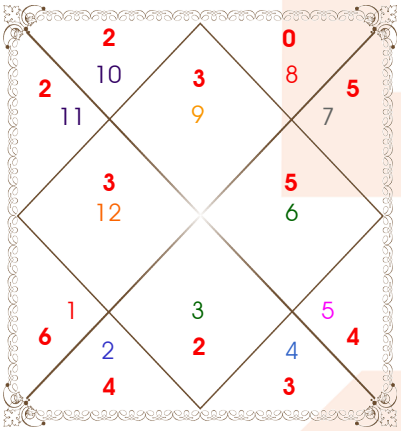

बुध का अष्टकवर्ग

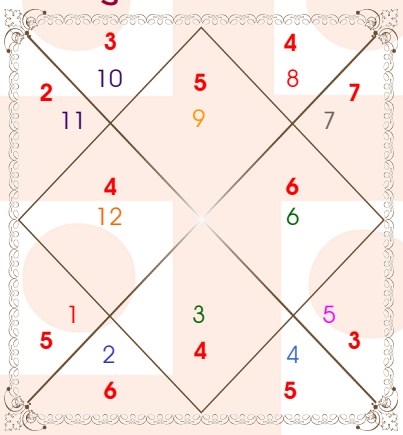

गुरु का अष्टकवर्ग

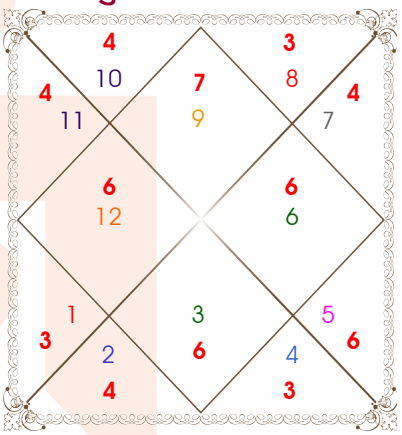

शुक्र का अष्टकवर्ग

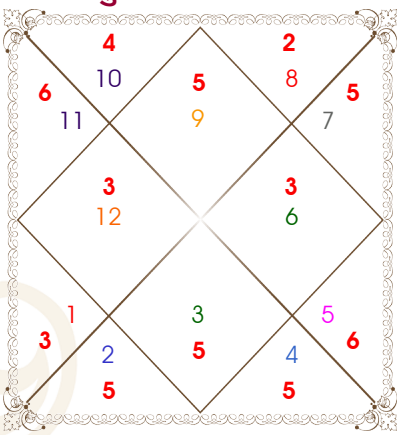

शनि का अष्टकवर्ग

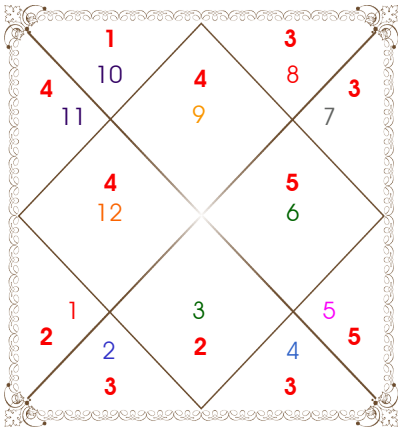

लग्न का अष्टकवर्ग

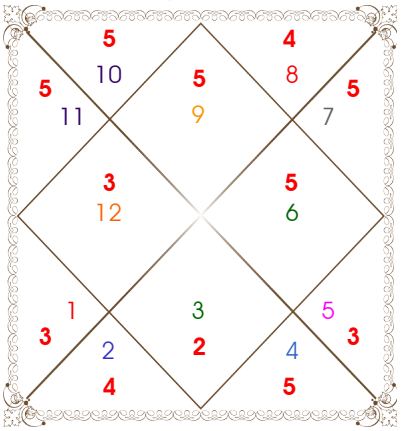

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

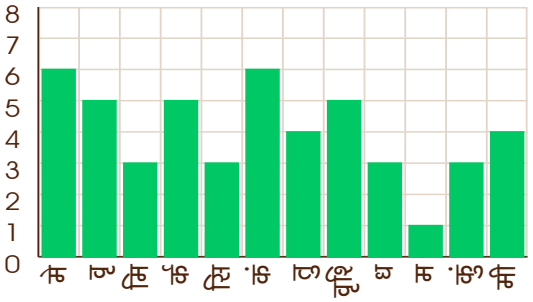

चन्द्र

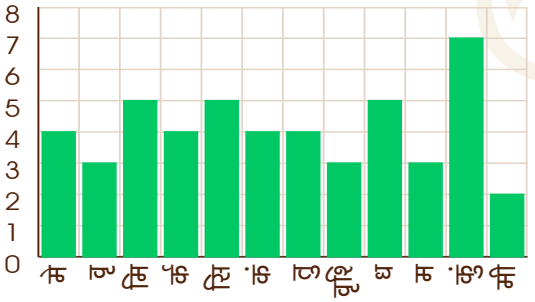

मंगल

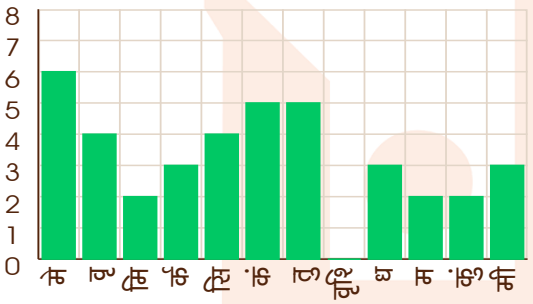

बुध

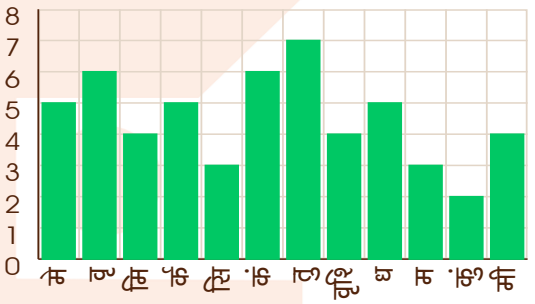

गुरु

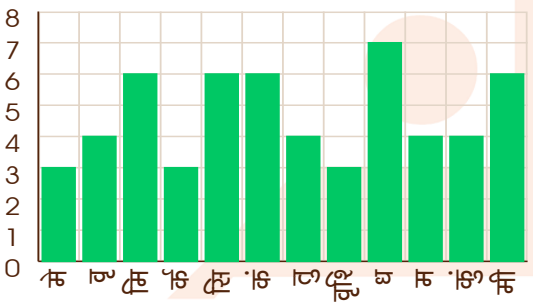

शुक्र

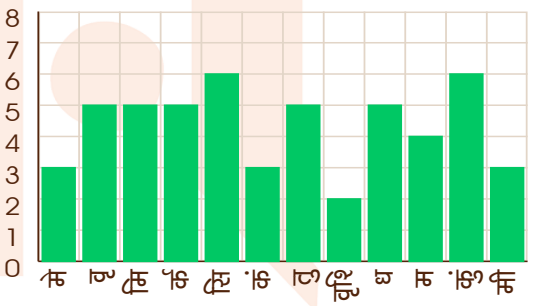

शनि

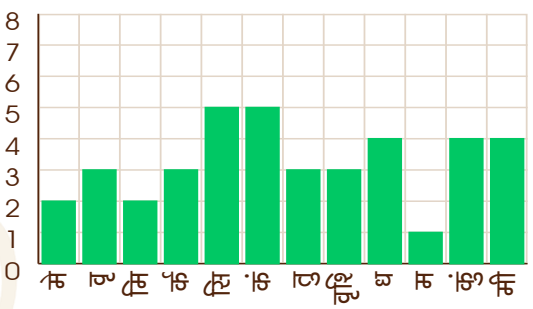

लग्न

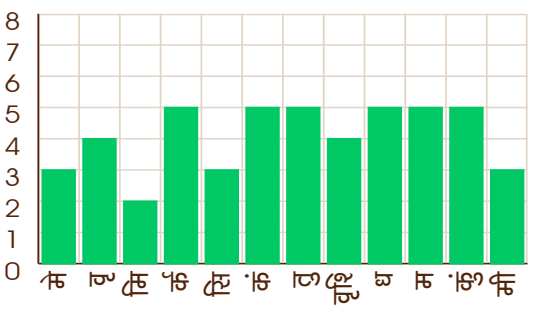

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

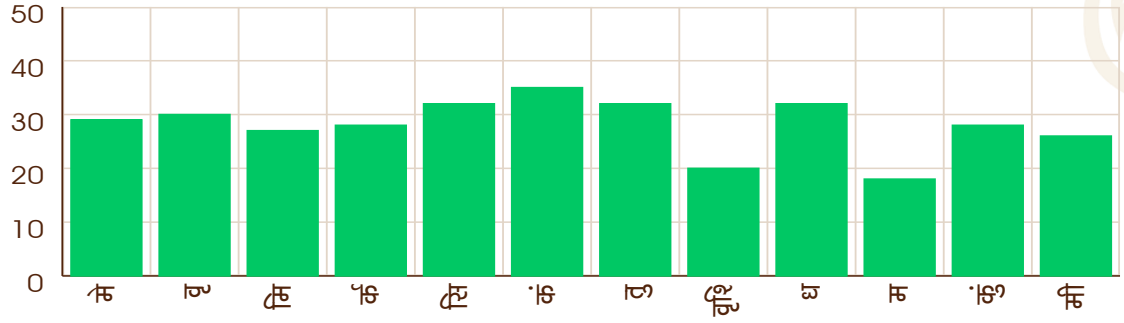

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

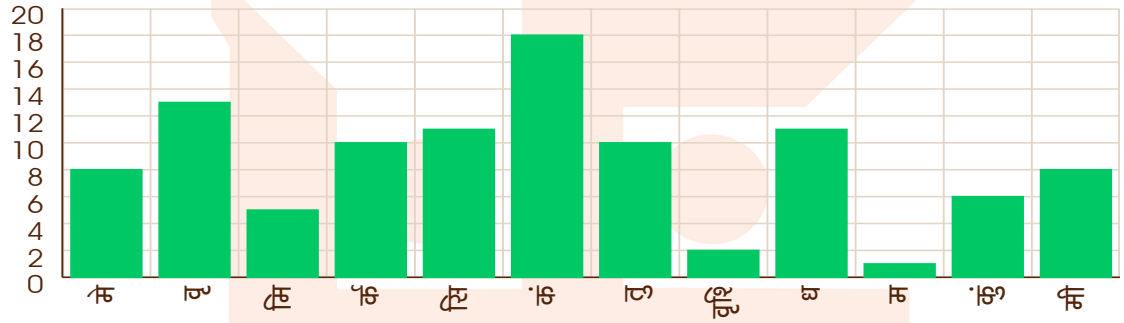

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

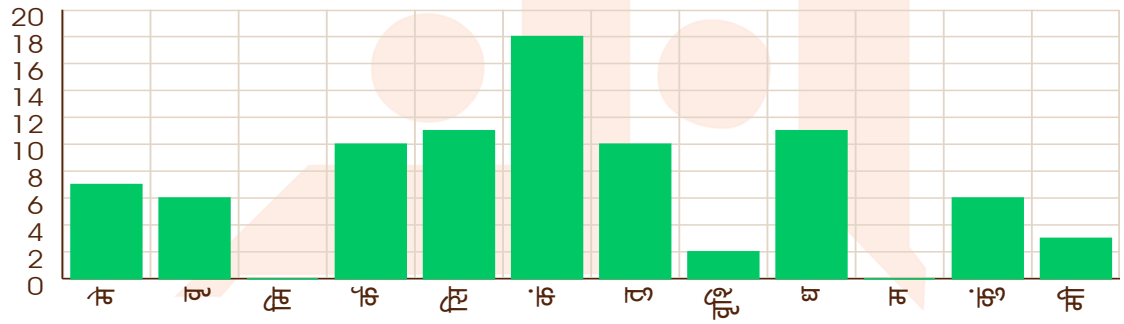

शोध्य पिंड

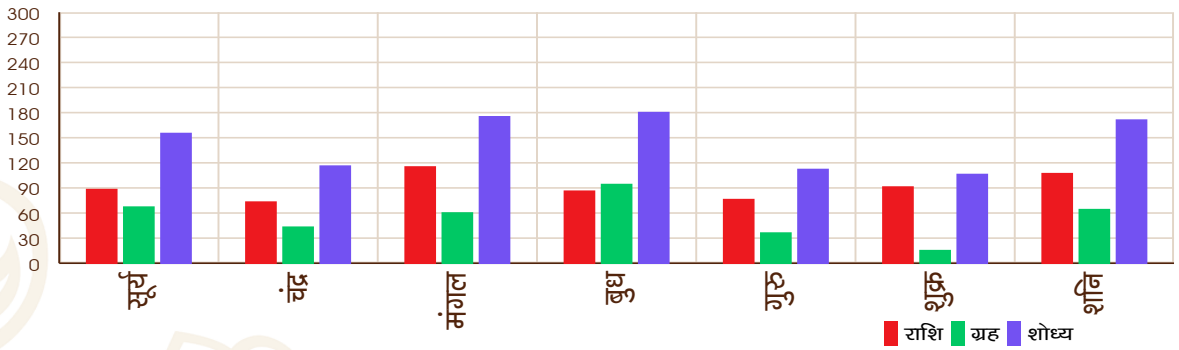

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 14 वर्ष 1 मास 24 दिन

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
11/12/1983		03/02/1998		03/02/2014		03/02/2033		03/02/2050	
03/02/1998		03/02/2014		03/02/2033		03/02/2050		03/02/2057	
	11/12/1983	गुरु	23/03/2000	शनि	06/02/2017	बुध	03/07/2035	केतु	02/07/2050
गुरु	12/03/1985	शनि	05/10/2002	बुध	17/10/2019	केतु	29/06/2036	शुक्र	02/09/2051
शनि	16/01/1988	बुध	10/01/2005	केतु	25/11/2020	शुक्र	30/04/2039	सूर्य	07/01/2052
बुध	05/08/1990	केतु	17/12/2005	शुक्र	26/01/2024	सूर्य	05/03/2040	चंद्र	07/08/2052
केतु	23/08/1991	शुक्र	17/08/2008	सूर्य	07/01/2025	चंद्र	05/08/2041	मंगल	04/01/2053
शुक्र	23/08/1994	सूर्य	05/06/2009	चंद्र	08/08/2026	मंगल	02/08/2042	राहु	22/01/2054
सूर्य	18/07/1995	चंद्र	05/10/2010	मंगल	17/09/2027	राहु	18/02/2045	गुरु	29/12/2054
चंद्र	16/01/1997	मंगल	11/09/2011	राहु	24/07/2030	गुरु	27/05/2047	शनि	07/02/2056
मंगल	03/02/1998	राहु	03/02/2014	गुरु	03/02/2033	शनि	03/02/2050	बुध	03/02/2057

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
03/02/2057		03/02/2077		04/02/2083		03/02/2093		04/02/2100	
03/02/2077		04/02/2083		03/02/2093		04/02/2100		00/00/0000	
शुक्र	05/06/2060	सूर्य	24/05/2077	चंद्र	05/12/2083	मंगल	02/07/2093	राहु	18/10/2102
सूर्य	05/06/2061	चंद्र	22/11/2077	मंगल	05/07/2084	राहु	21/07/2094	गुरु	12/12/2103
चंद्र	04/02/2063	मंगल	30/03/2078	राहु	04/01/2086	गुरु	27/06/2095		00/00/0000
मंगल	05/04/2064	राहु	22/02/2079	गुरु	06/05/2087	शनि	04/08/2096		00/00/0000
राहु	05/04/2067	गुरु	11/12/2079	शनि	04/12/2088	बुध	02/08/2097		00/00/0000
गुरु	04/12/2069	शनि	22/11/2080	बुध	06/05/2090	केतु	29/12/2097		00/00/0000
शनि	03/02/2073	बुध	28/09/2081	केतु	05/12/2090	शुक्र	28/02/2099		00/00/0000
बुध	05/12/2075	केतु	03/02/2082	शुक्र	04/08/2092	सूर्य	06/07/2099		00/00/0000
केतु	03/02/2077	शुक्र	04/02/2083	सूर्य	03/02/2093	चंद्र	04/02/2100		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 14 वर्ष 1 मा 23 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र	
11/12/1983		12/03/1985		16/01/1988		05/08/1990		23/08/1991	
12/03/1985		16/01/1988		05/08/1990		23/08/1991		23/08/1994	
	00/00/0000	शनि	23/08/1985	बुध	27/05/1988	केतु	27/08/1990	शुक्र	22/02/1992
	00/00/0000	बुध	18/01/1986	केतु	21/07/1988	शुक्र	30/10/1990	सूर्य	17/04/1992
	11/12/1983	केतु	20/03/1986	शुक्र	23/12/1988	सूर्य	18/11/1990	चंद्र	17/07/1992
केतु	22/12/1983	शुक्र	09/09/1986	सूर्य	08/02/1989	चंद्र	20/12/1990	मंगल	19/09/1992
शुक्र	16/05/1984	सूर्य	31/10/1986	चंद्र	26/04/1989	मंगल	12/01/1991	राहु	02/03/1993
सूर्य	29/06/1984	चंद्र	26/01/1987	मंगल	20/06/1989	राहु	10/03/1991	गुरु	27/07/1993
चंद्र	10/09/1984	मंगल	28/03/1987	राहु	06/11/1989	गुरु	30/04/1991	शनि	16/01/1994
मंगल	31/10/1984	राहु	31/08/1987	गुरु	10/03/1990	शनि	30/06/1991	बुध	20/06/1994
राहु	12/03/1985	गुरु	16/01/1988	शनि	05/08/1990	बुध	23/08/1991	केतु	23/08/1994

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
23/08/1994		18/07/1995		16/01/1997		03/02/1998		23/03/2000	
18/07/1995		16/01/1997		03/02/1998		23/03/2000		05/10/2002	
सूर्य	09/09/1994	चंद्र	02/09/1995	मंगल	07/02/1997	गुरु	18/05/1998	शनि	17/08/2000
चंद्र	06/10/1994	मंगल	03/10/1995	राहु	06/04/1997	शनि	19/09/1998	बुध	26/12/2000
मंगल	25/10/1994	राहु	25/12/1995	गुरु	27/05/1997	बुध	07/01/1999	केतु	18/02/2001
राहु	13/12/1994	गुरु	07/03/1996	शनि	27/07/1997	केतु	21/02/1999	शुक्र	22/07/2001
गुरु	26/01/1995	शनि	01/06/1996	बुध	19/09/1997	शुक्र	01/07/1999	सूर्य	07/09/2001
शनि	19/03/1995	बुध	18/08/1996	केतु	11/10/1997	सूर्य	09/08/1999	चंद्र	23/11/2001
बुध	05/05/1995	केतु	19/09/1996	शुक्र	14/12/1997	चंद्र	13/10/1999	मंगल	16/01/2002
केतु	24/05/1995	शुक्र	19/12/1996	सूर्य	02/01/1998	मंगल	28/11/1999	राहु	03/06/2002
शुक्र	18/07/1995	सूर्य	16/01/1997	चंद्र	03/02/1998	राहु	23/03/2000	गुरु	05/10/2002

गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
05/10/2002		10/01/2005		17/12/2005		17/08/2008		05/06/2009	
10/01/2005		17/12/2005		17/08/2008		05/06/2009		05/10/2010	
बुध	30/01/2003	केतु	30/01/2005	शुक्र	28/05/2006	सूर्य	31/08/2008	चंद्र	15/07/2009
केतु	19/03/2003	शुक्र	27/03/2005	सूर्य	16/07/2006	चंद्र	25/09/2008	मंगल	13/08/2009
शुक्र	04/08/2003	सूर्य	13/04/2005	चंद्र	05/10/2006	मंगल	12/10/2008	राहु	25/10/2009
सूर्य	15/09/2003	चंद्र	12/05/2005	मंगल	01/12/2006	राहु	24/11/2008	गुरु	29/12/2009
चंद्र	23/11/2003	मंगल	01/06/2005	राहु	26/04/2007	गुरु	02/01/2009	शनि	16/03/2010
मंगल	10/01/2004	राहु	22/07/2005	गुरु	03/09/2007	शनि	18/02/2009	बुध	24/05/2010
राहु	13/05/2004	गुरु	05/09/2005	शनि	04/02/2008	बुध	31/03/2009	केतु	21/06/2010
गुरु	01/09/2004	शनि	29/10/2005	बुध	21/06/2008	केतु	17/04/2009	शुक्र	10/09/2010
शनि	10/01/2005	बुध	17/12/2005	केतु	17/08/2008	शुक्र	05/06/2009	सूर्य	05/10/2010

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
05/10/2010		11/09/2011		03/02/2014		06/02/2017		17/10/2019	
11/09/2011		03/02/2014		06/02/2017		17/10/2019		25/11/2020	
मंगल	25/10/2010	राहु	20/01/2012	शनि	27/07/2014	बुध	25/06/2017	केतु	10/11/2019
राहु	15/12/2010	गुरु	16/05/2012	बुध	30/12/2014	केतु	22/08/2017	शुक्र	16/01/2020
गुरु	29/01/2011	शनि	02/10/2012	केतु	04/03/2015	शुक्र	02/02/2018	सूर्य	06/02/2020
शनि	24/03/2011	बुध	03/02/2013	शुक्र	03/09/2015	सूर्य	23/03/2018	चंद्र	10/03/2020
बुध	12/05/2011	केतु	26/03/2013	सूर्य	28/10/2015	चंद्र	13/06/2018	मंगल	03/04/2020
केतु	31/05/2011	शुक्र	19/08/2013	चंद्र	28/01/2016	मंगल	09/08/2018	राहु	03/06/2020
शुक्र	27/07/2011	सूर्य	02/10/2013	मंगल	01/04/2016	राहु	03/01/2019	गुरु	27/07/2020
सूर्य	13/08/2011	चंद्र	14/12/2013	राहु	13/09/2016	गुरु	15/05/2019	शनि	29/09/2020
चंद्र	11/09/2011	मंगल	03/02/2014	गुरु	06/02/2017	शनि	17/10/2019	बुध	25/11/2020

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
25/11/2020		26/01/2024		07/01/2025		08/08/2026		17/09/2027	
26/01/2024		07/01/2025		08/08/2026		17/09/2027		24/07/2030	
शुक्र	06/06/2021	सूर्य	12/02/2024	चंद्र	24/02/2025	मंगल	01/09/2026	राहु	20/02/2028
सूर्य	03/08/2021	चंद्र	12/03/2024	मंगल	30/03/2025	राहु	31/10/2026	गुरु	08/07/2028
चंद्र	07/11/2021	मंगल	01/04/2024	राहु	24/06/2025	गुरु	24/12/2026	शनि	20/12/2028
मंगल	13/01/2022	राहु	23/05/2024	गुरु	09/09/2025	शनि	26/02/2027	बुध	16/05/2029
राहु	06/07/2022	गुरु	08/07/2024	शनि	10/12/2025	बुध	25/04/2027	केतु	16/07/2029
गुरु	07/12/2022	शनि	01/09/2024	बुध	02/03/2026	केतु	18/05/2027	शुक्र	05/01/2030
शनि	08/06/2023	बुध	21/10/2024	केतु	05/04/2026	शुक्र	25/07/2027	सूर्य	26/02/2030
बुध	19/11/2023	केतु	10/11/2024	शुक्र	10/07/2026	सूर्य	14/08/2027	चंद्र	24/05/2030
केतु	26/01/2024	शुक्र	07/01/2025	सूर्य	08/08/2026	चंद्र	17/09/2027	मंगल	24/07/2030

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
24/07/2030		03/02/2033		03/07/2035		29/06/2036		30/04/2039	
03/02/2033		03/07/2035		29/06/2036		30/04/2039		05/03/2040	
गुरु	24/11/2030	बुध	08/06/2033	केतु	24/07/2035	शुक्र	18/12/2036	सूर्य	15/05/2039
शनि	20/04/2031	केतु	29/07/2033	शुक्र	22/09/2035	सूर्य	08/02/2037	चंद्र	10/06/2039
बुध	29/08/2031	शुक्र	23/12/2033	सूर्य	10/10/2035	चंद्र	05/05/2037	मंगल	28/06/2039
केतु	22/10/2031	सूर्य	05/02/2034	चंद्र	09/11/2035	मंगल	05/07/2037	राहु	14/08/2039
शुक्र	24/03/2032	चंद्र	19/04/2034	मंगल	01/12/2035	राहु	07/12/2037	गुरु	24/09/2039
सूर्य	09/05/2032	मंगल	09/06/2034	राहु	24/01/2036	गुरु	24/04/2038	शनि	12/11/2039
चंद्र	25/07/2032	राहु	19/10/2034	गुरु	12/03/2036	शनि	05/10/2038	बुध	26/12/2039
मंगल	17/09/2032	गुरु	13/02/2035	शनि	09/05/2036	बुध	28/02/2039	केतु	13/01/2040
राहु	03/02/2033	शनि	03/07/2035	बुध	29/06/2036	केतु	30/04/2039	शुक्र	05/03/2040

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
05/03/2040		05/08/2041		02/08/2042		18/02/2045		27/05/2047	
05/08/2041		02/08/2042		18/02/2045		27/05/2047		03/02/2050	
चंद्र	17/04/2040	मंगल	26/08/2041	राहु	20/12/2042	गुरु	09/06/2045	शनि	30/10/2047
मंगल	17/05/2040	राहु	19/10/2041	गुरु	23/04/2043	शनि	18/10/2045	बुध	17/03/2048
राहु	03/08/2040	गुरु	06/12/2041	शनि	17/09/2043	बुध	12/02/2046	केतु	13/05/2048
गुरु	11/10/2040	शनि	02/02/2042	बुध	27/01/2044	केतु	01/04/2046	शुक्र	24/10/2048
शनि	01/01/2041	बुध	25/03/2042	केतु	21/03/2044	शुक्र	17/08/2046	सूर्य	12/12/2048
बुध	15/03/2041	केतु	15/04/2042	शुक्र	24/08/2044	सूर्य	28/09/2046	चंद्र	04/03/2049
केतु	15/04/2041	शुक्र	15/06/2042	सूर्य	09/10/2044	चंद्र	06/12/2046	मंगल	01/05/2049
शुक्र	10/07/2041	सूर्य	03/07/2042	चंद्र	26/12/2044	मंगल	23/01/2047	राहु	25/09/2049
सूर्य	05/08/2041	चंद्र	02/08/2042	मंगल	18/02/2045	राहु	27/05/2047	गुरु	03/02/2050

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
03/02/2050		02/07/2050		02/09/2051		07/01/2052		07/08/2052	
02/07/2050		02/09/2051		07/01/2052		07/08/2052		04/01/2053	
केतु	12/02/2050	शुक्र	11/09/2050	सूर्य	08/09/2051	चंद्र	25/01/2052	मंगल	16/08/2052
शुक्र	09/03/2050	सूर्य	03/10/2050	चंद्र	19/09/2051	मंगल	07/02/2052	राहु	07/09/2052
सूर्य	16/03/2050	चंद्र	07/11/2050	मंगल	26/09/2051	राहु	10/03/2052	गुरु	27/09/2052
चंद्र	29/03/2050	मंगल	02/12/2050	राहु	15/10/2051	गुरु	07/04/2052	शनि	21/10/2052
मंगल	06/04/2050	राहु	04/02/2051	गुरु	01/11/2051	शनि	11/05/2052	बुध	11/11/2052
राहु	29/04/2050	गुरु	02/04/2051	शनि	21/11/2051	बुध	10/06/2052	केतु	20/11/2052
गुरु	19/05/2050	शनि	08/06/2051	बुध	10/12/2051	केतु	22/06/2052	शुक्र	15/12/2052
शनि	11/06/2050	बुध	08/08/2051	केतु	17/12/2051	शुक्र	28/07/2052	सूर्य	22/12/2052
बुध	02/07/2050	केतु	02/09/2051	शुक्र	07/01/2052	सूर्य	07/08/2052	चंद्र	04/01/2053

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
04/01/2053		22/01/2054		29/12/2054		07/02/2056		03/02/2057	
22/01/2054		29/12/2054		07/02/2056		03/02/2057		05/06/2060	
राहु	02/03/2053	गुरु	09/03/2054	शनि	03/03/2055	बुध	29/03/2056	शुक्र	25/08/2057
गुरु	22/04/2053	शनि	02/05/2054	बुध	29/04/2055	केतु	19/04/2056	सूर्य	25/10/2057
शनि	22/06/2053	बुध	19/06/2054	केतु	23/05/2055	शुक्र	19/06/2056	चंद्र	03/02/2058
बुध	15/08/2053	केतु	09/07/2054	शुक्र	30/07/2055	सूर्य	07/07/2056	मंगल	15/04/2058
केतु	07/09/2053	शुक्र	04/09/2054	सूर्य	19/08/2055	चंद्र	06/08/2056	राहु	15/10/2058
शुक्र	10/11/2053	सूर्य	21/09/2054	चंद्र	21/09/2055	मंगल	27/08/2056	गुरु	26/03/2059
सूर्य	29/11/2053	चंद्र	19/10/2054	मंगल	15/10/2055	राहु	20/10/2056	शनि	05/10/2059
चंद्र	31/12/2053	मंगल	08/11/2054	राहु	15/12/2055	गुरु	08/12/2056	बुध	25/03/2060
मंगल	22/01/2054	राहु	29/12/2054	गुरु	07/02/2056	शनि	03/02/2057	केतु	05/06/2060

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
05/06/2060		05/06/2061		04/02/2063		05/04/2064		05/04/2067	
05/06/2061		04/02/2063		05/04/2064		05/04/2067		04/12/2069	
सूर्य	23/06/2060	चंद्र	25/07/2061	मंगल	28/02/2063	राहु	16/09/2064	गुरु	13/08/2067
चंद्र	23/07/2060	मंगल	30/08/2061	राहु	03/05/2063	गुरु	09/02/2065	शनि	14/01/2068
मंगल	14/08/2060	राहु	29/11/2061	गुरु	29/06/2063	शनि	02/08/2065	बुध	31/05/2068
राहु	07/10/2060	गुरु	18/02/2062	शनि	05/09/2063	बुध	04/01/2066	केतु	27/07/2068
गुरु	25/11/2060	शनि	26/05/2062	बुध	04/11/2063	केतु	09/03/2066	शुक्र	06/01/2069
शनि	22/01/2061	बुध	20/08/2062	केतु	29/11/2063	शुक्र	07/09/2066	सूर्य	23/02/2069
बुध	15/03/2061	केतु	25/09/2062	शुक्र	08/02/2064	सूर्य	01/11/2066	चंद्र	15/05/2069
केतु	05/04/2061	शुक्र	04/01/2063	सूर्य	29/02/2064	चंद्र	31/01/2067	मंगल	11/07/2069
शुक्र	05/06/2061	सूर्य	04/02/2063	चंद्र	05/04/2064	मंगल	05/04/2067	राहु	04/12/2069

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
04/12/2069		03/02/2073		05/12/2075		03/02/2077		24/05/2077	
03/02/2073		05/12/2075		03/02/2077		24/05/2077		22/11/2077	
शनि	06/06/2070	बुध	30/06/2073	केतु	30/12/2075	सूर्य	08/02/2077	चंद्र	08/06/2077
बुध	16/11/2070	केतु	29/08/2073	शुक्र	10/03/2076	चंद्र	18/02/2077	मंगल	18/06/2077
केतु	23/01/2071	शुक्र	17/02/2074	सूर्य	31/03/2076	मंगल	24/02/2077	राहु	16/07/2077
शुक्र	04/08/2071	सूर्य	10/04/2074	चंद्र	06/05/2076	राहु	12/03/2077	गुरु	09/08/2077
सूर्य	30/09/2071	चंद्र	05/07/2074	मंगल	30/05/2076	गुरु	27/03/2077	शनि	07/09/2077
चंद्र	05/01/2072	मंगल	04/09/2074	राहु	02/08/2076	शनि	13/04/2077	बुध	03/10/2077
मंगल	12/03/2072	राहु	06/02/2075	गुरु	28/09/2076	बुध	29/04/2077	केतु	14/10/2077
राहु	02/09/2072	गुरु	24/06/2075	शनि	05/12/2076	केतु	05/05/2077	शुक्र	13/11/2077
गुरु	03/02/2073	शनि	05/12/2075	बुध	03/02/2077	शुक्र	24/05/2077	सूर्य	22/11/2077

सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
22/11/2077		30/03/2078		22/02/2079		11/12/2079		22/11/2080	
30/03/2078		22/02/2079		11/12/2079		22/11/2080		28/09/2081	
मंगल	30/11/2077	राहु	18/05/2078	गुरु	02/04/2079	शनि	04/02/2080	बुध	05/01/2081
राहु	19/12/2077	गुरु	01/07/2078	शनि	18/05/2079	बुध	24/03/2080	केतु	23/01/2081
गुरु	05/01/2078	शनि	22/08/2078	बुध	28/06/2079	केतु	13/04/2080	शुक्र	16/03/2081
शनि	25/01/2078	बुध	08/10/2078	केतु	15/07/2079	शुक्र	10/06/2080	सूर्य	31/03/2081
बुध	12/02/2078	केतु	27/10/2078	शुक्र	02/09/2079	सूर्य	27/06/2080	चंद्र	26/04/2081
केतु	20/02/2078	शुक्र	21/12/2078	सूर्य	17/09/2079	चंद्र	26/07/2080	मंगल	14/05/2081
शुक्र	13/03/2078	सूर्य	06/01/2079	चंद्र	11/10/2079	मंगल	16/08/2080	राहु	30/06/2081
सूर्य	19/03/2078	चंद्र	03/02/2079	मंगल	28/10/2079	राहु	07/10/2080	गुरु	10/08/2081
चंद्र	30/03/2078	मंगल	22/02/2079	राहु	11/12/2079	गुरु	22/11/2080	शनि	28/09/2081

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु	
28/09/2081		03/02/2082		04/02/2083		05/12/2083		05/07/2084	
03/02/2082		04/02/2083		05/12/2083		05/07/2084		04/01/2086	
केतु	06/10/2081	शुक्र	05/04/2082	चंद्र	01/03/2083	मंगल	17/12/2083	राहु	25/09/2084
शुक्र	27/10/2081	सूर्य	23/04/2082	मंगल	19/03/2083	राहु	18/01/2084	गुरु	07/12/2084
सूर्य	03/11/2081	चंद्र	24/05/2082	राहु	03/05/2083	गुरु	16/02/2084	शनि	04/03/2085
चंद्र	13/11/2081	मंगल	14/06/2082	गुरु	13/06/2083	शनि	20/03/2084	बुध	21/05/2085
मंगल	21/11/2081	राहु	08/08/2082	शनि	31/07/2083	बुध	20/04/2084	केतु	21/06/2085
राहु	10/12/2081	गुरु	26/09/2082	बुध	12/09/2083	केतु	02/05/2084	शुक्र	21/09/2085
गुरु	27/12/2081	शनि	22/11/2082	केतु	30/09/2083	शुक्र	07/06/2084	सूर्य	18/10/2085
शनि	16/01/2082	बुध	13/01/2083	शुक्र	20/11/2083	सूर्य	17/06/2084	चंद्र	03/12/2085
बुध	03/02/2082	केतु	04/02/2083	सूर्य	05/12/2083	चंद्र	05/07/2084	मंगल	04/01/2086

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
04/01/2086		06/05/2087		04/12/2088		06/05/2090		05/12/2090	
06/05/2087		04/12/2088		06/05/2090		05/12/2090		04/08/2092	
गुरु	10/03/2086	शनि	05/08/2087	बुध	15/02/2089	केतु	18/05/2090	शुक्र	16/03/2091
शनि	26/05/2086	बुध	26/10/2087	केतु	18/03/2089	शुक्र	23/06/2090	सूर्य	16/04/2091
बुध	03/08/2086	केतु	29/11/2087	शुक्र	12/06/2089	सूर्य	03/07/2090	चंद्र	05/06/2091
केतु	31/08/2086	शुक्र	04/03/2088	सूर्य	08/07/2089	चंद्र	21/07/2090	मंगल	11/07/2091
शुक्र	20/11/2086	सूर्य	02/04/2088	चंद्र	20/08/2089	मंगल	02/08/2090	राहु	10/10/2091
सूर्य	15/12/2086	चंद्र	21/05/2088	मंगल	19/09/2089	राहु	03/09/2090	गुरु	30/12/2091
चंद्र	24/01/2087	मंगल	23/06/2088	राहु	06/12/2089	गुरु	02/10/2090	शनि	05/04/2092
मंगल	22/02/2087	राहु	18/09/2088	गुरु	13/02/2090	शनि	04/11/2090	बुध	30/06/2092
राहु	06/05/2087	गुरु	04/12/2088	शनि	06/05/2090	बुध	05/12/2090	केतु	04/08/2092

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
04/08/2092		03/02/2093		02/07/2093		21/07/2094		27/06/2095	
03/02/2093		02/07/2093		21/07/2094		27/06/2095		04/08/2096	
सूर्य	14/08/2092	मंगल	12/02/2093	राहु	29/08/2093	गुरु	04/09/2094	शनि	30/08/2095
चंद्र	29/08/2092	राहु	06/03/2093	गुरु	19/10/2093	शनि	28/10/2094	बुध	26/10/2095
मंगल	08/09/2092	गुरु	26/03/2093	शनि	19/12/2093	बुध	15/12/2094	केतु	19/11/2095
राहु	06/10/2092	शनि	19/04/2093	बुध	11/02/2094	केतु	04/01/2095	शुक्र	25/01/2096
गुरु	30/10/2092	बुध	10/05/2093	केतु	05/03/2094	शुक्र	02/03/2095	सूर्य	14/02/2096
शनि	28/11/2092	केतु	18/05/2093	शुक्र	08/05/2094	सूर्य	19/03/2095	चंद्र	19/03/2096
बुध	24/12/2092	शुक्र	12/06/2093	सूर्य	27/05/2094	चंद्र	17/04/2095	मंगल	12/04/2096
केतु	04/01/2093	सूर्य	20/06/2093	चंद्र	28/06/2094	मंगल	06/05/2095	राहु	11/06/2096
शुक्र	03/02/2093	चंद्र	02/07/2093	मंगल	21/07/2094	राहु	27/06/2095	गुरु	04/08/2096

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - चंद्र - गुरु	
24/06/2025 18:55	
09/09/2025 21:31	
गुरु	05/07/2025 01:40
शनि	17/07/2025 06:40
बुध	28/07/2025 04:50
केतु	01/08/2025 16:47
शुक्र	14/08/2025 13:13
सूर्य	18/08/2025 09:45
चंद्र	24/08/2025 19:58
मंगल	29/08/2025 07:55
राहु	09/09/2025 21:31

शनि - चंद्र - शनि	
09/09/2025 21:31	
10/12/2025 11:06	
शनि	24/09/2025 09:28
बुध	07/10/2025 08:47
केतु	12/10/2025 16:59
शुक्र	27/10/2025 23:15
सूर्य	01/11/2025 13:07
चंद्र	09/11/2025 04:15
मंगल	14/11/2025 12:27
राहु	28/11/2025 06:05
गुरु	10/12/2025 11:06

शनि - चंद्र - बुध	
10/12/2025 11:06	
02/03/2026 09:22	
बुध	22/12/2025 01:39
केतु	26/12/2025 20:21
शुक्र	09/01/2026 12:04
सूर्य	13/01/2026 14:23
चंद्र	20/01/2026 10:14
मंगल	25/01/2026 04:56
राहु	06/02/2026 11:52
गुरु	17/02/2026 10:02
शनि	02/03/2026 09:22

शनि - चंद्र - केतु	
02/03/2026 09:22	
05/04/2026 03:00	
केतु	04/03/2026 08:35
शुक्र	09/03/2026 23:32
सूर्य	11/03/2026 16:01
चंद्र	14/03/2026 11:29
मंगल	16/03/2026 10:43
राहु	21/03/2026 12:09
गुरु	26/03/2026 00:06
शनि	31/03/2026 08:18
बुध	05/04/2026 03:00

शनि - चंद्र - शुक्र	
05/04/2026 03:00	
10/07/2026 12:15	
शुक्र	21/04/2026 04:32
सूर्य	26/04/2026 00:12
चंद्र	04/05/2026 00:58
मंगल	09/05/2026 15:55
राहु	24/05/2026 02:54
गुरु	05/06/2026 23:20
शनि	21/06/2026 05:36
बुध	04/07/2026 21:19
केतु	10/07/2026 12:15

शनि - चंद्र - सूर्य	
10/07/2026 12:15	
08/08/2026 10:13	
सूर्य	11/07/2026 22:57
चंद्र	14/07/2026 08:47
मंगल	16/07/2026 01:16
राहु	20/07/2026 09:21
गुरु	24/07/2026 05:53
शनि	28/07/2026 19:46
बुध	01/08/2026 22:05
केतु	03/08/2026 14:34
शुक्र	08/08/2026 10:13

शनि - मंगल - मंगल	
08/08/2026 10:13	
01/09/2026 00:58	
मंगल	09/08/2026 19:17
राहु	13/08/2026 08:18
गुरु	16/08/2026 11:52
शनि	20/08/2026 05:36
बुध	23/08/2026 13:53
केतु	24/08/2026 22:57
शुक्र	28/08/2026 21:24
सूर्य	30/08/2026 01:45
चंद्र	01/09/2026 00:58

शनि - मंगल - राहु	
01/09/2026 00:58	
31/10/2026 18:19	
राहु	10/09/2026 03:34
गुरु	18/09/2026 05:53
शनि	27/09/2026 20:38
बुध	06/10/2026 11:05
केतु	10/10/2026 00:06
शुक्र	20/10/2026 03:00
सूर्य	23/10/2026 03:52
चंद्र	28/10/2026 05:18
मंगल	31/10/2026 18:19

शनि - मंगल - गुरु	
31/10/2026 18:19	
24/12/2026 17:44	
गुरु	07/11/2026 23:02
शनि	16/11/2026 12:09
बुध	24/11/2026 03:40
केतु	27/11/2026 07:14
शुक्र	06/12/2026 07:08
सूर्य	08/12/2026 23:54
चंद्र	13/12/2026 11:52
मंगल	16/12/2026 15:26
राहु	24/12/2026 17:44

शनि - मंगल - शनि	
24/12/2026 17:44	
26/02/2027 20:03	
शनि	03/01/2027 21:18
बुध	12/01/2027 23:14
केतु	16/01/2027 16:58
शुक्र	27/01/2027 09:21
सूर्य	30/01/2027 14:16
चंद्र	04/02/2027 22:28
मंगल	08/02/2027 16:12
राहु	18/02/2027 06:56
गुरु	26/02/2027 20:03

शनि - मंगल - बुध	
26/02/2027 20:03	
25/04/2027 04:26	
बुध	06/03/2027 23:02
केतु	10/03/2027 07:20
शुक्र	19/03/2027 20:43
सूर्य	22/03/2027 17:33
चंद्र	27/03/2027 12:14
मंगल	30/03/2027 20:32
राहु	08/04/2027 10:59
गुरु	16/04/2027 02:30
शनि	25/04/2027 04:26

शनि - मंगल - केतु	
25/04/2027 04:26	
18/05/2027 19:11	
केतु	26/04/2027 13:30
शुक्र	30/04/2027 11:57
सूर्य	01/05/2027 16:17
चंद्र	03/05/2027 15:31
मंगल	05/05/2027 00:35
राहु	08/05/2027 13:35
गुरु	11/05/2027 17:09
शनि	15/05/2027 10:53
बुध	18/05/2027 19:11

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - मंगल - शुक्र	
18/05/2027 19:11	
25/07/2027 06:27	
शुक्र	30/05/2027 01:04
सूर्य	02/06/2027 10:01
चंद्र	08/06/2027 00:58
मंगल	11/06/2027 23:25
राहु	22/06/2027 02:19
गुरु	01/07/2027 02:13
शनि	11/07/2027 18:36
बुध	21/07/2027 08:00
केतु	25/07/2027 06:27

शनि - मंगल - सूर्य	
25/07/2027 06:27	
14/08/2027 12:14	
सूर्य	26/07/2027 06:45
चंद्र	27/07/2027 23:14
मंगल	29/07/2027 03:34
राहु	01/08/2027 04:26
गुरु	03/08/2027 21:12
शनि	07/08/2027 02:07
बुध	09/08/2027 22:56
केतु	11/08/2027 03:16
शुक्र	14/08/2027 12:14

शनि - मंगल - चंद्र	
14/08/2027 12:14	
17/09/2027 05:52	
चंद्र	17/08/2027 07:42
मंगल	19/08/2027 06:56
राहु	24/08/2027 08:23
गुरु	28/08/2027 20:20
शनि	03/09/2027 04:32
बुध	07/09/2027 23:13
केतु	09/09/2027 22:27
शुक्र	15/09/2027 13:24
सूर्य	17/09/2027 05:52

शनि - राहु - राहु	
17/09/2027 05:52	
20/02/2028 09:20	
राहु	10/10/2027 16:00
गुरु	31/10/2027 11:39
शनि	25/11/2027 05:00
बुध	17/12/2027 07:54
केतु	26/12/2027 10:30
शुक्र	21/01/2028 11:05
सूर्य	29/01/2028 06:27
चंद्र	11/02/2028 06:44
मंगल	20/02/2028 09:20

शनि - राहु - गुरु	
20/02/2028 09:20	
08/07/2028 04:25	
गुरु	09/03/2028 21:29
शनि	31/03/2028 20:54
बुध	20/04/2028 12:48
केतु	28/04/2028 15:07
शुक्र	21/05/2028 18:18
सूर्य	28/05/2028 16:51
चंद्र	09/06/2028 06:27
मंगल	17/06/2028 08:45
राहु	08/07/2028 04:25

शनि - राहु - शनि	
08/07/2028 04:25	
20/12/2028 00:05	
शनि	03/08/2028 06:44
बुध	26/08/2028 15:07
केतु	05/09/2028 05:52
शुक्र	02/10/2028 17:08
सूर्य	10/10/2028 22:55
चंद्र	24/10/2028 16:34
मंगल	03/11/2028 07:18
राहु	28/11/2028 00:39
गुरु	20/12/2028 00:05

शनि - राहु - बुध	
20/12/2028 00:05	
16/05/2029 11:21	
बुध	09/01/2029 21:28
केतु	18/01/2029 11:56
शुक्र	12/02/2029 01:49
सूर्य	19/02/2029 10:46
चंद्र	03/03/2029 17:43
मंगल	12/03/2029 08:10
राहु	03/04/2029 11:04
गुरु	23/04/2029 02:58
शनि	16/05/2029 11:21

शनि - राहु - केतु	
16/05/2029 11:21	
16/07/2029 04:42	
केतु	20/05/2029 00:22
शुक्र	30/05/2029 03:15
सूर्य	02/06/2029 04:07
चंद्र	07/06/2029 05:34
मंगल	10/06/2029 18:35
राहु	19/06/2029 21:11
गुरु	27/06/2029 23:30
शनि	07/07/2029 14:14
बुध	16/07/2029 04:42

शनि - राहु - शुक्र	
16/07/2029 04:42	
05/01/2030 16:33	
शुक्र	14/08/2029 02:40
सूर्य	22/08/2029 18:52
चंद्र	06/09/2029 05:51
मंगल	16/09/2029 08:45
राहु	12/10/2029 09:19
गुरु	04/11/2029 12:30
शनि	01/12/2029 23:47
बुध	26/12/2029 13:39
केतु	05/01/2030 16:33

शनि - राहु - सूर्य	
05/01/2030 16:33	
26/02/2030 17:42	
सूर्य	08/01/2030 07:00
चंद्र	12/01/2030 15:06
मंगल	15/01/2030 15:58
राहु	23/01/2030 11:20
गुरु	30/01/2030 09:54
शनि	07/02/2030 15:41
बुध	15/02/2030 00:39
केतु	18/02/2030 01:31
शुक्र	26/02/2030 17:42

शनि - राहु - चंद्र	
26/02/2030 17:42	
24/05/2030 11:38	
चंद्र	05/03/2030 23:12
मंगल	11/03/2030 00:38
राहु	24/03/2030 00:56
गुरु	04/04/2030 14:31
शनि	18/04/2030 08:09
बुध	30/04/2030 15:06
केतु	05/05/2030 16:33
शुक्र	20/05/2030 03:32
सूर्य	24/05/2030 11:38

शनि - राहु - मंगल	
24/05/2030 11:38	
24/07/2030 04:58	
मंगल	28/05/2030 00:38
राहु	06/06/2030 03:14
गुरु	14/06/2030 05:33
शनि	23/06/2030 20:18
बुध	02/07/2030 10:45
केतु	05/07/2030 23:46
शुक्र	16/07/2030 02:40
सूर्य	19/07/2030 03:32
चंद्र	24/07/2030 04:58

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - गुरु - गुरु	
24/07/2030 04:58	
24/11/2030 13:56	
गुरु	09/08/2030 15:46
शनि	29/08/2030 04:35
बुध	15/09/2030 16:03
केतु	22/09/2030 20:47
शुक्र	13/10/2030 10:16
सूर्य	19/10/2030 14:19
चंद्र	29/10/2030 21:04
मंगल	06/11/2030 01:47
राहु	24/11/2030 13:56

शनि - गुरु - शनि	
24/11/2030 13:56	
20/04/2031 02:04	
शनि	17/12/2030 18:39
बुध	07/01/2031 12:47
केतु	16/01/2031 01:53
शुक्र	09/02/2031 11:54
सूर्य	16/02/2031 19:43
चंद्र	01/03/2031 00:44
मंगल	09/03/2031 13:50
राहु	31/03/2031 13:15
गुरु	20/04/2031 02:04

शनि - गुरु - बुध	
20/04/2031 02:04	
29/08/2031 04:06	
बुध	08/05/2031 15:46
केतु	16/05/2031 07:17
शुक्र	07/06/2031 03:37
सूर्य	13/06/2031 16:55
चंद्र	24/06/2031 15:05
मंगल	02/07/2031 06:36
राहु	21/07/2031 22:30
गुरु	08/08/2031 09:58
शनि	29/08/2031 04:06

शनि - गुरु - केतु	
29/08/2031 04:06	
22/10/2031 03:31	
केतु	01/09/2031 07:40
शुक्र	10/09/2031 07:34
सूर्य	13/09/2031 00:20
चंद्र	17/09/2031 12:17
मंगल	20/09/2031 15:51
राहु	28/09/2031 18:10
गुरु	05/10/2031 22:53
शनि	14/10/2031 12:00
बुध	22/10/2031 03:31

शनि - गुरु - शुक्र	
22/10/2031 03:31	
24/03/2032 08:43	
शुक्र	16/11/2031 20:23
सूर्य	24/11/2031 13:26
चंद्र	07/12/2031 09:52
मंगल	16/12/2031 09:47
राहु	08/01/2032 12:57
गुरु	29/01/2032 02:27
शनि	22/02/2032 12:28
बुध	15/03/2032 08:49
केतु	24/03/2032 08:43

शनि - गुरु - सूर्य	
24/03/2032 08:43	
09/05/2032 15:04	
सूर्य	26/03/2032 16:14
चंद्र	30/03/2032 12:46
मंगल	02/04/2032 05:32
राहु	09/04/2032 04:05
गुरु	15/04/2032 08:08
शनि	22/04/2032 15:57
बुध	29/04/2032 05:15
केतु	01/05/2032 22:01
शुक्र	09/05/2032 15:04

शनि - गुरु - चंद्र	
09/05/2032 15:04	
25/07/2032 17:40	
चंद्र	16/05/2032 01:17
मंगल	20/05/2032 13:15
राहु	01/06/2032 02:50
गुरु	11/06/2032 09:35
शनि	23/06/2032 14:35
बुध	04/07/2032 12:46
केतु	09/07/2032 00:43
शुक्र	21/07/2032 21:09
सूर्य	25/07/2032 17:40

शनि - गुरु - मंगल	
25/07/2032 17:40	
17/09/2032 17:06	
मंगल	28/07/2032 21:14
राहु	05/08/2032 23:33
गुरु	13/08/2032 04:17
शनि	21/08/2032 17:23
बुध	29/08/2032 08:54
केतु	01/09/2032 12:28
शुक्र	10/09/2032 12:22
सूर्य	13/09/2032 05:09
चंद्र	17/09/2032 17:06

शनि - गुरु - राहु	
17/09/2032 17:06	
03/02/2033 12:10	
राहु	08/10/2032 12:45
गुरु	27/10/2032 00:54
शनि	18/11/2032 00:19
बुध	07/12/2032 16:13
केतु	15/12/2032 18:32
शुक्र	07/01/2033 21:43
सूर्य	14/01/2033 20:16
चंद्र	26/01/2033 09:52
मंगल	03/02/2033 12:10

बुध - बुध - बुध	
03/02/2033 12:10	
08/06/2033 02:58	
बुध	21/02/2033 03:52
केतु	28/02/2033 10:20
शुक्र	21/03/2033 04:48
सूर्य	27/03/2033 10:20
चंद्र	06/04/2033 19:34
मंगल	14/04/2033 02:02
राहु	02/05/2033 18:39
गुरु	19/05/2033 09:25
शनि	08/06/2033 02:58

बुध - बुध - केतु	
08/06/2033 02:58	
29/07/2033 10:28	
केतु	11/06/2033 02:48
शुक्र	19/06/2033 16:03
सूर्य	22/06/2033 05:38
चंद्र	26/06/2033 12:15
मंगल	29/06/2033 12:05
राहु	07/07/2033 04:49
गुरु	14/07/2033 01:01
शनि	22/07/2033 04:00
बुध	29/07/2033 10:28

बुध - बुध - शुक्र	
29/07/2033 10:28	
23/12/2033 01:02	
शुक्र	22/08/2033 20:54
सूर्य	30/08/2033 04:49
चंद्र	11/09/2033 10:02
मंगल	19/09/2033 23:17
राहु	11/10/2033 23:04
गुरु	31/10/2033 12:13
शनि	23/11/2033 17:19
बुध	14/12/2033 11:47
केतु	23/12/2033 01:02

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - बुध - सूर्य		बुध - बुध - चंद्र		बुध - बुध - मंगल		बुध - बुध - राहु	
23/12/2033 01:02		05/02/2034 00:37		19/04/2034 07:54		09/06/2034 15:24	
05/02/2034 00:37		19/04/2034 07:54		09/06/2034 15:24		19/10/2034 14:07	
सूर्य	25/12/2033 05:49	चंद्र	11/02/2034 03:13	मंगल	22/04/2034 07:44	राहु	29/06/2034 10:25
चंद्र	28/12/2033 21:47	मंगल	15/02/2034 09:51	राहु	30/04/2034 00:28	गुरु	17/07/2034 00:38
मंगल	31/12/2033 11:21	राहु	26/02/2034 09:44	गुरु	06/05/2034 20:40	शनि	06/08/2034 22:02
राहु	07/01/2034 01:42	गुरु	08/03/2034 04:19	शनि	14/05/2034 23:39	बुध	25/08/2034 14:39
गुरु	12/01/2034 22:26	शनि	19/03/2034 18:52	बुध	22/05/2034 06:07	केतु	02/09/2034 07:23
शनि	19/01/2034 21:34	बुध	30/03/2034 04:06	केतु	25/05/2034 05:57	शुक्र	24/09/2034 07:10
बुध	26/01/2034 03:06	केतु	03/04/2034 10:43	शुक्र	02/06/2034 19:12	सूर्य	30/09/2034 21:30
केतु	28/01/2034 16:41	शुक्र	15/04/2034 15:56	सूर्य	05/06/2034 08:47	चंद्र	11/10/2034 21:24
शुक्र	05/02/2034 00:37	सूर्य	19/04/2034 07:54	चंद्र	09/06/2034 15:24	मंगल	19/10/2034 14:07

बुध - बुध - गुरु		बुध - बुध - शनि		बुध - केतु - केतु		बुध - केतु - शुक्र	
19/10/2034 14:07		13/02/2035 20:59		03/07/2035 03:37		24/07/2035 06:43	
13/02/2035 20:59		03/07/2035 03:37		24/07/2035 06:43		22/09/2035 15:32	
गुरु	04/11/2034 05:26	शनि	07/03/2035 22:14	केतु	04/07/2035 09:12	शुक्र	03/08/2035 08:11
शनि	22/11/2034 19:07	बुध	27/03/2035 15:46	शुक्र	07/07/2035 21:43	सूर्य	06/08/2035 08:38
बुध	09/12/2034 09:53	केतु	04/04/2035 18:46	सूर्य	08/07/2035 23:04	चंद्र	11/08/2035 09:22
केतु	16/12/2034 06:05	शुक्र	27/04/2035 23:52	चंद्र	10/07/2035 17:20	मंगल	14/08/2035 21:53
शुक्र	04/01/2035 19:14	सूर्य	04/05/2035 23:00	मंगल	11/07/2035 22:55	राहु	23/08/2035 23:12
सूर्य	10/01/2035 15:59	चंद्र	16/05/2035 13:33	राहु	15/07/2035 02:58	गुरु	01/09/2035 00:23
चंद्र	20/01/2035 10:33	मंगल	24/05/2035 16:32	गुरु	17/07/2035 22:35	शनि	10/09/2035 13:46
मंगल	27/01/2035 06:45	राहु	14/06/2035 13:56	शनि	21/07/2035 06:53	बुध	19/09/2035 03:01
राहु	13/02/2035 20:59	गुरु	03/07/2035 03:37	बुध	24/07/2035 06:43	केतु	22/09/2035 15:32

बुध - केतु - सूर्य		बुध - केतु - चंद्र		बुध - केतु - मंगल		बुध - केतु - राहु	
22/09/2035 15:32		10/10/2035 18:11		09/11/2035 22:36		01/12/2035 01:41	
10/10/2035 18:11		09/11/2035 22:36		01/12/2035 01:41		24/01/2036 09:38	
सूर्य	23/09/2035 13:16	चंद्र	13/10/2035 06:33	मंगल	11/11/2035 04:11	राहु	09/12/2035 05:17
चंद्र	25/09/2035 01:29	मंगल	15/10/2035 00:49	राहु	14/11/2035 08:15	गुरु	16/12/2035 11:08
मंगल	26/09/2035 02:51	राहु	19/10/2035 13:28	गुरु	17/11/2035 03:51	शनि	25/12/2035 01:36
राहु	28/09/2035 20:03	गुरु	23/10/2035 14:04	शनि	20/11/2035 12:09	बुध	01/01/2036 18:19
गुरु	01/10/2035 06:00	शनि	28/10/2035 08:46	बुध	23/11/2035 11:59	केतु	04/01/2036 22:23
शनि	04/10/2035 02:49	बुध	01/11/2035 15:23	केतु	24/11/2035 17:34	शुक्र	13/01/2036 23:42
बुध	06/10/2035 16:23	केतु	03/11/2035 09:39	शुक्र	28/11/2035 06:05	सूर्य	16/01/2036 16:54
केतु	07/10/2035 17:45	शुक्र	08/11/2035 10:23	सूर्य	29/11/2035 07:26	चंद्र	21/01/2036 05:34
शुक्र	10/10/2035 18:11	सूर्य	09/11/2035 22:36	चंद्र	01/12/2035 01:41	मंगल	24/01/2036 09:38

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शनि - चंद्र - गुरु - चंद्र	
18/08/2025 09:45	
24/08/2025 19:58	
चंद्र	18/08/2025 22:36
मंगल	19/08/2025 07:36
राहु	20/08/2025 06:44
गुरु	21/08/2025 03:18
शनि	22/08/2025 03:43
बुध	23/08/2025 01:34
केतु	23/08/2025 10:33
शुक्र	24/08/2025 12:16
सूर्य	24/08/2025 19:58

शनि - चंद्र - गुरु - मंगल	
24/08/2025 19:58	
29/08/2025 07:55	
मंगल	25/08/2025 02:16
राहु	25/08/2025 18:28
गुरु	26/08/2025 08:51
शनि	27/08/2025 01:57
बुध	27/08/2025 17:14
केतु	27/08/2025 23:32
शुक्र	28/08/2025 17:32
सूर्य	28/08/2025 22:56
चंद्र	29/08/2025 07:55

शनि - चंद्र - गुरु - राहु	
29/08/2025 07:55	
09/09/2025 21:31	
राहु	31/08/2025 01:34
गुरु	01/09/2025 14:34
शनि	03/09/2025 10:31
बुध	05/09/2025 01:51
केतु	05/09/2025 18:03
शुक्र	07/09/2025 16:18
सूर्य	08/09/2025 06:11
चंद्र	09/09/2025 05:19
मंगल	09/09/2025 21:31

शनि - चंद्र - शनि - शनि	
09/09/2025 21:31	
24/09/2025 09:28	
शनि	12/09/2025 04:36
बुध	14/09/2025 05:54
केतु	15/09/2025 02:12
शुक्र	17/09/2025 12:11
सूर्य	18/09/2025 05:35
चंद्र	19/09/2025 10:35
मंगल	20/09/2025 06:53
राहु	22/09/2025 11:04
गुरु	24/09/2025 09:28

शनि - चंद्र - शनि - बुध	
24/09/2025 09:28	
07/10/2025 08:47	
बुध	26/09/2025 05:34
केतु	26/09/2025 23:44
शुक्र	29/09/2025 03:37
सूर्य	29/09/2025 19:11
चंद्र	30/09/2025 21:08
मंगल	01/10/2025 15:17
राहु	03/10/2025 13:59
गुरु	05/10/2025 07:30
शनि	07/10/2025 08:47

शनि - चंद्र - शनि - केतु	
07/10/2025 08:47	
12/10/2025 16:59	
केतु	07/10/2025 16:16
शुक्र	08/10/2025 13:38
सूर्य	08/10/2025 20:02
चंद्र	09/10/2025 06:43
मंगल	09/10/2025 14:12
राहु	10/10/2025 09:26
गुरु	11/10/2025 02:31
शनि	11/10/2025 22:49
बुध	12/10/2025 16:59

शनि - चंद्र - शनि - शुक्र	
12/10/2025 16:59	
27/10/2025 23:15	
शुक्र	15/10/2025 06:01
सूर्य	16/10/2025 00:20
चंद्र	17/10/2025 06:52
मंगल	18/10/2025 04:14
राहु	20/10/2025 11:10
गुरु	22/10/2025 12:00
शनि	24/10/2025 22:00
बुध	27/10/2025 01:53
केतु	27/10/2025 23:15

शनि - चंद्र - शनि - सूर्य	
27/10/2025 23:15	
01/11/2025 13:07	
सूर्य	28/10/2025 04:44
चंद्र	28/10/2025 13:54
मंगल	28/10/2025 20:18
राहु	29/10/2025 12:47
गुरु	30/10/2025 03:26
शनि	30/10/2025 20:50
बुध	31/10/2025 12:24
केतु	31/10/2025 18:49
शुक्र	01/11/2025 13:07

शनि - चंद्र - शनि - चंद्र	
01/11/2025 13:07	
09/11/2025 04:15	
चंद्र	02/11/2025 04:23
मंगल	02/11/2025 15:04
राहु	03/11/2025 18:32
गुरु	04/11/2025 18:57
शनि	05/11/2025 23:57
बुध	07/11/2025 01:54
केतु	07/11/2025 12:35
शुक्र	08/11/2025 19:06
सूर्य	09/11/2025 04:15

शनि - चंद्र - शनि - मंगल	
09/11/2025 04:15	
14/11/2025 12:27	
मंगल	09/11/2025 11:44
राहु	10/11/2025 06:58
गुरु	11/11/2025 00:03
शनि	11/11/2025 20:21
बुध	12/11/2025 14:31
केतु	12/11/2025 22:00
शुक्र	13/11/2025 19:21
सूर्य	14/11/2025 01:46
चंद्र	14/11/2025 12:27

शनि - चंद्र - शनि - राहु	
14/11/2025 12:27	
28/11/2025 06:05	
राहु	16/11/2025 13:54
गुरु	18/11/2025 09:51
शनि	20/11/2025 14:02
बुध	22/11/2025 12:44
केतु	23/11/2025 07:58
शुक्र	25/11/2025 14:54
सूर्य	26/11/2025 07:23
चंद्र	27/11/2025 10:52
मंगल	28/11/2025 06:05

शनि - चंद्र - शनि - गुरु	
28/11/2025 06:05	
10/12/2025 11:06	
गुरु	29/11/2025 21:09
शनि	01/12/2025 19:33
बुध	03/12/2025 13:04
केतु	04/12/2025 06:09
शुक्र	06/12/2025 06:59
सूर्य	06/12/2025 21:38
चंद्र	07/12/2025 22:03
मंगल	08/12/2025 15:09
राहु	10/12/2025 11:06

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शनि - चंद्र - बुध - बुध	
10/12/2025 11:06	
22/12/2025 01:39	
बुध	12/12/2025 02:34
केतु	12/12/2025 18:49
शुक्र	14/12/2025 17:14
सूर्य	15/12/2025 07:10
चंद्र	16/12/2025 06:23
मंगल	16/12/2025 22:38
राहु	18/12/2025 16:25
गुरु	20/12/2025 05:33
शनि	22/12/2025 01:39

शनि - चंद्र - बुध - केतु	
22/12/2025 01:39	
26/12/2025 20:21	
केतु	22/12/2025 08:21
शुक्र	23/12/2025 03:28
सूर्य	23/12/2025 09:12
चंद्र	23/12/2025 18:45
मंगल	24/12/2025 01:27
राहु	24/12/2025 18:39
गुरु	25/12/2025 09:57
शनि	26/12/2025 04:06
बुध	26/12/2025 20:21

शनि - चंद्र - बुध - शुक्र	
26/12/2025 20:21	
09/01/2026 12:04	
शुक्र	29/12/2025 02:58
सूर्य	29/12/2025 19:21
चंद्र	30/12/2025 22:40
मंगल	31/12/2025 17:47
राहु	02/01/2026 18:56
गुरु	04/01/2026 14:38
शनि	06/01/2026 18:31
बुध	08/01/2026 16:57
केतु	09/01/2026 12:04

शनि - चंद्र - बुध - सूर्य	
09/01/2026 12:04	
13/01/2026 14:23	
सूर्य	09/01/2026 16:59
चंद्र	10/01/2026 01:10
मंगल	10/01/2026 06:54
राहु	10/01/2026 21:39
गुरु	11/01/2026 10:46
शनि	12/01/2026 02:20
बुध	12/01/2026 16:15
केतु	12/01/2026 21:59
शुक्र	13/01/2026 14:23

शनि - चंद्र - बुध - चंद्र	
13/01/2026 14:23	
20/01/2026 10:14	
चंद्र	14/01/2026 04:02
मंगल	14/01/2026 13:35
राहु	15/01/2026 14:10
गुरु	16/01/2026 12:01
शनि	17/01/2026 13:57
बुध	18/01/2026 13:10
केतु	18/01/2026 22:44
शुक्र	20/01/2026 02:02
सूर्य	20/01/2026 10:14

शनि - चंद्र - बुध - मंगल	
20/01/2026 10:14	
25/01/2026 04:56	
मंगल	20/01/2026 16:55
राहु	21/01/2026 10:08
गुरु	22/01/2026 01:25
शनि	22/01/2026 19:35
बुध	23/01/2026 11:50
केतु	23/01/2026 18:31
शुक्र	24/01/2026 13:38
सूर्य	24/01/2026 19:22
चंद्र	25/01/2026 04:56

शनि - चंद्र - बुध - राहु	
25/01/2026 04:56	
06/02/2026 11:52	
राहु	27/01/2026 01:10
गुरु	28/01/2026 16:30
शनि	30/01/2026 15:12
बुध	01/02/2026 08:59
केतु	02/02/2026 02:11
शुक्र	04/02/2026 03:20
सूर्य	04/02/2026 18:05
चंद्र	05/02/2026 18:40
मंगल	06/02/2026 11:52

शनि - चंद्र - बुध - गुरु	
06/02/2026 11:52	
17/02/2026 10:02	
गुरु	07/02/2026 22:49
शनि	09/02/2026 16:20
बुध	11/02/2026 05:29
केतु	11/02/2026 20:46
शुक्र	13/02/2026 16:28
सूर्य	14/02/2026 05:34
चंद्र	15/02/2026 03:25
मंगल	15/02/2026 18:43
राहु	17/02/2026 10:02

शनि - चंद्र - बुध - शनि	
17/02/2026 10:02	
02/03/2026 09:22	
शनि	19/02/2026 11:20
बुध	21/02/2026 07:26
केतु	22/02/2026 01:36
शुक्र	24/02/2026 05:29
सूर्य	24/02/2026 21:03
चंद्र	25/02/2026 23:00
मंगल	26/02/2026 17:09
राहु	28/02/2026 15:51
गुरु	02/03/2026 09:22

शनि - चंद्र - केतु - केतु	
02/03/2026 09:22	
04/03/2026 08:35	
केतु	02/03/2026 12:07
शुक्र	02/03/2026 19:59
सूर्य	02/03/2026 22:21
चंद्र	03/03/2026 02:17
मंगल	03/03/2026 05:02
राहु	03/03/2026 12:08
गुरु	03/03/2026 18:25
शनि	04/03/2026 01:54
बुध	04/03/2026 08:35

शनि - चंद्र - केतु - शुक्र	
04/03/2026 08:35	
09/03/2026 23:32	
शुक्र	05/03/2026 07:05
सूर्य	05/03/2026 13:50
चंद्र	06/03/2026 01:04
मंगल	06/03/2026 08:57
राहु	07/03/2026 05:11
गुरु	07/03/2026 23:11
शनि	08/03/2026 20:33
बुध	09/03/2026 15:40
केतु	09/03/2026 23:32

शनि - चंद्र - केतु - सूर्य	
09/03/2026 23:32	
11/03/2026 16:01	
सूर्य	10/03/2026 01:33
चंद्र	10/03/2026 04:56
मंगल	10/03/2026 07:17
राहु	10/03/2026 13:22
गुरु	10/03/2026 18:46
शनि	11/03/2026 01:10
बुध	11/03/2026 06:54
केतु	11/03/2026 09:16
शुक्र	11/03/2026 16:01

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 8 वर्ष 7 मास 23 दिन

सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष	
11/12/1983		03/08/1992		03/08/2004		04/08/2017		04/08/2031	
03/08/1992		03/08/2004		04/08/2017		04/08/2031		04/08/2046	
	00/00/0000	मंगल	31/10/1993	गुरु	17/01/2006	शनि	13/04/2019	केतु	13/07/2033
	11/12/1983	गुरु	06/03/1995	शनि	14/08/2007	केतु	02/02/2021	चंद्र	07/08/2035
गुरु	01/01/1985	शनि	16/08/1996	केतु	19/04/2009	चंद्र	08/01/2023	बुध	18/10/2037
शनि	01/05/1986	केतु	06/03/1998	चंद्र	02/02/2011	बुध	27/01/2025	शुक्र	15/02/2040
केतु	03/10/1987	चंद्र	31/10/1999	बुध	29/12/2012	शुक्र	31/03/2027	सूर्य	19/07/2041
चंद्र	09/04/1989	बुध	04/08/2001	शुक्र	05/01/2015	सूर्य	28/07/2028	मंगल	06/02/2043
बुध	19/11/1990	शुक्र	15/06/2003	सूर्य	30/03/2016	मंगल	08/01/2030	गुरु	12/10/2044
शुक्र	03/08/1992	सूर्य	03/08/2004	मंगल	04/08/2017	गुरु	04/08/2031	शनि	04/08/2046

चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष	
04/08/2046		04/08/2062		04/08/2079		04/08/2097	
04/08/2062		04/08/2079		04/08/2097		00/00/0000	
चंद्र	18/10/2048	बुध	30/01/2065	शुक्र	20/05/2082	सूर्य	20/08/2098
बुध	21/02/2051	शुक्र	20/09/2067	सूर्य	03/02/2084	मंगल	09/10/2099
शुक्र	16/08/2053	सूर्य	01/05/2069	मंगल	14/12/2085	गुरु	11/12/2099
सूर्य	21/02/2055	मंगल	02/02/2071	गुरु	21/12/2087		00/00/0000
मंगल	18/10/2056	गुरु	29/12/2072	शनि	21/02/2090		00/00/0000
गुरु	04/08/2058	शनि	18/01/2075	केतु	20/06/2092		00/00/0000
शनि	09/07/2060	केतु	31/03/2077	चंद्र	14/12/2094		00/00/0000
केतु	04/08/2062	चंद्र	04/08/2079	बुध	04/08/2097		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध	
11/12/1983		01/01/1985		01/05/1986		03/10/1987		09/04/1989	
01/01/1985		01/05/1986		03/10/1987		09/04/1989		19/11/1990	
	11/12/1983	शनि	01/03/1985	केतु	08/07/1986	चंद्र	18/12/1987	बुध	04/07/1989
शनि	22/01/1984	केतु	03/05/1985	चंद्र	17/09/1986	बुध	09/03/1988	शुक्र	04/10/1989
केतु	20/03/1984	चंद्र	09/07/1985	बुध	02/12/1986	शुक्र	03/06/1988	सूर्य	29/11/1989
चंद्र	21/05/1984	बुध	18/09/1985	शुक्र	21/02/1987	सूर्य	25/07/1988	मंगल	28/01/1990
बुध	26/07/1984	शुक्र	02/12/1985	सूर्य	11/04/1987	मंगल	20/09/1988	गुरु	04/04/1990
शुक्र	04/10/1984	सूर्य	17/01/1986	मंगल	04/06/1987	गुरु	22/11/1988	शनि	15/06/1990
सूर्य	16/11/1984	मंगल	08/03/1986	गुरु	01/08/1987	शनि	27/01/1989	केतु	30/08/1990
मंगल	01/01/1985	गुरु	01/05/1986	शनि	03/10/1987	केतु	09/04/1989	चंद्र	19/11/1990

सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु	
19/11/1990		03/08/1992		31/10/1993		06/03/1995		16/08/1996	
03/08/1992		31/10/1993		06/03/1995		16/08/1996		06/03/1998	
शुक्र	24/02/1991	मंगल	19/09/1992	गुरु	25/12/1993	शनि	09/05/1995	केतु	28/10/1996
सूर्य	24/04/1991	गुरु	09/11/1992	शनि	22/02/1994	केतु	16/07/1995	चंद्र	14/01/1997
मंगल	27/06/1991	शनि	03/01/1993	केतु	27/04/1994	चंद्र	27/09/1995	बुध	07/04/1997
गुरु	05/09/1991	केतु	02/03/1993	चंद्र	03/07/1994	बुध	14/12/1995	शुक्र	04/07/1997
शनि	19/11/1991	चंद्र	04/05/1993	बुध	13/09/1994	शुक्र	05/03/1996	सूर्य	27/08/1997
केतु	08/02/1992	बुध	09/07/1993	शुक्र	29/11/1994	सूर्य	24/04/1996	मंगल	25/10/1997
चंद्र	04/05/1992	शुक्र	18/09/1993	सूर्य	14/01/1995	मंगल	18/06/1996	गुरु	27/12/1997
बुध	03/08/1992	सूर्य	31/10/1993	मंगल	06/03/1995	गुरु	16/08/1996	शनि	06/03/1998

मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु	
06/03/1998		31/10/1999		04/08/2001		15/06/2003		03/08/2004	
31/10/1999		04/08/2001		15/06/2003		03/08/2004		17/01/2006	
चंद्र	28/05/1998	बुध	02/02/2000	शुक्र	17/11/2001	सूर्य	24/07/2003	गुरु	02/10/2004
बुध	25/08/1998	शुक्र	12/05/2000	सूर्य	21/01/2002	मंगल	05/09/2003	शनि	05/12/2004
शुक्र	26/11/1998	सूर्य	12/07/2000	मंगल	01/04/2002	गुरु	22/10/2003	केतु	12/02/2005
सूर्य	23/01/1999	मंगल	16/09/2000	गुरु	16/06/2002	शनि	11/12/2003	चंद्र	26/04/2005
मंगल	26/03/1999	गुरु	27/11/2000	शनि	06/09/2002	केतु	03/02/2004	बुध	13/07/2005
गुरु	02/06/1999	शनि	13/02/2001	केतु	03/12/2002	चंद्र	31/03/2004	शुक्र	04/10/2005
शनि	14/08/1999	केतु	07/05/2001	चंद्र	07/03/2003	बुध	31/05/2004	सूर्य	23/11/2005
केतु	31/10/1999	चंद्र	04/08/2001	बुध	15/06/2003	शुक्र	03/08/2004	मंगल	17/01/2006

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शनि		गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध		गुरु - शुक्र	
17/01/2006		14/08/2007		19/04/2009		02/02/2011		29/12/2012	
14/08/2007		19/04/2009		02/02/2011		29/12/2012		05/01/2015	
शनि	28/03/2006	केतु	01/11/2007	चंद्र	18/07/2009	बुध	15/05/2011	शुक्र	23/04/2013
केतु	10/06/2006	चंद्र	25/01/2008	बुध	22/10/2009	शुक्र	31/08/2011	सूर्य	02/07/2013
चंद्र	28/08/2006	बुध	24/04/2008	शुक्र	31/01/2010	सूर्य	05/11/2011	मंगल	16/09/2013
बुध	20/11/2006	शुक्र	28/07/2008	सूर्य	04/04/2010	मंगल	16/01/2012	गुरु	07/12/2013
शुक्र	17/02/2007	सूर्य	24/09/2008	मंगल	10/06/2010	गुरु	03/04/2012	शनि	06/03/2014
सूर्य	12/04/2007	मंगल	27/11/2008	गुरु	23/08/2010	शनि	26/06/2012	केतु	10/06/2014
मंगल	10/06/2007	गुरु	03/02/2009	शनि	10/11/2010	केतु	24/09/2012	चंद्र	19/09/2014
गुरु	14/08/2007	शनि	19/04/2009	केतु	02/02/2011	चंद्र	29/12/2012	बुध	05/01/2015

गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु		शनि - चंद्र	
05/01/2015		30/03/2016		04/08/2017		13/04/2019		02/02/2021	
30/03/2016		04/08/2017		13/04/2019		02/02/2021		08/01/2023	
सूर्य	17/02/2015	मंगल	20/05/2016	शनि	17/10/2017	केतु	07/07/2019	चंद्र	10/05/2021
मंगल	04/04/2015	गुरु	14/07/2016	केतु	05/01/2018	चंद्र	06/10/2019	बुध	22/08/2021
गुरु	25/05/2015	शनि	12/09/2016	चंद्र	31/03/2018	बुध	11/01/2020	शुक्र	09/12/2021
शनि	18/07/2015	केतु	14/11/2016	बुध	29/06/2018	शुक्र	23/04/2020	सूर्य	14/02/2022
केतु	14/09/2015	चंद्र	21/01/2017	शुक्र	03/10/2018	सूर्य	25/06/2020	मंगल	28/04/2022
चंद्र	16/11/2015	बुध	03/04/2017	सूर्य	01/12/2018	मंगल	01/09/2020	गुरु	16/07/2022
बुध	21/01/2016	शुक्र	18/06/2017	मंगल	03/02/2019	गुरु	14/11/2020	शनि	09/10/2022
शुक्र	30/03/2016	सूर्य	04/08/2017	गुरु	13/04/2019	शनि	02/02/2021	केतु	08/01/2023

शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल		शनि - गुरु	
08/01/2023		27/01/2025		31/03/2027		28/07/2028		08/01/2030	
27/01/2025		31/03/2027		28/07/2028		08/01/2030		04/08/2031	
बुध	28/04/2023	शुक्र	30/05/2025	सूर्य	16/05/2027	मंगल	21/09/2028	गुरु	13/03/2030
शुक्र	22/08/2023	सूर्य	13/08/2025	मंगल	05/07/2027	गुरु	19/11/2028	शनि	21/05/2030
सूर्य	01/11/2023	मंगल	03/11/2025	गुरु	29/08/2027	शनि	22/01/2029	केतु	04/08/2030
मंगल	18/01/2024	गुरु	31/01/2026	शनि	26/10/2027	केतु	31/03/2029	चंद्र	22/10/2030
गुरु	11/04/2024	शनि	07/05/2026	केतु	28/12/2027	चंद्र	12/06/2029	बुध	14/01/2031
शनि	10/07/2024	केतु	17/08/2026	चंद्र	04/03/2028	बुध	29/08/2029	शुक्र	12/04/2031
केतु	15/10/2024	चंद्र	05/12/2026	बुध	14/05/2028	शुक्र	19/11/2029	सूर्य	06/06/2031
चंद्र	27/01/2025	बुध	31/03/2027	शुक्र	28/07/2028	सूर्य	08/01/2030	मंगल	04/08/2031

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
04/08/2031		13/07/2033		07/08/2035		18/10/2037		15/02/2040	
13/07/2033		07/08/2035		18/10/2037		15/02/2040		19/07/2041	
केतु	04/11/2031	चंद्र	25/10/2033	बुध	03/12/2035	शुक्र	27/02/2038	सूर्य	05/04/2040
चंद्र	09/02/2032	बुध	13/02/2034	शुक्र	05/04/2036	सूर्य	19/05/2038	मंगल	28/05/2040
बुध	23/05/2032	शुक्र	10/06/2034	सूर्य	21/06/2036	मंगल	15/08/2038	गुरु	26/07/2040
शुक्र	10/09/2032	सूर्य	20/08/2034	मंगल	12/09/2036	गुरु	18/11/2038	शनि	26/09/2040
सूर्य	16/11/2032	मंगल	07/11/2034	गुरु	11/12/2036	शनि	01/03/2039	केतु	02/12/2040
मंगल	29/01/2033	गुरु	30/01/2035	शनि	18/03/2037	केतु	18/06/2039	चंद्र	12/02/2041
गुरु	18/04/2033	शनि	02/05/2035	केतु	29/06/2037	चंद्र	14/10/2039	बुध	29/04/2041
शनि	13/07/2033	केतु	07/08/2035	चंद्र	18/10/2037	बुध	15/02/2040	शुक्र	19/07/2041

केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि		चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध	
19/07/2041		06/02/2043		12/10/2044		04/08/2046		18/10/2048	
06/02/2043		12/10/2044		04/08/2046		18/10/2048		21/02/2051	
मंगल	15/09/2041	गुरु	15/04/2043	शनि	30/12/2044	चंद्र	23/11/2046	बुध	20/02/2049
गुरु	18/11/2041	शनि	29/06/2043	केतु	26/03/2045	बुध	21/03/2047	शुक्र	03/07/2049
शनि	25/01/2042	केतु	16/09/2043	चंद्र	25/06/2045	शुक्र	24/07/2047	सूर्य	23/09/2049
केतु	09/04/2042	चंद्र	10/12/2043	बुध	30/09/2045	सूर्य	09/10/2047	मंगल	20/12/2049
चंद्र	26/06/2042	बुध	09/03/2044	शुक्र	11/01/2046	मंगल	31/12/2047	गुरु	26/03/2050
बुध	17/09/2042	शुक्र	12/06/2044	सूर्य	14/03/2046	गुरु	30/03/2048	शनि	07/07/2050
शुक्र	14/12/2042	सूर्य	09/08/2044	मंगल	22/05/2046	शनि	06/07/2048	केतु	26/10/2050
सूर्य	06/02/2043	मंगल	12/10/2044	गुरु	04/08/2046	केतु	18/10/2048	चंद्र	21/02/2051

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
21/02/2051		16/08/2053		21/02/2055		18/10/2056		04/08/2058	
16/08/2053		21/02/2055		18/10/2056		04/08/2058		09/07/2060	
शुक्र	12/07/2051	सूर्य	08/10/2053	मंगल	25/04/2055	गुरु	30/12/2056	शनि	28/10/2058
सूर्य	06/10/2051	मंगल	04/12/2053	गुरु	02/07/2055	शनि	19/03/2057	केतु	27/01/2059
मंगल	08/01/2052	गुरु	04/02/2054	शनि	13/09/2055	केतु	12/06/2057	चंद्र	04/05/2059
गुरु	18/04/2052	शनि	12/04/2054	केतु	30/11/2055	चंद्र	10/09/2057	बुध	16/08/2059
शनि	06/08/2052	केतु	23/06/2054	चंद्र	21/02/2056	बुध	15/12/2057	शुक्र	03/12/2059
केतु	01/12/2052	चंद्र	07/09/2054	बुध	20/05/2056	शुक्र	27/03/2058	सूर्य	08/02/2060
चंद्र	05/04/2053	बुध	27/11/2054	शुक्र	22/08/2056	सूर्य	28/05/2058	मंगल	21/04/2060
बुध	16/08/2053	शुक्र	21/02/2055	सूर्य	18/10/2056	मंगल	04/08/2058	गुरु	09/07/2060

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - मंगल	
09/07/2060		04/08/2062		30/01/2065		20/09/2067		01/05/2069	
04/08/2062		30/01/2065		20/09/2067		01/05/2069		02/02/2071	
केतु	15/10/2060	बुध	15/12/2062	शुक्र	28/06/2065	सूर्य	15/11/2067	मंगल	07/07/2069
चंद्र	27/01/2061	शुक्र	05/05/2063	सूर्य	28/09/2065	मंगल	15/01/2068	गुरु	17/09/2069
बुध	18/05/2061	सूर्य	31/07/2063	मंगल	05/01/2066	गुरु	21/03/2068	शनि	03/12/2069
शुक्र	12/09/2061	मंगल	02/11/2063	गुरु	23/04/2066	शनि	31/05/2068	केतु	24/02/2070
सूर्य	23/11/2061	गुरु	12/02/2064	शनि	18/08/2066	केतु	15/08/2068	चंद्र	24/05/2070
मंगल	09/02/2062	शनि	01/06/2064	केतु	20/12/2066	चंद्र	04/11/2068	बुध	26/08/2070
गुरु	05/05/2062	केतु	26/09/2064	चंद्र	02/05/2067	बुध	30/01/2069	शुक्र	04/12/2070
शनि	04/08/2062	चंद्र	30/01/2065	बुध	20/09/2067	शुक्र	01/05/2069	सूर्य	02/02/2071

बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र	
02/02/2071		29/12/2072		18/01/2075		31/03/2077		04/08/2079	
29/12/2072		18/01/2075		31/03/2077		04/08/2079		20/05/2082	
गुरु	21/04/2071	शनि	30/03/2073	केतु	02/05/2075	चंद्र	27/07/2077	शुक्र	09/01/2080
शनि	14/07/2071	केतु	05/07/2073	चंद्र	20/08/2075	बुध	29/11/2077	सूर्य	15/04/2080
केतु	12/10/2071	चंद्र	16/10/2073	बुध	16/12/2075	शुक्र	11/04/2078	मंगल	30/07/2080
चंद्र	16/01/2072	बुध	03/02/2074	शुक्र	19/04/2076	सूर्य	01/07/2078	गुरु	21/11/2080
बुध	27/04/2072	शुक्र	30/05/2074	सूर्य	04/07/2076	मंगल	28/09/2078	शनि	24/03/2081
शुक्र	13/08/2072	सूर्य	09/08/2074	मंगल	25/09/2076	गुरु	02/01/2079	केतु	03/08/2081
सूर्य	18/10/2072	मंगल	26/10/2074	गुरु	24/12/2076	शनि	15/04/2079	चंद्र	22/12/2081
मंगल	29/12/2072	गुरु	18/01/2075	शनि	31/03/2077	केतु	04/08/2079	बुध	20/05/2082

शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - केतु	
20/05/2082		03/02/2084		14/12/2085		21/12/2087		21/02/2090	
03/02/2084		14/12/2085		21/12/2087		21/02/2090		20/06/2092	
सूर्य	18/07/2082	मंगल	13/04/2084	गुरु	06/03/2086	शनि	25/03/2088	केतु	11/06/2090
मंगल	21/09/2082	गुरु	28/06/2084	शनि	03/06/2086	केतु	06/07/2088	चंद्र	06/10/2090
गुरु	30/11/2082	शनि	18/09/2084	केतु	07/09/2086	चंद्र	23/10/2088	बुध	08/02/2091
शनि	13/02/2083	केतु	15/12/2084	चंद्र	17/12/2086	बुध	17/02/2089	शुक्र	20/06/2091
केतु	05/05/2083	चंद्र	19/03/2085	बुध	04/04/2087	शुक्र	20/06/2089	सूर्य	08/09/2091
चंद्र	30/07/2083	बुध	27/06/2085	शुक्र	28/07/2087	सूर्य	03/09/2089	मंगल	05/12/2091
बुध	29/10/2083	शुक्र	10/10/2085	सूर्य	05/10/2087	मंगल	24/11/2089	गुरु	10/03/2092
शुक्र	03/02/2084	सूर्य	14/12/2085	मंगल	21/12/2087	गुरु	21/02/2090	शनि	20/06/2092

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 9 वर्ष 5 मास 6 दिन

राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष	
11/12/1983		17/05/1993		16/01/2004		16/09/2016		16/01/2028	
17/05/1993		16/01/2004		16/09/2016		16/01/2028		16/09/2032	
	11/12/1983	गुरु	19/10/1994	शनि	18/01/2006	बुध	25/04/2018	केतु	25/04/2028
गुरु	10/10/1984	शनि	27/06/1996	बुध	04/11/2007	केतु	23/12/2018	शुक्र	03/02/2029
शनि	04/09/1986	बुध	31/12/1997	केतु	31/07/2008	शुक्र	12/11/2020	सूर्य	29/04/2029
बुध	17/05/1988	केतु	15/08/1998	शुक्र	10/09/2010	सूर्य	07/06/2021	चंद्र	18/09/2029
केतु	28/01/1989	शुक्र	25/05/2000	सूर्य	30/04/2011	चंद्र	18/05/2022	मंगल	27/12/2029
शुक्र	28/01/1991	सूर्य	06/12/2000	चंद्र	19/05/2012	मंगल	14/01/2023	राहु	08/09/2030
सूर्य	05/09/1991	चंद्र	27/10/2001	मंगल	13/02/2013	राहु	26/09/2024	गुरु	24/04/2031
चंद्र	04/09/1992	मंगल	11/06/2002	राहु	08/01/2015	गुरु	01/04/2026	शनि	18/01/2032
मंगल	17/05/1993	राहु	16/01/2004	गुरु	16/09/2016	शनि	16/01/2028	बुध	16/09/2032

शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष	
16/09/2032		16/01/2046		16/01/2050		16/09/2056		17/05/2061	
16/01/2046		16/01/2050		16/09/2056		17/05/2061		00/00/0000	
शुक्र	07/12/2034	सूर्य	30/03/2046	चंद्र	07/08/2050	मंगल	24/12/2056	राहु	06/03/2063
सूर्य	07/08/2035	चंद्र	30/07/2046	मंगल	27/12/2050	राहु	06/09/2057	गुरु	11/12/2063
चंद्र	16/09/2036	मंगल	23/10/2046	राहु	27/12/2051	गुरु	21/04/2058		00/00/0000
मंगल	27/06/2037	राहु	30/05/2047	गुरु	16/11/2052	शनि	16/01/2059		00/00/0000
राहु	28/06/2039	गुरु	11/12/2047	शनि	06/12/2053	बुध	15/09/2059		00/00/0000
गुरु	07/04/2041	शनि	29/07/2048	बुध	16/11/2054	केतु	23/12/2059		00/00/0000
शनि	18/05/2043	बुध	21/02/2049	केतु	07/04/2055	शुक्र	02/10/2060		00/00/0000
बुध	07/04/2045	केतु	17/05/2049	शुक्र	17/05/2056	सूर्य	26/12/2060		00/00/0000
केतु	16/01/2046	शुक्र	16/01/2050	सूर्य	16/09/2056	चंद्र	17/05/2061		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र	
11/12/1983		10/10/1984		04/09/1986		17/05/1988		28/01/1989	
10/10/1984		04/09/1986		17/05/1988		28/01/1989		28/01/1991	
	00/00/0000	शनि	28/01/1985	बुध	01/12/1986	केतु	01/06/1988	शुक्र	30/05/1989
	00/00/0000	बुध	07/05/1985	केतु	06/01/1987	शुक्र	14/07/1988	सूर्य	05/07/1989
	11/12/1983	केतु	16/06/1985	शुक्र	20/04/1987	सूर्य	27/07/1988	चंद्र	04/09/1989
केतु	18/12/1983	शुक्र	10/10/1985	सूर्य	21/05/1987	चंद्र	17/08/1988	मंगल	17/10/1989
शुक्र	25/03/1984	सूर्य	13/11/1985	चंद्र	12/07/1987	मंगल	01/09/1988	राहु	03/02/1990
सूर्य	23/04/1984	चंद्र	10/01/1986	मंगल	17/08/1987	राहु	09/10/1988	गुरु	12/05/1990
चंद्र	11/06/1984	मंगल	20/02/1986	राहु	18/11/1987	गुरु	12/11/1988	शनि	04/09/1990
मंगल	15/07/1984	राहु	04/06/1986	गुरु	09/02/1988	शनि	23/12/1988	बुध	17/12/1990
राहु	10/10/1984	गुरु	04/09/1986	शनि	17/05/1988	बुध	28/01/1989	केतु	28/01/1991

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
28/01/1991		05/09/1991		04/09/1992		17/05/1993		19/10/1994	
05/09/1991		04/09/1992		17/05/1993		19/10/1994		27/06/1996	
सूर्य	08/02/1991	चंद्र	05/10/1991	मंगल	19/09/1992	गुरु	26/07/1993	शनि	25/01/1995
चंद्र	27/02/1991	मंगल	26/10/1991	राहु	27/10/1992	शनि	16/10/1993	बुध	22/04/1995
मंगल	11/03/1991	राहु	20/12/1991	गुरु	30/11/1992	बुध	29/12/1993	केतु	28/05/1995
राहु	13/04/1991	गुरु	07/02/1992	शनि	10/01/1993	केतु	28/01/1994	शुक्र	08/09/1995
गुरु	12/05/1991	शनि	05/04/1992	बुध	15/02/1993	शुक्र	24/04/1994	सूर्य	09/10/1995
शनि	16/06/1991	बुध	26/05/1992	केतु	02/03/1993	सूर्य	20/05/1994	चंद्र	29/11/1995
बुध	17/07/1991	केतु	17/06/1992	शुक्र	13/04/1993	चंद्र	03/07/1994	मंगल	04/01/1996
केतु	30/07/1991	शुक्र	17/08/1992	सूर्य	26/04/1993	मंगल	02/08/1994	राहु	06/04/1996
शुक्र	05/09/1991	सूर्य	04/09/1992	चंद्र	17/05/1993	राहु	19/10/1994	गुरु	27/06/1996

गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
27/06/1996		31/12/1997		15/08/1998		25/05/2000		06/12/2000	
31/12/1997		15/08/1998		25/05/2000		06/12/2000		27/10/2001	
बुध	13/09/1996	केतु	13/01/1998	शुक्र	01/12/1998	सूर्य	04/06/2000	चंद्र	02/01/2001
केतु	15/10/1996	शुक्र	20/02/1998	सूर्य	03/01/1999	चंद्र	20/06/2000	मंगल	21/01/2001
शुक्र	15/01/1997	सूर्य	03/03/1998	चंद्र	26/02/1999	मंगल	02/07/2000	राहु	11/03/2001
सूर्य	12/02/1997	चंद्र	22/03/1998	मंगल	05/04/1999	राहु	31/07/2000	गुरु	23/04/2001
चंद्र	30/03/1997	मंगल	04/04/1998	राहु	11/07/1999	गुरु	26/08/2000	शनि	14/06/2001
मंगल	01/05/1997	राहु	09/05/1998	गुरु	06/10/1999	शनि	26/09/2000	बुध	30/07/2001
राहु	23/07/1997	गुरु	08/06/1998	शनि	16/01/2000	बुध	23/10/2000	केतु	17/08/2001
गुरु	04/10/1997	शनि	14/07/1998	बुध	17/04/2000	केतु	04/11/2000	शुक्र	11/10/2001
शनि	31/12/1997	बुध	15/08/1998	केतु	25/05/2000	शुक्र	06/12/2000	सूर्य	27/10/2001

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
27/10/2001		11/06/2002		16/01/2004		18/01/2006		04/11/2007	
11/06/2002		16/01/2004		18/01/2006		04/11/2007		31/07/2008	
मंगल	09/11/2001	राहु	07/09/2002	शनि	11/05/2004	बुध	21/04/2006	केतु	20/11/2007
राहु	13/12/2001	गुरु	24/11/2002	बुध	23/08/2004	केतु	29/05/2006	शुक्र	04/01/2008
गुरु	12/01/2002	शनि	24/02/2003	केतु	05/10/2004	शुक्र	15/09/2006	सूर्य	18/01/2008
शनि	17/02/2002	बुध	18/05/2003	शुक्र	04/02/2005	सूर्य	18/10/2006	चंद्र	09/02/2008
बुध	22/03/2002	केतु	21/06/2003	सूर्य	13/03/2005	चंद्र	12/12/2006	मंगल	25/02/2008
केतु	04/04/2002	शुक्र	26/09/2003	चंद्र	13/05/2005	मंगल	19/01/2007	राहु	05/04/2008
शुक्र	12/05/2002	सूर्य	26/10/2003	मंगल	24/06/2005	राहु	27/04/2007	गुरु	11/05/2008
सूर्य	23/05/2002	चंद्र	13/12/2003	राहु	12/10/2005	गुरु	24/07/2007	शनि	23/06/2008
चंद्र	11/06/2002	मंगल	16/01/2004	गुरु	18/01/2006	शनि	04/11/2007	बुध	31/07/2008

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
31/07/2008		10/09/2010		30/04/2011		19/05/2012		13/02/2013	
10/09/2010		30/04/2011		19/05/2012		13/02/2013		08/01/2015	
शुक्र	07/12/2008	सूर्य	22/09/2010	चंद्र	01/06/2011	मंगल	04/06/2012	राहु	28/05/2013
सूर्य	14/01/2009	चंद्र	11/10/2010	मंगल	23/06/2011	राहु	14/07/2012	गुरु	29/08/2013
चंद्र	20/03/2009	मंगल	25/10/2010	राहु	20/08/2011	गुरु	19/08/2012	शनि	17/12/2013
मंगल	04/05/2009	राहु	28/11/2010	गुरु	11/10/2011	शनि	01/10/2012	बुध	25/03/2014
राहु	27/08/2009	गुरु	29/12/2010	शनि	11/12/2011	बुध	08/11/2012	केतु	04/05/2014
गुरु	08/12/2009	शनि	04/02/2011	बुध	03/02/2012	केतु	24/11/2012	शुक्र	28/08/2014
शनि	09/04/2010	बुध	09/03/2011	केतु	26/02/2012	शुक्र	08/01/2013	सूर्य	02/10/2014
बुध	27/07/2010	केतु	22/03/2011	शुक्र	30/04/2012	सूर्य	22/01/2013	चंद्र	29/11/2014
केतु	10/09/2010	शुक्र	30/04/2011	सूर्य	19/05/2012	चंद्र	13/02/2013	मंगल	08/01/2015

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
08/01/2015		16/09/2016		25/04/2018		23/12/2018		12/11/2020	
16/09/2016		25/04/2018		23/12/2018		12/11/2020		07/06/2021	
गुरु	31/03/2015	बुध	08/12/2016	केतु	09/05/2018	शुक्र	17/04/2019	सूर्य	22/11/2020
शनि	07/07/2015	केतु	11/01/2017	शुक्र	19/06/2018	सूर्य	21/05/2019	चंद्र	09/12/2020
बुध	02/10/2015	शुक्र	19/04/2017	सूर्य	01/07/2018	चंद्र	18/07/2019	मंगल	21/12/2020
केतु	07/11/2015	सूर्य	18/05/2017	चंद्र	21/07/2018	मंगल	27/08/2019	राहु	21/01/2021
शुक्र	18/02/2016	चंद्र	06/07/2017	मंगल	04/08/2018	राहु	09/12/2019	गुरु	18/02/2021
सूर्य	20/03/2016	मंगल	09/08/2017	राहु	09/09/2018	गुरु	10/03/2020	शनि	23/03/2021
चंद्र	10/05/2016	राहु	05/11/2017	गुरु	11/10/2018	शनि	27/06/2020	बुध	21/04/2021
मंगल	15/06/2016	गुरु	23/01/2018	शनि	19/11/2018	बुध	03/10/2020	केतु	03/05/2021
राहु	16/09/2016	शनि	25/04/2018	बुध	23/12/2018	केतु	12/11/2020	शुक्र	07/06/2021

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
07/06/2021		18/05/2022		14/01/2023		26/09/2024		01/04/2026	
18/05/2022		14/01/2023		26/09/2024		01/04/2026		16/01/2028	
चंद्र	05/07/2021	मंगल	01/06/2022	राहु	17/04/2023	गुरु	09/12/2024	शनि	14/07/2026
मंगल	26/07/2021	राहु	07/07/2022	गुरु	09/07/2023	शनि	06/03/2025	बुध	15/10/2026
राहु	15/09/2021	गुरु	08/08/2022	शनि	15/10/2023	बुध	23/05/2025	केतु	22/11/2026
गुरु	31/10/2021	शनि	15/09/2022	बुध	11/01/2024	केतु	24/06/2025	शुक्र	11/03/2027
शनि	25/12/2021	बुध	20/10/2022	केतु	17/02/2024	शुक्र	24/09/2025	सूर्य	13/04/2027
बुध	12/02/2022	केतु	03/11/2022	शुक्र	30/05/2024	सूर्य	22/10/2025	चंद्र	07/06/2027
केतु	04/03/2022	शुक्र	13/12/2022	सूर्य	30/06/2024	चंद्र	07/12/2025	मंगल	15/07/2027
शुक्र	30/04/2022	सूर्य	25/12/2022	चंद्र	21/08/2024	मंगल	08/01/2026	राहु	21/10/2027
सूर्य	18/05/2022	चंद्र	14/01/2023	मंगल	26/09/2024	राहु	01/04/2026	गुरु	16/01/2028

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
16/01/2028		25/04/2028		03/02/2029		29/04/2029		18/09/2029	
25/04/2028		03/02/2029		29/04/2029		18/09/2029		27/12/2029	
केतु	22/01/2028	शुक्र	11/06/2028	सूर्य	07/02/2029	चंद्र	11/05/2029	मंगल	24/09/2029
शुक्र	08/02/2028	सूर्य	25/06/2028	चंद्र	14/02/2029	मंगल	19/05/2029	राहु	09/10/2029
सूर्य	13/02/2028	चंद्र	19/07/2028	मंगल	19/02/2029	राहु	10/06/2029	गुरु	22/10/2029
चंद्र	21/02/2028	मंगल	05/08/2028	राहु	04/03/2029	गुरु	29/06/2029	शनि	07/11/2029
मंगल	27/02/2028	राहु	16/09/2028	गुरु	15/03/2029	शनि	21/07/2029	बुध	21/11/2029
राहु	13/03/2028	गुरु	24/10/2028	शनि	29/03/2029	बुध	10/08/2029	केतु	27/11/2029
गुरु	26/03/2028	शनि	08/12/2028	बुध	10/04/2029	केतु	18/08/2029	शुक्र	13/12/2029
शनि	11/04/2028	बुध	17/01/2029	केतु	15/04/2029	शुक्र	11/09/2029	सूर्य	18/12/2029
बुध	25/04/2028	केतु	03/02/2029	शुक्र	29/04/2029	सूर्य	18/09/2029	चंद्र	27/12/2029

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
27/12/2029		08/09/2030		24/04/2031		18/01/2032		16/09/2032	
08/09/2030		24/04/2031		18/01/2032		16/09/2032		07/12/2034	
राहु	03/02/2030	गुरु	09/10/2030	शनि	05/06/2031	बुध	22/02/2032	शुक्र	29/01/2033
गुरु	09/03/2030	शनि	14/11/2030	बुध	14/07/2031	केतु	07/03/2032	सूर्य	11/03/2033
शनि	19/04/2030	बुध	16/12/2030	केतु	29/07/2031	शुक्र	16/04/2032	चंद्र	17/05/2033
बुध	25/05/2030	केतु	29/12/2030	शुक्र	12/09/2031	सूर्य	28/04/2032	मंगल	04/07/2033
केतु	09/06/2030	शुक्र	05/02/2031	सूर्य	26/09/2031	चंद्र	18/05/2032	राहु	03/11/2033
शुक्र	21/07/2030	सूर्य	16/02/2031	चंद्र	18/10/2031	मंगल	01/06/2032	गुरु	19/02/2034
सूर्य	03/08/2030	चंद्र	07/03/2031	मंगल	03/11/2031	राहु	08/07/2032	शनि	27/06/2034
चंद्र	24/08/2030	मंगल	21/03/2031	राहु	14/12/2031	गुरु	09/08/2032	बुध	20/10/2034
मंगल	08/09/2030	राहु	24/04/2031	गुरु	18/01/2032	शनि	16/09/2032	केतु	07/12/2034

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
07/12/2034		07/08/2035		16/09/2036		27/06/2037		28/06/2039	
07/08/2035		16/09/2036		27/06/2037		28/06/2039		07/04/2041	
सूर्य	19/12/2034	चंद्र	10/09/2035	मंगल	03/10/2036	राहु	15/10/2037	गुरु	22/09/2039
चंद्र	08/01/2035	मंगल	04/10/2035	राहु	14/11/2036	गुरु	20/01/2038	शनि	03/01/2040
मंगल	22/01/2035	राहु	03/12/2035	गुरु	22/12/2036	शनि	16/05/2038	बुध	04/04/2040
राहु	28/02/2035	गुरु	27/01/2036	शनि	05/02/2037	बुध	27/08/2038	केतु	12/05/2040
गुरु	01/04/2035	शनि	31/03/2036	बुध	17/03/2037	केतु	09/10/2038	शुक्र	28/08/2040
शनि	10/05/2035	बुध	27/05/2036	केतु	03/04/2037	शुक्र	08/02/2039	सूर्य	29/09/2040
बुध	13/06/2035	केतु	20/06/2036	शुक्र	20/05/2037	सूर्य	16/03/2039	चंद्र	23/11/2040
केतु	28/06/2035	शुक्र	27/08/2036	सूर्य	03/06/2037	चंद्र	16/05/2039	मंगल	30/12/2040
शुक्र	07/08/2035	सूर्य	16/09/2036	चंद्र	27/06/2037	मंगल	28/06/2039	राहु	07/04/2041

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
07/04/2041		18/05/2043		07/04/2045		16/01/2046		30/03/2046	
18/05/2043		07/04/2045		16/01/2046		30/03/2046		30/07/2046	
शनि	07/08/2041	बुध	24/08/2043	केतु	23/04/2045	सूर्य	20/01/2046	चंद्र	09/04/2046
बुध	24/11/2041	केतु	03/10/2043	शुक्र	10/06/2045	चंद्र	26/01/2046	मंगल	16/04/2046
केतु	08/01/2042	शुक्र	26/01/2044	सूर्य	24/06/2045	मंगल	30/01/2046	राहु	05/05/2046
शुक्र	17/05/2042	सूर्य	29/02/2044	चंद्र	18/07/2045	राहु	10/02/2046	गुरु	21/05/2046
सूर्य	24/06/2042	चंद्र	27/04/2044	मंगल	03/08/2045	गुरु	20/02/2046	शनि	09/06/2046
चंद्र	28/08/2042	मंगल	06/06/2044	राहु	15/09/2045	शनि	03/03/2046	बुध	26/06/2046
मंगल	11/10/2042	राहु	18/09/2044	गुरु	23/10/2045	बुध	14/03/2046	केतु	03/07/2046
राहु	04/02/2043	गुरु	19/12/2044	शनि	07/12/2045	केतु	18/03/2046	शुक्र	24/07/2046
गुरु	18/05/2043	शनि	07/04/2045	बुध	16/01/2046	शुक्र	30/03/2046	सूर्य	30/07/2046

सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
30/07/2046		23/10/2046		30/05/2047		11/12/2047		29/07/2048	
23/10/2046		30/05/2047		11/12/2047		29/07/2048		21/02/2049	
मंगल	04/08/2046	राहु	25/11/2046	गुरु	25/06/2047	शनि	17/01/2048	बुध	28/08/2048
राहु	17/08/2046	गुरु	24/12/2046	शनि	26/07/2047	बुध	18/02/2048	केतु	09/09/2048
गुरु	28/08/2046	शनि	28/01/2047	बुध	23/08/2047	केतु	03/03/2048	शुक्र	13/10/2048
शनि	10/09/2046	बुध	28/02/2047	केतु	03/09/2047	शुक्र	10/04/2048	सूर्य	23/10/2048
बुध	22/09/2046	केतु	13/03/2047	शुक्र	05/10/2047	सूर्य	22/04/2048	चंद्र	10/11/2048
केतु	27/09/2046	शुक्र	18/04/2047	सूर्य	15/10/2047	चंद्र	11/05/2048	मंगल	22/11/2048
शुक्र	12/10/2046	सूर्य	29/04/2047	चंद्र	31/10/2047	मंगल	25/05/2048	राहु	23/12/2048
सूर्य	16/10/2046	चंद्र	17/05/2047	मंगल	12/11/2047	राहु	28/06/2048	गुरु	19/01/2049
चंद्र	23/10/2046	मंगल	30/05/2047	राहु	11/12/2047	गुरु	29/07/2048	शनि	21/02/2049

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु	
21/02/2049		17/05/2049		16/01/2050		07/08/2050		27/12/2050	
17/05/2049		16/01/2050		07/08/2050		27/12/2050		27/12/2051	
केतु	26/02/2049	शुक्र	27/06/2049	चंद्र	02/02/2050	मंगल	15/08/2050	राहु	20/02/2051
शुक्र	12/03/2049	सूर्य	09/07/2049	मंगल	14/02/2050	राहु	05/09/2050	गुरु	09/04/2051
सूर्य	17/03/2049	चंद्र	30/07/2049	राहु	16/03/2050	गुरु	24/09/2050	शनि	06/06/2051
चंद्र	24/03/2049	मंगल	13/08/2049	गुरु	12/04/2050	शनि	17/10/2050	बुध	28/07/2051
मंगल	29/03/2049	राहु	18/09/2049	शनि	14/05/2050	बुध	06/11/2050	केतु	18/08/2051
राहु	11/04/2049	गुरु	21/10/2049	बुध	12/06/2050	केतु	14/11/2050	शुक्र	18/10/2051
गुरु	22/04/2049	शनि	28/11/2049	केतु	24/06/2050	शुक्र	08/12/2050	सूर्य	05/11/2051
शनि	05/05/2049	बुध	02/01/2050	शुक्र	28/07/2050	सूर्य	15/12/2050	चंद्र	06/12/2051
बुध	17/05/2049	केतु	16/01/2050	सूर्य	07/08/2050	चंद्र	27/12/2050	मंगल	27/12/2051

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
27/12/2051		16/11/2052		06/12/2053		16/11/2054		07/04/2055	
16/11/2052		06/12/2053		16/11/2054		07/04/2055		17/05/2056	
गुरु	08/02/2052	शनि	16/01/2053	बुध	24/01/2054	केतु	25/11/2054	शुक्र	14/06/2055
शनि	31/03/2052	बुध	11/03/2053	केतु	13/02/2054	शुक्र	18/12/2054	सूर्य	04/07/2055
बुध	16/05/2052	केतु	03/04/2053	शुक्र	12/04/2054	सूर्य	25/12/2054	चंद्र	07/08/2055
केतु	04/06/2052	शुक्र	06/06/2053	सूर्य	29/04/2054	चंद्र	06/01/2055	मंगल	31/08/2055
शुक्र	28/07/2052	सूर्य	26/06/2053	चंद्र	28/05/2054	मंगल	15/01/2055	राहु	31/10/2055
सूर्य	13/08/2052	चंद्र	28/07/2053	मंगल	17/06/2054	राहु	05/02/2055	गुरु	24/12/2055
चंद्र	09/09/2052	मंगल	19/08/2053	राहु	08/08/2054	गुरु	24/02/2055	शनि	26/02/2056
मंगल	28/09/2052	राहु	16/10/2053	गुरु	23/09/2054	शनि	18/03/2055	बुध	24/04/2056
राहु	16/11/2052	गुरु	06/12/2053	शनि	16/11/2054	बुध	07/04/2055	केतु	17/05/2056

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
17/05/2056		16/09/2056		24/12/2056		06/09/2057		21/04/2058	
16/09/2056		24/12/2056		06/09/2057		21/04/2058		16/01/2059	
सूर्य	23/05/2056	मंगल	22/09/2056	राहु	01/02/2057	गुरु	06/10/2057	शनि	03/06/2058
चंद्र	02/06/2056	राहु	07/10/2056	गुरु	07/03/2057	शनि	11/11/2057	बुध	11/07/2058
मंगल	10/06/2056	गुरु	20/10/2056	शनि	16/04/2057	बुध	14/12/2057	केतु	27/07/2058
राहु	28/06/2056	शनि	05/11/2056	बुध	23/05/2057	केतु	27/12/2057	शुक्र	10/09/2058
गुरु	14/07/2056	बुध	19/11/2056	केतु	06/06/2057	शुक्र	03/02/2058	सूर्य	24/09/2058
शनि	02/08/2056	केतु	25/11/2056	शुक्र	19/07/2057	सूर्य	14/02/2058	चंद्र	16/10/2058
बुध	20/08/2056	शुक्र	11/12/2056	सूर्य	01/08/2057	चंद्र	05/03/2058	मंगल	01/11/2058
केतु	27/08/2056	सूर्य	16/12/2056	चंद्र	22/08/2057	मंगल	18/03/2058	राहु	11/12/2058
शुक्र	16/09/2056	चंद्र	24/12/2056	मंगल	06/09/2057	राहु	21/04/2058	गुरु	16/01/2059

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 11 वर्ष 3 मास 22 दिन

गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष	
11/12/1983		04/04/1995		04/04/2007		03/04/2028		03/04/2034	
04/04/1995		04/04/2007		03/04/2028		03/04/2034		03/04/2049	
	00/00/0000	राहु	03/08/1996	शुक्र	04/05/2011	सूर्य	03/08/2028	चंद्र	03/05/2036
	11/12/1983	शुक्र	03/12/1998	सूर्य	03/07/2012	चंद्र	03/06/2029	मंगल	13/06/2037
शुक्र	27/05/1985	सूर्य	03/08/1999	चंद्र	03/06/2015	मंगल	12/11/2029	बुध	24/10/2039
सूर्य	17/06/1986	चंद्र	03/04/2001	मंगल	23/12/2016	बुध	23/10/2030	शनि	14/03/2041
चंद्र	05/02/1989	मंगल	22/02/2002	बुध	13/04/2020	शनि	14/05/2031	गुरु	03/11/2043
मंगल	04/07/1990	बुध	13/01/2004	शनि	24/03/2022	गुरु	03/06/2032	राहु	03/07/2045
बुध	30/06/1993	शनि	22/02/2005	गुरु	03/12/2025	राहु	01/02/2033	शुक्र	03/06/2048
शनि	04/04/1995	गुरु	04/04/2007	राहु	03/04/2028	शुक्र	03/04/2034	सूर्य	03/04/2049

मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष	
03/04/2049		03/04/2057		03/04/2074		03/04/2084	
03/04/2057		03/04/2074		03/04/2084		00/00/0000	
मंगल	06/11/2049	बुध	07/12/2059	शनि	08/03/2075	गुरु	07/08/2087
बुध	09/02/2051	शनि	03/07/2061	गुरु	09/12/2076	राहु	16/09/2089
शनि	06/11/2051	गुरु	30/06/2064	राहु	19/01/2078	शुक्र	11/12/2091
गुरु	03/04/2053	राहु	21/05/2066	शुक्र	30/12/2079		00/00/0000
राहु	22/02/2054	शुक्र	09/09/2069	सूर्य	20/07/2080		00/00/0000
शुक्र	13/09/2055	सूर्य	20/08/2070	चंद्र	09/12/2081		00/00/0000
सूर्य	22/02/2056	चंद्र	29/12/2072	मंगल	06/09/2082		00/00/0000
चंद्र	03/04/2057	मंगल	03/04/2074	बुध	03/04/2084		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध	
11/12/1983		27/05/1985		17/06/1986		05/02/1989		04/07/1990	
27/05/1985		17/06/1986		05/02/1989		04/07/1990		30/06/1993	
	00/00/0000	सूर्य	18/06/1985	चंद्र	29/10/1986	मंगल	15/03/1989	बुध	23/12/1990
	00/00/0000	चंद्र	10/08/1985	मंगल	08/01/1987	बुध	04/06/1989	शनि	03/04/1991
	00/00/0000	मंगल	08/09/1985	बुध	09/06/1987	शनि	21/07/1989	गुरु	12/10/1991
	11/12/1983	बुध	07/11/1985	शनि	06/09/1987	गुरु	20/10/1989	राहु	10/02/1992
बुध	01/01/1984	शनि	13/12/1985	गुरु	23/02/1988	राहु	16/12/1989	शुक्र	10/09/1992
शनि	05/05/1984	गुरु	19/02/1986	राहु	09/06/1988	शुक्र	26/03/1990	सूर्य	09/11/1992
गुरु	28/12/1984	राहु	03/04/1986	शुक्र	13/12/1988	सूर्य	23/04/1990	चंद्र	10/04/1993
राहु	27/05/1985	शुक्र	17/06/1986	सूर्य	05/02/1989	चंद्र	04/07/1990	मंगल	30/06/1993

गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
30/06/1993		04/04/1995		03/08/1996		03/12/1998		03/08/1999	
04/04/1995		03/08/1996		03/12/1998		03/08/1999		03/04/2001	
शनि	29/08/1993	राहु	28/05/1995	शुक्र	15/01/1997	सूर्य	16/12/1998	चंद्र	27/10/1999
गुरु	20/12/1993	शुक्र	30/08/1995	सूर्य	04/03/1997	चंद्र	19/01/1999	मंगल	11/12/1999
राहु	01/03/1994	सूर्य	26/09/1995	चंद्र	30/06/1997	मंगल	06/02/1999	बुध	16/03/2000
शुक्र	04/07/1994	चंद्र	03/12/1995	मंगल	01/09/1997	बुध	17/03/1999	शनि	11/05/2000
सूर्य	09/08/1994	मंगल	08/01/1996	बुध	13/01/1998	शनि	08/04/1999	गुरु	26/08/2000
चंद्र	06/11/1994	बुध	25/03/1996	शनि	02/04/1998	गुरु	21/05/1999	राहु	02/11/2000
मंगल	23/12/1994	शनि	09/05/1996	गुरु	30/08/1998	राहु	17/06/1999	शुक्र	28/02/2001
बुध	04/04/1995	गुरु	03/08/1996	राहु	03/12/1998	शुक्र	03/08/1999	सूर्य	03/04/2001

राहु - मंगल		राहु - बुध		राहु - शनि		राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र	
03/04/2001		22/02/2002		13/01/2004		22/02/2005		04/04/2007	
22/02/2002		13/01/2004		22/02/2005		04/04/2007		04/05/2011	
मंगल	27/04/2001	बुध	10/06/2002	शनि	19/02/2004	गुरु	07/07/2005	शुक्र	19/01/2008
बुध	17/06/2001	शनि	13/08/2002	गुरु	01/05/2004	राहु	01/10/2005	सूर्य	10/04/2008
शनि	17/07/2001	गुरु	13/12/2002	राहु	15/06/2004	शुक्र	28/02/2006	चंद्र	04/11/2008
गुरु	12/09/2001	राहु	27/02/2003	शुक्र	02/09/2004	सूर्य	12/04/2006	मंगल	22/02/2009
राहु	19/10/2001	शुक्र	11/07/2003	सूर्य	24/09/2004	चंद्र	28/07/2006	बुध	15/10/2009
शुक्र	21/12/2001	सूर्य	19/08/2003	चंद्र	20/11/2004	मंगल	23/09/2006	शनि	02/03/2010
सूर्य	08/01/2002	चंद्र	23/11/2003	मंगल	20/12/2004	बुध	22/01/2007	गुरु	19/11/2010
चंद्र	22/02/2002	मंगल	13/01/2004	बुध	22/02/2005	शनि	04/04/2007	राहु	04/05/2011

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध		शुक्र - शनि	
04/05/2011		03/07/2012		03/06/2015		23/12/2016		13/04/2020	
03/07/2012		03/06/2015		23/12/2016		13/04/2020		24/03/2022	
सूर्य	28/05/2011	चंद्र	28/11/2012	मंगल	16/07/2015	बुध	01/07/2017	शनि	18/06/2020
चंद्र	26/07/2011	मंगल	15/02/2013	बुध	13/10/2015	शनि	21/10/2017	गुरु	21/10/2020
मंगल	26/08/2011	बुध	02/08/2013	शनि	05/12/2015	गुरु	21/05/2018	राहु	08/01/2021
बुध	02/11/2011	शनि	08/11/2013	गुरु	14/03/2016	राहु	02/10/2018	शुक्र	26/05/2021
शनि	11/12/2011	गुरु	15/05/2014	राहु	16/05/2016	शुक्र	25/05/2019	सूर्य	04/07/2021
गुरु	24/02/2012	राहु	10/09/2014	शुक्र	03/09/2016	सूर्य	31/07/2019	चंद्र	11/10/2021
राहु	11/04/2012	शुक्र	05/04/2015	सूर्य	05/10/2016	चंद्र	15/01/2020	मंगल	02/12/2021
शुक्र	03/07/2012	सूर्य	03/06/2015	चंद्र	23/12/2016	मंगल	13/04/2020	बुध	24/03/2022

शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल	
24/03/2022		03/12/2025		03/04/2028		03/08/2028		03/06/2029	
03/12/2025		03/04/2028		03/08/2028		03/06/2029		12/11/2029	
गुरु	17/11/2022	राहु	07/03/2026	सूर्य	10/04/2028	चंद्र	14/09/2028	मंगल	15/06/2029
राहु	16/04/2023	शुक्र	20/08/2026	चंद्र	27/04/2028	मंगल	06/10/2028	बुध	11/07/2029
शुक्र	03/01/2024	सूर्य	06/10/2026	मंगल	06/05/2028	बुध	23/11/2028	शनि	26/07/2029
सूर्य	18/03/2024	चंद्र	02/02/2027	बुध	25/05/2028	शनि	22/12/2028	गुरु	23/08/2029
चंद्र	21/09/2024	मंगल	06/04/2027	शनि	05/06/2028	गुरु	13/02/2029	राहु	10/09/2029
मंगल	30/12/2024	बुध	18/08/2027	गुरु	26/06/2028	राहु	19/03/2029	शुक्र	12/10/2029
बुध	31/07/2025	शनि	05/11/2027	राहु	10/07/2028	शुक्र	17/05/2029	सूर्य	21/10/2029
शनि	03/12/2025	गुरु	03/04/2028	शुक्र	03/08/2028	सूर्य	03/06/2029	चंद्र	12/11/2029

सूर्य - बुध		सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र	
12/11/2029		23/10/2030		14/05/2031		03/06/2032		01/02/2033	
23/10/2030		14/05/2031		03/06/2032		01/02/2033		03/04/2034	
बुध	06/01/2030	शनि	11/11/2030	गुरु	21/07/2031	राहु	30/06/2032	शुक्र	25/04/2033
शनि	07/02/2030	गुरु	17/12/2030	राहु	02/09/2031	शुक्र	16/08/2032	सूर्य	19/05/2033
गुरु	08/04/2030	राहु	08/01/2031	शुक्र	16/11/2031	सूर्य	30/08/2032	चंद्र	17/07/2033
राहु	17/05/2030	शुक्र	17/02/2031	सूर्य	07/12/2031	चंद्र	02/10/2032	मंगल	18/08/2033
शुक्र	23/07/2030	सूर्य	28/02/2031	चंद्र	30/01/2032	मंगल	21/10/2032	बुध	24/10/2033
सूर्य	11/08/2030	चंद्र	28/03/2031	मंगल	27/02/2032	बुध	28/11/2032	शनि	02/12/2033
चंद्र	28/09/2030	मंगल	12/04/2031	बुध	28/04/2032	शनि	20/12/2032	गुरु	15/02/2034
मंगल	23/10/2030	बुध	14/05/2031	शनि	03/06/2032	गुरु	01/02/2033	राहु	03/04/2034

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - चंद्र	
03/04/2034	
03/05/2036	
चंद्र	18/07/2034
मंगल	12/09/2034
बुध	10/01/2035
शनि	22/03/2035
गुरु	03/08/2035
राहु	26/10/2035
शुक्र	22/03/2036
सूर्य	03/05/2036

चंद्र - मंगल	
03/05/2036	
13/06/2037	
मंगल	02/06/2036
बुध	05/08/2036
शनि	12/09/2036
गुरु	22/11/2036
राहु	06/01/2037
शुक्र	26/03/2037
सूर्य	18/04/2037
चंद्र	13/06/2037

चंद्र - बुध	
13/06/2037	
24/10/2039	
बुध	27/10/2037
शनि	15/01/2038
गुरु	15/06/2038
राहु	19/09/2038
शुक्र	06/03/2039
सूर्य	23/04/2039
चंद्र	21/08/2039
मंगल	24/10/2039

चंद्र - शनि	
24/10/2039	
14/03/2041	
शनि	10/12/2039
गुरु	08/03/2040
राहु	03/05/2040
शुक्र	10/08/2040
सूर्य	07/09/2040
चंद्र	16/11/2040
मंगल	24/12/2040
बुध	14/03/2041

चंद्र - गुरु	
14/03/2041	
03/11/2043	
गुरु	30/08/2041
राहु	15/12/2041
शुक्र	21/06/2042
सूर्य	13/08/2042
चंद्र	25/12/2042
मंगल	07/03/2043
बुध	05/08/2043
शनि	03/11/2043

चंद्र - राहु	
03/11/2043	
03/07/2045	
राहु	09/01/2044
शुक्र	07/05/2044
सूर्य	10/06/2044
चंद्र	02/09/2044
मंगल	17/10/2044
बुध	21/01/2045
शनि	18/03/2045
गुरु	03/07/2045

चंद्र - शुक्र	
03/07/2045	
03/06/2048	
शुक्र	27/01/2046
सूर्य	27/03/2046
चंद्र	22/08/2046
मंगल	09/11/2046
बुध	25/04/2047
शनि	02/08/2047
गुरु	05/02/2048
राहु	03/06/2048

चंद्र - सूर्य	
03/06/2048	
03/04/2049	
सूर्य	20/06/2048
चंद्र	01/08/2048
मंगल	23/08/2048
बुध	10/10/2048
शनि	08/11/2048
गुरु	31/12/2048
राहु	03/02/2049
शुक्र	03/04/2049

मंगल - मंगल	
03/04/2049	
06/11/2049	
मंगल	19/04/2049
बुध	23/05/2049
शनि	12/06/2049
गुरु	20/07/2049
राहु	13/08/2049
शुक्र	24/09/2049
सूर्य	07/10/2049
चंद्र	06/11/2049

मंगल - बुध	
06/11/2049	
09/02/2051	
बुध	17/01/2050
शनि	01/03/2050
गुरु	20/05/2050
राहु	11/07/2050
शुक्र	08/10/2050
सूर्य	03/11/2050
चंद्र	05/01/2051
मंगल	09/02/2051

मंगल - शनि	
09/02/2051	
06/11/2051	
शनि	06/03/2051
गुरु	22/04/2051
राहु	22/05/2051
शुक्र	14/07/2051
सूर्य	29/07/2051
चंद्र	04/09/2051
मंगल	24/09/2051
बुध	06/11/2051

मंगल - गुरु	
06/11/2051	
03/04/2053	
गुरु	05/02/2052
राहु	02/04/2052
शुक्र	11/07/2052
सूर्य	08/08/2052
चंद्र	19/10/2052
मंगल	26/11/2052
बुध	15/02/2053
शनि	03/04/2053

मंगल - राहु	
03/04/2053	
22/02/2054	
राहु	09/05/2053
शुक्र	11/07/2053
सूर्य	29/07/2053
चंद्र	12/09/2053
मंगल	07/10/2053
बुध	27/11/2053
शनि	27/12/2053
गुरु	22/02/2054

मंगल - शुक्र	
22/02/2054	
13/09/2055	
शुक्र	12/06/2054
सूर्य	14/07/2054
चंद्र	01/10/2054
मंगल	12/11/2054
बुध	09/02/2055
शनि	03/04/2055
गुरु	12/07/2055
राहु	13/09/2055

मंगल - सूर्य	
13/09/2055	
22/02/2056	
सूर्य	22/09/2055
चंद्र	15/10/2055
मंगल	27/10/2055
बुध	21/11/2055
शनि	06/12/2055
गुरु	04/01/2056
राहु	22/01/2056
शुक्र	22/02/2056

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - चंद्र		बुध - बुध		बुध - शनि		बुध - गुरु		बुध - राहु	
22/02/2056		03/04/2057		07/12/2059		03/07/2061		30/06/2064	
03/04/2057		07/12/2059		03/07/2061		30/06/2064		21/05/2066	
चंद्र	19/04/2056	बुध	04/09/2057	शनि	29/01/2060	गुरु	12/01/2062	राहु	14/09/2064
मंगल	19/05/2056	शनि	03/12/2057	गुरु	09/05/2060	राहु	13/05/2062	शुक्र	27/01/2065
बुध	22/07/2056	गुरु	24/05/2058	राहु	12/07/2060	शुक्र	11/12/2062	सूर्य	06/03/2065
शनि	28/08/2056	राहु	10/09/2058	शुक्र	01/11/2060	सूर्य	10/02/2063	चंद्र	10/06/2065
गुरु	08/11/2056	शुक्र	19/03/2059	सूर्य	02/12/2060	चंद्र	12/07/2063	मंगल	31/07/2065
राहु	23/12/2056	सूर्य	12/05/2059	चंद्र	20/02/2061	मंगल	01/10/2063	बुध	16/11/2065
शुक्र	12/03/2057	चंद्र	25/09/2059	मंगल	04/04/2061	बुध	21/03/2064	शनि	19/01/2066
सूर्य	03/04/2057	मंगल	07/12/2059	बुध	03/07/2061	शनि	30/06/2064	गुरु	21/05/2066

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		शनि - शनि	
21/05/2066		09/09/2069		20/08/2070		29/12/2072		03/04/2074	
09/09/2069		20/08/2070		29/12/2072		03/04/2074		08/03/2075	
शुक्र	10/01/2067	सूर्य	28/09/2069	चंद्र	18/12/2070	मंगल	01/02/2073	शनि	05/05/2074
सूर्य	19/03/2067	चंद्र	15/11/2069	मंगल	20/02/2071	बुध	15/04/2073	गुरु	03/07/2074
चंद्र	02/09/2067	मंगल	11/12/2069	बुध	05/07/2071	शनि	27/05/2073	राहु	10/08/2074
मंगल	01/12/2067	बुध	03/02/2070	शनि	23/09/2071	गुरु	16/08/2073	शुक्र	15/10/2074
बुध	08/06/2068	शनि	07/03/2070	गुरु	22/02/2072	राहु	07/10/2073	सूर्य	02/11/2074
शनि	28/09/2068	गुरु	07/05/2070	राहु	28/05/2072	शुक्र	04/01/2074	चंद्र	19/12/2074
गुरु	28/04/2069	राहु	14/06/2070	शुक्र	12/11/2072	सूर्य	29/01/2074	मंगल	13/01/2075
राहु	09/09/2069	शुक्र	20/08/2070	सूर्य	29/12/2072	चंद्र	03/04/2074	बुध	08/03/2075

शनि - गुरु		शनि - राहु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
08/03/2075		09/12/2076		19/01/2078		30/12/2079		20/07/2080	
09/12/2076		19/01/2078		30/12/2079		20/07/2080		09/12/2081	
गुरु	29/06/2075	राहु	23/01/2077	शुक्र	06/06/2078	सूर्य	10/01/2080	चंद्र	29/09/2080
राहु	08/09/2075	शुक्र	12/04/2077	सूर्य	16/07/2078	चंद्र	08/02/2080	मंगल	05/11/2080
शुक्र	11/01/2076	सूर्य	05/05/2077	चंद्र	22/10/2078	मंगल	23/02/2080	बुध	24/01/2081
सूर्य	16/02/2076	चंद्र	30/06/2077	मंगल	14/12/2078	बुध	26/03/2080	शनि	12/03/2081
चंद्र	15/05/2076	मंगल	30/07/2077	बुध	05/04/2079	शनि	13/04/2080	गुरु	09/06/2081
मंगल	01/07/2076	बुध	02/10/2077	शनि	09/06/2079	गुरु	19/05/2080	राहु	05/08/2081
बुध	11/10/2076	शनि	09/11/2077	गुरु	12/10/2079	राहु	11/06/2080	शुक्र	11/11/2081
शनि	09/12/2076	गुरु	19/01/2078	राहु	30/12/2079	शुक्र	20/07/2080	सूर्य	09/12/2081

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : धान्या 2 वर्ष 4 मास 9 दिन

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
11/12/1983		20/04/1986		20/04/1990		21/04/1995		20/04/2001	
20/04/1986		20/04/1990		21/04/1995		20/04/2001		20/04/2008	
	00/00/0000	भ्राम	30/09/1986	भद्रि	30/12/1990	उल्क	20/04/1996	सिद्ध	30/08/2002
	11/12/1983	भद्रि	21/04/1987	उल्क	30/10/1991	सिद्ध	20/06/1997	संक	20/03/2004
भद्रि	20/04/1984	उल्क	20/12/1987	सिद्ध	19/10/1992	संक	20/10/1998	मंग	30/05/2004
उल्क	19/10/1984	सिद्ध	29/09/1988	संक	29/11/1993	मंग	20/12/1998	पिंग	19/10/2004
सिद्ध	20/05/1985	संक	20/08/1989	मंग	19/01/1994	पिंग	21/04/1999	धांय	20/05/2005
संक	19/01/1986	मंग	29/09/1989	पिंग	30/04/1994	धांय	20/10/1999	भ्राम	01/03/2006
मंग	18/02/1986	पिंग	20/12/1989	धांय	30/09/1994	भ्राम	20/06/2000	भद्रि	19/02/2007
पिंग	20/04/1986	धांय	20/04/1990	भ्राम	21/04/1995	भद्रि	20/04/2001	उल्क	20/04/2008

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
20/04/2008		20/04/2016		20/04/2017		21/04/2019		20/04/2022	
20/04/2016		20/04/2017		21/04/2019		20/04/2022		20/04/2026	
संक	29/01/2010	मंग	30/04/2016	पिंग	31/05/2017	धांय	21/07/2019	भ्राम	30/09/2022
मंग	20/04/2010	पिंग	20/05/2016	धांय	30/07/2017	भ्राम	20/11/2019	भद्रि	21/04/2023
पिंग	30/09/2010	धांय	20/06/2016	भ्राम	20/10/2017	भद्रि	20/04/2020	उल्क	20/12/2023
धांय	31/05/2011	भ्राम	30/07/2016	भद्रि	29/01/2018	उल्क	19/10/2020	सिद्ध	29/09/2024
भ्राम	20/04/2012	भद्रि	19/09/2016	उल्क	31/05/2018	सिद्ध	20/05/2021	संक	20/08/2025
भद्रि	31/05/2013	उल्क	19/11/2016	सिद्ध	20/10/2018	संक	19/01/2022	मंग	29/09/2025
उल्क	30/09/2014	सिद्ध	29/01/2017	संक	31/03/2019	मंग	18/02/2022	पिंग	20/12/2025
सिद्ध	20/04/2016	संक	20/04/2017	मंग	21/04/2019	पिंग	20/04/2022	धांय	20/04/2026

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
20/04/2026		21/04/2031		20/04/2037		20/04/2044		20/04/2052	
21/04/2031		20/04/2037		20/04/2044		20/04/2052		20/04/2053	
भद्रि	30/12/2026	उल्क	20/04/2032	सिद्ध	30/08/2038	संक	29/01/2046	मंग	30/04/2052
उल्क	30/10/2027	सिद्ध	20/06/2033	संक	20/03/2040	मंग	20/04/2046	पिंग	20/05/2052
सिद्ध	19/10/2028	संक	20/10/2034	मंग	30/05/2040	पिंग	30/09/2046	धांय	20/06/2052
संक	29/11/2029	मंग	20/12/2034	पिंग	19/10/2040	धांय	31/05/2047	भ्राम	30/07/2052
मंग	19/01/2030	पिंग	21/04/2035	धांय	20/05/2041	भ्राम	20/04/2048	भद्रि	19/09/2052
पिंग	30/04/2030	धांय	20/10/2035	भ्राम	01/03/2042	भद्रि	31/05/2049	उल्क	19/11/2052
धांय	30/09/2030	भ्राम	20/06/2036	भद्रि	19/02/2043	उल्क	30/09/2050	सिद्ध	29/01/2053
भ्राम	21/04/2031	भद्रि	20/04/2037	उल्क	20/04/2044	सिद्ध	20/04/2052	संक	20/04/2053

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
20/04/2053		21/04/2055		20/04/2058		20/04/2062		21/04/2067	
21/04/2055		20/04/2058		20/04/2062		21/04/2067		20/04/2073	
पिंग	31/05/2053	धांय	21/07/2055	भ्राम	30/09/2058	भद्रि	30/12/2062	उल्क	20/04/2068
धांय	30/07/2053	भ्राम	20/11/2055	भद्रि	21/04/2059	उल्क	30/10/2063	सिद्ध	20/06/2069
भ्राम	20/10/2053	भद्रि	20/04/2056	उल्क	20/12/2059	सिद्ध	19/10/2064	संक	20/10/2070
भद्रि	29/01/2054	उल्क	19/10/2056	सिद्ध	29/09/2060	संक	29/11/2065	मंग	20/12/2070
उल्क	31/05/2054	सिद्ध	20/05/2057	संक	20/08/2061	मंग	19/01/2066	पिंग	21/04/2071
सिद्ध	20/10/2054	संक	19/01/2058	मंग	29/09/2061	पिंग	30/04/2066	धांय	20/10/2071
संक	31/03/2055	मंग	18/02/2058	पिंग	20/12/2061	धांय	30/09/2066	भ्राम	20/06/2072
मंग	21/04/2055	पिंग	20/04/2058	धांय	20/04/2062	भ्राम	21/04/2067	भद्रि	20/04/2073

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
20/04/2073		20/04/2080		20/04/2088		20/04/2089		21/04/2091	
20/04/2080		20/04/2088		20/04/2089		21/04/2091		00/00/0000	
सिद्ध	30/08/2074	संक	29/01/2082	मंग	30/04/2088	पिंग	31/05/2089	धांय	21/07/2091
संक	20/03/2076	मंग	20/04/2082	पिंग	20/05/2088	धांय	30/07/2089	भ्राम	20/11/2091
मंग	30/05/2076	पिंग	30/09/2082	धांय	20/06/2088	भ्राम	20/10/2089	भद्रि	11/12/2091
पिंग	19/10/2076	धांय	31/05/2083	भ्राम	30/07/2088	भद्रि	29/01/2090		00/00/0000
धांय	20/05/2077	भ्राम	20/04/2084	भद्रि	19/09/2088	उल्क	31/05/2090		00/00/0000
भ्राम	01/03/2078	भद्रि	31/05/2085	उल्क	19/11/2088	सिद्ध	20/10/2090		00/00/0000
भद्रि	19/02/2079	उल्क	30/09/2086	सिद्ध	29/01/2089	संक	31/03/2091		00/00/0000
उल्क	20/04/2080	सिद्ध	20/04/2088	संक	20/04/2089	मंग	21/04/2091		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

भ्राम - मंग		भ्राम - पिंग		भ्राम - धांय		भद्रि - भद्रि		भद्रि - उल्क	
20/08/2025		29/09/2025		20/12/2025		20/04/2026		30/12/2026	
29/09/2025		20/12/2025		20/04/2026		30/12/2026		30/10/2027	
मंग	21/08/2025	पिंग	04/10/2025	धांय	30/12/2025	भद्रि	25/05/2026	उल्क	19/02/2027
पिंग	23/08/2025	धांय	11/10/2025	भ्राम	12/01/2026	उल्क	07/07/2026	सिद्ध	19/04/2027
धांय	27/08/2025	भ्राम	20/10/2025	भद्रि	29/01/2026	सिद्ध	25/08/2026	संक	25/06/2027
भ्राम	31/08/2025	भद्रि	31/10/2025	उल्क	18/02/2026	संक	20/10/2026	मंग	04/07/2027
भद्रि	06/09/2025	उल्क	13/11/2025	सिद्ध	14/03/2026	मंग	27/10/2026	पिंग	21/07/2027
उल्क	12/09/2025	सिद्ध	29/11/2025	संक	10/04/2026	पिंग	11/11/2026	धांय	15/08/2027
सिद्ध	20/09/2025	संक	17/12/2025	मंग	13/04/2026	धांय	02/12/2026	भ्राम	18/09/2027
संक	29/09/2025	मंग	20/12/2025	पिंग	20/04/2026	भ्राम	30/12/2026	भद्रि	30/10/2027

भद्रि - सिद्ध		भद्रि - संक		भद्रि - मंग		भद्रि - पिंग		भद्रि - धांय	
30/10/2027		19/10/2028		29/11/2029		19/01/2030		30/04/2030	
19/10/2028		29/11/2029		19/01/2030		30/04/2030		30/09/2030	
सिद्ध	07/01/2028	संक	18/01/2029	मंग	01/12/2029	पिंग	25/01/2030	धांय	13/05/2030
संक	26/03/2028	मंग	29/01/2029	पिंग	03/12/2029	धांय	02/02/2030	भ्राम	30/05/2030
मंग	05/04/2028	पिंग	20/02/2029	धांय	08/12/2029	भ्राम	13/02/2030	भद्रि	20/06/2030
पिंग	25/04/2028	धांय	26/03/2029	भ्राम	13/12/2029	भद्रि	27/02/2030	उल्क	16/07/2030
धांय	24/05/2028	भ्राम	10/05/2029	भद्रि	20/12/2029	उल्क	16/03/2030	सिद्ध	14/08/2030
भ्राम	03/07/2028	भद्रि	06/07/2029	उल्क	29/12/2029	सिद्ध	05/04/2030	संक	17/09/2030
भद्रि	21/08/2028	उल्क	11/09/2029	सिद्ध	08/01/2030	संक	28/04/2030	मंग	21/09/2030
उल्क	19/10/2028	सिद्ध	29/11/2029	संक	19/01/2030	मंग	30/04/2030	पिंग	30/09/2030

भद्रि - भ्राम		उल्क - उल्क		उल्क - सिद्ध		उल्क - संक		उल्क - मंग	
30/09/2030		21/04/2031		20/04/2032		20/06/2033		20/10/2034	
21/04/2031		20/04/2032		20/06/2033		20/10/2034		20/12/2034	
भ्राम	22/10/2030	उल्क	20/06/2031	सिद्ध	12/07/2032	संक	06/10/2033	मंग	22/10/2034
भद्रि	19/11/2030	सिद्ध	30/08/2031	संक	14/10/2032	मंग	20/10/2033	पिंग	25/10/2034
उल्क	23/12/2030	संक	20/11/2031	मंग	26/10/2032	पिंग	16/11/2033	धांय	30/10/2034
सिद्ध	01/02/2031	मंग	30/11/2031	पिंग	19/11/2032	धांय	26/12/2033	भ्राम	06/11/2034
संक	18/03/2031	पिंग	20/12/2031	धांय	24/12/2032	भ्राम	18/02/2034	भद्रि	14/11/2034
मंग	23/03/2031	धांय	19/01/2032	भ्राम	10/02/2033	भद्रि	27/04/2034	उल्क	24/11/2034
पिंग	04/04/2031	भ्राम	29/02/2032	भद्रि	10/04/2033	उल्क	17/07/2034	सिद्ध	06/12/2034
धांय	21/04/2031	भद्रि	20/04/2032	उल्क	20/06/2033	सिद्ध	20/10/2034	संक	20/12/2034

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

उल्क - पिंग		उल्क - धांय		उल्क - भ्राम		उल्क - भद्रि		सिद्ध - सिद्ध	
20/12/2034		21/04/2035		20/10/2035		20/06/2036		20/04/2037	
21/04/2035		20/10/2035		20/06/2036		20/04/2037		30/08/2038	
पिंग	27/12/2034	धांय	06/05/2035	भ्राम	16/11/2035	भद्रि	01/08/2036	सिद्ध	26/07/2037
धांय	06/01/2035	भ्राम	26/05/2035	भद्रि	20/12/2035	उल्क	21/09/2036	संक	13/11/2037
भ्राम	19/01/2035	भद्रि	20/06/2035	उल्क	30/01/2036	सिद्ध	19/11/2036	मंग	27/11/2037
भद्रि	05/02/2035	उल्क	21/07/2035	सिद्ध	17/03/2036	संक	25/01/2037	पिंग	25/12/2037
उल्क	25/02/2035	सिद्ध	25/08/2035	संक	10/05/2036	मंग	03/02/2037	धांय	04/02/2038
सिद्ध	21/03/2035	संक	05/10/2035	मंग	17/05/2036	पिंग	20/02/2037	भ्राम	31/03/2038
संक	17/04/2035	मंग	10/10/2035	पिंग	30/05/2036	धांय	17/03/2037	भद्रि	08/06/2038
मंग	21/04/2035	पिंग	20/10/2035	धांय	20/06/2036	भ्राम	20/04/2037	उल्क	30/08/2038

सिद्ध - संक		सिद्ध - मंग		सिद्ध - पिंग		सिद्ध - धांय		सिद्ध - भ्राम	
30/08/2038		20/03/2040		30/05/2040		19/10/2040		20/05/2041	
20/03/2040		30/05/2040		19/10/2040		20/05/2041		01/03/2042	
संक	03/01/2039	मंग	22/03/2040	पिंग	07/06/2040	धांय	06/11/2040	भ्राम	21/06/2041
मंग	19/01/2039	पिंग	26/03/2040	धांय	19/06/2040	भ्राम	30/11/2040	भद्रि	30/07/2041
पिंग	20/02/2039	धांय	01/04/2040	भ्राम	05/07/2040	भद्रि	29/12/2040	उल्क	16/09/2041
धांय	08/04/2039	भ्राम	09/04/2040	भद्रि	25/07/2040	उल्क	03/02/2041	सिद्ध	10/11/2041
भ्राम	10/06/2039	भद्रि	19/04/2040	उल्क	17/08/2040	सिद्ध	16/03/2041	संक	12/01/2042
भद्रि	28/08/2039	उल्क	01/05/2040	सिद्ध	14/09/2040	संक	03/05/2041	मंग	20/01/2042
उल्क	01/12/2039	सिद्ध	15/05/2040	संक	15/10/2040	मंग	09/05/2041	पिंग	05/02/2042
सिद्ध	20/03/2040	संक	30/05/2040	मंग	19/10/2040	पिंग	20/05/2041	धांय	01/03/2042

सिद्ध - भद्रि		सिद्ध - उल्क		संक - संक		संक - मंग		संक - पिंग	
01/03/2042		19/02/2043		20/04/2044		29/01/2046		20/04/2046	
19/02/2043		20/04/2044		29/01/2046		20/04/2046		30/09/2046	
भद्रि	19/04/2042	उल्क	01/05/2043	संक	11/09/2044	मंग	31/01/2046	पिंग	29/04/2046
उल्क	17/06/2042	सिद्ध	23/07/2043	मंग	29/09/2044	पिंग	05/02/2046	धांय	13/05/2046
सिद्ध	25/08/2042	संक	25/10/2043	पिंग	04/11/2044	धांय	12/02/2046	भ्राम	31/05/2046
संक	12/11/2042	मंग	06/11/2043	धांय	28/12/2044	भ्राम	21/02/2046	भद्रि	22/06/2046
मंग	22/11/2042	पिंग	30/11/2043	भ्राम	10/03/2045	भद्रि	04/03/2046	उल्क	19/07/2046
पिंग	12/12/2042	धांय	04/01/2044	भद्रि	09/06/2045	उल्क	17/03/2046	सिद्ध	20/08/2046
धांय	10/01/2043	भ्राम	21/02/2044	उल्क	25/09/2045	सिद्ध	02/04/2046	संक	25/09/2046
भ्राम	19/02/2043	भद्रि	20/04/2044	सिद्ध	29/01/2046	संक	20/04/2046	मंग	30/09/2046

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : कर्क 12 वर्ष 5 मास 4 दिन
कुल दशाकाल : 86 वर्ष
तिथि : शतभिषा - 1 अपसव्य
देह : कर्क जीव : धनु

कर्क 21 वर्ष		मीन 10 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		मकर 4 वर्ष		धनु 10 वर्ष	
11/12/1983		15/05/1996		16/05/2006		16/05/2010		16/05/2014	
15/05/1996		16/05/2006		16/05/2010		16/05/2014		15/05/2024	
	00/00/0000	मीन	14/07/1997	कुंभ	23/07/2006	मक	23/07/2010	धनु	14/07/2015
	00/00/0000	कुंभ	31/12/1997	मक	28/09/2006	धनु	08/01/2011	वृश्चि	07/05/2016
	11/12/1983	मक	19/06/1998	धनु	17/03/2007	वृश्चि	07/05/2011	तुला	17/03/2018
मक	22/11/1984	धनु	17/08/1999	वृश्चि	14/07/2007	तुला	03/02/2012	कन्या	03/04/2019
धनु	03/05/1987	वृश्चि	10/06/2000	तुला	11/04/2008	कन्या	05/07/2012	सिंह	02/11/2019
वृश्चि	16/01/1989	तुला	20/04/2002	कन्या	11/09/2008	सिंह	28/09/2012	कर्क	12/04/2022
तुला	13/12/1992	कन्या	07/05/2003	सिंह	05/12/2008	कर्क	20/09/2013	मीन	10/06/2023
कन्या	24/02/1995	सिंह	06/12/2003	कर्क	27/11/2009	मीन	09/03/2014	कुंभ	27/11/2023
सिंह	15/05/1996	कर्क	16/05/2006	मीन	16/05/2010	कुंभ	16/05/2014	मक	15/05/2024

वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		कर्क 21 वर्ष	
15/05/2024		16/05/2031		16/05/2047		15/05/2056		15/05/2061	
16/05/2031		16/05/2047		15/05/2056		15/05/2061		00/00/0000	
वृश्चि	09/12/2024	तुला	07/05/2034	कन्या	24/04/2048	सिंह	29/08/2056	कर्क	01/07/2066
तुला	30/03/2026	कन्या	09/01/2036	सिंह	01/11/2048	कर्क	18/11/2057	मीन	09/12/2068
कन्या	22/12/2026	सिंह	13/12/2036	कर्क	13/01/2051	मीन	19/06/2058	कुंभ	01/12/2069
सिंह	20/05/2027	कर्क	09/11/2040	मीन	30/01/2052	कुंभ	12/09/2058	मक	10/12/2069
कर्क	02/02/2029	मीन	20/09/2042	कुंभ	01/07/2052	मक	05/12/2058		00/00/0000
मीन	27/11/2029	कुंभ	19/06/2043	मक	01/12/2052	धनु	06/07/2059		00/00/0000
कुंभ	26/03/2030	मक	17/03/2044	धनु	18/12/2053	वृश्चि	01/12/2059		00/00/0000
मक	23/07/2030	धनु	25/01/2046	वृश्चि	12/09/2054	तुला	05/11/2060		00/00/0000
धनु	16/05/2031	वृश्चि	16/05/2047	तुला	15/05/2056	कन्या	15/05/2061		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृश्चि - तुला		वृश्चि - कन्या		वृश्चि - सिंह		वृश्चि - कर्क		वृश्चि - मीन	
09/12/2024		30/03/2026		22/12/2026		20/05/2027		02/02/2029	
30/03/2026		22/12/2026		20/05/2027		02/02/2029		27/11/2029	
तुला	08/03/2025	कन्या	27/04/2026	सिंह	31/12/2026	कर्क	20/10/2027	मीन	09/03/2029
कन्या	26/04/2025	सिंह	12/05/2026	कर्क	05/02/2027	मीन	31/12/2027	कुंभ	23/03/2029
सिंह	24/05/2025	कर्क	17/07/2026	मीन	23/02/2027	कुंभ	29/01/2028	मक	06/04/2029
कर्क	17/09/2025	मीन	17/08/2026	कुंभ	02/03/2027	मक	27/02/2028	धनु	10/05/2029
मीन	12/11/2025	कुंभ	29/08/2026	मक	08/03/2027	धनु	10/05/2028	वृश्चि	03/06/2029
कुंभ	04/12/2025	मक	11/09/2026	धनु	26/03/2027	वृश्चि	30/06/2028	तुला	29/07/2029
मक	26/12/2025	धनु	12/10/2026	वृश्चि	07/04/2027	तुला	24/10/2028	कन्या	29/08/2029
धनु	19/02/2026	वृश्चि	03/11/2026	तुला	05/05/2027	कन्या	28/12/2028	सिंह	15/09/2029
वृश्चि	30/03/2026	तुला	22/12/2026	कन्या	20/05/2027	सिंह	02/02/2029	कर्क	27/11/2029

वृश्चि - कुंभ		वृश्चि - मक		वृश्चि - धनु		तुला - तुला		तुला - कन्या	
27/11/2029		26/03/2030		23/07/2030		16/05/2031		07/05/2034	
26/03/2030		23/07/2030		16/05/2031		07/05/2034		09/01/2036	
कुंभ	02/12/2029	मक	31/03/2030	धनु	26/08/2030	तुला	04/12/2031	कन्या	10/07/2034
मक	08/12/2029	धनु	14/04/2030	वृश्चि	19/09/2030	कन्या	27/03/2032	सिंह	15/08/2034
धनु	22/12/2029	वृश्चि	24/04/2030	तुला	14/11/2030	सिंह	29/05/2032	कर्क	11/01/2035
वृश्चि	31/12/2029	तुला	16/05/2030	कन्या	15/12/2030	कर्क	19/02/2033	मीन	23/03/2035
तुला	22/01/2030	कन्या	28/05/2030	सिंह	01/01/2031	मीन	25/06/2033	कुंभ	21/04/2035
कन्या	04/02/2030	सिंह	04/06/2030	कर्क	15/03/2031	कुंभ	15/08/2033	मक	19/05/2035
सिंह	11/02/2030	कर्क	03/07/2030	मीन	18/04/2031	मक	04/10/2033	धनु	29/07/2035
कर्क	12/03/2030	मीन	17/07/2030	कुंभ	02/05/2031	धनु	08/02/2034	वृश्चि	17/09/2035
मीन	26/03/2030	कुंभ	23/07/2030	मक	16/05/2031	वृश्चि	07/05/2034	तुला	09/01/2036

तुला - सिंह		तुला - कर्क		तुला - मीन		तुला - कुंभ		तुला - मक	
09/01/2036		13/12/2036		09/11/2040		20/09/2042		19/06/2043	
13/12/2036		09/11/2040		20/09/2042		19/06/2043		17/03/2044	
सिंह	28/01/2036	कर्क	27/11/2037	मीन	27/01/2041	कुंभ	03/10/2042	मक	01/07/2043
कर्क	20/04/2036	मीन	12/05/2038	कुंभ	28/02/2041	मक	15/10/2042	धनु	02/08/2043
मीन	30/05/2036	कुंभ	17/07/2038	मक	01/04/2041	धनु	16/11/2042	वृश्चि	24/08/2043
कुंभ	15/06/2036	मक	22/09/2038	धनु	19/06/2041	वृश्चि	08/12/2042	तुला	14/10/2043
मक	01/07/2036	धनु	07/03/2039	वृश्चि	13/08/2041	तुला	28/01/2043	कन्या	11/11/2043
धनु	09/08/2036	वृश्चि	01/07/2039	तुला	17/12/2041	कन्या	25/02/2043	सिंह	27/11/2043
वृश्चि	06/09/2036	तुला	22/03/2040	कन्या	27/02/2042	सिंह	13/03/2043	कर्क	01/02/2044
तुला	08/11/2036	कन्या	19/08/2040	सिंह	07/04/2042	कर्क	18/05/2043	मीन	04/03/2044
कन्या	13/12/2036	सिंह	09/11/2040	कर्क	20/09/2042	मीन	19/06/2043	कुंभ	17/03/2044

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

तुला - धनु		तुला - वृश्चि		कन्या - कन्या		कन्या - सिंह		कन्या - कर्क	
17/03/2044		25/01/2046		16/05/2047		24/04/2048		01/11/2048	
25/01/2046		16/05/2047		24/04/2048		01/11/2048		13/01/2051	
धनु	04/06/2044	वृश्चि	05/03/2046	कन्या	21/06/2047	सिंह	05/05/2048	कर्क	16/05/2049
वृश्चि	29/07/2044	तुला	01/06/2046	सिंह	11/07/2047	कर्क	21/06/2048	मीन	17/08/2049
तुला	02/12/2044	कन्या	21/07/2046	कर्क	03/10/2047	मीन	13/07/2048	कुंभ	24/09/2049
कन्या	11/02/2045	सिंह	18/08/2046	मीन	12/11/2047	कुंभ	22/07/2048	मक	31/10/2049
सिंह	23/03/2045	कर्क	12/12/2046	कुंभ	28/11/2047	मक	31/07/2048	धनु	01/02/2050
कर्क	05/09/2045	मीन	05/02/2047	मक	14/12/2047	धनु	22/08/2048	वृश्चि	08/04/2050
मीन	23/11/2045	कुंभ	27/02/2047	धनु	23/01/2048	वृश्चि	06/09/2048	तुला	04/09/2050
कुंभ	25/12/2045	मक	22/03/2047	वृश्चि	20/02/2048	तुला	12/10/2048	कन्या	27/11/2050
मक	25/01/2046	धनु	16/05/2047	तुला	24/04/2048	कन्या	01/11/2048	सिंह	13/01/2051

कन्या - मीन		कन्या - कुंभ		कन्या - मक		कन्या - धनु		कन्या - वृश्चि	
13/01/2051		30/01/2052		01/07/2052		01/12/2052		18/12/2053	
30/01/2052		01/07/2052		01/12/2052		18/12/2053		12/09/2054	
मीन	26/02/2051	कुंभ	06/02/2052	मक	08/07/2052	धनु	14/01/2053	वृश्चि	09/01/2054
कुंभ	16/03/2051	मक	13/02/2052	धनु	26/07/2052	वृश्चि	14/02/2053	तुला	28/02/2054
मक	03/04/2051	धनु	02/03/2052	वृश्चि	07/08/2052	तुला	26/04/2053	कन्या	28/03/2054
धनु	17/05/2051	वृश्चि	14/03/2052	तुला	05/09/2052	कन्या	05/06/2053	सिंह	12/04/2054
वृश्चि	17/06/2051	तुला	12/04/2052	कन्या	21/09/2052	सिंह	28/06/2053	कर्क	16/06/2054
तुला	27/08/2051	कन्या	28/04/2052	सिंह	29/09/2052	कर्क	29/09/2053	मीन	18/07/2054
कन्या	06/10/2051	सिंह	07/05/2052	कर्क	06/11/2052	मीन	12/11/2053	कुंभ	30/07/2054
सिंह	29/10/2051	कर्क	13/06/2052	मीन	24/11/2052	कुंभ	30/11/2053	मक	11/08/2054
कर्क	30/01/2052	मीन	01/07/2052	कुंभ	01/12/2052	मक	18/12/2053	धनु	12/09/2054

कन्या - तुला		सिंह - सिंह		सिंह - कर्क		सिंह - मीन		सिंह - कुंभ	
12/09/2054		15/05/2056		29/08/2056		18/11/2057		19/06/2058	
15/05/2056		29/08/2056		18/11/2057		19/06/2058		12/09/2058	
तुला	03/01/2055	सिंह	21/05/2056	कर्क	16/12/2056	मीन	13/12/2057	कुंभ	23/06/2058
कन्या	08/03/2055	कर्क	16/06/2056	मीन	06/02/2057	कुंभ	23/12/2057	मक	26/06/2058
सिंह	13/04/2055	मीन	29/06/2056	कुंभ	27/02/2057	मक	02/01/2058	धनु	06/07/2058
कर्क	09/09/2055	कुंभ	03/07/2056	मक	19/03/2057	धनु	26/01/2058	वृश्चि	13/07/2058
मीन	19/11/2055	मक	08/07/2056	धनु	10/05/2057	वृश्चि	13/02/2058	तुला	29/07/2058
कुंभ	18/12/2055	धनु	21/07/2056	वृश्चि	16/06/2057	तुला	24/03/2058	कन्या	07/08/2058
मक	15/01/2056	वृश्चि	29/07/2056	तुला	07/09/2057	कन्या	15/04/2058	सिंह	12/08/2058
धनु	26/03/2056	तुला	18/08/2056	कन्या	23/10/2057	सिंह	28/04/2058	कर्क	02/09/2058
वृश्चि	15/05/2056	कन्या	29/08/2056	सिंह	18/11/2057	कर्क	19/06/2058	मीन	12/09/2058

चर दशा

भोग्य दशा काल : धनु 11 वर्ष 0 मास 0 दिन

धनु 11 वर्ष	
11/12/1983	
11/12/1994	
वृश्चि	10/11/1984
तुला	10/10/1985
कन्या	10/09/1986
सिंह	11/08/1987
कर्क	11/07/1988
मिथु	11/06/1989
वृष	12/05/1990
मेष	11/04/1991
मीन	11/03/1992
कुंभ	09/02/1993
मक	10/01/1994
धनु	11/12/1994

वृश्चिक 10 वर्ष	
11/12/1994	
10/12/2004	
तुला	11/10/1995
कन्या	10/08/1996
सिंह	11/06/1997
कर्क	11/04/1998
मिथु	09/02/1999
वृष	11/12/1999
मेष	10/10/2000
मीन	11/08/2001
कुंभ	11/06/2002
मक	11/04/2003
धनु	10/02/2004
वृश्चि	10/12/2004

तुला 12 वर्ष	
10/12/2004	
10/12/2016	
वृश्चि	10/12/2005
धनु	11/12/2006
मक	11/12/2007
कुंभ	10/12/2008
मीन	10/12/2009
मेष	11/12/2010
वृष	11/12/2011
मिथु	10/12/2012
कर्क	10/12/2013
सिंह	11/12/2014
कन्या	11/12/2015
तुला	10/12/2016

कन्या 9 वर्ष	
10/12/2016	
10/12/2025	
तुला	10/09/2017
वृश्चि	11/06/2018
धनु	12/03/2019
मक	11/12/2019
कुंभ	10/09/2020
मीन	11/06/2021
मेष	12/03/2022
वृष	11/12/2022
मिथु	11/09/2023
कर्क	10/06/2024
सिंह	11/03/2025
कन्या	10/12/2025

सिंह 9 वर्ष	
10/12/2025	
11/12/2034	
कन्या	10/09/2026
तुला	11/06/2027
वृश्चि	11/03/2028
धनु	10/12/2028
मक	10/09/2029
कुंभ	11/06/2030
मीन	12/03/2031
मेष	11/12/2031
वृष	10/09/2032
मिथु	11/06/2033
कर्क	12/03/2034
सिंह	11/12/2034

कर्क 5 वर्ष	
11/12/2034	
11/12/2039	
मिथु	12/05/2035
वृष	11/10/2035
मेष	11/03/2036
मीन	10/08/2036
कुंभ	10/01/2037
मक	11/06/2037
धनु	10/11/2037
वृश्चि	11/04/2038
तुला	10/09/2038
कन्या	09/02/2039
सिंह	12/07/2039
कर्क	11/12/2039

मिथुन 6 वर्ष	
11/12/2039	
10/12/2045	
वृष	10/06/2040
मेष	10/12/2040
मीन	11/06/2041
कुंभ	10/12/2041
मक	11/06/2042
धनु	11/12/2042
वृश्चि	11/06/2043
तुला	11/12/2043
कन्या	10/06/2044
सिंह	10/12/2044
कर्क	11/06/2045
मिथु	10/12/2045

वृष 5 वर्ष	
10/12/2045	
11/12/2050	
मेष	12/05/2046
मीन	11/10/2046
कुंभ	12/03/2047
मक	11/08/2047
धनु	10/01/2048
वृश्चि	10/06/2048
तुला	10/11/2048
कन्या	11/04/2049
सिंह	10/09/2049
कर्क	09/02/2050
मिथु	11/07/2050
वृष	11/12/2050

मेष 5 वर्ष	
11/12/2050	
11/12/2055	
वृष	12/05/2051
मिथु	11/10/2051
कर्क	11/03/2052
सिंह	10/08/2052
कन्या	10/01/2053
तुला	11/06/2053
वृश्चि	10/11/2053
धनु	11/04/2054
मक	10/09/2054
कुंभ	09/02/2055
मीन	12/07/2055
मेष	11/12/2055

मीन 4 वर्ष	
11/12/2055	
11/12/2059	
मेष	11/04/2056
वृष	10/08/2056
मिथु	10/12/2056
कर्क	11/04/2057
सिंह	11/08/2057
कन्या	10/12/2057
तुला	11/04/2058
वृश्चि	11/08/2058
धनु	11/12/2058
मक	11/04/2059
कुंभ	11/08/2059
मीन	11/12/2059

कुम्भ 4 वर्ष	
11/12/2059	
11/12/2063	
मीन	11/04/2060
मेष	10/08/2060
वृष	10/12/2060
मिथु	11/04/2061
कर्क	11/08/2061
सिंह	10/12/2061
कन्या	11/04/2062
तुला	11/08/2062
वृश्चि	11/12/2062
धनु	11/04/2063
मक	11/08/2063
कुंभ	11/12/2063

मकर 3 वर्ष	
11/12/2063	
11/12/2066	
धनु	11/03/2064
वृश्चि	10/06/2064
तुला	10/09/2064
कन्या	10/12/2064
सिंह	11/03/2065
कर्क	11/06/2065
मिथु	10/09/2065
वृष	10/12/2065
मेष	12/03/2066
मीन	11/06/2066
कुंभ	10/09/2066
मक	11/12/2066

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

कन्या - कन्या		सिंह - कन्या		सिंह - तुला		सिंह - वृश्चि		सिंह - धनु	
11/03/2025		10/12/2025		10/09/2026		11/06/2027		11/03/2028	
10/12/2025		10/09/2026		11/06/2027		11/03/2028		10/12/2028	
तुला	03/04/2025	तुला	02/01/2026	वृश्चि	03/10/2026	तुला	04/07/2027	वृश्चि	03/04/2028
वृश्चि	26/04/2025	वृश्चि	25/01/2026	धनु	26/10/2026	कन्या	27/07/2027	तुला	26/04/2028
धनु	19/05/2025	धनु	17/02/2026	मक	18/11/2026	सिंह	19/08/2027	कन्या	19/05/2028
मक	11/06/2025	मक	12/03/2026	कुंभ	11/12/2026	कर्क	11/09/2027	सिंह	10/06/2028
कुंभ	04/07/2025	कुंभ	04/04/2026	मीन	02/01/2027	मिथु	03/10/2027	कर्क	03/07/2028
मीन	26/07/2025	मीन	26/04/2026	मेष	25/01/2027	वृष	26/10/2027	मिथु	26/07/2028
मेष	18/08/2025	मेष	19/05/2026	वृष	17/02/2027	मेष	18/11/2027	वृष	18/08/2028
वृष	10/09/2025	वृष	11/06/2026	मिथु	12/03/2027	मीन	11/12/2027	मेष	10/09/2028
मिथु	03/10/2025	मिथु	04/07/2026	कर्क	04/04/2027	कुंभ	03/01/2028	मीन	03/10/2028
कर्क	26/10/2025	कर्क	27/07/2026	सिंह	27/04/2027	मक	26/01/2028	कुंभ	25/10/2028
सिंह	18/11/2025	सिंह	18/08/2026	कन्या	19/05/2027	धनु	17/02/2028	मक	17/11/2028
कन्या	10/12/2025	कन्या	10/09/2026	तुला	11/06/2027	वृश्चि	11/03/2028	धनु	10/12/2028

सिंह - मक		सिंह - कुंभ		सिंह - मीन		सिंह - मेष		सिंह - वृष	
10/12/2028		10/09/2029		11/06/2030		12/03/2031		11/12/2031	
10/09/2029		11/06/2030		12/03/2031		11/12/2031		10/09/2032	
धनु	02/01/2029	मीन	03/10/2029	मेष	04/07/2030	वृष	04/04/2031	मेष	03/01/2032
वृश्चि	25/01/2029	मेष	26/10/2029	वृष	27/07/2030	मिथु	27/04/2031	मीन	26/01/2032
तुला	17/02/2029	वृष	18/11/2029	मिथु	18/08/2030	कर्क	19/05/2031	कुंभ	17/02/2032
कन्या	11/03/2029	मिथु	10/12/2029	कर्क	10/09/2030	सिंह	11/06/2031	मक	11/03/2032
सिंह	03/04/2029	कर्क	02/01/2030	सिंह	03/10/2030	कन्या	04/07/2031	धनु	03/04/2032
कर्क	26/04/2029	सिंह	25/01/2030	कन्या	26/10/2030	तुला	27/07/2031	वृश्चि	26/04/2032
मिथु	19/05/2029	कन्या	17/02/2030	तुला	18/11/2030	वृश्चि	19/08/2031	तुला	19/05/2032
वृष	11/06/2029	तुला	12/03/2030	वृश्चि	11/12/2030	धनु	11/09/2031	कन्या	10/06/2032
मेष	04/07/2029	वृश्चि	04/04/2030	धनु	02/01/2031	मक	03/10/2031	सिंह	03/07/2032
मीन	26/07/2029	धनु	26/04/2030	मक	25/01/2031	कुंभ	26/10/2031	कर्क	26/07/2032
कुंभ	18/08/2029	मक	19/05/2030	कुंभ	17/02/2031	मीन	18/11/2031	मिथु	18/08/2032
मक	10/09/2029	कुंभ	11/06/2030	मीन	12/03/2031	मेष	11/12/2031	वृष	10/09/2032

सिंह - मिथु		सिंह - कर्क		सिंह - सिंह		कर्क - मिथु		कर्क - वृष	
10/09/2032		11/06/2033		12/03/2034		11/12/2034		12/05/2035	
11/06/2033		12/03/2034		11/12/2034		12/05/2035		11/10/2035	
वृष	03/10/2032	मिथु	04/07/2033	कन्या	04/04/2034	वृष	23/12/2034	मेष	24/05/2035
मेष	25/10/2032	वृष	26/07/2033	तुला	26/04/2034	मेष	05/01/2035	मीन	06/06/2035
मीन	17/11/2032	मेष	18/08/2033	वृश्चि	19/05/2034	मीन	18/01/2035	कुंभ	19/06/2035
कुंभ	10/12/2032	मीन	10/09/2033	धनु	11/06/2034	कुंभ	30/01/2035	मक	02/07/2035
मक	02/01/2033	कुंभ	03/10/2033	मक	04/07/2034	मक	12/02/2035	धनु	14/07/2035
धनु	25/01/2033	मक	26/10/2033	कुंभ	27/07/2034	धनु	25/02/2035	वृश्चि	27/07/2035
वृश्चि	17/02/2033	धनु	18/11/2033	मीन	18/08/2034	वृश्चि	09/03/2035	तुला	09/08/2035
तुला	11/03/2033	वृश्चि	10/12/2033	मेष	10/09/2034	तुला	22/03/2035	कन्या	21/08/2035
कन्या	03/04/2033	तुला	02/01/2034	वृष	03/10/2034	कन्या	04/04/2035	सिंह	03/09/2035
सिंह	26/04/2033	कन्या	25/01/2034	मिथु	26/10/2034	सिंह	16/04/2035	कर्क	16/09/2035
कर्क	19/05/2033	सिंह	17/02/2034	कर्क	18/11/2034	कर्क	29/04/2035	मिथु	28/09/2035
मिथु	11/06/2033	कर्क	12/03/2034	सिंह	11/12/2034	मिथु	12/05/2035	वृष	11/10/2035

चर दशा - प्रत्यन्तर

कर्क - मेष		कर्क - मीन		कर्क - कुंभ		कर्क - मक		कर्क - धनु	
11/10/2035		11/03/2036		10/08/2036		10/01/2037		11/06/2037	
11/03/2036		10/08/2036		10/01/2037		11/06/2037		10/11/2037	
वृष	24/10/2035	मेष	24/03/2036	मीन	23/08/2036	धनु	22/01/2037	वृश्चि	23/06/2037
मिथु	05/11/2035	वृष	06/04/2036	मेष	05/09/2036	वृश्चि	04/02/2037	तुला	06/07/2037
कर्क	18/11/2035	मिथु	18/04/2036	वृष	17/09/2036	तुला	17/02/2037	कन्या	19/07/2037
सिंह	01/12/2035	कर्क	01/05/2036	मिथु	30/09/2036	कन्या	01/03/2037	सिंह	31/07/2037
कन्या	13/12/2035	सिंह	14/05/2036	कर्क	13/10/2036	सिंह	14/03/2037	कर्क	13/08/2037
तुला	26/12/2035	कन्या	26/05/2036	सिंह	25/10/2036	कर्क	27/03/2037	मिथु	26/08/2037
वृश्चि	08/01/2036	तुला	08/06/2036	कन्या	07/11/2036	मिथु	08/04/2037	वृष	08/09/2037
धनु	20/01/2036	वृश्चि	21/06/2036	तुला	20/11/2036	वृष	21/04/2037	मेष	20/09/2037
मक	02/02/2036	धनु	03/07/2036	वृश्चि	03/12/2036	मेष	04/05/2037	मीन	03/10/2037
कुंभ	15/02/2036	मक	16/07/2036	धनु	15/12/2036	मीन	16/05/2037	कुंभ	16/10/2037
मीन	27/02/2036	कुंभ	29/07/2036	मक	28/12/2036	कुंभ	29/05/2037	मक	28/10/2037
मेष	11/03/2036	मीन	10/08/2036	कुंभ	10/01/2037	मक	11/06/2037	धनु	10/11/2037

कर्क - वृश्चि		कर्क - तुला		कर्क - कन्या		कर्क - सिंह		कर्क - कर्क	
10/11/2037		11/04/2038		10/09/2038		09/02/2039		12/07/2039	
11/04/2038		10/09/2038		09/02/2039		12/07/2039		11/12/2039	
तुला	23/11/2037	वृश्चि	24/04/2038	तुला	23/09/2038	कन्या	22/02/2039	मिथु	24/07/2039
कन्या	05/12/2037	धनु	06/05/2038	वृश्चि	06/10/2038	तुला	07/03/2039	वृष	06/08/2039
सिंह	18/12/2037	मक	19/05/2038	धनु	18/10/2038	वृश्चि	20/03/2039	मेष	19/08/2039
कर्क	31/12/2037	कुंभ	01/06/2038	मक	31/10/2038	धनु	01/04/2039	मीन	31/08/2039
मिथु	12/01/2038	मीन	14/06/2038	कुंभ	13/11/2038	मक	14/04/2039	कुंभ	13/09/2039
वृष	25/01/2038	मेष	26/06/2038	मीन	25/11/2038	कुंभ	27/04/2039	मक	26/09/2039
मेष	07/02/2038	वृष	09/07/2038	मेष	08/12/2038	मीन	09/05/2039	धनु	08/10/2039
मीन	19/02/2038	मिथु	22/07/2038	वृष	21/12/2038	मेष	22/05/2039	वृश्चि	21/10/2039
कुंभ	04/03/2038	कर्क	03/08/2038	मिथु	02/01/2039	वृष	04/06/2039	तुला	03/11/2039
मक	17/03/2038	सिंह	16/08/2038	कर्क	15/01/2039	मिथु	16/06/2039	कन्या	16/11/2039
धनु	29/03/2038	कन्या	29/08/2038	सिंह	28/01/2039	कर्क	29/06/2039	सिंह	28/11/2039
वृश्चि	11/04/2038	तुला	10/09/2038	कन्या	09/02/2039	सिंह	12/07/2039	कर्क	11/12/2039

मिथु - वृष		मिथु - मेष		मिथु - मीन		मिथु - कुंभ		मिथु - मक	
11/12/2039		10/06/2040		10/12/2040		11/06/2041		10/12/2041	
10/06/2040		10/12/2040		11/06/2041		10/12/2041		11/06/2042	
मेष	26/12/2039	वृष	26/06/2040	मेष	25/12/2040	मीन	26/06/2041	धनु	26/12/2041
मीन	10/01/2040	मिथु	11/07/2040	वृष	10/01/2041	मेष	11/07/2041	वृश्चि	10/01/2042
कुंभ	26/01/2040	कर्क	26/07/2040	मिथु	25/01/2041	वृष	26/07/2041	तुला	25/01/2042
मक	10/02/2040	सिंह	10/08/2040	कर्क	09/02/2041	मिथु	11/08/2041	कन्या	09/02/2042
धनु	25/02/2040	कन्या	26/08/2040	सिंह	24/02/2041	कर्क	26/08/2041	सिंह	24/02/2042
वृश्चि	11/03/2040	तुला	10/09/2040	कन्या	11/03/2041	सिंह	10/09/2041	कर्क	12/03/2042
तुला	26/03/2040	वृश्चि	25/09/2040	तुला	27/03/2041	कन्या	25/09/2041	मिथु	27/03/2042
कन्या	11/04/2040	धनु	10/10/2040	वृश्चि	11/04/2041	तुला	10/10/2041	वृष	11/04/2042
सिंह	26/04/2040	मक	25/10/2040	धनु	26/04/2041	वृश्चि	26/10/2041	मेष	26/04/2042
कर्क	11/05/2040	कुंभ	10/11/2040	मक	11/05/2041	धनु	10/11/2041	मीन	12/05/2042
मिथु	26/05/2040	मीन	25/11/2040	कुंभ	27/05/2041	मक	25/11/2041	कुंभ	27/05/2042
वृष	10/06/2040	मेष	10/12/2040	मीन	11/06/2041	कुंभ	10/12/2041	मक	11/06/2042

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	8
मित्र अंक	2, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	वृष, तुला
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	कुबेर
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	84%	कम खर्च, स्वास्थ्य, सुख
मूंगा	मंगल	70%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख, कम खर्च
माणिक्य	सूर्य	67%	कम खर्च, भाग्योदय
नीलम	शनि	67%	धनार्जन, धन, पराक्रम
पन्ना	बुध	66%	स्वास्थ्य, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	57%	धनार्जन, शत्रु व रोग मुक्ति
लहसुनिया	केतु	44%	व्यय, व्यावसायिक हानि
गोमेद	राहु	41%	शत्रु व रोग, हानि
मोती	चंद्र	0%	पराक्रम हानि, दुर्घटना

रत्न की शुभता

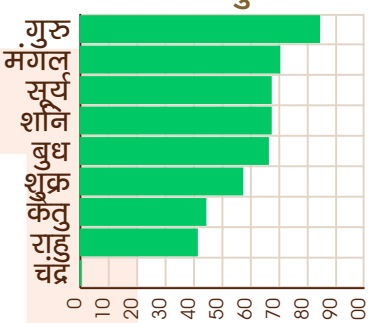

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	03/02/1998	55%	0%	58%	66%	84%	63%	73%	58%	19%
गुरु	03/02/2014	73%	0%	77%	53%	97%	38%	67%	41%	44%
शनि	03/02/2033	55%	0%	58%	72%	84%	63%	80%	52%	19%
बुध	03/02/2050	73%	0%	70%	78%	84%	63%	67%	41%	44%
केतु	03/02/2057	55%	0%	77%	66%	84%	63%	55%	16%	59%
शुक्र	03/02/2077	55%	0%	70%	72%	84%	69%	73%	52%	53%
सूर्य	04/02/2083	80%	0%	77%	66%	91%	38%	55%	16%	19%
चंद्र	03/02/2093	73%	12%	70%	72%	84%	57%	67%	16%	19%
मंगल	04/02/2100	73%	0%	83%	53%	91%	57%	67%	16%	53%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पुखराज रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

पुखराज आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा। आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्य करने पर जो श्रेय नहीं मिल पाता है वह प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने से आपको कुछ ही समय में सुख की अनुभूति होगी। अतः यह रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें तो लाभ होगा।

आपके लिए मूंगा, माणिक्य, नीलम, पन्ना एवं हीरा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

लहसुनिया व गोमेद रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

मोती पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु बारहवें भाव में स्थित है। गुरु ग्रह का पुखराज रत्न आपके

लिए शुभ रत्न रहेगा। पुखराज रत्न धारण कर आप धार्मिक आचरण करेंगे। आपकी परोपकार प्रवृत्ति देगा। रत्न शुभता से आप अप्रिय भाषण और व्यर्थ विषयों पर व्यय करने से बचेंगे। पुखराज शुभता आपको चिकित्सक, लोकसेवक सम्पादक, वेदज्ञानी, धर्मगुरु या सम्पादक बना सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको जीवन काल में धन, सम्पत्ति, सोना, वस्त्र आदि पर्याप्त मात्रा में देगा। साथ ही दूर प्रदेशों के प्रवास से आपको लाभ और कीर्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में गुरु लग्नेश एवं चतुर्थेश है। गुरु आपके लिए विशेष शुभ ग्रह है अतः आप गुरु रत्न पुखराज धारण कर गुरु की पूर्ण शुभता प्राप्त कर सकते है। पुखराज रत्न धारण से आपको स्वास्थ्य बेहतर होगा। आपके रोगग्रस्त होने की संभावनाएं कम हो सकती है। पुखराज रत्न आपको प्रसन्नचित्त, विवेकी, विनम्र और सौम्य स्वभाव का स्वामी बनाएगा। रत्न प्रभाव से आप धर्म, दया, सेवा विषयों से जुड़ेगें। पुखराज रत्न चतुर्थेश का रत्न होने के कारण आपको माता सुख, भूमि-भवन का सुख, संतान से पूर्ण सुख, विद्वान, गुणी, मनोवांछित जीवनसाथी, धर्मपरायण, धनी एवं यशस्वी बना सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल दशम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। धन, यश, सुख और वाहनों का सुख प्रदान करेगा। मूंगा रत्न आपको महत्वाकांक्षी और दृढनिश्चयी व्यक्ति बनाएगा। मूंगा रत्न शुभता से बड़े पद और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। मूंगा रत्न प्रभाव आपको इंजीनियरिंग क्षेत्रों में सफलता प्राप्ति के अवसर दे सकता है। इसके अतिरिक्त यह मंगल आपको शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में कार्यरत पर ओर अधिक अनुकूल सिद्ध हो सकता है। आजीविका क्षेत्र में आपकी नेतृत्व योग्यता का विकास करने में भी मूंगा रत्न शुभ दायक रहेगा।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में मंगल पंचमेश एवं द्वादशेश है। मंगल रत्न मूंगा आपके लिए शुभ रत्न है। मूंगा रत्न धारण करने से नौकरी में बदलाव करना आपके लिए सहज हो सकता है। मूंगा रत्न आप सदाचारी, बुद्धिमान एवं विनम्र हो सकते है। रत्न आपको जीवनसाथी से लाभ, पिता की धार्मिक आस्था, पिता की विदेश यात्रा, कोर्ट-कचहरी के फैसलों में आपके अनुकूल फल प्राप्त करा सकता है। इस रत्न की शुभता आपको संतान से सुख, शयन

सम्बन्धी परेशानियां एवं समझौते आपके पक्ष में हो सकते है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने से आपका विदेश गमन सहज हो सकता है। आपके आत्मविश्वास में बढ़ोतरी होगी। कार्यक्षेत्र में आपकी तरक्की होगी। माणिक्य रत्न की शुभता से आप अस्पतालों, पागलखानों, धर्मार्थ संस्थानों, जेलों और परोपकारी कामों से लाभ हो सकता है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण से आपका आत्मविश्वास भाव बेहतर होगा। आपको कार्यक्षेत्र में तरक्की होगी। सूर्य रत्न माणिक्य आपको दूर देश की यात्राएं करवा सकता है। यह आपको आर्थिक रूप से समृद्ध करेगा।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में सूर्य दशम भाव के स्वामी है। सूर्य के बेहतर फल प्राप्त करने के लिए आप सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर सकते है। माणिक्य रत्न आपका भाग्य रत्न है। यह रत्न आपको भाग्य का अनुकूल सहयोग देगा। माणिक्य रत्न धारण कर आप आत्मिक रूप से बली हो सकते है। यह रत्न आपको शक्तिशाली कर सकता है। आप धर्मपरायण की ओर उन्मुख होंगे। आपकी सुरुचि धार्मिक गतिविधियों की ओर हो सकती है। माणिक्य रत्न आपके वैवाहिक सुख के सुखों में वृद्धि करेगा। आपको व्यापार में उन्नति देगा।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता

में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि एकादश भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न धारण कर आप निर्लोभी और सुखी व्यक्ति बनेंगे। आपको दीर्घकाल के लिए रोग अपने प्रभाव में नहीं पायेंगे। आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन-संपति होगी। सरकार की कृपा से भी धन, मान की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपके लिए शुभ होकर आपको वाहनों का सुख देगा। धन संचय में सहयोग करेगा। नौकर चाकरों का सुख देगा। तथा नीलम रत्न प्रभाव से संतान प्राप्ति का विलम्ब दूर होगा। अनेक प्रकार के सुखों को आप प्राप्त करेंगे।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में शनि दूसरे भाव एवं तीसरे भाव के स्वामी है। शनि शुभता प्राप्ति के लिए आप शनि रत्न नीलम धारण कर सकते है। नीलम रत्न आपकी शरीर की अस्वस्थता को दूर करने का प्रयास कर सकता है। नीलम रत्न की शुभता से आपको धन व परिवार का सुख प्राप्त होता रहेगा। यह रत्न आपके पराक्रम भाव को बढ़ाएगा। मित्र बंधुओं का सहयोग पाने के लिए भी आप नीलम रत्न धारण कर सकते है। नीलम रत्न की शुभता से आपको कार्यक्षेत्र में अनुकूल परिणाम प्राप्त हो सकते है। यह रत्न सरकारी क्षेत्रों से जुड़े कार्यो के मध्य आने वाली बाधाओं में कमी कर सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध लग्न भाव में स्थित है। इसलिए आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। बुध रत्न पन्ना आपकी बौद्धिक योग्यता, ज्ञान क्षमता एवं शिक्षा के प्रति आपकी अभिरुचि को जागृत करेगा। तथा पन्ना रत्न लेखन एवं कला का विकास करेगा। यह रत्न भाई-बहनों का स्नेह देगा एवं आप शत्रुओं को चातुर्य से परास्त कर सकेंगे। यह रत्न व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति एवं लाभ प्राप्ति के सुअवसर देकर व्यापार में आपको अच्छी सफलता देगा। पन्ना रत्न मित्रों से संबंध मजबूत करेगा। संचार क्षेत्रों से आय मार्ग शुभफलकारी होंगे।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में बुध सप्तमेश एवं दशमेश है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते है। पन्ना रत्न आपको बुद्धिमान और विनोदी प्रवृति दे सकता है। यह रत्न आपको राज्य एवं आजीविका क्षेत्र में बौद्धिक योग्यता से सफलता प्राप्ति दे सकता है। कार्यक्षेत्र में उन्नति और लाभ देने के साथ साथ पन्ना रत्न आपको सहयोगियों से संबंध मधुर कर सकता है। पन्ना रत्न धारण कर आप ससुराल से धन प्राप्ति के योग बना सकता है। बुध रत्न पन्ने की शुभता आपको धन, यश भी दे सकती है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र एकादश भाव में स्थित है। शुक्र ग्रह की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको उदार, सदाचार संपन्न, सुशील और परोपकारी बनाएगा। हीरा रत्न से आप अपने वाकचातुर्य के कारण प्रसिद्ध होंगे। अनेक वाहनों का सुख आपको यह रत्न दे सकता है। शुक्र रत्न हीरे की शुभता आपको समृद्धि और सम्पन्नता देगी। इस रत्न प्रभाव से नियमित रूप से आपके पास धनागमन होता रहेगा और दिनों दिन धनवृद्धि होती जाएगी।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में शुक्र एकादशेश एवं षष्ठेश है। शुक्र रत्न हीरा आपके आय क्षेत्रों को प्रशस्त करेगा। अपनी उच्चभिलाषाओं को प्राप्त करने के लिए भी आप यह हीरा रत्न धारण कर सकते है। हीरा रत्न आपके शत्रुओं में कमी कर सकता है। शत्रुओं को परास्त करने के लिए भी आप हीरा रत्न धारण कर सकते है। रत्न शुभता से आपके परिश्रम भाव में बढ़ोतरी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप रोग, ऋणों पर नियंत्रण रखने में सफल हो सकते है। शुक्र रत्न आपको प्रतियोगिताओं में सफलता दिला सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1

रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया पहनने पर आप अलौकिक विद्याओं की ओर विशेष रूप से आकर्षित हो सकते है। मोक्ष प्राप्ति के लिए आप जीवन के दायित्वों से पीछे हट सकते है। आपकी सोच में नकारात्मकता का भाव प्रभावी हो सकता है। यह रत्न आपको आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर कर सकता है। संतान सुख और धन दोनों पक्ष के लिए रत्न की प्रतिकूलता हो सकती है। यह रत्न विदेश स्थानों में मिलने वाली आपकी सफलता को सीमित कर सकता है। आपके रोग बढ़ सकते है। ऋणों का भुगतान आपकी मानसिक चिंताओं को बढ़ा सकता है। इसके अतिरिक्त रत्न प्रभाव से आपके शत्रुओं में बढ़ोतरी हो सकती है। लहसुनिया रत्न आपके साहस में कमी करेगा।

केतु वृश्चिक राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल दशम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से तकनीकी क्षेत्रों में कार्य करना कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। यंत्रों के रख-रखाव और इंजीनियरिंग क्षेत्र में कार्य करने पर आप असुविधा महसूस करेंगे। आजीविका क्षेत्र की विपरीत परिस्थितियों का सामना आप सहजता के साथ नहीं कर पायेंगे। यह रत्न आपको असफलता का स्वाद भी चखा सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपको राजनैतिक क्षेत्र में सफलता बहुत विलम्ब से प्राप्त होगी। रत्न प्रतिकूलता आपको अस्पष्ट परिणाम और कमजोर आर्थिक स्थिति प्रदान कर सकती है। साथ ही इस रत्न प्रभाव से आप अहंकारी और बातूनी स्वभाव के हो सकते हैं।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहू रत्न गोमेद आपको कुसंगति का शिकार कर सकता है। प्रतियोगिताओ में सफल होने के लिए आप कुमार्ग का प्रयोग कर सकते है। विपरीत धर्म के लोगों से आपकी मित्रता संबंध बढ़ सकते है। यह मित्रता आपको लाभ भी दे सकती है। रोग और आयु पक्ष के लिए गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल नहीं रहेगा। साहस की कमी आपको बड़े बड़े कामों को अंजाम देने से रोक सकती है। गोमेद रत्न प्रभाव से आपको रोग, ऋण और शत्रुओं पर विजय पाने के लिए विशेष चातुर्य का प्रयोग करना होगा। ऊपरी बाधाओं या कोई रहस्यमयी बीमारियों के प्रभाव में आप आ सकते है। गोमेद रत्न धारण से आपको मामा, मौसी या चाचा पक्ष से सुख कम प्राप्त होगा।

राहु वृष राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र एकादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से विदेशी स्रोतों से प्राप्त होने वाली आय बाधित होगी। आपको

भाग्योदय के लिए अपने जन्म स्थान से दूर जाना पड़ सकता है। यह रत्न आपकी दयालुता भाव में भी कमी करेगा। इस रत्न के प्रभाव से आपके बड़े भाई बहनों की संख्या में कमी हो सकती है। इस कारण आप अपने भाई बहनों में सबसे बड़े हो सकते हैं। रत्न प्रतिकूलता आपके धन में कमी का कारण बन सकती है। चिकित्सा जगत, औजारों, यंत्रों व हथियारों के निर्माण क्षेत्रों में आपकी विशेषज्ञता प्राप्ति बाधित हो सकती है। यह रत्न आपमें यांत्रिकी सम्बंधित ज्ञान की कमी कर रहा है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपको अपने आजीविका क्षेत्र में कई परिवर्तन करने पड़ सकते है। यात्रा से आपके स्वास्थ्य सुख में कमी हो सकती है। आपमें शौक, रुचियां और मित्रता में शीघ्र बदलाव करने की आदत आ सकती है. आपके पिता को कई बार अपने व्यापारिक साझेदार में बदलाव करने पड़ सकते हैं साथ ही उन्हें बहुत सारी यात्राएं करने का अवसर मिलेंगे। रत्न धारण से आप प्रसिद्धि पाने के लिए प्रयासरत रहेंगे.

आपकी धनु लग्न की कुंडली में चंद्र अष्टम भाव के स्वामी है। अष्टमेश चंद्र का मोती रत्न धारण करना आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। मोती रत्न आपके रोगों में वृद्धि एवं आयु में कमी दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपको गहरे जल से कष्ट का भय हो सकता है। मोती रत्न आपको नकारात्मक विचारधारा के साथ मानसिक चिंताएं भी अधिक दे सकता है। इस रत्न को पहनने के बाद आप आर्थिक संकटों के कारण दरिद्रता की स्थिति में पहुंच सकते है। मोती रत्न की प्रतिकूलता आपको दुर्भाग्य और ससुराल पक्ष से संबंध खराब कर सकती है। यह रत्न आपके जीवन के सुखों में कमी कर दुःखों में वृद्धि कर सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपको जल के कारण होने वाले रोग हो सकते है।

दशानुसार रत्न विचार

शनि
(03/02/2014 - 03/02/2033)

शनि की दशा में आपका पुखराज व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, हीरा, मूंगा, माणिक्य व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(03/02/2033 - 03/02/2050)

बुध की दशा में आपका पुखराज व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, मूंगा, नीलम व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(03/02/2050 - 03/02/2057)

केतु की दशा में आपका पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, हीरा, लहसुनिया, माणिक्य व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(03/02/2057 - 03/02/2077)

शुक्र की दशा में आपका पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, पन्ना, मूंगा, हीरा, माणिक्य, लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(03/02/2077 - 04/02/2083)

सूर्य की दशा में आपका पुखराज, माणिक्य व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, गोमेद व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(04/02/2083 - 03/02/2093)

चन्द्र की दशा में आपका पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, पन्ना, मूंगा, नीलम व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया, गोमेद व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(03/02/2093 - 04/02/2100)

मंगल की दशा में आपका पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, नीलम, हीरा, पन्ना व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

राहु - 03/02/1998

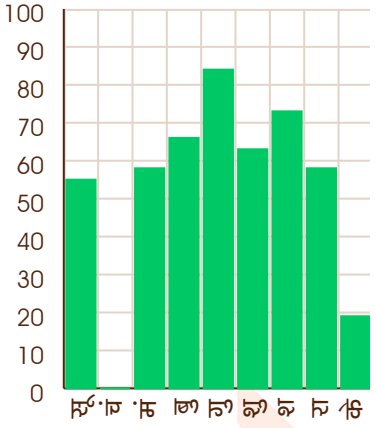

गुरु - 03/02/2014

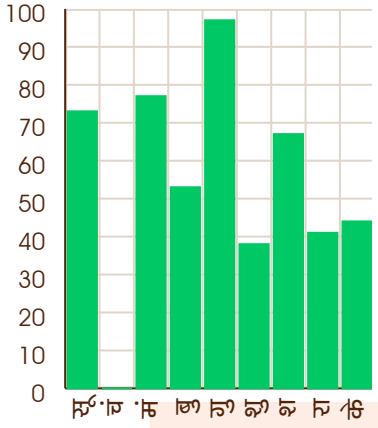

शनि - 03/02/2033

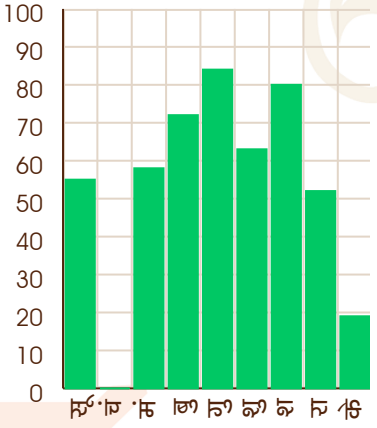

बुध - 03/02/2050

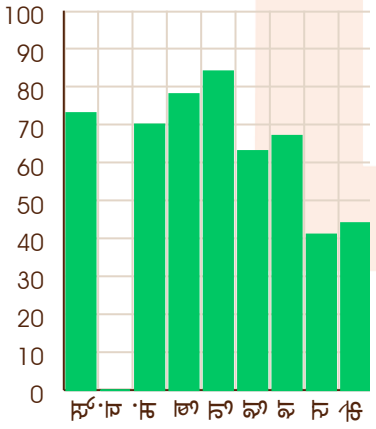

केतु - 03/02/2057

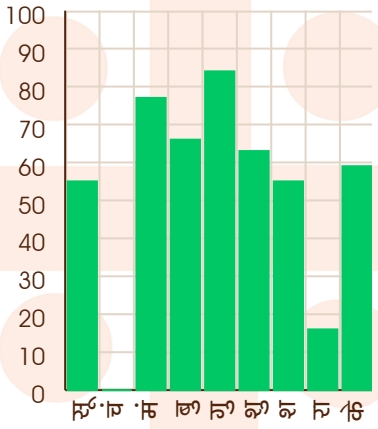

शुक्र - 03/02/2077

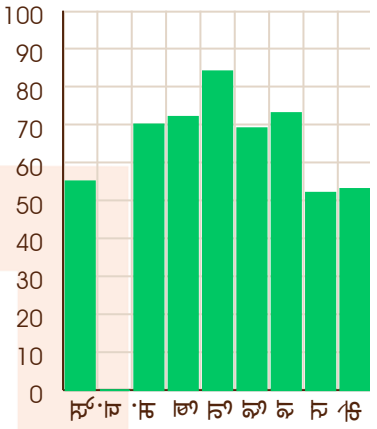

सूर्य - 04/02/2083

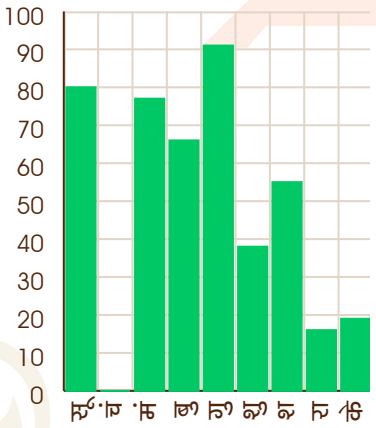

चन्द्र - 03/02/2093

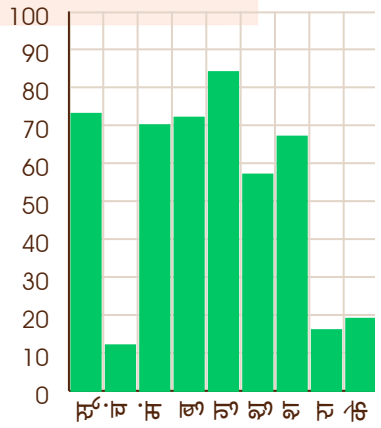

मंगल - 04/02/2100

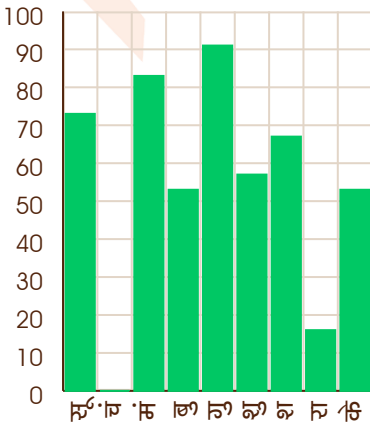

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - टोपाज

आपका जन्म धनु राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी गुरु होता है। गुरु सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह ज्योतिष शास्त्र में सबसे शुभ ग्रह माना जाता है तथा गुरु को ज्योतिष में अमृत के समान माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः धनु राशि के लग्न वाले जातकों को धनु राशि के स्वामी ग्रह गुरु को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। गुरु ग्रह के लिये टोपाज रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी गुरु सलाहकार एवं धन का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को सभा में वाणीपटुता के कारण मार्गदर्शक के रूप में सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को घर के बुजुर्गों तथा गुरुओं का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। गुरु ग्रह ज्ञान एवं धन लाभ का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको लीवर या गुर्दे से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जिसको धन आगमन में व्यवधान हो रहे हों उनको यह रत्न अल्प प्रयास से धन प्राप्ति करवाता है।

टोपाज रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि तर्जनी अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में गुरु की अंगुली मानी जाती है । टोपाज रत्न गुरु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात गुरुवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल गुरु की होरा में श्रेष्ठ होता है। गुरुवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय गुरु की होरा का होता है। टोपाज को यदि गुरुवार के साथ-साथ गुरु के नक्षत्र अर्थात् पुनर्वसु, विशाखा और पूर्वा भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

टोपाज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर पीले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, गुरु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण करना चाहिए।

गुरु का मंत्र - ऊँ वृं वृहस्पतये नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि गुरु से संबंधित पदार्थ जैसे चने की दाल, गुड़, सवा मीटर पीले कपड़े का दान करें तो टोपाज रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन गुरु का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और केले की जड़ में जल दें तथा विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें और उनकी उपासना करें तो यह टोपाज रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक गुरुवार को विष्णु जी की उपासना करें तथा विष्णु जी को गुड़ व चने की दाल का भोग लगायें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

धनु लग्न वाले जातक यदि टोपाज रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली धनु लग्न की हैं। आदर्शवादी होने के कारण आप उत्साही रहते हैं। छल-कपट की भावना आपमें नहीं होती और कभी इनके साथ ऐसा होने पर ये लोग काफी समय तक उस बारे में सोचते रहते हैं, तो इन्हें अपनी इस आदत का बदलने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में आपके धन संयम/प्रबंधन (वर्तमान में वित्तीय प्रबंधक या सलाहकार) की कला से ओतप्रोत बने रह सकते है। आपमें दूरदर्शिता का गुण भी देखा जाता है जिस कारण इनके कार्यो में हानि की मात्रा में भी कमी आती है।

ईश्वरप्रिय होने के कारण गलत कार्यों से दूरी बनाये रखते हैं और कभी-कभी चिन्तित भी हो जाते हैं। आप हमेशा प्रसन्नचित्त अवस्था में रहने का प्रयास करते है। आप अपनी

बातों में गंभीरता लिये होते हैं। धनी, सम्मानित और समाज में प्रतिष्ठित होने की योग्यता रखते हैं। आप अच्छे सलाहकार साबित हो सकते हैं, परन्तु बिना मांगे किसी को सलाह देने से बचें अन्यथा आलोचना के पात्र बन सकते हैं। आपकी वित्त प्रबंधन / सलाह अच्छी होती है।

षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव दुष्ट व अशुभ स्थान हैं। अपनी कुंडली की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको छः, आठ व बारहवें भाव - भावेश को शुभता प्रदान करनी होगी। कुंडली के ये भाव आपको रोग, ऋण, शत्रु, बाधाएं, देने के साथ साथ दैहिक, सामाजिक, मानसिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्ट दे सकते हैं। इन सभी विषयों के साथ साथ षष्ट भाव प्रतियोगिता, संघर्ष तथा सौतेली माता का भी भाव है।

कुंडली में षष्ट भाव का पीड़ित होना या इस भाव में अन्य ग्रहों का स्थित होना उपरोक्त सभी वस्तुओं में अशुभता लाता हैं। धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग लग्न से आठंवा भाव अष्टम कहलाता हैं। इस भाव से आयु, बिना कमाया हुआ धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग की जानकारी प्राप्त होती हैं। अष्टम भाव की तरह द्वादश भाव में भी सभी ग्रह अनिष्ट करते है। द्वादश भाव भी त्रिक भाव है। यह भाव आपकी निद्रा, धन का निवेश, विवाह में विलम्ब, अधिकार का नाश, कैद, शरीर विकार तथा हानियों की जानकारी देता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

आपके लग्न के लिए शुक्र षष्ठेश व एकादशेश है, आप की संतान विद्रोही हो सकती है, जीवन साथी से अनबन, मन में खिन्नता, व्यभिचारी तथा बन्धु विरोधी हो सकते हैं।

चन्द्र अष्टमेश हैं। आपके धनु लग्न में अष्टमेश चन्द्र है, चन्द्र की यह स्थिति आपको बचपन में कष्ट, पानी के दुष्प्रभाव से होने वाले रोगों के प्रभाव में शीघ्र आने की संभावना, यह योग धन व सम्मान की हानि का कारण बनता है।

मंगल द्वादशेश तथा पंचमेश होते है। व्यय अधिक, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, भाई-बहनों से सामान्य सुख, सामान्य पराक्रमी, शत्रु से संघर्ष में सफल, जीवन साथी से कष्ट दे सकता है।

आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में राहु तथा द्वादश भाव में केतु की स्थिति से आपका जीवन संघर्षमय हो सकता हैं। मगर इन संघर्षों में आपको विजय प्राप्त होगी। पराक्रम से शत्रुओं पर प्रभुत्व बना रहेगा। यह योग आप में मानसिक तनाव व दबाव सहने की क्षमता में वृद्धि कर रहा हैं।

सूर्य आपके द्वादश भाव में शत्रुओं की बहुलता, परन्तु शत्रुओं पर विजय, धन-धान्य से युक्त, कुशल राजनीतिज्ञ, उतम प्रशासक, नेत्र प्रकाश में कमी, मामा को कष्ट, और वाहनों से

शारीरिक कष्ट की संभावना उत्पन्न करता है।

गुरु अष्टम भाव में आपमें स्वार्थ भाव की वृद्धि कर रहा है, यह योग मामा को कष्ट दे सकता है, सट्टा-जुआ की लत से दूर रहे, ऋण ग्रस्तता, शत्रुओं से पीड़ित, संपति का नाश और माता -पिता से मांसिक मतभेद करा सकता है।

केतु की स्थिति द्वादश भाव में शुभ नहीं मानी गयी है, इसके परिणाम से आप खचीले, चिंतित, प्रवासी, सनकी, चंचल बुद्धि, आपके अधिक व्यय धार्मिक कार्यों में होते है, आप इन्द्रियों पर विजय प्राप्ति का प्रयास कर सकते है। आपको जीवन लक्ष्य प्राप्ति के लिए जीवन भर संघर्ष करना पड़ सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 6, 8, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढेसाती तृतीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	धन
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	पराक्रम
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	सुख
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसाय

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से अष्टम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा आप पित या गर्मी के द्वारा शारीरिक परेशानी की अनुभूति करेंगी। पति का स्वास्थ्य भी मध्यम ही रहेगा तथा स्वभाव से यदा कदा वे उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन कर सकते हैं। इससे परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्पकालिक रहेगा तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपको अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। साथ ही विवाह में भी किंचित मात्रा में विलम्ब हो सकता है लेकिन अन्त में आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपका दाम्पत्य जीवन शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा से मंगल का दोष अल्प माना जाता है। अतः सामान्यतया शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्यतया मध्यम ही रहेगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम तथा पराक्रम से ही सफलता होगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपके आय स्रोतों में उन्नति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में आप समर्थ रहेंगी। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे साथ ही वाणी में भी ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा। धनऐश्वर्य की स्थिति उत्तम रहेगी। तृतीय भाव पर मंगल की स्थिति के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग सामान्य रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी। मन में आत्मविश्वास का भाव बना रहेगा। अतः आप अपने कार्य क्षेत्र में उन्नतिशील रहेंगे एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली से आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में शनि राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी। प्रचुर मात्रा में सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा तथा परस्पर संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी एवं एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करने में आप तत्पर रहेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश द्वादश भाव में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में सूर्य, मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यह्रदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण

और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 11 है। एक एवं एक का जोड़ दो आपका मूलांक है। एक का स्वामी सूर्य एवं दो स्वामी चन्द्र है। इन दोंनो ग्रहों के गुण-अवगुण आपके व्यक्तित्व में रहेंगे। आप अनुशासन पसन्द महिला होंगी एवं अपने नाम पर धब्बा नहीं लगायेंगी। समाज में आपकी इज्जत होगी। नाम एवं यश प्राप्त करेंगी। सूर्य प्रभाव से नियमितता रहेगी। चन्द्र प्रभाव कभी-कभी मनको चंचल भी करेगा उससे बचना हितकर रहेगा अन्यथा सफलता के स्थान पर कई बार चन्द्र प्रभाव असफलता भी दे देगा। संघर्ष करना आपकी आदत बन जायेगी। अतः कभी आप एकदम उच्चता प्राप्त करेंगी तो कभी आपको थोड़ा झुकना भी पड़ेगा।

बौद्धिक स्तर आपका अच्छा रहेगा एवं ऐसे कार्य जिनमें बुद्धि का प्रयोग अधिक होता हो आपके लिये शुभ रहेगा। असफलताओं से आप निराश नहीं होंगी, क्षीण तो होंगी फिर भी हिम्मत नहीं हारेंगी और एक दिन फिर सूर्य की तरह प्रकाशित होंगी।

स्वभाव में आपके थोड़ा हठीपन रहेगा एवं क्रोध भी शीघ्र आ जाया करेगा। इन अवगुणों से बचना आपके लिये हितकर रहेगा। आपको ऐसे क्षेत्रों का चुनाव करना हितकर रहेगा, जहाँ अत्यधिक परिवर्तनशीलता न हो। सामान्य कामकाज जिन क्षेत्रों में रहे, वह आपके लिये शुभ रहेंगे। विशेष कर बुद्धि विवेक के कार्य अधिक योगप्रद रहेंगे।

भाग्यांक आठ का स्वामी शनि ग्रह को माना गया है। शनि ग्रह अति धीमा होने से तीस वर्ष में एक राशिपथ भ्रमणचक्र पूर्ण करता है। इसके प्रभाव से आपका भाग्योदय भी धीरे-धीरे होगा। आप भले ही कितनी भी गरीबी में उत्पन्न हुई हों आपका भाग्य सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ता चला जायेगा। इस मध्य रुकावटें भी आयेंगी, जिन्हें आप धैर्य एवं अपने श्रम से पार कर लेंगी। आलस्य एवं निराशा आपकी तरक्की की बाधाऐं रहेंगी। इन पर विजय प्राप्त करना आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

आप अपने कार्यक्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्राप्त करेंगी। आपकी सभी सफलताएं विध्नों से युक्त होते हुये भी आप आसानी से अपनी तरक्की के रास्ते स्वयं निर्मित कर लेंगी। आपका भाग्योदय 35 वर्ष की अवस्था के पश्चात ही होगा। बचपन की अपेक्षा मध्य तथा अन्तिम अवस्था आपके भाग्योदय में विशेष सहायक होगी। अन्तिम अवस्था आपकी अच्छी रहेगी एवं धन सम्पत्ति का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी।

आपका मूलांक 2 है तथा आपका भाग्यांक 8 है। मूलांक 2 का स्वामी चंद्र तथा भाग्यांक 8 का स्वामी शनि ग्रह है। मूलांक 2 एवं भाग्यांक 8 के शत्रु संबंध हैं। इसके प्रभाववश कभी आपका मूलांक साथ देगा, तो कभी आपका भाग्यांक साथ देगा और कभी-कभी इन दोनों अंकों से अशुभ घटनाएं घटित हो सकती हैं। साधारणतः शनि-चंद्र के योग से आप एक मेहनत पसंद, अपने ऊपर भरोसा रखने वाली और विपत्ति में जीने वाली हैं तथा आपको स्वविवेक से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा एवं आपकी उन्नति रुक-रुक कर होगी। एक बार ऊंचाई प्राप्त कर लेने के बाद पराभव की स्थिति का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपका भाग्य

विघ्न-बाधा युक्त रहेगा। आप व्यापार की अपेक्षा नौकरी में अधिक सफल रहेंगी। यदि आप व्यापार करती हैं, तो वह या तो एक दम निचले स्तर का होगा या एकदम उच्च कोटि का। आपकी सामाजिक स्थिति लोकप्रिय एवं स्थायी रहेगी।

आपका भाग्योदय 26 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 35 वर्ष की अवस्था पर विशेष उन्नति प्राप्त करेगा तथा 44 वर्ष कि अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 2 की मित्रता 7 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 8 की मित्रता 1 एवं 4 से है। अतः आपके जीवन में 1, 2, 4, 7, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इससे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से शत्रु संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के शुभ फलों में थोड़ी-बहुत न्यूनता आएगी। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षो में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगी, तो पाएंगी कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष, या दिन घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, फरवरी, अप्रैल, जुलाई, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 2, 4, 7, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

सूर्य 16 जुलाई से 16 अगस्त तक कर्क राशि में रहता है। कर्क राशि चंद्रमा की स्वयं की राशि है। 13 मई से 14 जून तक सूर्य वृष राशि में होता है, जो कि चंद्रमा की उच्च राशि है। अतः यह समय मूलांक दो के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

आपके लिए कोई भी नया या शुभ कार्य करने हेतु सोमवार, शुक्रवार तथा रविवार के दिन अच्छे सिद्ध हो सकते हैं। यदि इन्ही वारों में आपके मूलांक की तारीख भी हो तो ऐसा दिन सभी कार्यों के लिये अच्छा रहेगा।

शुभ तारीखें

जब कभी आपको कोई महत्वपूर्ण कार्य करना हो, नया कार्य या व्यापार प्रारंभ करना हो, अथवा किसी को विशेष पत्र लिखना हो या किसी से विशेष कार्यवश मिलने जाना हो तो आप किसी भी माह की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को ये सारे कार्य करें। यदि इन तारीखों में आपका अनुकूल वार भी रहता है तो ऐसा दिन आपके कार्यों में प्रगति देने वाला रहेगा।

अशुभ तारीखें

आपके लिए अंग्रेजी मास की 5, 8, 14, 17, 23 एवं 26 तारीखें कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए ठीक नहीं रहेंगी। अतः इन तारीखों में सोच-समझ कर ही कोई शुभ कार्य करें।

मित्रता या साझेदारी

किसी से भी मित्रता करते समय यह देखना आपके हित में रहेगा कि यदि उसका जन्म अंग्रेजी माह की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को हुआ हो अथवा 13 मई से 14 जून एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य हुआ हो तो ऐसे व्यक्ति आपके लिऐ हितकारी सिद्ध हो सकते हैं।

प्रेम संबंध एवं विवाह

आपके लिऐ मूलांक 2, 7 एवं 9 प्रभावित महिलाएं अच्छी साथी सिद्ध हो सकती हैं। आपको चाहिए कि आप इन्हीं मूलांक वाली महिलाओं से मित्रता इत्यादि रखें, या ऐसी महिलाएं जिनका जन्म किसी भी मास की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को हुआ हो अथवा 13 मई से 14 जून एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य हुआ हो तो ऐसी महिलाएं हमेशा आपके अनुकूल रहेंगी।

अनुकूल रंग

आपको अपने वस्त्रों का चुनाव करते समय सफेद, काफूरी, हरा एवं अंगूरी रंगों का उपयोग अधिक मात्रा में करने पर वांछित लाभ प्राप्त होंगे। हो सके तो आप अपने कमरे के पर्दे, चादर, तकिया इत्यादि में इन रंगो का इस्तेमाल कर सकते हैं। इन रंगों का रुमाल तो हमेशा अपने पास रखना आपके लिए विशेष लाभप्रद रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपके लिए उत्तर-पश्चिम में वायव्य कोण स्थान में रहना शुभ रहेगा। जिस क्षेत्र में आप रहते हों, यदि वह वायव्य कोण में स्थित होगा तो अधिक अनुकूल रहेगा। मकान के नंबर का योग यदि 2, 7, या 9 आता हो तो ऐसा भवन आपके लिए अधिक सुविधाजनक रहेगा।

शुभ वाहन नं

आपके वाहन के पंजीकरण हेतु अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल रखने वाले अंकों को लेना अच्छा रहेगा। आपका मूलांक 2 होने से आपके शुभ अंक 2,7,9 रहेंगे। यहां आपके वाहन इत्यादि के पंजीकरण क्रमांक के शुभ अंक भी रहेंगे, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5231=2 इत्यादि। यात्रा के वाहनों में भी इन अंकों का उपयोग करें, जिसके फलस्वरूप आपकी यात्रा सुखमय रहेगी। अगर आप होटल आदि में कमरा इत्यादि लेते हैं तो उसके लिए भी यही नंबर 2,7,9 इत्यादि लें, जैसे कमरा 101 = 2। तभी आपके लिए वह कमरा अच्छा साबित होगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको कमजोरी, क्षीणता, उद्वेग, मस्तक पीड़ा, छोटी-छोटी दुर्घटना, हृदय रोग, संवेदनशीलता, भावुकता, स्नायु दुर्बलता, कब्ज, आंत रोग, मूत्र रोग, गैस रोग इत्यादि होंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको शिव उपासना पर बल देना चाहिए।

व्यवसाय

आपके लिए रोजगार-व्यापार हेतु ये क्षेत्र अनुकूल रहेंगे, जैसे द्रव्य पदार्थ, तैलीय कार्य, समुद्र यात्रा, मुख्यावास या उच्च स्थान प्राप्ति, पशु व्यवसाय, चीनी मिल, अन्न का व्यवसाय, तैराकी, रसपूर्ण पदार्थ, दूध, दही, घृत, कागज, जल, कृषि एवं चीनी के व्यवसाय एवं औषधि विक्रेता, भ्रमण कार्य, एजेंन्ट, प्रतिनिधित्व, संपादन, लेखन, संगीत, अभिनय, नृत्य, भूप्रबंध, मकानों की ठेकेदारी, चिकित्सा, मोती, हार, मणि, माणिक्य, रत्न इत्यादि का क्रय विक्रय, पत्थर व भूगर्भ इत्यादि के कार्य।

व्रतोपवास

जिस दिन सोमवार को चित्रा नक्षत्र हो उस दिन से चंद्रमा का व्रत प्रारम्भ करें। विधान के अनुसार 54 सोमवार तक अथवा न्यूनतम सात सोमवार व्रत आवश्यक है। व्रत के

दिन श्वेत वस्त्र धारण करें एवं श्वेत वस्तुओं का दान करें तथा चंद्रमा के मंत्र का यथा शक्ति, मोती की माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

पांच रत्ती मोती आपके लिए प्रमुख रत्न है। यदि आप मोती धारण ना कर सकें तो मूनस्टोन, चंद्रमणि, दूधिया हकीक, सोमवार की सुबह दायें हाथ की कनिष्ठा अंगुलि में, चांदी की अंगूठी में जड़वा कर लाभ के चौघड़िया मुहूर्त्त में धारण करें।

अनुकूल देवता

आप चंद्रोपासना करें अथवा भगवान शिव की आराधना करें। भगवान शिव के पंचाक्षरी मंत्र ओम् नमः शिवाय का नित्य जप करें। प्रति सोमवार को कम से कम इक्कीस या एक सौ आठ बेल पत्र भगवान शिव को अर्पित करेंगे तो इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोगों से समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान शिव के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपको चंद्र के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु चंद्र के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

चंद्र गायत्री मंत्र - अमृतांगाय विद्महे कलारूपाय धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप चंद्र का ध्यान करें, मन में चंद्र की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम्।
नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोमुकुटभूषणम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ चंद्र को अनुकूल बनाने हेतु चंद्र के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सो तीस माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ श्राँ श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः।। जप संख्या 13000।।

वनस्पति धारण

आप सोमवार के दिन एक इंच लंबी खिरनी की जड़ ला कर, सफेद ऊन के धागे में लपेट कर, गले या दाहिने हाथ में बांधे, स्वर्ण या तांबे ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे चंद्र ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके प्रत्येक सोमवार को एक बाल्टी या बर्तन में पंच गव्य-चांदी, मोती, शंख, सीप और कुमुद आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ चंद्र का प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध, इन सबको मिला कर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

चंद्र की शांति हेतु योग्य व्यक्ति के लिए चंद्र के पदार्थ, चावल, कपूर, सफेद वस्त्र, चांदी, शंख, वंशपात्र, सफेद चंदन, श्वेत पुष्प, चीनी, वृषभ, दधि, मोती आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

चंद्र को अनुकूल बनाए रखने हेतु चंद्र यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, चांदी की जंजीर या लाल धागे में, सोमवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपकी जन्मकालिक ज्योतिषीय आकृति से यह निर्देश प्राप्त हो रहा है कि आपका मुख्य उद्देश्य अपार संपत्ति प्राप्त करना एवं प्रसन्नता पूर्वक जीवन निर्वाह करना है, जिसकी पूर्ति सहज भाव से होने की पूर्ण संभावना है। आपका जन्म पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के द्वितीय चरण में धनु लग्न, कन्या नवमांश एवं मेष राशि के द्रेष्काण के उदय काल में हुआ था। आपके जन्म प्रभाव से ऐसा संकेत परिलक्षित हो रहा है कि आपकी महत्वकांक्षा सहजता पूर्वक पूर्ण नहीं होगी। परंतु आप अथक परिश्रम करके भी अपने उद्देश्य से संबंधित कार्य कलाप करती रहेंगी। इसके प्रभाव से निश्चित रूपेण आपको आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त होगी क्योंकि आपमें यह प्रतिभा ईश्वरीय प्रदत्त वरदान स्वरूप है।

आप व्यक्तिगत रूप से स्पष्टवादी प्राणी हैं। आप "विश्वसनीयता एक अच्छी नीति है।" इस पर विश्वास नहीं करती आप वास्तव में इसको कार्यरूप में देखना चाहती हैं। आप उत्कृष्ट लाभांश प्राप्त करने अथवा प्रदान करने में विश्वास रखती हैं। आप धनी, संपत्तिवान, दानी प्रवृत्ति की तथा जरूरतमंद लोगों की मदद करने वाली होंगी। आप एक अच्छी एवं श्रदालु स्वभाव की प्राणी हैं। आप ऊंची लहरों के समान बार बार धर्म एवं दर्शन के संबंध में सीख प्राप्त करेंगी।

आप निःसंदेह उच्च महत्वकांक्षी है तथा अपने लक्ष्य से संबंधित कार्यकलाप द्वारा अपनी परियोजना को भली प्रकार कार्यान्वयन करने की रूप रेखा पर विचार कर उत्साह पूर्वक कार्य में तल्लीन हो जाएंगी। यदि एक बार आप किसी कार्य को प्रारंभ कर देंगी। पुनः किसी भी प्रकार की विपरीत परिस्थिति में हतोत्साहित नहीं होंगी। आप प्रतिकूल परिस्थिति को समकोणात्मक चुनौती समझकर सफलता की ओर बढ़ती रहती हैं। आप में ऐसी प्रतिभा विद्यमान है कि आप किसी भी परिस्थिति का मूल्यांकन कर उचित दृष्टिकोण से तथा शीघ्रतापूर्वक किसी भी प्रकार के सुअवसर को हस्तगत कर अपने रास्ते पर चली आती हैं।

आप और आपको पति भाग्यशाली हैं तथा सभी प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उपयुक्त हैं। आपके जीवन का अनुकूल समय आपकी आयु का 27 वां वर्ष है जब सभी कार्य अथवा आपकी आकांक्षा आपके अनुकूल हो जाएगी। परंतु यदि आप अपने भाग्य को बहुत अधिक प्रेरित करना चाहकर, कहीं सट्टेबाजी या जूआ आदि के खेल में फंस गई अथवा आप जूआ सट्टा आदि खेल में योगदान करने लगी तो यह आपकी धन लोलुपता का परिचायक होगा। लेकिन इससे आपके पास पर्याप्त धन नहीं आ सकेगा तथा आपको संतुष्टि भी नहीं मिलेगी।

आप जैसी प्राणी बाहरी खेलकूद में अभिरूचि रखती है एवं यात्राएं खूब करती हैं। आप भी घर से बाहर अधिक समय बिताएंगी। अतएव आप अपने उत्कर्ष का विस्तार नहीं कर सकेंगी तथा आपके पारिवारिक जीवन में न्यूनता आ जाएगी तथा आपका जीवन एक तमाशा बन कर रह जाएगा। आपके पति आपके घर परिवार को अपने अधिकृत रखेंगे और आप कोई अन्य विकल्प की तलाश कर कोई सामंजस्य पूर्ण कर्त्तव्य का निर्वाहन करना चाहेंगी। आप का सौभाग्य है कि आप एक सुन्दर जीवन संगी तथा समझदार संतान से युक्त रहेंगी।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में गुरुवार, एवं रविवार का दिन अनुकूल एवं शुभ फलदायक हैं, परंतु शुक्रवार एवं शनिवार का दिन आपके लिए प्रतिकूल एवं समस्यापूर्ण रहेगा।

आपके लिए अंकों में अनुकूल अंक 3, 5, 6 एवं 8 अंक किसी भी कार्य-कलाप हेतु अनुकूल है। परंतु अंक 2, 7 एवं 9 अंक सर्वथा प्रतिकूल है।

आपके लिए रंगों में अनुकूल रंग, सफेद, क्रीम रंग, हरा, सूआपंखी, नीला एवं नारंगी रंग है। परंतु रंग लाल, मोतिया एवं काला रंग अव्यवहरणीय है।

ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

वृश्चिक राशि में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, लोकमान्य, क्रोधी उद्ययोगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही उनकी प्रवृति पुण्य एवं दान संबंधी कार्यों को करने की रहेगी अतः आपको भी वे पुण्य कार्यों की ओर प्रेरित करेंगे। साथ ही धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण आदर की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव उत्पन्न होगा परन्तु कुछ समय के बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। जीवन में आप उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगी एवं समयानुसार उनको पूर्ण सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कोई कष्ट नहीं होने देंगी।

चन्द्र

तृतीय,भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान, एवं कंजूस होता है।

कुम्भ राशि में चन्द्रमा हो तो जातक, उन्मत, सूक्ष्मदेही, शिल्पी, नीति दक्ष, दूरदर्शी, विद्वान्, गुप्तविद्याओं में रुचि, अच्छा अन्तर्ज्ञान, साधना करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति वाला एवं मध्यावस्था में संन्यास के प्रति झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्छल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरें के लिए आप शुभ एवं

अनुकूल रहेंगी।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्त्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

वृश्चिक राशि में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, राजमन्त्री, कार्यकुशल, सुगठित शरीर, अपनी उच्चता का दिखावा करने वाला, स्वार्थी, निर्बलस्वास्थ्य, दुःखी एवं कामुक होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

राहु

षष्ठभाव में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीड़ित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराक्रमी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

वृष राशि में राहु हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरूप, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं धनी होता है।

केतु

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ठग तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूत-प्रेतों की जानकारी द्वारा ठगने वाला होता है।

वृश्चिक राशि में केतु हो तो जातक धूर्त, वाचाल, कुष्ठरोगी, क्रोधी निर्धन एवं व्यसनी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। समान्यतया धनु लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ बलवान एवं शान्त प्रवृति के व्यक्ति होते हैं परन्तु अभिमान का भाव भी इनमें विद्यमान रहता है तथा अत्यंत ही बुद्धिमता से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं फलतः जीवन में धनैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करने में समर्थ रहते हैं। आदर्शवाद एवं अध्यात्मवाद के मध्य प्रवृत रहकर ये भौतिक सुखों का उपभोग करते हैं। इनके कार्य प्रायः समयानुसार ही सम्पन्न होते हैं। अन्य जनों के ये विश्वासपात्र होते हैं परन्तु दूसरों पर विश्वास कम ही करते हैं। दानशीलता का भाव भी इनमें विद्यमान रहता है तथा समाज में मान प्रतिष्ठा तथा यश अर्जित करने में समर्थ होते हैं। राजनीति, कानून, गणित तथा ज्योतिष आदि में इनकी रूचि रहती है तथा परिश्रमपूर्वक इन क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करते हैं। इन्हें हमेशा प्रेम या स्नेह से ही वश में किया जा सकता है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं शक्तिशाली महिला होंगी तथा परिश्रम एवं बुद्धिमतापूर्वक अपने महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगी। आप एक अध्ययनशील महिला होंगी। अतः विभिन्न शास्त्रों का ज्ञान अर्जित करके एक विदुषी के रूप में समाज में अपने को स्थापित करेंगी। कला के प्रति भी आपके रूचि रहेगी तथा जीवन में एक निश्चित आदर्श या उददेश्य के लिए संघर्षशील रहेंगी। शत्रु एवं विरोधियों से भी आप उदारता का भाव रखेंगी। इसके अतिरिक्त अपनी व्यवहार कुशलता बुद्धिमता तथा धैर्य से कार्य क्षेत्र में उन्नति करके सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी। यदि आप नौकरी या कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे।

लग्न में बुध की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी प्रसन्न तथा संतुष्ट रहेंगी। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगी । पिता के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी सेवा करने में हमेशा तत्पर रहेंगी तथा इससे आपको मानसिक शान्ति की अनुभूति होगी। कार्यक्षेत्र में भी आपका प्रभाव रहेगा तथा उन्नति मार्ग पर अग्रसर होंगी। साथ ही पुत्र संतति से आपको सुख एवं सहयोग मिलेगा तथा समाज में प्रतिष्ठा तथा सम्मान अर्जित करने में समर्थ होंगी ।

आर्थिक दृष्टि से आपके स्थिति सुदृढ़ होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करके जीवन में समस्त भौतिक सुखों का आनन्द प्राप्त करेंगी। आपका आचरण अच्छा रहेगा तथा लोग आपसे प्रसन्न तथा संतुष्ट होंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा परस्पर मधुर सम्बन्ध रहेंगे।

धर्म के प्रति भी आपके मन में निष्ठा रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक आप धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगी। इससे आपको मानसिक शान्ति की प्राप्ति होगी। मित्र एवं बन्धुवर्ग के आप प्रिय एवं आदरणीय होंगी तथा उनसे आपको सहयोग एवं लाभ समय समय

पर मिलता रहेगा। इस प्रकार आप स्वस्थ, विदुषी, बुद्धिमान एवं परिश्रमी महिला होंगी तथा धनैश्वर्य वैभव एवं सुखों को अर्जित करके उनका उपभोग करेंगी ।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अन्य जनों से अपना वायदा पूरा नहीं करेंगी तथा अपने अधिकांश समय को अनावश्यक वार्तालाप में व्यतीत करेंगी। आप इतनी बातूनी महिला होंगी कि अन्य लोग आप पर आसानी से नियंत्रण नहीं कर सकते हैं। आप आधुनिक विचारों से युक्त रहेगी तथा स्वभाव में विनम्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इसके साथ ही आसानी से किसी को अपना मित्र नहीं बनाएंगी तथा खूब सोच समझकर जब किसी से पूर्ण सन्तुष्ट हो जाएंगी तभी उसे अपना मित्र बनाएंगी।

आपका पारिवारिक जीवन सामान्यतया सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा। लेकिन आंतरिक मन से परिवार के विषय में पूर्ण चिन्तित रहेंगी परन्तु प्रयत्क्ष में उपेक्षा का भाव प्रदर्शित करेंगी। इससे कई बार पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न हो सकता है अतः ऐसी स्थिति में आपको सावधान रहना चाहिए फिर भी पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा तथा उनकी प्रसन्नता तथा खुशहाली के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगी। आप विभिन्न प्रकार के स्वादों की प्रिय रहेंगी तथा समय समय पर इनका आस्वादन करती रहेंगी लेकिन यदा कदा आपको नेत्र संबंधी रोग से परेशानी हो सकती है। इसके अतिरिक्त नौकरी या अन्य साधनों से आप धनार्जन करेंगी साथ ही विदेश में भ्रमण आदि से भी लाभान्वित हो सकती हैं। इस प्रकार आप वैभव शाली जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगी।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति अच्छी रहेगी तथा किसी वस्तु या विषय को आसानी से नहीं भूल पाएंगी। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगी तथा इनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही वे आदर्श बुद्धिमान तथा आज्ञाकारी होंगे। उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा आपको वे यथोचित सहयोग तथा सुख प्रदान करने में तत्पर रहेंगे। आप परस्पर एक दूसरे की कमियों तथा गलतियों की उपेक्षा करेंगे जिससे पारिवारिक शान्ति बनी रहेगी। मित्र एवं संबंधियों से भी सामान्यतया आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा उनसे अवसरानुकूल इच्छित सहयोग मिलता रहेगा।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी तथा स्वपरिश्रम एवं विद्वता से उपलब्धियां अर्जित करेंगी। साथ ही यदि कोई परेशानी या समस्या हो तो आप दृढ़ता पूर्वक उसका सामना तथा समाधान करेंगी आप जो कहेंगी वहीं करेंगी भी यह आपके व्यक्तित्व की विशेषता रहेगी। साथ ही स्पष्टवादिता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आप सिद्धान्त वादी महिला होंगी तथा अपने सिद्धांतों पर हमेशा दृढ़ रहेंगी। आधुनिक संचार साधनों यथा फोन टेलीविजन तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगी एवं प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगी। नृत्य एवं संगीत के प्रति आपकी रूचि रहेगी तथा रिक्त समय में आप इनसे अपना मनोंरजन करेंगी । आपकी दूर समीप की यात्राएं होती रहेगी तथा इनसे आप इच्छित लाभ एवं ख्याति भी प्राप्त होगी। साथ ही अध्ययन एवं सूचना संबंधी लेखों के प्रति आपका आकर्षण रहेगा। इसके अतिरिक्त आपकी मित्रता कीर्तिवान, क्षमाशील, सत्यवक्ता तथा उत्तमशील स्वभाव के व्यक्तियों से होगी तथा समस्त सुखों का उपभोग करते हुए भाग्यशाली महिला होंगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में मीनराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख संसाधनों से भी युक्त होंगी एवं आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आप एक वैभवशाली महिला भी होंगी तथा समाज में अपना यथोचित स्तर बनाए रखने में समर्थ होंगी।

आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको किसी श्रेष्ठ या वृद्ध महिला से वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती हैं। स्वपरिश्रम, बुद्धिमता एवं योग्यता से भी आप इच्छित धन सम्पत्ति अर्जित करेने में समर्थ होंगी। आपको अचल सम्पत्ति की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशिष्ट एवं शीध्र लाभ के योग बनते है। अतः चल सम्पत्ति पर विशेष निवेश करना चाहिए।

जीवन में आपको सुन्दर विस्तृत एवं आकर्षक आवास की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से यह सुसज्जित रहेगा। इसकी स्वच्छता का आप विशेष ध्यान रखेंगी तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगी। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा संबंधों में अनुकूलता रहेगी। इसके अतिरिक्त आप प्रारंभ से ही उत्तम वाहन प्राप्त करेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

आपकी माताजी शिक्षित, बुद्धिमान एवं सरल स्वभाव की महिला होगी तथा अपनी कर्तव्य परायणता तथा उत्तम कार्य कलापों से सभी सदस्यों को प्रसन्न तथा प्रभावित रखेंगी। परिवार के सभी लोग उन्हें वांछित आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित नैतिक, आर्थिक एवं अन्य प्रकार से सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आपकी चहुमुखी उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा। आपभी माता के प्रति श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता का भाव रखेंगी तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। इससे आपके परस्पर संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी रूचि रहेगी तथा छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंको से सफलताएं प्राप्त करेंगी। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा ससम्मान उतीर्ण करेंगी इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में अग्रसर रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप किसी उच्च तकनीकी या व्यावसायिक पाठ्यक्रम में भी उच्चस्तरीय डिग्री अर्जित करने में समर्थ होंगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामिनी होंगी तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। आप में शीघ्र एवं अनुकूल निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे अवसरानुकूल आप इच्छित लाभ एवं सफलता अर्जित कर सकती हैं। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी शीघ्र एवं आसानी से करने में समर्थ होंगी। इसके अतिरिक्त वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन के प्रति भी आपकी श्रद्धा एवं रूचि होगी तथा यत्नपूर्वक इनके ज्ञानार्जन में रूचिशील होंगी। आधुनिक विज्ञान, भौतिक विज्ञान गणित या ज्योतिष में भी आपकी प्रबल रूचि होगी एवं परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञानार्जन करेंगी। इस क्षेत्र में आप कुछ नवीन कार्य या सिद्धान्तों का भी प्रतिपादन कर सकती हैं जिससे आपके प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा लोग एक विदुषी के रूप में आपको सम्मान प्रदान करेंगे।

पंचमभाव में मेष राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंग में आप भावनात्मक आकर्षण तथा सम्मान का भाव रखेंगी। आपके प्रेम में मर्यादा नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण होगा तथा मनोरंजन के लिए ऐसे संबंध स्थापित नहीं करेंगी। अतः आपके प्रेम की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्र संतति अवश्य होगी। आपकी संतति बुद्धिमान प्रतिभाशाली एवं पराक्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में भी सर्वदा तत्पर होंगे। वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में माता-पिता का सहयोग एवं सलाह अवश्य लेंगे। इससे संबंधों में मधुरता तथा सदभावना बनी रहेगी। माता की अपेक्षा पिता के प्रति उनके मन में विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे पिता के माध्यम से ही करना सुविधाजनक समझेंगे परन्तु आदर दोंनो का समान होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में वे आपकी तन-मन-धन से सेवा करेंगे एवं अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार बच्चों के संदर्भ में आप एक भाग्यशाली महिला मानी जायेंगी।

शिक्षा के क्षेत्र में आपकी संतति अत्यधिक योग्य एवं प्रतिभाशाली सिद्ध होगी तथा प्रारम्भ से ही इच्छित उन्नति का प्रदर्शन करेगी जिससे उनका भविष्य उज्जवल होगा। आप भी उनकी शिक्षा के लिए किसी भी प्रकार की कमी नहीं करेंगी तथा अच्छी से अच्छी एवं आधुनिक संस्था में उन्हें शिक्षा प्रदान करायेंगी। इसके अतिरिक्त वे सुन्दर, स्वस्थ, विनम्र स्वभाव सक्रिय एवं निपुण होंगे तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य सामाजिक जनों को प्रभावित तथा प्रसन्न करने में समर्थ होंगे तथा वे भी बच्चों को वांछित स्नेह एवं प्रोत्साहन देंगे। इससे आपकी भी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी फलतः बच्चों से आप सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप का शत्रु या विरोधी पक्ष प्रबल रहेगा इसका मुख्य कारण यह होगा कि आप अपनी ही इच्छा से कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा अन्य जनों की इच्छा या सलाह को कोई महत्व प्रदान नहीं करेंगी। आपका उच्च स्तर, कार्यप्रणाली तथा अन्य प्रकार से खुशहाली शत्रु वर्ग के लिए ईर्ष्या का कारण होगा। साथ ही आपको अपने सम्बन्धियों तथा सहयोगियों से भी कई बार विरोध का सामना करना पड़ेगा। आप सामान्यतया दीवानी तथा फौजदारी मुकद्दमों में लिप्त रहेंगी तथा इनमें मुक्त भाव से व्यय करेंगी जिससे आपको उचित सफलता प्राप्त हो सकें। आप एक चतुर चालाक तथा बुद्धिमती महिला होंगी तथा साम, दाम, दण्ड, भेद से किस प्रकार से कार्य सिद्ध किया जाता है अच्छी तरह जानती है। अतः अपनी इस कार्य प्रणाली से शत्रु, विरोधी तथा मुकद्दमे आदि में विजय प्राप्त करने में समर्थ रहेंगी।

आपको नौकर चाकरों की सामान्यतया अत्यधिक आवश्यकता रहेगी क्योंकि आप एक व्यस्त महिला होगी तथा अपने दैनिक कार्यों को स्वयं सम्पन्न करने में असमर्थ रहेंगी अतः नौकरों की नियुक्ति आपके लिए आवश्यक रहेगी लेकिन यदा कदा सेवक वर्ग आपके गुप्त रहस्यों को अन्य जनों के समक्ष उजागर करेंगे अतः इससे आपके सामाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी। साथ ही वे चोरी आदि से भी हानि प्रदान कर सकते है अतः सेवकों के चुनाव में सावधानी रखें।

आपके पास आराम दायक जीवन बिताने के लिए प्रचुर मात्रा में धन होगा लेकिन अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए आप उन्मुक्त भाव से व्यय करेंगी। जिससे ऋण आदि लेने की स्थिति बनेगी। आपके मामा मामियों का स्तर भी उच्च रहेगा। यद्यपि वे आपको पसन्द करेंगे परन्तु आपको इच्छित सुख एवं सहयोग अल्प ही प्रदान करेंगे तथा आपकी कार्य प्रणाली से भी असन्तुष्ट रहेंगे। लेकिन अत्यवश्यक समय पर वे आपको अपना सहयोग प्रदान कर सकते है। साथ ही उत्तम स्वास्थय के लिए आपको खान पान का ध्यान रखना चाहिए तथा अनावश्यक अनियमिताएं नहीं होनी चाहिए अन्यथा प्रौढ़ावस्था में आप शारीरिक अस्वस्थता से परेशानी की अनुभूति कर सकती हैं।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है सामान्यतया मिथुन राशि के प्रभाव से जातक का सहयोगी सुशील विनम्र कलाप्रेमी तथा हास्य प्रिय प्रवृति का व्यक्ति होता है। साथ ही वह विद्वान् साहित्य प्रेमी उत्तम कार्यो को करने वाला तथा चतुर होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील एवं विनम्र स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सांसारिक कार्यो को करने में दक्ष रहेंगे। उनकी वाणी मधुर होगी तथा उच्च कोटि के साहित्य के प्रति अध्ययन की रूचि होगी। वह हास्य युक्त प्रवृति की भी व्यक्ति होंगे जिससे सभी लोग उनके व्यवहार से प्रसन्न रहेंगे। बृहस्पति के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान होगा तथा समाज एवं परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे।

आपके पति सुंदर आकर्षक एवं गौर वर्ण की व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर में पुष्टता रहेगी जिससे उनके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व में निखार आएगा। आयु के साथ साथ शरीर में स्थूलता भी आ सकती है। अतः व्यायाम आदि की उन्हें सलाह देनी चाहिए। इसके अतिरिक्त कला के प्रति उनका प्रबल आकर्षण होगा।

आपका विवाह किसी परिवार के श्रेष्ठ व्यक्ति के माध्यम से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में एक दूसरे के प्रति प्रबल आकर्षण एवं प्रेम की भावना होगी। आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा जीवन के मूल्यों तथा सिद्धांतों में समानता रहेगी जिससे आप प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। सांसारिक महत्व के कार्यो को आपसी सहयोग एवं सहमति से पूर्ण करेंगे। इससे संबंधों में मधुरता रहेगी तथा जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी प्रतिष्ठित परिवार में सम्पन्न होगा तथा समाज में वे आदरणीय होंगे। विवाह के बाद आपके सास ससुर से मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आप जीवन में नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उन्हें पितृवत सम्मान प्रदान करेंगी तथा महत्वपूर्ण कार्यो में उनकी सलाह एवं सहमति अवश्य लेंगी।

सास ससुर के प्रति आपके पति की सेवा एवं श्रद्धा की भावना होगी तथा सुख दुख में उनकी यथोचित देखभाल करेंगे। साले एवं सालियां भी उनके सद्व्यवहार तथा मधुरवाणी से प्रभावित होंगे एवं उन्हें यथोचित मान सम्मान तथा सहयोग प्रदान करेंगे। इससे परिवार में शांति बनी रहेगी।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी तथा इससे आपको यथोचित लाभ होगा एवं आपस में विश्वसनीयता भी बनी रहेगी यदि अपनी आयु से अधिक आयु के व्यक्ति से साझेदारी की जाए तो उसमें इच्छित लाभ एवं उन्नति होगी।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आपमें आध्यात्म संबन्धी शक्ति जन्म से ही विद्यमान रहेगी तथा ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञान अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही आपमें अन्तर्प्रज्ञा शक्ति की भी प्रबलता रहेगी फलतः आपके पूर्वाभास एवं भविष्य वाणियां प्रायः सत्य ही सिद्ध होगी। यदि आपको कोई मानसिक या अन्य परेशानी उत्पन्न होगी तो आप सामान्यतया इन्हीं विद्याओं के द्वारा उसके निराकरण के लिए प्रयत्नशील रहेंगी।

आपको निश्चित रूप से पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा धनऐश्वर्य से युक्त होकर आपका जीवन आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही प्रौढ़ावस्था में आप की चल एवं अचल सम्पत्ति में वृद्धि भी हो सकती है तथा मित्र एवं बन्धुवर्ग से लाभ की पूर्ण संभावना रहेगी। आपका विवाह एक कुलीन परिवार में होगा तथा वे धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त रहेंगे जिससे आपके दाम्पत्य जीवन में मधुरता बनी रहेगी। किसी भी मूल्यवान वस्तु या स्वयं का बीमा कराने में आप शीघ्रता का परिचय देंगी क्योंकि आप किसी भी वस्तु की सर्वप्रथम सुरक्षा का उपाय ढूंढती है तथा अनावश्यक हानि की संभावना को पहले ही समाप्त करना चाहती हैं । जीवन में चोरी डकैती या दुर्घटनाओं आदि की न्यूनता रहेगी तथापि यदि कोई ऐसी घटना घटित भी होती है तो इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा समस्त सांसारिक सुखों का उपभोग करके आप अपना सामान्य जीवन व्यतीत करेंगी।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आपकी ईश्वर के प्रति पूर्ण आस्था रहेगी तथा अपने धर्म का श्रद्धा पूर्वक अनुपालन करेंगी। साथ ही पारिवारिक परम्परानुसार धर्म का आचरण करेंगी। आप तीव्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा नेतृत्व के गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी। आप स्वच्छन्द प्रवृति की महिला होंगी तथा धार्मिक गुरूओं या श्रेष्ठ जनों का मन से आदर करेंगी। साथ ही उनके अनुसरण करने के लिए उद्यत हो सकती है। आध्यात्मिक क्षेत्र में आपका प्रचुर मात्रा में ज्ञान रहेगा तथा प्रसिद्ध तीर्थ स्थानों की समय समय पर यात्रा करेंगी लेकिन मुख्य रूप से अपने धर्म के तीर्थ स्थानों पर जाना ही विशेष पसन्द करेंगी। आपकी ज्यौतिष या तंत्र मंत्र आदि के प्रति भी श्रद्धा रहेगी एवं इनका न्यूनाधिक ज्ञान भी हो सकता है। ध्यान एवं योग संबंधी क्रियाओं को भी आप समय समय पर करती रहेंगी। आध्यात्म के द्वारा आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति की वृद्धि होगी फलतः आपके पूर्वाभास तथा भविष्य वाणियां भी सत्य सिद्ध हो सकती हैं।

आप एक सामाजिक प्राणी होंगी तथा स्वछन्दता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना रूचिकर लगेगा। साथ ही किसी के नियंत्रण में कार्य करना पसन्द नहीं करेंगी। धार्मिक एवं व्यवसाय संबंधी आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं हो सकती है इनमें आपको लाभ, ज्ञान एवं सम्मान प्राप्ति की संभावना रहेगी। साथ ही सामाजिक जनों की सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। पौत्रों से आपको इच्छित सहयोग प्राप्त होगा तथा वे आपकी पूर्ण सेवा करेंगे। वास्तव में आप वर्तमान समय में जो भी सुख ऐश्वर्य एवं वैभव का उपभोग कर रहीं है यह सब आपके पूर्व जन्मों का फल है अतः सामान्यतया प्रसन्नता पूर्वक ही जीवन व्यतीत करेंगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। साथ ही मंगल भी दशम भाव में ही स्थित है। कन्या राशि पृथ्वी तत्व एवं मंगल अग्नि तत्व युक्त ग्रह हैं। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान के साथ साथ श्रमसाध्य भी होगा तथा परिश्रम पूर्वक आप अपने कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी। साथ ही आप स्वतंत्र व्यवसाय या कार्य करने की भी इच्छुक होंगी।

दशमभाव में कन्याराशिस्थ मंगल के प्रभाव से आपके लिए आजीविका के क्षेत्र, सेना, पुलिस, सी आई डी, औषधि विभाग, इंजीनियरिंग, होटल प्रबंधन, विद्युत इंजीनियरी, विद्युत विभाग, ऊर्जा एवं शक्ति विभाग, अग्नि से संबधित विभाग या क्षेत्र, साहित्य लेखन, कला एवं वास्तुकला आदि विभाग एवं क्षेत्र शुभ एवं उन्नति कारक रखेंगी। इनमें कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा प्रगति के क्षेत्र में अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का भी सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः यत्नपूर्वक आपको उपरोक्त विभागों एवं क्षेत्रों में ही कार्य करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए सुवर्ण आदि धातुकार्य, शस्त्र निर्माण, विद्युत उपकरणों का उत्पादन या क्रय विक्रय, कैमिस्ट, एजेंसी, रासायनिक पदार्थ, होटल, वास्तुकला, चित्रकारी, साहित्य प्रकाशन, डाक्टर या वकील का स्वतंत्र व्यवसाय आदि क्षेत्र शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में व्यापार करने से आपको इच्छित धन एवं लाभ अर्जित होगा तथा उन्नति के मार्ग पर भी अग्रसर होंगी। अतः लाभ एवं उन्नति के लिए उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपने व्यापार को प्रारंभ करना चाहिए।

दशमभाव में मंगल की स्थिति से जीवन में आपको उच्च मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी अधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में समर्थ होंगी साथ ही समाज में भी आप प्रभावशाली महिला होंगी एवं दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि होगी। आप किसी सामाजिक संस्था या क्लब आदि में भी सम्मानित सदस्य या पदाधिकारी हो सकती है लेकिन इनकी प्राप्ति में आपको यदा कदा विलम्ब एवं व्यवधानों का भी सामना करना पड़ सकता है अतः इससे आपको निराश नहीं होना चाहिए तथा परिश्रम एवं बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिता तेजस्वी पराक्रमी बुद्धिमान एवं शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा समाज में वे एक प्रभावशाली पुरुष मानी जाएंगे एवं सभी लोग उन्हें वांछित सम्मान एवं आदर प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा का वे यथोचित प्रबंध करेंगे। साथ ही आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा तथा सुगमता पूर्वक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी। आप भी अपने परिश्रम एवं बुद्धिमता पूर्वक कार्य कलापों को सम्पन्न करके पिता के मान सम्मान में वृद्धि करेंगी। लेकिन आपके परस्पर संबंधों में मधुरता अल्प ही होगी एवं वैचारिक तथा सैद्धान्तिक मतभेद बने रहेंगे। इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में एक दूसरे का सहयोग अल्प मात्रा में ही लेंगे। अतः

आपको परस्पर सामंजस्य स्थापित करना चाहिए तथा अप्रिय स्थितियों से बचना चाहिए।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप एक दूरदर्शी व्यावहारिक तथा न्याय प्रिय महिला होंगी तथा अपने इन्ही गुणों के साथ साथ पराक्रम एवं योग्यता से जीवन में अपनी महत्वाकांक्षाओं, इच्छाओं तथा संकल्पों को पूरा करेंगी। धन वैभव एवं सुख साधनों से आप हमेशा युक्त रहेंगी तथा जीवन में माता सास या अन्य सहेली के सहयोग से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। इसके साथ ही विलासमय आभूषणों के विक्रय, इलक्ट्रोनिक्स के उपकरण तथा कम्प्यूटर आदि के क्षेत्र में भी आपका धनार्जन हो सकता है। यदि आप स्वयं कार्यरत नहीं हैं तो आपके पति उपरोक्त विभागों या कार्य से धन अर्जित करेंगे। इस प्रकार आय स्त्रोतों में वृद्धि करके आजीवन आर्थिक सुदृढ़ता को प्राप्त करेंगी ।

आपको जीवन में बड़ी बहिनों से सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी तथा प्रत्येक क्षेत्र में वे स्नेह तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी एवं मार्गदर्शन भी करेंगी। साथ ही आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगी। आप मित्रता प्रिय महिला होंगी तथा मित्रता का क्षेत्र विस्तृत रहेगा। इनके मध्य आप आदरणीया रहेंगी तथा सभी आपसे प्रभावित रहेंगे। आपको एकान्त अच्छा नहीं लगेगा तथा कोई न कोई हमेशा साथ में रहेगा। समाज से आपको इच्छित सम्मान प्राप्त होगा एवं अपने क्षेत्र में प्रतिष्ठा तथा ख्याति प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त सामाजिक जनों की सेवा तथा भलाई करना भी अपना कर्तव्य समझेंगी जिससे जीवन में सामाजिक रूप से विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति की संभावना रहेगी। इस प्रकार आप सुखऐश्वर्य से सुसम्पन्न होकर अपना पारिवारिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगी।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से आप एक भौतिक वादी महिला होंगी तथा धनार्जन के लिए नित्य यत्नशील रहेंगी। आप अन्य जनों की भलाई के कार्यो को तन मन धन से करने के लिए भी तत्पर रहेंगी अतः समय समय पर आपको अधिक धन की आवश्यकता पड़ेगी लेकिन अपनी योग्यता तथा पराक्रम से प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। आपकी इच्छा धनऐश्वर्य से युक्त होने की हमेशा रहेगी साथ ही आर्थिक सुरक्षा के प्रति भी सतर्क रहेंगी तथा इस कार्य में आपको अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

आपका व्यय मुख्य रूप से दया, दान, मित्रों तथा बन्धुवर्ग पर होगा। जब भी आपको इसका अवसर मिलेगा आप अवश्य कुछ न कुछ इन पर व्यय करेंगी। साथ ही भौतिक एवं विलासमय आधुनिक उपकरणों पर भी समय समय पर व्यय करती रहेंगी लेकिन कभी कभी आपको ऐसे मामलों में सावधानी रखनी चाहिए क्योंकि आपकी प्रवृति को देखते हुए लोग अकारण ही आपसे धन की मांग कर सकते है।

आपको दूर समीप की यात्राएं प्रिय कर लगेंगी। साथ ही युवावस्था में आप साहसिक कार्यो को भी सम्पन्न करेंगी तथा किसी नवीन सिद्धांन्त का भी प्रतिपादन कर सकती है। देश की यात्राओं के साथ साथ आपकी विदेश संबंधी यात्राएं भी सम्पन्न होगी जिनसे आपको लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त बाई आंख में किसी प्रकार की कष्टानुभूति कर सकती है लेकिन सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

नक्षत्रफल

आप शतभिषा नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि कुम्भ तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि अश्व, गण राक्षस, वर्ग मार्जार, वर्ण शूद्र तथा नाड़ी आद्य होगी। नक्षत्र के प्रथम चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "गो" अक्षर से होगा।

जीवन में आप शीत के कारण व्याकुलता की अनुभूति करेंगी एवं इसकश सहन करने में अपने को असमर्थ समझेंगी। आप में शौर्यगुणों की प्रधानता रहेगी तथा साहसिक कार्यों को करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगी एवं अपने महत्वपूर्ण कार्यों को भी साहस पूर्वक सम्पन्न करेंगी। आप में करूणा की भावना अल्प मात्रा में रहेगी तथा कठोरता के भाव की अधिकता होगी। स्वभाविक रूप से आप चतुर रहेंगी एवं दक्षतापूर्वक अपने कार्यों को सफल करने में सक्षम रहेंगी। आपकी दक्षता से अन्य सामाजिक लोग भी आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपका यथोचित आदर एवं सत्कार करते रहेंगे। इसके साथ ही शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त करने में भी आप को नित्य सफलता मिलेगी तथा आपके शत्रु आपसे भयभीत रहेंगे।

शीतभीरूरतिसाहसी सदानिष्ठुरो हि चतुरो नरो भवेत्।
वैरिणामतिशयेन दारूणो वारूणोडनि यस्य स सम्भवं।।
जातकाभरणम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक शीत से डरने वाला, अत्यन्त साहसी, कठोर, चतुर तथा शत्रुओं का नाश करने में सफल होता है।

आपकी नैसर्गिक रूप से ज्योतिष शास्त्र के प्रति रूचि तथा श्रद्धा रहेगी एवं इसका आपको काफी अच्छा ज्ञान भी रहेगा। साथ ही आप शान्त स्वभाव की महिला होंगी तथा हिंसक प्रवृतियों का आप में प्रायः अभाव ही रहेगा। आप थोड़ी मात्रा में भोजन पसन्द करेंगी तथा इससे हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त करेंगी।

कालज्ञः शततारकोद्भवनरः शान्तो ळल्पभुक् साहसी।।
जातक परिजातः

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य समय का ज्ञाता अर्थात् ज्योतिषी, शान्त स्वभाव युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला तथा पूर्ण रूप से साहसी होता है।

आप विपुल धन की स्वामिनी रहेगी तथा समाज में एक धनाढ्य महिला के रूप में विख्यात होंगी लेकिन आप में कंजूसी की प्रवृति विद्यमान रहेगी। अतः आप धन को खर्च करने की अपेक्षा उसके संचय में ही अधिक ध्यान केन्द्रित करेंगी। पुरूष वर्ग में भी आप प्रिय एवं आदरणीया समझी जाएगी तथा उनमें आपके मित्रतापूर्ण संबंध भी स्थापित होंगे। साथ ही उनकी सेवा एवं सहयोग करने में भी आप तत्पर एवं प्रयत्नशील रहेंगी। आप अपने घर या देश से दूर विदेश भ्रमण भी करेंगी।

कृपणो धनपूर्णेः स्यात्परदारोपसेवकः।
जातः शतभिषायां च विदेशे कामुको भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र का जातक कृपण, धन से पूर्ण, परस्त्री सेवी, विदेश में भ्रमण करने वाला तथा काम चेष्टा वाला होता है।

आप समाज में एक स्पष्ट कहने वाली महिला के रूप में प्रसिद्ध होंगी। आपकी इस प्रवृति से कई लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे तो कई लोग असन्तुष्ट भी होंगे। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के व्यसनों में भी आपकी रूचि रहेगी तथा इनका शौक आपको पूर्ण रूप से रहेगा। साथ ही आप अविचार के कार्यों में प्रवृत तथा स्वतंत्र रहेंगी तथा अपनी बात को सत्यसिद्ध करने के लिए प्रयत्नशील होंगी। आपकी इस दुराग्रही प्रवृति से आपके सामाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी।

स्पुटवाग्व्यसनी रिपुहा साहसिक शतभिषजि दुर्ग्राह्यः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्ट वक्ता, व्यसन प्रेमी, शत्रुओं को जीतने वाला, अविचार के कार्यों में प्रवृत तथा स्वतंत्र होता है।

आप ताम्र पाद में पैदा हुई हैं। अतः आप आजीवन धनैश्वर्य से सर्वथा सम्पन्न रहेंगी एवं जीवन में धन का आपके पास अभाव नहीं रहेगा साथ ही सुखपूर्वक आप इसका उपभोग भी करेंगी। काव्य क्षेत्र में आप रूचिशील रहेंगी तथा इस क्षेत्र में सफलता भी अर्जित करेंगी। बन्धुवर्ग से आपके अत्यन्त ही मधुर संबंध रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हे प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। नवीन वस्त्रों को धारण करने में आप अत्यन्त ही रूचिशील रहेंगी तथा समय समय पर इसका संग्रह भी करेंगी। शरीर से आप पूर्ण बलशाली तथा स्वस्थ रहेंगी। आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा आपके प्रभुत्व को सभी लोग मन से स्वीकार करेंगे। साथ ही साहसिक कार्यों को करने में भी आप उत्सुक रहेंगी। जीवन में आप प्रायः प्रसन्नता की ही अनुभूति करेंगी लेकिन स्वभाव में कृपणता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त आप एक विदुषी महिला होंगी तथा भाग्य से प्रबल रहेंगी।

कुम्भ राशि में उत्पन्न होने के कारण आपकी नासिका उन्नत होगी तथा मुख एवं मस्तक भी विस्तृताकार के होंगे। साथ ही हाथ, पैर व कमर में भी स्थूलता स्पष्ट रूप` दृष्टिगोचर होगी। आपके शरीर में अल्प मात्रा में रूक्षता रहेगी परन्तु शारीरिक सौन्दर्य में सुन्दरता का आकर्षण पूर्ण रूप से विद्यमान रहेगा। आपका स्वभाव भी विद्रोही होगा एवं कई बार आप किसी की बात को मानने के लिए तैयार नहीं होंगी इससे अन्य लोग आपसे असन्तुष्ट होंगे। आपके स्वभाव में उग्रता भी रहेगी एवं कभी कभी आप अकारण ही शीघ्र क्रोधित भी हो जाएंगी। धर्म के प्रति आप आपके मन में श्रद्धा का भाव भी विद्यमान रहेगा। आप का स्वभाव आलसी भी होगा तथा अवसरानुकूल दुष्टता का भी आप प्रदर्शन करेंगी। शिल्प या चित्रकारी में आप निपुणता

प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त समय समय पर आप मानसिक चिन्ताओं से भी व्याकुल तथा रहेंगी।

उद्धोणो रूक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।
सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।
सारावली

समाज में आप एक विदुषी की तरह आदरणीया रहेंगी एवं विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा। साथ ही कई प्रकार के कार्यों को कुशलता पूर्वक करने में आप अत्यन्त ही चतुराई का प्रदर्शन भी करेंगी। शत्रुओं का नाश करने में आप सक्षम रहेंगी तथा वे भी सभी आपसे भयभीत तथा पूर्ण रूप से प्रभावित रहेंगे।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।
जातकाभरणम्

आप कभी कभी अप्रत्यक्ष रूप से कठोरकार्यों को भी सम्पन्न करेंगी या इसमें अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। आप नैसर्गिक रूप से भ्रमण तथा यात्राप्रिय रहेंगी एवं अपने अधिकांश समय को यात्रा करने एवं घूमने फिरने में ही व्यतीत करने के लिए नित्य प्रयत्नशील तथा तत्पर रहेंगी। अन्य जनों के धन के प्रति आपकी लोलुपता रहेगी तथा उसे प्राप्त करने के लिए नित्य यत्नशील रहेंगी। आर्थिक क्षेत्र में आपको विषमता का सामना करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त सुगन्धित द्रव्यों तथा पुष्पादि के प्रति भी आपके मन में आसक्ति रहेगी तथा समयानुसार आप इनका उपभोग भी करती रहेंगी।

प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोळध्वसहो डवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः।।
फलदीपिका

आप एक उच्चकोटि की विदुषी होगी तथा समाज में अपनी विद्वता के कारण यश प्राप्त करेंगी लेकिन अन्य श्रेष्ठ विद्वान जनों को आपके द्वारा यथोचित मान सम्मान की प्राप्ति नहीं होगी इससे लोगों में आपके प्रति सम्मान की भावना में अल्पता आएगी।

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।
जातक परिजातः

आप प्रत्येक क्षेत्र में प्रायः सफल एवं विजय अर्जित करती रहेंगी। साथ ही आप अच्छे चाल चलन से युक्त रहेंगी एवं जीवन में यत्नपूर्वक इसका अनुपालन करती रहेंगी। धनैश्वर्य से प्रायः आप सुसम्पन्न ही रहेंगी। गुरूजनों या श्रेष्ठ लोगों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं समयानुसार आप इनकी हार्दिक सेवा तथा सहयोग प्रदान

करने के लिए तत्पर भी रहेंगी। पुरूष वर्ग में आप प्रिय एवं आदरणीया समझी जाएंगी। आपका परिवार भी विशालता से युक्त होगा एवं जाति तथा धर्म के लोगों की भलाई के कार्यों में आप नित्य तत्पर रहेंगी एवं परिश्रम पूर्वक उनकी भलाई करेंगी। अतः बन्धु या जाति में आप श्रेष्ठ तथा सम्माननीया समझी जाएगी। इसके साथ ही विभिन्न प्रकार के सद्गुणों से आप सुशोभित रहेगी एवं जीवन में इसका अनुपालन करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरूभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।
जातक दीपिका

आपकी गर्दन की लम्बाई सामान्य से अधिक रहेगी तथा नसें भी सर्वत्र शरीर में दृष्टिगोचर होती रहेंगी। अपने सामाजिक या व्यापारिक संबंधो के परिक्षेपन में पुरूषों से भी आपके मैत्रीपूर्ण संबंध रहेंगे। साथ ही अपने मित्रों के प्रति आपके मन में स्नेह प्रेम तथा सहयोग प्रदान करने की भावना नित्य बनी रहेगी।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ऊध्वसहः।।
वृहज्जातकम्

आप के मन में दानशीलता की भावना नेसर्गिक रूप से विद्यमान रहेगी अतः अवसरानुकूल यथाशक्ति आप समाज में जरूरत मन्द लोगों तथा दीन दुःखियों को अपनी इस प्रवृति से कृतार्थ करती रहेंगी। इसके साथ ही अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर आप मन से उनका उपकार स्वीकार करेंगी तथा उनके प्रति हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगी। आपकी इस कृतज्ञता के भाव से अन्य लोगों की आपके प्रति श्रद्धा तथा सम्मान के भाव में वृद्धि होगी। आपकी आखें अत्यन्त ही सुन्दर एवं दर्शनीय रहेगी तथा बुद्धि भी सरल रहेगी। आप किसी के साथ भी धोखा या प्रपंचादि करने के लिए कभी भी उत्सुक नहीं रहेंगी। इस प्रकार अपने अच्छे कार्यों तथा सुशील स्वभाव के कारण आप समाज में पूर्ण सम्मान तथा लोकप्रियता अर्जित करेंगी तथा आप धनार्जन स्वयं के बल पर ही करेंगी तथा साहस पूर्वक सभी सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त जीवन में विभिन्न प्रकार के वाहन साधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा आनन्दपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगी।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रवृति कभी कभी निरर्थक बातों को बोलने की रहेगी तथा हृदय में भी कोमलता की न्यूनता रहेगी। परन्तु आप एक साहसी महिला होंगी अतः साहस पूर्वक ही अपने अधिकांश महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में सफल रहेंगी। आप अकारण ही शीघ्र उत्तेजित भी हो जाया करेंगी एवं क्रोध का अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगी। साथ ही आप का स्वभाव विवादादि में भी जागृत रहेगा। अतः कई अन्य लोगों से आपका परस्पर विवाद या आदि चलता रहेगा। इसके अतिरिक्त शारीरिक बल से आप पूर्ण रूपेण सम्पन्न रहेंगी।

आप कभी कभी उन्माद या प्रमेह के रोग से भी व्याकुल हो सकती हैं परन्तु आपके सौन्दर्य में आकर्षण विद्यमान रहेगा। इसके साथ ही आप यदा कदा अपने सम्भाषण में कटु शब्दों का उपयोग करेंगी जिससे श्रोता तथा अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

अश्व योनि में जन्म लेने के कारण आप स्वछन्दता पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करने की इच्छुक रहेंगी तथा बाह्य हस्तक्षेप या दवाब आपको बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगेगा। आप सर्वगुण सम्पन्न रहेंगी एवं साहस तथा वीरता के भाव से भी सुशोभित रहेगी। आप एक तेजस्वी महिला होगी तथा अन्य लोग भी आपकी तेजस्विता से नित्य प्रभावित रहेंगे। इसके साथ ही वीणा या अन्य बाद्य यंत्रो को बजाने के प्रति आप रूचिशील रहेंगी एवं इसमें निपुणता भी प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आप एक विश्वास योग्य महिला भी होंगी तथा प्रायः सभी लोगों का आपके ऊपर विश्वास रहेगा।

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरस्वरः।
स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योनौ जातो भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात् अश्व योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, सद्गुणी, वीर प्रतापी, घर्घर स्वर वाला तथा मालिक का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्छल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के

लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरें के लिए आप शुभ एवं अनुकूल रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही उनकी प्रवृति पुण्य एवं दान संबंधी कार्यों को करने की रहेगी अतः आपको भी वे पुण्य कार्यों की ओर प्रेरित करेंगे। साथ ही धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण आदर की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव उत्पन्न होगा परन्तु कुछ समय के बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। जीवन में आप उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगी एवं समयानुसार उनको पूर्ण सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कोई कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके लिए चैत्र मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, आर्द्रा नक्षत्र, गंड योग, वणिज करण, गुरुवार, तृतीय प्रहर तथा मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फल देने वाले हैं। अतः आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, आर्द्रा नक्षत्र, गण्डयोग, वणिज करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा मिथुन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में त्याज्य रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय ठीक नही चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता,

व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट कुबेर की आराधना करनी चाहिए एवं नियमित रूप से शनिवार के उपवास करने चाहिए। साथ ही नीलम, लोहा, पंचधातु, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्मपादुकाएं आदि पदार्थों का किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इसके साथ ही शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी मानसिक चिन्ताएं दूर होगी एवं समस्त अशुभ फलों का प्रभाव नष्ट होगा एवं सर्वत्र शुभ एवं इच्छित सफलताएं अर्जित होंगी।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध है (जैसे जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर-बराबर धन लेकर आपके शहर/गांव के चौक में बैठे कारीगर, हकीम/डाक्टर को उसका काम बढ़ाने के लिये वह धन दान स्वरूप दे दें।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है। सबसे बराबर-बराबर पीली कौडियां लेकर उसी दिन एक जगह इकटठी करके जला कर उनकी राख उसी समय जल में प्रवाहित कर देना।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पितृऋण से मुक्त है।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का

उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे एक-एक नारियल उसी दिन जल में प्रवाह करना चाहिए।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य बारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप घर के बाहर जाकर साधवी बनना चाहो तो साधवी न बन कर जागीरदार बनेंगी। आपको बड़े-बड़े कामों से धन मिलेगा। डाक्टर/कैमिस्ट के कामों से लाभ मिलेगा। सुख की नींद सोएंगी। नौकरी-व्यापार में शुभ फल मिलेगा। आपके ऊपर बुजुर्गों का आशीर्वाद मिलेगा। आपके मकान में रौनक रहेगी। आप अंतिम समय में भी सुख से समय बिताएंगी। आध्यात्म और ध्यान मार्ग में सफलता मिलेगी। गुप्त विद्याओं में रुचि, विदेश संबंधी कामों से लाभ मिले या विदेश में निवास का योग है। आटा या चक्की के कामों से भी लाभ मिल सकता है।

यदि आपकी बिना आंगन के मकान में रिहाईश होगी, नीच या विधुर पुरुष से संबंध होंगे, अमानत में खयानत की, बिजली का सामान मुफ्त लिया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से आप अधम, नेत्र रोगी, दिमागी खराबी, आग की तरह जलते रहने वाली होंगी। आंखों की रोशनी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। आप काली चीजों लकड़ी, बिजली के काम से संबंधित नौकरी-व्यापार में नुकसान उठाएंगी। आपको मैकेनिकल काम से भी नुकसान होगा। मकान बनवाने, लोहे, तेल, राशन, कच्चे कोयले के काम में भारी नुकसान होगा। नीच या विधुर पुरुष से आपका संबंध रहने से आपकी और बुजुर्गों की संपत्ति का नाश होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बिजली का सामान मुफ्त न लेवें।
2. किसी की अमानत में खयानत न करें।

उपाय :

1. भूरी चीटियों को त्रिचौली डालें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को जल देवें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली के तीसरे खाने में चंद्रमा पड़ा है। इसकी वजह से मैदाने जंग में हार या हानि नहीं होगी। आप मधुरभाषिणी, परिश्रमी, सच्चरित्र, मृत्युरक्षक एवं भातृ सुख से पूर्ण रहेंगी। चंद्रमा आपके सहायक हैं। चोरी से बचाव होगा। भाई से धन-दौलत प्राप्त होगी। जन्मदिन के बाद का हर तीसरा महीना श्रेष्ठ रहेगा। आप साहसी होंगी। हर प्रकार की शरारत का जवाब देने की आप में क्षमता होगी। आपके मन में शांति रहेगी। सांसारिक जीवन में भी आप योगी जैसे स्वभाव की होंगी। यदि आप साधू हो जाएं तो ऋद्धि-सिद्धि की साधना की मालकिन होंगी। गृहस्थी, धन-दौलत की भंडारी होंगी। आपके परिवार में स्त्रियों की संख्या

अधिक होगी। आपके घर में पुरुषों की इज्जत होगी तो आपका भाग्योदय होगा। आपका पति से प्रेम और सेवा उत्तम फल देगी। कुदरत लंबे हाथों से आपकी मदद करेगी। गरीबों पर तरस खाएंगी। आपके पिता/ससुर को कम और माता/सास को अधिक सुख मिलेगा। माता-पिता/सास-ससुर में से एक की लंबी आयु होगी। दिमागी शक्ति अच्छी रहेगी। लड़की की शादी में उसके ससुराल वालों से पैसा लेना जहर जैसा असर देगा। आप सरकार या विद्यापीठ से सम्मानित होंगी। आपको शतरंज-तैराकी का शौक हो सकता है।

यदि आप होस्टल वार्डनर हैं और विद्यार्थियों का सामान खुर्द-बुर्द किया, रिश्तेदारों का विरोध किया, भाई-बहन का हिस्सा दबाया या ब्याही बहन का धन लेकर वापिस न किया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से भाई-बहन को अपमानित किया या भाई-बहन को दुःखी किया तो आपके घर में चोरी का भय और यात्रा में हानि हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बहन-भाई/ननद से झगड़ा न करें।
2. यतीमों का सामान हड़प न करें।

उपाय :

1. लडकी/बहन के विवाह में कन्यादान करें।
2. लड़के के जन्म पर गुड़-गेहूं-तांबा दान करें।
3. लड़की के जन्म पर दूध-चावल-चांदी का दान करें।
4. दुर्गापाठ या कन्याओं की सेवा करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपका संतान पक्ष निर्बल रहेगा। 45 वर्ष की आयु तक संतान सुख के लिए समय मध्यम रहेगा। आपकी कमांडिंग बरकरार होगी। अगर आप सरकारी सेवा में रत होती हैं तो सेना या पुलिस में उच्च पद मिलेगा। आप एक जानी-मानी समाज सेविका होंगी। आप अवश्य ही धनवान होंगी। आप अच्छे या बुरे तरीके से भी धन कमा कर बड़ी जायदाद की मालकिन बनेंगी। 32 वर्ष से 64 वर्ष आयु तक खूब धन का आगमन होगा। आप राज सुख से युक्त या शाही जीवन बिताएंगी। आप पोते-पड़पोते का सुख भोगेंगी। आपके जन्म के बाद, आपके पिता/ससुर की माली हालत अच्छी होने की उम्मीद है। आप अपनी जायदाद बनाएंगी और आप कई मकान की मालकिन होंगी। आप अपनी मेहनत से दौलत पैदा करेंगी। आपका स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। गृहस्थ जीवन आराम से गुजरेगा। आप में पूरी दिलेरी रहेगी और आपका हौसला बुलंद रहेगा। आपके यहां कई मांगलिक कार्य होंगे। मिला-जुला कर आपका जीवन बहुत सुखी रहेगा।

यदि आपने पुलिस सेना विभाग से झगड़ा किया, समाज विरोधी कार्य किये,

परिवार के लोगों के साथ झगड़ा किया, नमक या नमकीन चीजों का अधिक प्रयोग किया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से 22वां वर्ष खुद के लिए कष्टकारक होगा। आप खानदान को तोड़ने वाले होंगी। आप सोना बेचेंगी तो इसका बुरा असर औलाद पर पड़ेगा। आपकी बदनामी हो सकती है। चोरी का लांछन भी लग सकता हैं कभी जेल भी जाना पड़े, ऐसी आशंका है या आपको जेल विभाग में नौकरी करनी पड़ सकती है। ननिहाल में रहना आपको मंदा फल देगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. सोना न बेचें।
2. दूध उबल कर गैस चूल्हे/चूल्हे या अंगीठी पर गिर कर, न जले।

उपाय :

1. हिरण की पालना करें।
2. काने-काले, गंजे व्यक्ति की सेवा करें।

बुध

आपकी जन्म कुंडली के पहले खाने में बुध पड़ा है। इसकी वजह से आपको ज्योतिष विद्या से लगाव रहेगा और आप पूर्णरूपेण इस विषय की ज्ञाता भी होंगी। आपको लाभ विदेश यात्रा या विदेश व्यापार से रहेगा। शिल्पकला, दस्तकारी से भी लगाव रहेगा। आपकी बुद्धि भी तेज होगी। आप द्विस्वभावात्मक प्राणी हैं। आप पर दूसरों का असर तेजी से पड़ता है। दो शत्रुओं के मध्य रह कर भी सुरक्षित रहेंगी। फलस्वरूप आप अच्छे कार्य एवं अच्छी बुद्धि से प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेती हैं। आप सामर्थ्य और शक्तिशाली महिला की पक्षधर हो कर उसे शक्ति प्रदान करती हैं। भयातुर धीरे-धीरे चलने वाली, मधुरभाषिणी, आकर्षक व्यक्तित्व की, अनेक रूपों वाली हैं। आप बातचीत करना पसंद करती हैं। आप कल्पना जगत की प्राणी हैं। हर महिला को अपना बना लेने की कला विद्यमान है। आपकी ऊंची बातें भाग्य बनाने में सहायक हैं। आपके मुंह से निकली बुरी बात का असर पड़ता है। आप के अंदर आन्तरिक शक्ति है एवं काम कला में प्रवीण हैं। आप दूसरों की परवाह नहीं करती हैं, स्वार्थपरायण, अपनी प्रशंसा चाहने वाली हैं।

यदि आपने नेकी का रास्ता छोड़ बदी का रास्ता अपनाया, अण्डे खाये, राग गाने का शौक रखा, शराब पी और मांस-मछली खायी, अधर्म के काम किये या जादू-टोना वशीकरण आदि विद्या में रुचि रखी तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आपकी कुछ आदतें बुरी हैं। धीरे-धीरे सोच-समझ कर बोलने की आदत से बुद्धिमानी का प्रतीक बनेंगी। आप चलते-चलते या काम करते-करते बातें करना पसंद करती हैं। अकारण कंजूसी बरतना प्रतिष्ठा के प्रतिकूल है। संतान सुख में बाधा की आशंका है। चमड़ी का रोग या पेट में खराबी रहेगी। जादू-टोना विद्या में रुचि रखने से

धन-परिवार की हानि होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. अंडा या अंडे बनी चीजें न खावें।
2. शराब-मछली का सेवन न करें।

उपाय :
1. धर्म-कर्म करें।
2. घर आये मेहमानों की सेवा जरुर करें।

गुरु

आपकी कुंडली के बारहवें खाने में वृहस्पति पड़ा है। जिसकी वजह से आप उत्तम ज्ञानी होंगी। आप दूसरों का भला करेंगी इससे आपके भाग्य में वृद्धि होगी। आपका अधिक समय पूजा-पाठ में व्यतीत होगा और पूजा-पाठ से भी आपके भाग्य में वृद्धि होगी। आपको धन से बहुत लगाव नहीं रहेगा आप त्यागी महिला होंगी। अपार धन आपके पास रहेगा मगर आप धन के पीछे नहीं भागेंगी। आपमें सेवा भावना रहेगी। आप ध्यान-समाधि की आदत डालें तो आपके घर सोने की वर्षा होगी। आप हृदय से वैरागी और ज्ञानी होंगी। आपका साधू जैसा स्वभाव होगा। आपका धन शुभ कर्म में खर्च होगा। आप खर्च के बोझ से दुःखी नहीं रहेंगी। बुरा कर्म आप नहीं करेंगी, यदि बुरे काम करने की प्रवृत्ति हुई तो बहुत नुकसान होगा। यदा-कदा औलाद के विषय में चिंता होगी। आप धन-दौलत के संबंध में राजा जनक की तरह त्यागी होंगी। गृहस्थ में हर प्रकार का सुख प्राप्त होगा। आपका परिवार बढ़ेगा, खुशहाल रहेगा। खुद भी निश्चिंत रहेंगी। आप किसी को आर्शीवाद दें तो उसको आपका आर्शीवाद फलेगा। पर आपका किसी को दुर्वचन नहीं लगेगा। दलाली का काम लाभकारी होगा।

यदि आपने जनता विरोधी कार्य किये, झूठी गवाही दी या किसी से धोखा फरेब किया, धन के लिये किसी के आगे हाथ फैलाने की आदत रखी तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आप दूसरों को सता कर स्वयं कष्ट और मुसीबत में पड़ जाएंगी। आप अधिक न बोला करें यह आपके लिए अच्छा नहीं है। आध्यात्म का मार्ग नुकसानदेह रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. ऐसे काम न करें जिससे आपका विरोध हो।
2. किसी के साथ धोखा-फरेब न करें।

उपाय :

1. गुरु/पिता-ससुर की सेवा करें।
2. पीपल को जल से सींचें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में शुक्र पड़ा है। इसकी वजह से आपको कन्या संतान अधिक होगी। आपके पति दिखने में भोले-भाले परंतु काम धंधे में स्वभाव से अच्छे होंगे। शादी के बाद खूब आमदनी होगी। आपको कन्या सुख अधिक होगा। विलंब से पुत्र की प्राप्ति हो, ऐसी आशंका है। आपके ससुराल पक्ष के लोग सहायक होंगे और उनसे आपको लाभ होगा। आप में और आपके पति में सामान्य कामवासना रहेगी। आप पैसे के पीछे भागती रहेंगी। आप भोले स्वभाव की महिला होंगी। आपमें अच्छे गुण भी रहेंगे आप गुप्त कार्य करने की आदी हो जाएंगी। आप अपनी विचारधारा को शीघ्र बदल देंगी। इसके लिए धन पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा।

यदि आप परिवार में मुखिया बन कर रहीं, चाल-चलन खराब किया, अप्राकृतिक सैक्स किया, कामांध बन कर पाप किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपकी कामशक्ति कमजोर होगी। (किसी योग्य वैद्य/हकीम से सलाह करके आयुर्वेद दवाई लेना लाभदायक रहेगा)। आपके पति के हाथों धन की बरकत नहीं होगी या पति द्वारा धन हानि या अपव्यय होगा। सरकार द्वारा दंड-जेल यात्रा का भय, चाल-चलन आपका शक्की होगा। आप यदा-कदा मूर्खता भी कर बैठेंगी। आपका संतान पक्ष निर्बल रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. पति को घर का खजांची न बनाएं।
2. नौकरी-व्यापार बार-बार न बदलें।

उपाय :
1. पति से सरसों का तेल दान करायें।
2. विवाह समय कपिला गाय का दान करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में शनि पड़ा है। इसकी वजह से आपका भाग्योदय 48वें वर्ष में होगा। आप अपने धर्म पर अडिग रहेंगी। जीवन के 57वें, 72वें और 89वें आयु में अच्छा फल मिलेगा। आपको पूरा आराम मिलेगा और उत्तम फल प्राप्त होंगे। लोहा, कोयला, रबड़ आदि काली चीजों के व्यवसाय से लाभ प्राप्त करेंगी। दस्तकारी में भी निपुण होंगी। आप अपने धन की सुरक्षा करेंगी। आर्थिक दृष्टि से आप प्रगति करेंगी। संतान सुख अवश्य मिलेगा। यदि आप नेकी करें और धर्म का सहारा लेंगी तो मिट्टी को भी छुएंगी तो

सोना हो जाएगी। न्यायप्रिय, राज्याधिकारी, राजदरबार और धन-दौलत पर अच्छा असर पड़ेगा। भलाई करने से जिंदगी में सभी प्रकार के आराम मिलेंगे। बुजुर्गी संपत्ति का लाभ होगा, ससुराल वाले अमीर होंगे।

यदि आपने 55 वर्ष की आयु से पहले मकान बनाया, आपने परिवार के लोगों को हानि पहुंचाई, भाई से दूर रहीं, धोखे-ठगी से धन कमाना शुरु किया तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आपकी शिक्षा अधूरी रह सकती है। आप गुस्सैल मिजाज की होंगी। आपके आमदनी और खर्च बराबर रहेंगे। शराब-मांस का सेवन करने से क्रोध की मात्रा बढ़ जाएगी और आप किसी की हत्या भी कर सकती हैं। आप फरेब करके पैसा बनाएंगी। बेईमानी से कमाया हुआ धन बुरा फल देगा। धोखे-ठगी से कमाया धन कैद और कफन ही देगा। विद्या में रुकावट, आपका भाई-बंधु और मित्रों से विरोध होगा, खानदान के लिए अशुभ होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. किराये के मकान में रिहाईश न करें।
2. ठगी-धोखे से धन न कमाएं।

उपाय :
1. घर में शुद्ध चांदी की ईंट रखें।
2. नये काम पर जाते समय या नया काम शुरु करते समय पानी या दूध का भरा घड़ा कुंभ के तौर पर रखें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली में राहु छठे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप शत्रुहंता होंगी। आप भाग्यवान और धनवान होंगी। आप बहादुर होंगी। आप किसी व्यक्ति को फांसी की सजा से बचाने में मदद्गार होंगी। आप स्वयं शक्तिशालिनी होंगी। आपके मान-सम्मान, धर्म-ईमान के लिए राहु का शुभ प्रभाव रहेगा। आप विदेश की यात्रा करेंगी। आपमें अहंकार की भावना रहेगी। ऐशो आराम की सभी चीजें प्राप्त होंगी। किसी प्रकार की मुसीबत का असर आप पर लंबे समय तक नहीं रहेगा। आपकी दिमागी हालत ऊंचे दर्जे की होगी।

यदि आपने चाचा से झगड़ा किया, बिना लाइसेंस की पिस्तौल-बंदूक रखी, भाई की हत्या की या भाई से झगड़ा किया तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से घर में किसी की आपके जन्म के कुछ दिन के बाद घर में किसी की मृत्यु हो जाये ऐसी शंका है। भाई का अहित करने से आपकी औलाद पर बुरा असर पड़ेगा। आपकी आवारा और बदमाश लोगों से दोस्ती होगी। नीच स्तर के पुरुष का साथ आपको नीच बना सकता है। आप अचानक धन-संपत्ति को बर्बाद करेंगी या लुटा देंगी ऐसी शंका है। बड़े भाई या बहन से लड़ाई-झगड़ा किया तो खुद बर्बाद हो जाएंगी। आपके जीवन में

अग्नि, रोगभय या धननाश की आशंका है। नामी चोर भी सजा का भय क्यों, ऐसी कहावत आप पर लागू हो सकती है। आपको गोली लगने का भय है। आपके चाचा की मौत के बाद आपके पिता का घर बर्बाद हो जायेगा। यदा-कदा आप अपने हितैषी का भी नाश करने पर तुल जाएंगी। यदि आप कभी बीमार हो जायें तो जो आपकी खबर लेने आयेंगे वह भी बीमार होकर जायेंगे। संतान से दुःखी या संतान को क्या कष्ट है उसका पता न चलेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चोरी न करें।
2. भाई से झगड़ा न करें।

उपाय :

1. काला कुत्ता पालें या काले कुत्ते को भोजन का हिस्सा खिलायें।
2. 6 सिक्के की गोलियां पास रखें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के बारहवें खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप ऐश्वर्य संपन्न, सुखी वैवाहिक जीवन और जमीन-जायदाद के सुख से पूर्ण होंगी। आप सरकारी पक्ष की सेवा करेंगी। समयावधि में तबदीली की अपेक्षा तरक्की के अवसर अधिक आयेंगे। आप शुभ कार्यों में खर्च करेंगी। आपके जीवन के 24वें वर्ष में पुत्र प्राप्ति के योग बनेंगे। पुत्र जन्म के बाद घर में बहुत मात्रा में धनागम शुरू हो जाएगा। आपकी संतान भी धनवान होंगी। आपको भवन निर्माण एवं विदेश प्रवास से लाभ मिलेगा। आप आध्यात्मिक भावना की महिला होंगी। मन में त्याग की भावना रहेगी। निःसंतान व्यक्ति से मकान या भूमि न खरीदें। आपकी कामवासना अधिक रहती है। कई संतान का सुख प्राप्त होने की संभावना है। आपके जीवन में हमेशा ही भोग और सुख प्राप्त होंगे। आपका ससुराल पक्ष सुखी रहेगा और दौलतमंद होगा। आपके परिवार की तरक्की होगी। आप अय्याश होंगी, यह आपके लिए शुभ रहेगा।

यदि आपने कुत्ते मारे या मरवाये, भाई-बंधुओं से झगड़ा किया समाज विरोधी कार्य किये, आवारा फिरना शुरु किया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से पिता/ससुर की जायदाद बर्बाद होगी। भाई-बंधुओं से और समाज में अपमानित हों, ऐसी आशंका है। कुत्तों को मारने से या कुत्ते से नफरत करने से संतान को कष्ट या संतान सुख से महरुम, निःसंतान या बच्चा गोद लेने की नौबत आ सकती है। संतान प्राप्ति में कुछ बिलंब हो सकता है। ठगी-धोखेबाजी से कमाया धन कफन का सबूत बनेगा और धन की कमी रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. कुत्तों को चोट न मारें।
2. ठगी-धोखेबाजी से दूर रहें।

उपाय :

1. घर में हमेशा काला-सफेद कुत्ता पालें।
2. दोहता-जमाई-भांजे या जीजा की सेवा करें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि तृतीय भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि चतुर्थ भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि सप्तम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि अष्टम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि सप्तम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुरुग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। इसलिए आप अपनी शक्ति व सामर्थ्य के अनुसार कार्य करते रहें। नौकरी करने वाले जातकों का स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है।

14 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उस समय आप अपने व्यवसाय में अच्छा विस्तार करेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधि मे कोई नया कार्य प्रारम्भ करें, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद अधिक है। आपको अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा व साझेदारी में लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं रहेगी। 14 मई के बाद एकादश स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से धनागम में वृद्धि होगी। आप बचत कर आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सफल रहेंगे।

आपको मित्र या पत्नी के माध्यम से धन लाभ हो सकता है। परिवार में मांगलिक कार्य में भी आपका धन व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। चतुर्थ स्थान के राहु आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे आपका पारिवारिक माहौल खराब हो सकता है। माता के साथ आपके वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। अतः उस समय आपको अपने विवेक से काम लेना होगा।

14 मई के बाद आपकी पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह हो जाएगा। राहु के गोचर के बाद सामाजिक पद प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए वर्षारम्भ में गुरुग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है। उसका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है, परन्तु मई के बाद आपके बच्चे के लिए समय काफी अनुकूल हो रहा है।

उस समय उनको अपने कार्य क्षेत्र सफलता प्राप्त होगी। शिक्षा में सुधार होगा। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरुछोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो परहेज की आवश्यकता है।

14 मई के बाद गुरुग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। उस समय आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगा, जिससे आप स्वस्थ्य बने रहेंगे। मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अनुशासित होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

14 मई के बाद समय बहुत अनुकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में यदि प्रतियोतगता परीक्षा में भाग लेना चाह रहे हैं तो समय शुभ है। व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

तृतीयस्थ शनि आपके छोटी-मोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ में नहीं लगेगा। 14 मई से गुरुग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे, जिससे आपको परिवार में सुख, समृद्धि एवं मानसिक शान्ति का अनुभव होगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- शनिवार को लोहे का तवा दान करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आप सुख तथा शान्ति प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस समय शरीर से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगी एवं मन से भी प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी फलतः शत्रु आपसे भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे। साथ ही आपके लाभ मार्ग भी नित्य प्रशस्त रहेंगे। इस समय आर्थिक स्थिति पूर्णरूप से सुदृढ़ रहेगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभ अर्जित करती रहेंगी। इस समय आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सफल होंगे तथा विलम्बित शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में भी सफलता अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। अपने मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके घनिष्ठ संबध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही आपके सांसारिक कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेगा तथा इनसे आपको वांछित सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगी तथा इनकी ओर से निश्चिन्त रहेंगी। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र तथा वस्तुओं को प्राप्त करने में भी सफल हो सकेंगी। अतः यह मास आपके लिए सौभाग्यशाली रहेगा।

फरवरी 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप अत्यधिक उत्साह के साथ धनार्जन करने में सफल रहेंगी। साथ ही समाज से भी आप को पूर्ण मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होगी तथा यश भी दूर दूर तक फैलेगा। इस समय परिवार एवं मित्रजनों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। साथ ही इनसे आप मान सम्मान भी अर्जित करेंगी। उच्चाधिकारी वर्ग से इस मास में आप आश्रय प्राप्त करेंगी तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य को भी सिद्ध करने में भी सफल रहेंगी। आपका स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा एवं शारीरिक बल में भी वृद्धि होगी। इस समय आप भोजन में मिष्ठान्न का अधिक उपयोग करेंगी। आपका शत्रुपक्ष इस मास में क्षीण रहेगा अतः उनको पराजित करने में आप समर्थ रहेंगी। पति से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगी तथा व्यापारिक कार्यो से अतिरिक्त आय एवं लाभ अर्जित करने में आपको सफलता प्राप्त होगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप शीत या वातोत्पन रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी आप न्यूनाधिक क्षति प्राप्त करेंगी। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

मार्च 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आप सामान्यतया शुभ फल ही प्राप्त करेंगी। इस समय आप अपने पराक्रम से धन अर्जित करेंगी तथा विभिन्न प्रकार से सुखोपभोग करने में भी समर्थ रहेंगी। सामाजिक जनों से इस मास में आपको पूर्ण यश तथा प्रतिष्ठा मिलेगी एवं सभी लोग आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करती रहेंगी। इसके साथ ही दूसरे लोगों के परोपकार संबधी कार्य भी आपके द्वारा सम्पन्न होंगे। लेकिन शारीरिक स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगी तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में सफलता प्राप्त करेंगी। आपके बन्धु एवं मित्रों से इस समय मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपकी इच्छाएं भी इस समय में पूर्ण होंगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होगा।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी होंगे। अतः आप शीत से उत्पन्न होने वाले रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आप न्यूनाधिक मात्रा में हानि प्राप्त कर सकती है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

अप्रैल 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही प्राप्त करेंगी तथा शुभ फल अत्यल्प मात्रा में होंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा नाना प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इस मास में शत्रुपक्ष से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी तथा वे आपके लिए अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न करेंगे। इससे आप मानसिक रूप से अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगी। इस समय आपके व्यापार या आजीविका संबधी कार्य में मन्दी आएगी या कोई कार्य छूट सकता है या बन्द हो सकता है। इसके साथ ही कार्य क्षेत्र में आप परिवर्तन भी कर सकती हैं। सामाजिक लोगों से आपके संबध विशेष मधुर नहीं रहेंगे एवं परस्पर वैमनस्य का भाव रहेगा तथा यदा कदा वाद विवाद भी होगा जिससे आपके समाजिक सम्मान में न्यूनता होगी। इसके अतिरिक्त धन हानि के योग भी बनते है तथा शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फलों को भी अर्जित करेंगी। इससे आप पति एवं पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा इस मास में नवीन वस्त्र या वस्तुओं को भी अर्जित कर सकती हैं।

मई 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस समय आप विविध प्रकार से द्रव्य पदार्थो को अर्जित करेंगी तथा पुत्र से भी आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी। ज्ञानार्जन के

क्षेत्र में भी इस मास में आप रुचिशील रहेंगी। इस समय आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता तथा प्रभुता को स्वीकार करेंगे एवं आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। इस मास में आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होंगे तथा शुभ समाचारों को भी आप प्राप्त करेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा श्रद्धा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करती रहेंगी। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सहयोग तथा उचित लाभ प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा पूर्ण रूप से मानसिक शान्ति प्राप्त करेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के मध्य अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप गर्मी या पित से उत्पन्न रोगों के द्वारा शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा किसी प्रकार से रक्त विकार की संभावना भी रहेगी। अतः अपने समस्त कार्यो को सावधानी पूर्वक सम्पन्न करें।

जून 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फल शुभ फलों की अपेक्षा अधिक अर्जित करेंगी जिससे आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा दुर्बलता भी विद्यमान रहेगी। इस समय शत्रुपक्ष से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी एवं उनसे आप अनावश्यक कष्ट भी प्राप्त करेंगी। इस मास में आपके घर में चोरी भी हो सकती है। अतः सतर्क रहना श्रेयस्कर रहेगा। इस समय आपको उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का पूर्ण पालन करना चाहिए तथा किसी भी प्रकार से उपेक्षा नहीं करनी चाहिए अन्यथा आप दण्डित हो सकती हैं। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल हो सकेंगे। साथ ही धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। जिससे आप आर्थिक रूप से परेशान रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगी जिससे आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा उनसे विशेष सहयोग प्राप्त करने में असफल रहेंगी तथा आपकी आशाएं भी कम ही पूर्ण होगी। अतः धैर्यपूर्वक समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होंगे। अतः आप पति से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी तथा अपनी बुद्धि के कौशल से प्रचुर मात्रा में धन तथा सुखार्जन करने में सफल रहेंगी। साथ ही समाज में आप यश प्राप्त करने में भी समर्थ हो सकेंगी।

जुलाई 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आपके पति तथा बन्धुवर्ग किसी भी प्रकार से कष्ट प्राप्त करेंगे या आपको कष्ट देंगे। आपके शत्रु इस मास में बलवान रहेंगे तथा आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे। अतः आप इनसे चिन्तित एवं भयभीत रहेंगी। इस समय आपका स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा मन में लोभ के भाव की वृद्धि होगी।साथ ही धन का व्यय अधिक मात्रा में होगा। अतः धनाभाव से भी आप दुःखी रहेंगी। इस समय आपके उत्साह में कमी

आएगी तथा शरीर में निर्बलता भी रहेगी। मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा आपस में तनाव का वातावरण रहेगा। साथ ही ऐसे समय में मित्र भी शत्रु के समान व्यवहार करेंगे। जिससे आप मानसिक रूप से भी कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इस समय पारिवारिक तथा सामाजिक जनों से भी आप का विवाद होता रहेगा।अतः संयम पूर्वक अपने समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में न्यूनाधिक शुभ फल भी प्राप्त होंगे। इससे पुरूष वर्ग से आपको पूर्ण लाभ तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा अपनी बुद्धि से आप शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने में सफल रहेंगी तथा अन्य प्रकार से भी धनार्जन एवं सुख की प्राप्ति होती रहेगी।

अगस्त 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। अतः शत्रु पक्ष से आप दुःखी रहेंगी एवं उनसे चिन्तित तथा भयभीत भी रहेंगी। इस समय आपके घर में किसी प्रकार की चोरी होने की संभावना रहेगी। इस मास में आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे धनाभाव से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में इस समय कई प्रकार से बाधाएं उत्पन्न होंगी तथा कार्यो में सफलता अल्प मात्रा में ही मिलेगी। धर्म के प्रति आपके मन में सामान्यतया उपेक्षा का ही भाव विद्यमान रहेगा। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा एवं शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। साथ ही इस मास में आप दूर समीप की यात्रा भी सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्यो में आप परिश्रमपूर्वक सफलता प्राप्त करेंगी तथा मुकद्दमे आदि में भी धन व्यय होगा। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेंगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आपको शुभ फल भी अवश्य प्राप्त होंगे। इस समय आपको पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा एवं बुद्धिबल से प्रचुर मात्रा में धन तथा सुख अर्जित करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आप श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगी एवं समाज में न्यूनाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल सिद्ध होंगी।

सितम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आप सुख एवं सौभाग्य को प्राप्त करने में पूर्ण रूप से सफल रहेंगी। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। आपके उच्चाधिकारी भी इस मास में आपसे पूर्ण सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे। इस समय आपके घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी हो सकता है। संतति पक्ष से इस मास में आपको सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा की भावना रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करेंगी। इस मास में आपका यश भी समाज में दूर दूर तक व्याप्त रहेगा तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी इसी समय सम्पन्न होंगे। आपकी

बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा दूर समीप की कोई लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न होगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे वांछित सहयोग तथा सुख भी प्राप्त होगा। इस प्रकार समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा सम्मान में वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप श्रेष्ठ जनों एवं उच्चाधिकारी वर्ग से सहयोग तथा सम्मान भी अर्जित करेंगी तथा आपके कार्य क्षेत्र में भी उन्नति होगी। इसके अतिरिक्त इस मास में आप नवीन वस्त्र तथा द्रव्यों की प्राप्ति करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

अक्तूबर 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण सफलता तथा लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। अपने उच्चाधिकारी वर्ग को इस समय आप प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में सफल रहेंगी अतः कार्य क्षेत्र में विशेष उन्नति मिलेगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथ उनसे वांछित सुख तथा सहयोग भी प्राप्त करेंगी। साथ ही उनकी भलाई भी आप यत्नपूर्वक करती रहेंगी। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इसी समय में सम्पन्न होंगे। अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना विद्यमान रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। इस मास में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी सामाजिक जन आपकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे। आपका यश भी समाज में इस समय दूर दूर तक व्याप्त रहेगा। इसके अतिरिक्त इस महीने में आप नवीन गृह की प्राप्ति या स्थान परिवर्तन भी कर सकती हैं।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा आपकी अधिकाशं मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी। इसके साथ ही धन एवं सुख का उपभोग करते हुए प्रसन्नता पूर्वक आप इस मास को व्यतीत करने में सफल रहेंगी।

नवम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आप सर्व प्रकार के शुभ फलों को अर्जित करने में सफल रहेंगी। इस समय पुरूष वर्ग से आप लाभार्जन तथा सहयोग प्राप्त करेंगी तथा सौभाग्य में भी वृद्धि होगी। अतः आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सम्पन्न हो जाएंगे। साथ ही आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ होगी फलतः मानसिक रूप से आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप यथोचित लाभ प्राप्त करेंगी। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा तथा ज्ञानार्जन करने के लिए आपके मन में इच्छा उत्पन्न होगी। मित्र एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सहयोग भी प्राप्त होगा एवं आप मनोवांछित द्रव्यों को इस समय अर्जित करेंगी। संतति पक्ष से भी आप निश्चिन्त तथा प्रसन्न रहेंगी। इसके अतिरिक्त सामाजिक जनों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा रहेगी एवं पूर्व विलम्बित संकल्प भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी। इस समय आपकी बुद्धि भी निर्मल रहेगी एवं बुद्धिमता पूर्वक आप धन तथा सुख को प्राप्त करेंगी। इसके

अतिरिक्त धर्म के अनुपालन में भी आप रूचिशील रहेंगी तथा समाज एवं बन्धु वर्ग में पूर्ण रूप से आदरणीया रहेंगी।

दिसम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ फलदायक रहेगा। इस समय आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा तथा दुष्ट लोगों की संगति प्राप्त करेंगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इस समय आपके कार्य पराक्रम एवं अत्यंत परिश्रम करने के बाद भी अल्प मात्रा में ही सफल होंगे फलतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगी।धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा का भाव ही अधिक मात्रा में विद्यमान रहेगा। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप धन हानि प्राप्त कर सकती हैं। बन्धुओं एवं मित्रों से आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा। अतः इनसे आपको किसी विशेष प्रकार का सुख या सहयोग नहीं मिलेगा। इस मास में आप जो भी कार्य प्रारंभ करेंगी उनमें अनावश्यक रूप से व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे। साथ ही आपका शत्रुपक्ष भी इस समय प्रबल रहेगा तथा उससे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपकी इच्छित आशाएं भी इस समय पूर्ण नहीं होगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी से उत्पन्न रोगों के द्वारा कष्ट प्राप्त करेंगी तथा किसी प्रकार से रक्त विकार की भी संभावना रहेगी। अतः आप इस मास में सतर्कता पूर्वक बुद्धिमता से अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

इस वर्ष मीन राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें द्वितीय भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें अष्टम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप अपने व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। आपको कार्य क्षेत्र में मित्र, सहयोगी व जीवनसाथी का भी सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

02 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में आपके कार्य व्यवसाय में उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। अतः कोई नया काम प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती है। भूमि भवन से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को नुकसान भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धउत्तम रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम में निरन्तरता बना रहेगी। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगेऔर आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में जीवनसाथी एवं भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं शनि दोनों ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में आपको किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो आपका पैसा डूब सकता है। निवेश के लिए ये समय उपयुक्त नहीं है। अतः इस वर्ष आप कोई निवेश न करें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके जीवनसाथी के साथ समन्ध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो सकता है। आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

02 जून के बाद समय अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि आपकी पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी होगा। आपके माता पिता कास्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आप के बच्चों कीउन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा है। यदि आपकी दूसरा संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं रहेगा। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकीशिक्षा-दिक्षा भी प्रभावित हो सकती है। उनको सफलता प्राप्ति के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता हैपरन्तु 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। आपके मन में सकारात्मक विचार आएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

02 जूनके बाद स्वास्थ्य के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से प्रभावित हो सकते है। अष्टमस्थ गुरुजल तत्व राशि में होने कारण कफ, पाचनतन्त्र व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान कर सकते हैपरन्तु 31 अक्टूबर के बाद आप के स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। व्यवसायिक शिक्षा व तकनीकि शिक्षा के लिए समय अच्छा है।

02 जून के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपकी उच्च शिक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं। बेरोजगार जातकों को अभी कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान के राहु छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने स्थान से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरणमनोनुकूल स्थान पर नहीं होगा। 02 जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगें।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। आप अपने जीवनसाथी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे। 02जूनके बाद अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा-पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाऐंगे।

- सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को जल चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा लोहे का तवा दान करें।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे और वीरवार का व्रत करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फल अधिक तथा अशुभ फल अल्प मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आप शारीरिक तथा मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगी। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी फलतः आपके शत्रु आपसे पराजित तथा भयभीत रहेंगे तथा अन्य लोग भी आपका सम्मान करेंगे। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी अतः आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। साथ ही नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्यत्र भी लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। इस मास में आपके भाग्योदय संबधी कार्य सम्पन्न होंगे तथा कोई ऐसा महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होगा जिससे आप अत्यंत ही प्रसन्नता प्राप्त करेंगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे वांछित सुख एवं सहयोग अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगी। आपके अधिकाशं सांसारिक कार्य इस समय सम्पन्न होंगे एवं उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। फलतः कार्य क्षेत्र में आपकी उन्नति होगी एवं लोगों से यथोचित सम्मान प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी होंगे। अतः आप वातोत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगी एवं किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगी जिससे आपके सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी आपको हानि हो सकती है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी अल्प मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आप अपने उत्साह एवं परिश्रम से धन अर्जित करने में सफल रहेंगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी ।साथ ही आपको समाज से भी पूरा यश तथा सम्मान प्राप्त होगा। बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे उचित सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आपको आश्रय भी मिलेगा जिससे आप उनसे पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी। मिष्ठान के प्रति आप विशेष रूचिशील रहेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगी। इस समय शत्रुओं को पराजित करने में आप सफल रहेंगी तथा वे आपसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापारादि अन्य कार्यों के द्वारा भी आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करने में सफल रहेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के मध्य यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से अस्वस्थ रहेंगी। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आप किंचित हानि प्राप्त कर सकेंगी। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए ।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों को प्राप्त करने में पूर्ण रूप से सफल रहेंगी। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगी तथा विभिन्न प्रकार से सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगी। साथ ही सामाजिक जनों से आप यश तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा एवं विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करती रहेंगी। साथ ही अन्य सामाजिक जनों की भलाई के कार्यो में भी आप तत्पर रहेंगी। आपका स्वास्थ्य भी इस समय उत्तम रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग लाभ तथा धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करेंगी। मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे यथोचित सुख तथा सहयोग प्राप्त करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपके मनोवांछित संकल्प भी इस समय पूर्ण होंगे। अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्र से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी तथा उनकी ओर से निश्चिन्त रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप नवीन वस्त्र या स्वर्णादि के आभूषण की भी प्राप्ति कर सकती है। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप सामान्यतया अशुभ फल ही प्राप्त करेंगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः शरीर में दुर्बलता रहेगी।साथ ही आपके शत्रु भी प्रबल रहेंगे फलतः उनकी ओर से भी आप चिन्तित तथा भयत्रस्त रहेंगी जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा अप्रसन्न रहेंगी। इस समय आपके घर में किसी प्रकार की चोरी होने की भी संभावना रहेंगी अतः सतर्क रहना चाहिए। इस मास में आपके व्यापार या कार्य क्षेत्र में मन्दी रहेगी तथा अनावश्यक रूप से विघ्न बाधाएं उत्पन्न होंगी। इसके साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है या कोई कार्य छूट भी सकता है। समाज में अन्य जनों के साथ आपका परस्पर विवाद एवं संघर्ष भी होता रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त इस मास में धन हानि की भी संभावना रहेगी तथा शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

इसके साथ ही इस मास में आप गर्मी से उत्पन्न रोगों के द्वारा शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगी तथा रक्त विकार की भी संभावना रहेगी। अतः सावधानी एवं बुद्धिमतापूर्वक इस मास में अपना समय व्यतीत करें तथा शारीरिक सुरक्षा का पूर्ण ध्यान रखें।

मई 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य आप अपनी बुद्धिमता से ही सम्पन्न करने में समर्थ रहेंगी। इस मास में आपको विविध प्रकार के द्रव्यों की प्राप्ति होगी तथा पुत्र संतति से पूर्ण सुख प्राप्त होगा। साथ ही ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि उत्पन्न होगी जिसमें आप सफलता प्राप्त करेंगी। इस समय

आपके प्रभुत्व में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को ससम्मान स्वीकार करेंगे।साथ ही आपके अधिकांश शुभ कार्य सिद्ध होंगे तथा कहीं से शुभ समाचार की भी आपको प्राप्ति होगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप विधिपूर्वक पूजन तथा सेवा करेंगी। इस मास में सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगी तथा उनसे वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त समाज में आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी एवं मन से आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति से वांछित सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगी। इस समय अपनी बुद्धिमता के द्वारा आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करेंगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सन्तोषप्रद रहेगी। इस प्रकार आपका यह मास अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

जून 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेंगे। परन्तु अल्प मात्रा में शुभ फल भी घटित होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता भी रहेगी। साथ ही शत्रु पक्ष भी प्रबल रहेगा एवं आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेगा जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगी। इस मास में आपके घर में चोरी भी हो सकती है जिससे आपको सतर्क रहना चाहिए। आपको इस समय अपने उच्चाधिकारियों की आज्ञा का नम्रता पूर्वक पालन करना चाहिए अन्यथा उपेक्षा करने पर वे आपको दण्डित भी कर सकते है। आप के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में कम ही सफल होंगे तथा असफलता ही अधिक प्राप्त होगी। साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगी जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ सकता है। इस मास में बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर तनाव का वातावरण विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप पति या पुरूष वर्ग से सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा अपनी बुद्धिमता के द्वारा आप धनार्जन करेंगी एवं मध्यम रूप से सुखार्जन करने में भी सफल रहेंगी। अतः सावधानी एवं शान्ति पूर्वक अपने इस मास को व्यतीत करें।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों को अल्प तथा अशुभ फलों को अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय पति तथा पुरूष वर्ग से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी।साथ ही आपके शत्रु भी प्रबल रहेंगे तथा आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे अतः इनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। इस मास में आपके उत्साह में भी न्यूनता आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक रूप से भी आप कष्ट प्राप्त करेंगी। इसके साथ ही आपको अपने

शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी जिससे मानसिक रूप से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। आपका स्वास्थ्य भी इस समय विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा स्वभाव में लोलुपता के भाव की वृद्धि होगी फलतः समाज से भी आप उपेक्षा का सामना करेंगी। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा आपस में मनमुटाव रहेगा इसके साथ ही मित्र भी इस समय शत्रुओं की तरह व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त समाज में अन्य जनों से भी वाद विवाद होता रहेगा। अतः संयमपूर्वक समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे। अतः आप पुरूष वर्ग से लाभ तथा सहयोग प्राप्त करेंगी तथा परिश्रम से आप धन तथा सुख भी अर्जित करेंगी। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आपकी रूचि रहेगी तथा समाज में प्रतिष्ठा अर्जित करने में आप सफल रहेंगी।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अल्प तथा अशुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय शत्रुओं से आप पराजित रहेंगी तथा उनसे आपको भय तथा चिन्ता रहेगी। साथ ही घर में भी किसी प्रकार की चोरी की संभावना बनी रहेगी।अतः सावधान रहने की आवश्यकता होगी। इस मास में आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा फलतः धनाभाव से भी आप कष्ट प्राप्त करेंगी। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा।साथ ही आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। एवं कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी जिससे शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। इस मास में आप दूर समीप की यात्रा भी कर सकती हैं। साथ ही आपके सांसारिक महत्व के कामों में व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे तथा इनमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी। अतः मानसिक रूप से आप खिन्न तथा बैचेन रहेंगी। इसके साथ ही मुकद्दमे आदि में भी आप का धन व्यय होने की संभावना रहेगी। अतः बुद्धिमता एवं संयम पूर्वक समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में समय समय पर शुभ फल भी मिलते रहेंगे। अतः आप उच्चाधिकारी वर्ग से लाभ तथा सहयोग अर्जित करेंगी एवं अपने महत्वपूर्ण कार्यो को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त किसी नवीन वस्त्र की प्राप्ति या द्रव्यार्जन करने में भी आप सफल हो सकेंगी।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप सौभाग्यशाली रहेंगी तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता प्राप्त करेंगी। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी तथा उच्चाधिकारी वर्ग एवं सामाजिक जन आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आप वांछित सहयोग भी प्राप्त करेंगी। इस मास में आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकती है। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा विधि पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करती रहेंगी।संतति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगी एवं बुद्धि में भी निर्मलता के भाव में वृद्धि

होगी जिससे आप के शुभ कार्य यथासमय सिद्ध होंगे।साथ ही भाग्योदय संबधी कार्य भी इसी समय पूर्ण होंगे। इस समय आपकी लाभदायक यात्रा का भी योग बनेगा। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपके यथोचित मान सम्मान की प्राप्ति होगी तथा मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। इस प्रकार सर्वत्र आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा अपने बुद्धिबल से वांछित धन एवं सुख भी प्राप्त करेंगी। धर्म के प्रति भी श्रद्धालु रहेंगी तथा समाज में आप एक सम्माननीया महिला समझी जाएंगी।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्यक्षेत्र में मनोवांछित सफलता प्राप्त करेंगी साथ ही इसमें आपको लाभ तथा उन्नति भी मिलेगी। इस समय आपके उच्चाधिकारी वर्ग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। अतः आपके शुभ एवं महत्पूर्ण कार्य अल्प समय में सिद्ध होते रहेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आप पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगी एवं उनकी भलाई के कार्यो में भी तत्पर रहेंगी। आपके शुभ कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे। अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न रहेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आप श्रद्धा का भाव रखेंगी तथा विधिपूर्वक इनकी पूजा तथा सेवा करने में तत्पर रहेंगी। इस मास में समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप धन अर्जित करेंगी तथा आपकी अपूर्ण इच्छाएं भी इस समय पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस समय आपकी बुद्धि भी निर्मल रहेगी एवं धर्म के प्रति भी आप श्रद्धालु रहेंगी। इस प्रकार यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अधिक मात्रा में अर्जित करेंगी परन्तु अशुभ फल भी घटित होते रहेंगे। इस समय पति तथा पुरूष वर्ग से आप पूर्ण सहयोग एवं लाभार्जित करने में सफल रहेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप मनोवांछित लाभ एवं सम्मान प्राप्त करेंगी। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इसी मास में सम्पन्न होंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा मन भी प्रसन्न एवं शान्त रहेगा। अध्ययन या ज्ञानार्जन के प्रति भी आपके मन में इच्छा उत्पन्न होगी एवं इसमें आप सफलता प्राप्त कर सकती है। बन्धुजनों एवं मित्रों से आपके घनिष्ठ संबध रहेंगे तथा उनसे इचिछत लाभ एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस मास में आप वांछित द्रव्य पदार्थ भी प्राप्त करेंगी एवं उनके उपभोग से प्रसन्न रहेंगी ।संतति पक्ष से भी आप निश्चिन्त रहेंगी तथा आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप

गर्मी तथा पित द्वारा उत्पन्न दोषों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा रूधिर विकार से भी पीड़ित हो सकती है। अतः इस मास में शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सतर्क रहें तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगी। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक दृष्टि से आप कमजोर रहेंगी। साथ ही आप दुष्ट जनों की संगति प्राप्त करेंगी जिससे आपको कष्ट होंगे। आपका स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा। अतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी तथा मन से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगी। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आप उपेक्षा का भाव रखेंगी। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी धन हानि होने की संभावना बनी रहेगी। इस समय बन्धु एवं मित्रों से आपके तनाव पूर्ण संबध रहेंगे। साथ ही जिस कार्य को इस मास में प्रारम्भ करेंगी उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही हाथ लगेगी। इस प्रकार यह समय आपके लिए सामान्यतया कष्टदायक ही रहेगा।

साथ ही इस मास में यदाकदा शुभ फलों की भी आपको प्राप्ति होगी। अतः आप पति एवं पुत्र से सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगी तथा इनसे आपको वांछित सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा। इसके अतिरिक्त इस मास में आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं को भी प्राप्त करने में सफल हो सकती हैं।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं चतुर्थ भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष द्वितीय भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टम स्थान केगुरु आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। किसी पर अधिक विश्वास करना आप के लिए लाभ प्रद नहीं रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र मेंगुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें।

जून के बाद शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। जिसके प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में उन्नति मिलना शुरू हो जाएगी। इस समय आप कोई नया कार्य भी प्रारम्भ कर सकते हैं, जिसमें आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप भाग्य की अनुकूलता के कारण उन्नति करेंगे। 3 अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। उस समय कोई भी निर्णय बहुत सोच विचार कर लेना चाहिए। 26 नवम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्षका पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान का राहु आपके संचित धन में कमी ला सकते हैं। आय के सारे मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। आपको चोरी आदि से धन हानि भी हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। रोग दूर करने में भी पैसा खर्च हो सकता है।

जून के बाद आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से भी आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियोंको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन खर्च कर सकते है। 26 नवम्बर के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की भी प्राप्ति हो सकती है। परिवार या संबंधियों के मांगलिक कार्य व बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पाप ग्रह से प्रभावित होने के कारण आपका घरेलू वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी। परिवार में स्वार्थ की भावना उत्पन्न होगी और इसी स्वार्थ के कारण पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके अंदर वाणी दोष उत्पन्न हो सकता है अतः अच्छा होगा कि इस समय के अंतराल में आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना होगा।

जून के बाद पारिवारिक वातावरण अनुकूल होना शुरु हो जाएगा। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। आपको छोटे भाई बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके पराक्रम में वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से संतान संबंधित परेशानी बनी रहेंगी। आपके बच्चो की उन्नति में भी व्यवधान आ सकता है, जिससे वे अपने लक्ष्य तक पहुंचने में कठिनाईयों का सामना करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतानोत्पत्ति में विलम्ब हो सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय गर्भाधान के लिए बहुत अच्छा योग बन रहा है। आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी और शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशेष करेंगे। संतान के लिए विवाह का प्रबल योग बन रहा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरुके कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। अपने खान-पान के साथ साथ अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित रखें। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

जून के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों मेंरूचि बढ़ेगी जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। विद्यार्थियों में पढ़ाई के प्रति रूचि बनी रहेगी, साथ ही आलस्य का त्याग करें।

जून से गुरु एवं शनि का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैंतो उसके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। जिन जातकों की अभी तक नौकरी नहीं लगी है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा हो सकती है। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से घर से दूर की यात्रा हो सकती है। नौकरी करने वालों का स्थानान्तरण भी हो सकता है।

26 जून के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक अस्थिरता के कारण पूजा-पाठ में मन कम ही लगेगा। एकाग्रता नहीं रहने के कारण ध्यान, मन्त्र पाठ इत्यादि क्रियाएं नहीं कर पाएंगे। जून के बाद आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप किसी को गुरु भी बना सकते है। उनसे गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना भी कर सकते हैं।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पिली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- बुधवार या शनिवार को चिड़ियों को दाना डालें।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में दशमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। 28 फरवरी से भाग्य आपके अनुकूल हो रहा है। कार्य व्यवसाय में सफलता मिलेगी। वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। द्वितीयस्थ राहु का नकारात्मक प्रभाव आपके व्यवसाय पर पड़ेगा।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में हो रहा है। मानसिक अशान्ति एवं शारीरिक आलस्यता के कारण आपके कार्यों में कुछ व्यवधान आएंगे। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो साझेदार के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में आपको विवेक से काम लेना चाहिए।

धन संपत्ति

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी परन्तु आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधा पर भी अधिक खर्च करेंगे। चतुर्थस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन इत्यदि का भी सुख प्राप्त होगा।

फरवरी के बाद पिता से लाभ मिलेगा। बच्चों की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से शारीरिक व्याधी दूर करने में भी आपके पैसे खर्च होंगे। 24 जुलाई से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे ।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं है। चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पीड़ित होने के कारण घरेलू वातावरण अशान्त बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होते रहेंगे। 23 फरवरी के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

24 जुलाई से चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा। माता पिता के लिए यह समय अच्छा रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु फरवरी के बाद बहुत बढ़िया हो रहा है। शिक्षा-दीक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा। नवविवाहित व्यक्तियां को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

24 जुलाई के बाद सफलता प्राप्ति लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी। आप अपनी मेहनत के बल पर ही लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा परन्तु किंचित मानसिक परेशानी बनी रहेगी। 28 फरवरी के बाद गुरु की दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि के संकेत हैं।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर लग्न स्थान पर हो रहा है। उस समय स्वस्थ रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव होता रहेगा। आलस्य की भावना बनी रहेगी। सुबह सूर्योदय के पहले उठकर व्यायाम करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा, परन्तु फरवरी के बाद समय उत्तम हो रहा है। व्यावसायिक शिक्षा के लिए समय बहुत बढ़िया चल रहा है। विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

24 जुलाई के बाद प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले व्यक्तियों को सफलता प्राप्त होगी और अपने शत्रुओं पीछे छोड़कर आगे बढ़ेंगे

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। फरवरी के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नतिकारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

24 जुलाई के बाद आप पूरे परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

अपने जन्म स्थल से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

28 फरवरी से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं राहु के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नानादि से निवृत्त होकर सूर्य को जल दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु लग्न भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यापारिक सफलता के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आय के सारे मार्ग खुलेंगे। आपके कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अत्यधिक लाभ होगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा। 29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण आपके कुछ विरोधी उत्पन्न हो सकते हैं परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं ।

25 अगस्त से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है जिसके फलस्वरूप आप अपने व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आपको कर्मचारियों का पूरा सहयोग मिलेगा। इस सफलता के पीछे आपके भाईयों का सहयोग होगा। व्यापार का स्तर बढ़ाने के लिए अपना संचित धन भी खर्च कर सकते है। नौकरी करने वालो के लिए भी यह वर्ष अनुकूल रहेगा। अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। धनागम के योग प्रबल होंगे तथा आय के नये साधन मिलेंगे।

25 अगस्त के बाद आपका रुका हुआ धन मिल सकता है। मातुल पक्ष के लोगों से भी लाभ होगा। लग्न स्थान के राहु शारीरिक व्याधि दूर करने में पैसा खर्च करा सकते हैं परन्तु सामान्य काम-काज पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। छठे स्थान का शनि शत्रुओं से भी लाभ करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

घर परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह भी करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है जिससे परिवार में खुशहाली का माहौल बनेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलता रहेगा। समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। मार्च के बाद संतान

को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

लग्न स्थान के राहु आपका स्वास्थ्य व पारिवारिक अनुकूलता प्रभावित कर सकते हैं। 25 अगस्त के बाद अपने बौद्धिक बल द्वारा आप अपने घरेलू वातावरण को अनुकूल बना लेंगे। अष्टम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

संतान

वर्षारम्भ में पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि से संतान के लिए उत्तम योग बन रहे हैं। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। यदि सन्तान विवाह योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

25 अगस्त से समय फिर से अच्छा हो रहा है। आपक सन्तान की शिक्षा में सुधार होगा और उनको उन्नति के अवसर भी मिलेंगे। 05 अक्टूबर के बाद समय और भी शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए सामान्य रहेगा। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से बीमारी नहीं रहने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभव होगा। गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के फलस्वरूप स्वास्थ्य श्रेष्ठ व मन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण छोटी-मोटी बीमारियों से परेशानी हो सकती है परन्तु 25 अगस्त से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल होने के कारण समय बहुत अच्छा हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं तथा शीघ्र ही अपने लिए आय के नवीन स्रोतों का भी सृजन करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ प्रभावित होगा।

25 अगस्त के बाद आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। सभी बेरोजगारों को नौकरी मिल सकती है। सरकारी अफसरो या वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपकी छोटी-छोटी यात्राएं होती रहेंगी। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्रा भी होंगी।

29 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा

लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास बढ़ेगा। आप अपनी पारिवारिक सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा का आयोजन करेंगे जिसमें आपके परिवार वालों का पूर्ण सहयोग होगा।

- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें। गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- अपने माता पिता की सेवा करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच या दुर्गा चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में अपने सहयोगियों के साथ अपने अधिकारियों को भी प्रभावित करेंगे। साल की शुरुआत में आपके कार्यों में देरी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है।

आप अपने लक्ष्य को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। शनि का गोचर आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी करेगा। आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित करनी होगी और इस ओर ध्यान देना होगा। जो व्यक्ति रोजगार की तलाश में हैं उन्हें अड़चनों के बावजूद सफलता प्राप्त होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक तौर से यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आने वाला है। आपको पहले महीने में प्रतीत नहीं होगा क्योंकि इस दौरान राहु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं है। आपको आर्थिक हानि का सामना करना पड़ सकता है। आपको इस दौरान यही सलाह दी जाती है कि इस समय अपनी वित्तीय योजनाओं को निर्धारित कर आगामी समय के लिए खुद को तैयार रखें। अप्रैल के बाद समय आपके लिए बहुत ही अनुकूल हो रहा है। आप बड़े काम करने में सफल होंगे।

23 सितम्बर के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः पहले से ही कुछ अतिरिक्त धन का संचय करें। आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है जिसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके दाम्पत्य जीवन में सामान्य उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। पंचम भाव का शनि संतान सुख में कमी कर सकता है। ऐसे में अपने बच्चों के साथ मधुर संबंध बनाना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 17 अप्रैल के बाद षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

आपको बड़े भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

गुरु के गोचर के बाद आपके घरेलू वातावरण में अनुकूलता आएगी। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में सुख-शान्ति का वातावारण बनेगा। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में भी वृद्धि होगी।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। पंचमस्थ शनि आपके बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है जिससे उसकी शिक्षा व उन्नति में रूकावटें आ सकती हैं। इस समयान्तराल में गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए।

मई के बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा और उनकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। यदि आपकी संतान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। इस समय के अंतराल में दवा से अधिक दुआ आपके लिए लाभप्रद रहेगी। 17 अप्रैल के बाद षष्ठस्थ शनि ग्रह के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे जिससे आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी।

23 सितम्बर के बाद द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। व्यावसायिक व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा। विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय बहुत अच्छा है।

शनि एवं गुरु के गोचर के बाद समय काफी उत्तम हो जाएगा। आप सारे शत्रुओं को परास्त कर अपने करियर में आगे रहेंगे। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। बेरोजगार लोगों को इच्छित नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होंगी। छोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए अच्छा योग बन रहा है।

मई के बाद आप ज्यादातर यात्रा पर ही रहेंगे दूर की यात्राएं अधिक होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। इन सब यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य करेंगे। 1 मई से आपकी अपने इष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ घरेलू सुख-शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें और काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। व्यक्तिगत संबंधों में भी सुधार आएगा। जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफल परिणाम देखने को मिलेंगे। अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। 18 फरवरी के बाद आपके व्यवसाय में कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में हैं तो अच्छा लाभ होगा और आपको मित्र का पूरा सहयोग मिलेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को कार्यस्थल पर ही मान सम्मान मिलेगा।

द्वादशस्थ राहु के कारण गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे परन्तु आपके पराक्रम के डर से कुछ कर नहीं पाएंगे। 8 अगस्त के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे और उसमें आपको सफलता प्राप्त होगी।

धन संपत्ति

यदि वर्ष के प्रथम दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण आपकी आर्थिक वृद्धि होगी जिससे आपके पुराने चले आ रहे सारे कर्जे से मुक्ति मिल सकती है। द्वादशस्थ राहु के कारण कुछ चुनौतियां आपके सामने आ सकती हैं।

8 अगस्त के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। अचानक आय के सोत खुलेंगे। रुके हुए या फंसे हुए पैसे आने शुरु हो जाएंगे। 15 अक्टूबर से गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में हो रहा है। उस समय आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। इसलिए आपको आर्थिक मामलो में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बना रहेगा। आपके मातुल पक्ष के लोगों के साथ समन्वय मधुर होंगे। आपके माता-पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद धर्मपत्नी के साथ संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाई बहनों

के साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपके विरोधी शान्त होंगे।

संतान

वर्ष के प्रथम दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल संतान के लिए अच्छा रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति के अच्छे योग बन रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रूचि बढ़ेगी।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। उसका विवाह भी हो सकता है। 15 अक्टूबर से अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं तो गलत संगत में पड़ सकते हैं, जो कि उनकी उन्नति में बाधा उत्पन्न कर सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान का गुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ या पेट संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है परन्तु 18 फरवरी के बाद गुरु का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा।

छठे स्थान के शनि आपके अंदर रोगप्रतिरोधक शक्ति का विकास करेंगे जिससे आप स्वस्थ्य बने रहेंगे परन्तु 15 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। उस समय आप छोटी-मोटी मौसमजनित बीमारी या सर्दी-जुखाम से परेशान हो सकते हैं। इसलिए उस समय के अंतराल में सावधानी बरतना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए 18 फरवरी के बाद समय श्रेष्ठ है। छठे स्थान का शनि इच्छित प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त करा सकता है।

8 अगस्त से समय बहुत अच्छा हो रहा है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। जो जातक रोजगार की तलाश में हैं उनको मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी।

यात्रा-तबादला

18 फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। इस समय में आपकी यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक रहेगा। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

15 अक्टूबर को द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं और विदेशी संपर्कों से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन, गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि शुभ कर्म अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- राहु ग्रह का मन्त्र पाठ करें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं छठे भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुलग्न स्थान में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं लग्न स्थान में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक स्तर के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत हितकारी होगा। आपको प्रतीत होगा कि आपके कुछ सपने अभी भी अधूरे हैं और इसलिए आप सपनों को पूरा करने के लिए अथकपरिश्रम करेंगे और सफल होंगे। ग्रहगोचर अनुकूल होने के कारण ऑफिस में आई किसी भी समस्या का समाधान निकाल कर अपने अधिकारियों की नजरों में अच्छे बने रहेंगे।

12 अगस्त के बाद अचानक आपके कार्यों में उन्नति होगी। आपके कार्य व्यवसाय में पत्नी का पूरा सहयोग मिलेगा। अपने मित्र के साथ मिलकर कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे और उस काम में आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का पूर्वार्द्धआर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। आय के स्रोत खुलेंगे।रुके हुए या फंसे हुए धन की प्राप्ति होगी।निवेश करने के लिए भी यह समय एकदम उपयुक्त होगा।द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में वृद्धि होगी।

12 अगस्त के बाद अचानक आर्थिक स्थितिमें वृद्धि होगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। धन संचित करने में आपके जीवनसाथी का मुख्य सहयोग होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। धार्मिक व मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। अपने पारिवारिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का पूर्वार्द्ध पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

मई के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी माता के लिए अच्छा नहीं है। आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण पारिवारिक माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव आपको अच्छा नहीं लगेगा। आप अपनी सहनशक्ति बढ़ाएं और बुद्धिविवेक के द्वारा पारिवारिक स्थिति अनुकूल बनाने की कोशिश करें।

आप सामाजिक गतिबिधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आपके बच्चों कीउन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान के लिए यह उत्तम समय चल रहा है।

12 अगस्त के बाद बच्चों के साथ प्रेम संबंधों में वृद्धि होगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल बना रहेगा। पूरा साल आप तंदरुस्त और सेहतमंद महसूस करेंगे क्योंकि लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबहटहलने जाना।

मई के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो रहा है। आप आने अन्दर धैर्य बनाए रखें व कार्य के प्रति एकाग्रता बनाए रखें एवं स्वास्थ्य पर ध्यान दें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलने का पूर्ण योग बन रहा है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकीशिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय श्रेष्ठ है। जो व्यक्ति अभी नौकरी के तलाश में हैं उनको मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी।

मई के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर तैयारी करते रहें क्योंकि अभी की मेहनत आने वाले समय में काम आएगी और उस समय आप अपने लक्ष्यको प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

नवम पर गुरु की दृष्टि के कारण लम्बी यात्रा होगी। धार्मिक यात्रा के भी प्रबल योग बन रहे हैं। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होती रहेंगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

मई के बाद यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है। क्योकि लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि पभाव से वाहन दुर्घटना या यात्रा के अंतराल में चोरी होने के प्रबल संकेत बन रहे हैं। 12 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकीरुचि बढ़ेगी जिसके चलते आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- आर्थिक उन्नति के लिए लक्ष्मी जी पूजा करें या संतोषी का व्रत व उपासना आपके लिए लाभप्रद रहेगी।
- गणेश जी के मन्त्र का पाठ करें।

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं एकादश भाव रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में रोजी-रोटी के नये आयाम तलाशने का आप प्रयास करेंगे जिसमें आपको सफलता भी मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। सप्तमस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को जल्दवबाजी में कोई निर्णय नहीं लेने चाहिए। किसी प्रकार का परिवर्तन या बदलाव करने से पहले उस पर विषेश ध्यान दें। नहीं तो आने वाले समय के लिए यह निर्णय अच्छा नहीं होगा।

18 मार्च से सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि व्यापारिक व्यक्तियों के लिए अत्यधिक शुभ हो रही है। यह समय आपके व्यापार में कुछ उपलब्धियां लेकर आएगा। यह उपलब्धि किसी नए रोजगार, पदोन्नति या किसी व्यावसायिक क्लाइंट के साथ एक सफल योजना के रूप में भी हो सकती है। साझेदारी में काम करने वाले व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा और आप अपने साझेदार से संतुष्ट भी रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण संचित धन में वृद्धि होगी जिससे पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है। फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों से सलाह अवश्य लें।

18 मार्च के बाद समय और भी अच्छा हो रहा है। फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। आपके परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। उसमें आप धन व्यय करेंगे। साथ ही लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि यदा-कदा आपको मानसिक रूप से अशान्त कर सकती है। परंतु इसका सामान्य कार्य-कलापों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उत्साह एवं पराक्रम के साथ अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में तत्पर रहेंगे। इस वर्ष वाहन क्रय-विक्रय व भूमि क्रय-विक्रय करते समय सावधान रहें क्योंकि चतुर्थ स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की युति अच्छी नहीं होती।

घर-परिवार, समाज

द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार

में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। 18 मार्च से आपके छोटे भाईयों के लिये समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी, जिससे परिवार में खुशी का माहौल बनेगा। आपके परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो इस वर्ष विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपके बच्चे विवेक व बुद्धि से अपनी उन्नति के मार्ग बनाएंगे। पंचम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों को आलसी बना सकती है। उनका रहन सहन व दिनचर्या खराब कर सकती है तथा उनकी शिक्षा दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। अतः आपको उनकी दिनचर्या पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके दूसरे बच्चे की उन्नति होगी और उसके साथ संबंधों में मधुरता आएगी। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो इस वर्ष अवश्य विवाह हो जाएगा।

स्वास्थ्य

यह वर्ष आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा नहीं है। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से परेशान हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। कुछ समय ऐसा भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे। परन्तु घबराने की कोई बात नहीं है, क्योंकि कोई स्वास्थ्य संबंधित बड़ी समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंता मुक्त रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। 18 मार्च के बाद भाग्य का सहयोग पूर्ण रूप से मिलने के फलस्वरूप आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों का नए-नए तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासन, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

एकादशस्थ राहु के प्रभाव से अचानक ही आपको सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति व्यापार में अपना करियर बनाना चाहते हैं उनके लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष आनन्ददायक रहेगा। इच्छित सभी यात्राओं का भरपूर लाभ उठाएंगे। 18 मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक तीर्थ यात्रा भी करेंगे।

व्यवसाय से संबंधित आपकी अनेक यात्राएं होंगी और सभी यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

अधिक व्यस्तता के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके दैनिक पूजा पाठ को भी प्रभावित कर सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। 18 मार्च से समय बहुत ही शुभ हो रहा है। उस समय आपका दैनिक पूजा पाठ नियमित रूप से होगा। धार्मिक कृत्य व दूसरों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट होंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमानजी को लड्डू का भोग लगाकर गरीबों में प्रसाद वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- पारद शिवलिंग अपने घर में स्थापित कर, सपरिवार उसका दर्शन करें। इसके प्रभाव से सभी दोषों का नाश होगा और आपके परिवार में सुख समृद्धि का वास होगा।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। व्यापार में आपको नए भागीदार भी मिल सकते हैं। व्यापार में हजारों व्यवधान आने के बावजूद भी आपको मुनाफा प्राप्त होगा, साथ ही कारोबार का भी विस्तार होगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। यह परिवर्तन आपके लिए लाभप्रद रहने वाला है।

13 जुलाई से अष्टम भाव में शनि ग्रह का गोचर आपके व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके ला सकता है। आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या विरोधियों द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन शत्रुओं पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे। फिर भी बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। लंबे समय से रुका हुआ धन वापस मिलने का योग है। नौकरी या व्यापार में नए प्रयोग से बचें। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि किसी स्त्री के माध्यम से लाभ या धनागमन का संकेत दे रही है। आयात-निर्यात करने वालों व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। एकादस्थ राहु के कारण आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। आर्थिक उन्नति के बहुत सारे अवसर मिलेंगे। पुराने चले आ रहे ऋर्ण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

13 जुलाई के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण धोखा या धन हानि का योग बन रहा है। अतः आपको शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकूश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। माता-पिता की बीमारी में में भी आपका धन खर्च हो सकता है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष के पूर्वार्द्ध में अनावश्यक तनाव और विवाद की स्थिति

बनेगी। शत्रु भी सर उठायेंगे और उनके कारण आप अशान्त रह सकते हैं। साथ ही करीबी लोगों का उतना साथ नहीं मिलेगा जितना आप उम्मीद लगाये बैठे हैं। कोई साथ का व्यक्ति जो आपके कार्यस्थल से सम्बन्धित है धोखा दे सकता है या उसके कारण आपको कुछ परेशानी उठानी पड़ सकती है। जीवन साथी का सहयोग तो मिलेगा परन्तु वैचारिक मतभेद बहुत अधिक रहेगा जिसके कारण आप बहुत असहज महसूस कर सकते हैं।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत ही शुभ रहने वाला है। परिवार में एक-दूसरे के साथ भवनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। आपके माता-पिता के लिए समय काफी शुभ है। परन्तु सास ससुर को शारीरिक कष्ट होगा। नाम प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में समाज में आपका एक अगल व्यक्तित्व होगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन्नति करेंगे। दूसरी संतान के लिए वर्ष का प्रथम भाग बहुत ही शुभ है। बच्चों के साथ प्रेम समन्वय में वृद्धि होगी। दूसरी संतान यदि विवाह के योग्य है तो विवाह हो सकता है।

13 जुलाई के बाद पंचम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकती है। जिससे उनकी शिक्षा दीक्षा भी प्रभावित होगी। अतः इस समय के अंतराल में आपको उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य की समस्या उत्पन्न कर सकती है, जिससे आप रक्तचाप, मधुमेह, एलर्जी या मस्तिष्क सम्बन्धी किसी बीमारी से परेशान हो सकते हैं। अतः अत्यधिक सावधानी बरतें और अपना ख्याल रखें। मानसिक तनाव बढ़ सकता है। अनावश्यक यात्राएं होंगी और उसमे भी शारीरिक कष्ट की सम्भावना रहेगी। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान कर सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपका स्वास्थ्य और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे। जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। सुबह जल्दी उठ कर टहलना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा मे सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को 28 मार्च के बाद नौकरी में अवसर मिलेंगे। माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये यह समय काफी शुभ है।

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं या विदेशी भाषा सीखना चाहते हैं। तो वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए श्रेष्ठ हैं। यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त कर उनसे आगे निकलना चाहते हैं, तो आपको नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं भी होंगी। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 28 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तर आपके लिए बहुत अनुकूल रहेगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। आप अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप तीर्थ यात्रा व धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। मन्दिर निर्माण, धार्मिक उत्सव व भण्डादि कार्यों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे। कर्म ही पूजा है, इस वाक्य को चरितार्थ करेंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनिवर के दिन काली वस्तु का दान करें।
- सातमुखी रुद्राक्ष शनिवार की प्रातः धारण करें। आपको शनि की शुभता प्राप्त होगी।
- अपने घर में पारद शिव की स्थापना कर सुबह-सुबह उसका दर्शन करें एवं निम्न मन्त्र का पाठ करें-

ॐ नमः शिवाय।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि अष्टम भाव में और सिंह राशि का राहु नवम भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध कार्य-व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रही है। 6 अप्रैल से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके कामों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा।

शनि ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होने कारण आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं। लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी निदान निकाल लेंगे। फुटकर विक्रेता व भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं है। राजनीति व शेयर बजार से जुड़े लोगों के लिए यह समय अनुकूल रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। अष्टम स्थान के शनि आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव करते रहेंगे। कुछ लोगों को अपने नौकरों से नुकसान भी हो सकता है और कुछ लोगों को कम, लेकिन नुकसान का होना तय है। इसलिए आपको अपने नौकरो पर ज्यादा विश्वास नहीं करना चाहिए। मित्र या साझेदार विश्वासघात कर सकते हैं या फालतू की रणनीतियों के कारण भी हानि होने की संभावना है।

6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से धनागम के सारे बन्द मार्ग खुलेंगे। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा। शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपके सामने कई लाभकारी सौदे आएंगे। परन्तु शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपको हमेशा सावधानी पूर्वक लाभकारी अवसरों का फायदा उठान चाहिए।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए उत्कृष्ट रहेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घर परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बना रहेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपूर्ण योगदान होगा। क्योंकि आप बहुत से ऐसे कार्यों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए बहुत ही लाभप्रद रहने वाला है। आपके माता के लिए समय काफी शुभ है।

6 अप्रैल के बाद अचानक पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। परन्तु आप उन नकारात्मक परिस्थितियों में भी उम्दा प्रदर्शन करेंगे। पंचमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपके प्रेम संबंधो में मधुरता बढ़ेगी। बच्चों के साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। 6 अप्रैल से पंचम स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए श्रेष्ठ है। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो उनके लिए यह समय अति श्रेष्ठ है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा है। यदि वे किसी प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं तो अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला-जुला रहेगा। अष्टमस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है। यदि कोई बीमारी पहले से चली आ रही है तो वह इस समय बढ़ सकती है। अतः पहले से ही सावधानी बरतें। शनि के कारण घटना-दुर्घटना का योग लगातार बना हुआ है अतः यात्रा के दौरान और वाहन चलाते समय बहुत सावधान रहें।

6 अप्रैल से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास करेगी जिससे आपकी समस्त शारीरिक व्याधियां दूर होंगी। आप अपने दैनिक कार्य में स्फुर्तिवान बने रहेंगे। आप अपने प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

6 अप्रैल के बाद विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय बहुत उत्तम है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार प्रारम्भ करना चाहते हैं। उसके लिए यह समय अनुकूल है।

रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। जिससे आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में अच्छी सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा होंगी। तृतीय स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि

छोटी-मोटी यात्राएं कराती रहेगी। परन्तु 6 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए अत्यधिक लाभ प्रद रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके घर में धार्मिक व मांगलिक कार्य अधिक होते रहेंगे। 6 अप्रैल के बाद पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना भी कर सकते हैं। ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- शनि चालीसा का पाठ करें एवं काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन तांबे के लोटे में अक्षत, लाल फूल एवं रोली डालकर सूर्य को जल दें।
- रुद्राक्ष की माला धारण करें एवं अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना कर नित्य उसका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु पंचम भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय से लाभ प्राप्त होगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आप लगातार प्रयास करेंगे, जिससे आपको सफलता तो मिलेगी परन्तु अधिक परिश्रम करने के पश्चात् मिलेगी।

15 अप्रैल के बाद आप के व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा है। यदि आप कुछ नया करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह जरूर लें। कार्यस्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिल कर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी वाले व्यक्ति को मानसिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। 27 अगस्त के बाद फिर से समय अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अच्छी सफलता मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। परन्तु 15 अप्रैल के बाद समय आर्थिक स्थिति के लिए अच्छा नहीं रहेगा। कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः उस समय आपको शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा।

जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। परिवार के किसी सदस्य या माता की शारीरिक बीमारी दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। अगस्त के बाद समय काफी अनुकूल है। उस समय आपकी आर्थिक स्थिति मे सुधार होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियो को संतान सुख की प्राप्ति होगी। आपको बड़े भाई व बच्चों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके पिता के लिए यह समय काफी अच्छा है।

15 अप्रैल के बाद आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न हो सकती हैं, जिससे आपके पारिवारिक माहौल में विषमता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। उस समय के अंतराल में परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। अतः आपको बड़े ही विवेक से काम लेना चाहिए और अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी चाहिए।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही अनुकूल है। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आप अपने बच्चों से जितना उम्मीद रखते हैं वे उससे भी अच्छा करने वाले हैं।

15 अप्रैल के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो रहा है। उस समय उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। नियमित व्यायाम करते रहेंगे। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

15 अप्रैल के बाद आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है। पेट संबंधित बीमारियां भी हो सकती हैं। अतः उस समय घी या तली हुई वस्तु का सेवन कम करें। नहीं तो आपका स्वास्थ्य और प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया रहेगा। पंचम स्थान का गुरु उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

अप्रैल के बाद सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण आपकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है। प्रतियोगिता में व्यवधान व करियर में रुकावटें आ सकती है। जो जातक नौकरी की तलाश में हैं उनको अगस्त तक इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्रा करेंगे। धार्मिक यात्रा का भी योग बन रहा है।

अप्रैल के बाद आप विदेश यात्रा भी करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने

वाले विद्यार्थियों के लिए यह बहुत ही शुभ है।

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर खूब पुण्यार्जन करेंगे। अप्रैल के बाद सारे ग्रह प्रतिकूल हो रहे हैं। उस समय मानसिक द्वंदता के कारण पूजा पाठ मे आपका मन नहीं लगेगा। आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें या मंगलवार के दिन हनुमान जी चोला चढ़ाएं।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- दुर्गा सप्तसती का पाठ करें या सात मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं छठे भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। षष्ठस्थ गुरु के कारण आपके कार्य व्यवसाय में कुछ शत्रु व्यवधान डाल सकते हैं। अतः बिना किसी पर विश्वास किए अपने बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। अभी कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्यों को और अच्छे तरीके से चलाएं। अष्टम स्थान के राहु अचानक परेशानी व कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं। जिसका शीघ्र कोई समाधान भी नहीं निकल पाएगा। आप अधिक परेशान हो सकते हैं। परन्तु अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। कुछ अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके व्यापार में कुछ उन्नति होगी। साझेदारी में काम करेंगे तो उसमें लाभ मिलेगा।

आपके अंदर काम करने का जुनून उत्पन्न होगा यही आपकी व्यवसायिक उन्नति का कारण बनेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय शुभ है। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपसे खुश रहेंगे। सितम्बर के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। नहीं तो आपको आर्थिक हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आर्थिक उन्नति में व्यवधान आता रहेगा। परिवार में रोग बीमारी के चलते भी आपके व्यय अधिक होंगे, जिससे मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। परन्तु 26 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर बहुत ही शुभ हो रहा है। उस समय आपकी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होगा। इस सफर में आपको बहुत ही कम चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा।

धनागम में निरंतरता होने के कारण पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। आपके परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। घरेलू सुख सुविधा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे। सितम्बर के बाद बहुत ही सोच विचार कर कोई भी आर्थिक निर्णय लें। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों से बचें।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके पारिवारिक जीवन के लिए थोड़ी मुश्किलें खड़ी कर सकती है। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा। एक बात जो आपको सभी लोगों से जुदा करती है, वह है आपका अचानक क्रोधित होना और जल्दी शांत नहीं होना। यह आपके दाम्पत्य जीवन के लिए कतई अच्छा नहीं है। आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि आप रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें। पिता के साथ कुछ कुछ अनबन हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। वाद-विवाद करने से परहेज करें।

26 अप्रैल के बाद मित्र व पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे। पति-पत्नी के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। जिससे घर में खुशी का माहौल बना रहेगा। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु अक्टूबर के बाद अचानक आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः उनको किसी प्रभार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए।

संतान

छठे स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्षारम्भ में आपकी संतान को लेकर चिन्ताएं बनी रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा-दीक्षा पर भी पड़ेगा।

26 अप्रैल के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह समय बहुत ही उत्तम रहेगा। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगा। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। 26 अप्रैल के बाद आपका स्वास्थ्य धीरे धीरे अनुकूल होना शुरु हो जाएगा।

लग्न पर शुभ ग्रह की दृष्टि होने से मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी, जिससे आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य बने रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। षष्ठस्थ गुरु पर शनि

ग्रह के दृष्टि प्रभाव के चलते प्रतियोगिता परीक्षार्थी अवश्य सफलता होंगे। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उन्हें अप्रैल से पहले नौकरी मिल जाएगी। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

अप्रैल के बाद व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है। इस समय के अंतराल में आप किसी के साथ मित्रता में कार्य कर सकते हैं। उसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। नवमस्थ शनि के प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ-साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। अधिकांश यात्राएं आपकी अचानक होंगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। परन्तु राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण दुर्घटना या चोट चपेट का योग बन रहा है। अतः यात्रा के अंतराल में सावधानी बहुत ही जरूरी है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। आपके अंदर धार्मिक कार्य करने की इच्छा तो होगी परन्तु आलस्यता के कारण कर नही पाएंगे। दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। परन्तु आप दान पुण्य अधिक करेंगे और अपने कर्म को ही पूजा समझेंगे। 26 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा और आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन चीटियों को दाना डालें।
- दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं नवम भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं अष्टम में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए बहुत ही उत्तम रहेगा। व्यापारियों को उम्मीद से ज्यादा मुनाफा होने वाला है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। लक्ष्मी आपके द्वार पर दस्तक देगी। इस अवधी मे कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद ज्यादा है। किसी बड़ी कम्पनी के साथ भी कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा और उनके साथ कार्य कर आप अपने व्यवसाय में उन्नति करेंगे। 11 मई के बाद समय किंचित प्रभावित होगा। उस समय आपको बड़े ही विवेक से काम लेना होगा। यदि किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं तो आपके लिए अच्छा नहीं है।

कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में व्यवधान डाल सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा भी आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है। इस समय के अंतराल में बड़े ही विवेक से काम लेना होगा नहीं तो आपको हानि हो सकती है। हालांकि अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो रहा है। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद बढ़ जाएगी। भाग्य अनुकूल होने के कारण कोई भी कार्य करेंगे तो उस में सफलता मिलेगा। नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। इस स्थान परिवर्तन से आप असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। सप्तम स्थान के गुरु आपके धनागम में निरन्तरता बनाए रखेंगे, जिससे आप बांछित बचत करने में सफल रहेंगे। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। 11 मई के बाद लेन-देन के मामले में सावधान रहें। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में आपका धन खर्च होगा। सप्तमस्थ राहु के कारण पत्नी के रोग-व्याधि में भी आपका पैसा खर्च होगा।

यदि कोई बडा निवेश करना चाहते हैं, तो उसके लिए भी समय अनुकूल नहीं है। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे भी आ सकते हैं। जिससे आप कुछ परेशान भी होंगे। अतः इस समय के अंतराल में अपना आत्म शक्ति बनाए रखें। अक्टूबर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपके भाईयों का सहयोग मिलेगा। सप्तमस्थ गुरु एवं राहु के प्रभाव से धर्मपत्नी के साथ वैचारिक मतभेद बना रहेगा। पिजा के लिए यह समय अच्छा नहीं है। उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। 11 मई को गुरु ग्रह का गोचर आपके ससुराल वालों के साथ संबंध खराब कर सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा।

अक्टूबर के बाद सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में आपके बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं गुरु की युति अचानक संतान की उन्नति रोक देगी। उनकी पढ़ाई लिखाई भी प्रभावित हो सकती है, जिससे आप मानसिक अशान्त रह सकते हैं। मई के बाद समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय बच्चों के रहन सहन पर विशेष ध्यान देना होगा।

अक्टूबर के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है। उस समय आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति करेंगे। संतान के पराक्रम में वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। आपका बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के साथ साथ आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती भी है तो आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे।

11 मई से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति कम होगी, जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं। अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। उसके बाद आप स्वस्थ व तंदरुस्त रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आप अपने को हल्के में लेंगे, जिससे आपके प्रतिद्वंदी आप से आगे निकल जाएंगे। मई के बाद विद्यार्थियों लिए समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको सफलता मिलने की उम्मीद कम है।

अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो रहा है। जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। उनको अपने करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए समय बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। नवम स्थान के शनि लम्बी लम्बी यात्राएं कराते रहेंगे। छोटी मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी। आपकी धार्मिक यात्राएं प्रभावित होंगी। मई के बाद सामुद्रिक यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है।

अक्टूबर के बाद नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप असंतुष्ट रहेंगे। द्वादश स्थान पर शनि की दृष्टि विदेश यात्रा का भी योग बना रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

यह वर्ष पूजा पाठ के लिए सामान्य रहेगा। आलस्यता एवं दीर्घ सूत्रता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ प्रभावित होगा। राहु के साथ गुरु की युति आपकी आस्था एवं विश्वास में भी किंचित कमी कर सकती है। 11 मई के बाद तन्त्र मन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा। गोपनीय विद्या, रहस्यमयी साधना के प्रति आप आकर्षित होंगे। अक्टूबर के बाद आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय या गरीब बच्चे की पढ़ाई लिखाई पर भी व्यय करेंगे।

- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटें और वीरवार का व्रत करें।
- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को जल चढ़ाएं।
- प्रत्येक दिन चिड़ियों एवं चींटियों को दाना डालें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। दशमस्थ शनि के प्रभाव से नौकरी में पदोन्नति व कार्यों में सफलता का योग बन रहा है। अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। लेकिन 3 मार्च के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ गुप्त शत्रु परेशान कर सकते हैं, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान रहेंगे। परन्तु 2 जून के बाद आप सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे तथा उन्नति के मार्ग पर फिर से अग्रसर होंगे।

लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि नवीन विचारधारा नयी योजनाओं को जन्म देगी, जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सफल बनाएंगे, जिससे आय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता प्राप्त होगी। 4 नवम्बर के बाद भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अधिक लाभ होगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें क्योकि 3 मार्च के बाद आपका अनावश्यक खर्च बढ़ने वाला है। 2 जून तक गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आर्थिक हानि होने के प्रबल योग बन रहे हैं। लेन देन के मामले में सावधान रहें तथा जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए फिर से शुभता का संकेत ले कर आ रहा हे। शेयर बाजार से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होने की संभावना बन रही है। फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। फिर भी यदि कोई बड़ा निवेश करना हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगो की सलाह अवश्य लें। 4 नवम्बर के बाद अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यों में धन का व्यय होगा। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं है। अतः परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। आपके माता पिता के लिए भी यह समय शुभ नहीं है। सप्तमस्थ राहु के प्रभाव से आपके पत्नी के साथ भी संबंध खराब हो सकते हैं। 3 मार्च के बाद आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए भी समय अच्छा नहीं रहेगा। मित्रता व दोस्ती में भी दरार आ सकती है। अतः आपको खुद पर नियंत्रण रखना होगा तथा अपने धैर्यशक्ति को बढ़ाना होगा।

2 जून से समय कुछ अच्छा हो रहा है। पारिवारिक एवं समाजिक दोनों पक्षों के लिए समय शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। सामाजिक गतिविधियो में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। 4 नवम्बर के बाद समय और भी शुभ हो रहा है। पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा तथा घरेलू वातावरण भी अनुकूल होगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए उत्तम रहेगा। वे अपने परिश्रम के बल पर उन्नति करेंगे। नवविवाहित दम्पतियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। 3 मार्च से 2 जून तक समय कुछ प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में उनके रहन सहन व स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

2 जून के बाद आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उन्नति करेंगे तथा आपकी उम्मीदों से बढ़कर अच्छे कार्य करेंगे। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव कि स्थिति बनी रहेगी। 3 मार्च के बाद अष्टमस्थ गुरु के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान रहेंगे। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। ऐसे में आपको खान पान के साथ अपनी दिनचर्या भी सुधारनी होगी। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

2 जून से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे तथा सकारात्मक सोच मे भी वृद्धि होगी, जिससे आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। फिर भी सुबह सुबह योगा व व्यायाम करना आपके लिए लाभदायक रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। 3 मार्च के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है। 2 जून के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होंगी। नवमस्थ गुरु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ साथ धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

इन यात्राओं के अंतराल में किसी के साथ आपकी मित्रता हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। 4 अक्टूबर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानातरण आपके मनोनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। दैनिक पूजा पाठ में सुधार होगा। परन्तु 3 मार्च के बाद अष्टम स्थान का गुरु धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान में भी आपका मन कम ही लगेगा। 2 जून से समय बहुत ही शुभ हो रहा है। आपका मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता कर उनके दुःख दूर करेंगे। विशेष रूप से आप भगवान शिव जी की उपासना करेंगे।

- केला, बेसन के लड्डू व पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में प्रभाहित करें।
- बुधवार के दिन गणेशजी को दुर्वा चढ़ाएं। ॐ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। पुरे वर्ष राहु वृष राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

यह साल कार्य व्यवसाय के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आपको व्यापार में लाभ एवं उन्नति प्राप्त होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए लाभप्रद रहेगा। उन्नति के मार्ग इस वर्ष प्रशस्त रहेंगे तथा आप सारे प्रतिद्वंदियों को पीछे छोड़कर आगे निकल जाएंगे। यदि आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करना चाहते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए और भी शुभ हो रहा है। रातनीति से जुड़े लोगों को अच्छी सफलता मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। कानून से जुड़े लोगों, वकील, पुलिस आदि को अच्छा लाभ मिलेगा। आपके उच्च अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। भूमि, वाहन से संबंधित कार्य करने वाले लोगों को वांछित सफलता मिलेगी। 3 दिसम्बर के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको उम्मीद से ज्यादा सफलता मिलेगी।

धन संपत्ति

धन सम्पत्ति के लिए यह साल बहुत ही शुभ रहेगा। आपके आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी। भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभुषण इत्यादि की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय करेंगे। निवेश के लिए यह समय बहुत ही शुभ है फिर भी यदि कोइ बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आर्थिक उन्नति के लिए और भी श्रेष्ठ हो रहा है। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को विशेष लाभ मिलेगा। आप का व्यापार खूब चमकेगा। अकस्मात् धन मिलने का योग बन रहा है। संचित धन में वृद्धि होगी तथा पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। 3 दिसम्बर के बाद शेयर बाजार, जुआ, सट्टा व लॉटरी इत्यादि से धन प्राप्ति का प्रबल योग बन रहा है।

घर-परिवार, समाज

इस साल पारिवारिक माहौल अनुकूल रहेगा। घर परिवार में सुख शान्ति का माहौल बना रहेगा। पारिवारिक अनुकूलता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य जनों को भी इसमें सम्मिलित करेंगे। रिश्तेदारों के साथ भी आपके संबंध मधुर होंगे। आपके माता पिता के

लिए समय बहुत ही शुभ है। संतान का पूर्ण सहयोग मिलेगा। परन्तु मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में मान सम्मान व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप अपनी बुद्धि मत्ता एवं विद्वता से किसी सामाजिक पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप आदरणीय एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे। सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे, जिससे आप अत्यधिक संतुष्ट व प्रसन्न रहेंगे।

संतान

वर्षारम्भ बच्चों के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। 6 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर आपके बच्चों के लिए बहुत ही शुभ हो रहा है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण बच्चों की उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा।

प्रथम संतान के बारे में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। 28 जून के बाद कुछ परेशानियां आ सकती हैं। लेकिन आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी हल निकाल लेंगे तथा उन्नति के मार्ग खुलेंगे।

स्वास्थ्य

यह साल स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। आपकी सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपके अंदर नवीन विचारों का सृजन होगा। 6 अप्रैल के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान एवं दिनचर्या सुव्यवस्थित करें।

वर्ष का उत्तरार्द्ध भी स्वास्थ्य के लिए श्रेष्ठ रहेगा। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। माता पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहने के कारण आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं, परन्तु 3 दिसम्बर को गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस वर्ष आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता तथा करियर में अच्छी उन्नति मिलेगी। विद्यार्थियों को इच्छित शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिलेगा। बेरोजगारों को वांछित नौकरी मिलने के प्रबल योग बने हुए हैं।

यदि आप डॉक्टर, इंजीनियर, वकील व ज्योतिषी हैं तो आपका चौमुखी विकास होगा तथा उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। वर्षान्त विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं है। अचानक उन्नति रुक सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। छोटी मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी, परन्तु 6 अप्रैल के बाद लम्बी यात्राओं का योग बन रहा है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। यह परिवर्तन आपके लिए अनुकूल रहेगा।

द्वादश स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि अचानक विदेश यात्रा करा सकती है। नौकरी व व्यवसाय से संबंधित भी यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी। यह यात्रा सुखद व आनन्ददायक होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। दान पुण्य अधिक करेंगे। 6 अप्रैल के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ध्यान व योग के प्रति रुझान ज्यादा होगा। माता पिता व बुजुर्गों की सेवा अधिक करेंगे। गुरु के द्वारा दिये गये मन्त्रों की साधना भी कर सकते हैं। उत्तरार्द्ध में आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। सत्संग व सत्कर्म अधिक करेंगे। भागवत कथा सुनना व सत्संग में जाना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अपने घर मे देशी घी का दीपक जलाएं तथा लक्ष्मी जी के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन चींटियों, मछलियों एवं चिड़ियों को दाना डालें।
- नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार का व्रत करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह वर्ष बहुत ही उत्तम रहने वाला है। कार्य व्यवसाय में उन्नति मिलेगी तथा अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा। आमदनी के नये स्रोत बढ़ेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ साथ स्थानान्तरण भी होगा। यह परिवर्तन आपके लिए लाभप्रद रहेगा। आपको बड़े अधिकारियों का पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा कार्यस्थल पर मान-सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें वांछित सफलता मिलेगी। बहुत सारे नये व्यक्ति आपसे जुड़ेंगे जो आने वाले समय में सफलता की कुंजी बन सकते हैं। व्यक्तिगत संबंधों में सुधार आएगा। जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफल परिणाम देखने को मिलेंगे।

धन संपत्ति

गुरु ग्रह का गोचर आर्थिक उन्नति के लिए शुभ है। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे तथा आय के मार्ग में आने वाली समस्त बाधाएं दूर होंगी। शेयर बजार से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी। फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें। यदि कोई बड़ा निवेश करना हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

मई से जुलाई के अंतराल में आपको अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का सुख भी मिल सकता है। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यों में धन का व्यय होगा। संतान के स्वास्थ्य पर अधिक व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक वातावरण के लिए यह साल सामान्य रहेगा। परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभ प्रद रहेगा। पिता जी के लिए यह साल अच्छा नही है परन्तु आपके भाईयो का उन्नति होगा और वे आपको पूर्ण सहयोग करेंगे। मित्रता व दोस्ती के लिए यह समय काफि शुभ है।

तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि समाजिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ है। इस वर्ष आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़ चढ़ के भाग लेंगे। समाज में मान-सम्मान के साथ साथ आपकी

ख्याति भी बढ़ेगी।

संतान

संतान पक्ष के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। पंचम स्थान का राहु अचानक बच्चों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। संतान संबंधित चिंताएं बढेगी। आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

गर्भवती स्त्रियों को बड़े ध्यान से रहना होगा नहीं तो गर्भपात हो सकता है। आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ है। वे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

स्वास्थ्य

यह वर्ष स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे तथा सकारात्मक सोच मे वृद्धि होगी। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा।

राहु के कारण मौसम संबंधित बीमारियां परेशान कर सकती हैं। परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। रहन सहन व दिनचर्या में सुधार करें तथा सुबह शाम व्यायाम करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं अधिक होंगी। 6 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। विदेश यात्रा होने की संभावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है। लग्न स्थान पर राहु का प्रभाव मानसिक भ्रम उत्पन्न करता है, जिससे आपके मन में धर्म के प्रति विश्वास कम होगा तथा तन्त्र मन्त्र के प्रति विश्वास बढ़ेगा। सितम्बर के बाद आपका गुप्त विद्याओं के प्रति आकर्षण बढेगा तथा आप आध्यात्मिक विद्या अर्जित करने की कोशिश करेंगे और योग, साधना करने में आपका समय अधिक व्यतीत होगा।

- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं। ऊँ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करे तथा आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं एकादश भाव मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यावसायिक रूप से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। व्यवसाय में सफलता के लिए थोड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है। आप नया उद्यम शुरु करेंगे। आपको मित्रों और परिजनों से खूब मदद मिलेगी। व्यापार द्वारा अच्छा खासा लाभ होना चाहिए। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत ही उत्तम रहने वाला है। यह समय आपकी सभी मनोकामनाओं को पूरा करने वाला है। पिछले साल की अपेक्षा इस वर्ष ज्यादा मुनाफा होगा। जो लोग कारोबार या रियल एस्टेट से जुड़े हैं उनको थोड़ा मायूस होना पड़ सकता है। शेयर बाजार से अच्छा लाभ होने वाला है।

धन संपत्ति

आर्थिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु 10 जून को गुरु ग्रह का गोचर आर्थिक उन्नति के लिए शुभ है। यदि आप थोड़ा प्रयास भी निष्ठा के साथ करते हैं तो आपको आर्थिक परेशानी नहीं होगी। आपकी आमदनी में बढ़ोत्तरी के प्रबल योग बने हुए हैं साथ ही आप धन की बचत भी कर पाएंगे।

व्यापार, व्यवसाय के माध्यम से आपका धनार्जन होगा। आपके व्यावसायिक जीवन में स्थिरता आएगी। आपका यह सुदृढ़ीकरण आपको अपने व्यापार में नये निवेश के लिए प्रोत्साहित करेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में भूमि, भवन व वाहन खरीदते समय बहुत ही सावधान रहें क्योंकि चतुर्थ स्थान में राहु का गोचर प्रोपर्टी व वाहन के लिए शुभ नहीं होता।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक स्थिति के लिए इस वर्ष का पूर्वार्द्ध सुखद रहने वाला है। आपका गृहस्थ जीवन खुशहाली के साथ व्यतीत होगा। कुछ सामान्य से उतार चढ़ाव हो सकते हैं जो कि एक बेहतर रिश्ते के लिए जरूरी भी है। भाई-बहन और दोस्तों की संगत में आप खुद को प्रफुल्लित महसूस करेंगे तथा उन लोगों के साथ आपके संबंध अच्छे रहेंगे और वे लोग बिना किसी शर्त आपकी मदद करेंगे। किसी निकट संबंधी के बारे में कुछ अच्छी खबर मिल सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध घरेलू मामलों के लिए अच्छा नहीं है। आपके गृहस्थ जीवन में कुछ उतार-चढ़ाव आ सकता है। लेकिन समय रहते सबकुछ ठीक हो जाएगा। निजी और पेशेवर

जिन्दगी को एक साथ न जोड़ें अन्यथा विवादों का सामना करना पड़ सकता है। अपने स्तर पर इसके समाधान का पूरा प्रयास करें। माता पिता के साथ कुछ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

संतान

इस वर्ष आप संतान के मामले में अत्यधिक चिंतित रहेंगे। पंचम का राहु संतान की तरक्की के लिए बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां भी हो सकती हैं। परंतु 10 जून के बाद विवाह की संभावनाएं व योजनाएं बनेंगी जो फलीभूत भी हो जाएंगी।

द्वितीय संतान के लिए समय अपेक्षाकृत बेहतर होगा। उसके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उसके पराक्रम में भी वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। नवविवाहित गर्भवती महिलाओं के लिए गर्भपात के योग बनेंगे इसलिए सावधानी बरतें।

स्वास्थ्य

आपके स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्ध थोड़ा कमजोर रहने वाला है। शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे कम होती प्रतीत होगी। आपको पेट की तकलीफ परेशान कर सकती है। खासकर 10 जून तक शारीरिक दिक्कतों के साथ-साथ मानसिक परेशानी भी हो सकती है। जांघ, पाचन, चेहरा और गैस से सम्बन्धित समस्याएं हो सकती हैं। ऐसी बीमारियों से बचने के लिए नियमित रूप से व्यायाम करें और खान पान का विशेष ध्यान रखें। पुरानी बीमारी आपको फिर से परेशान कर सकती है। इसे नजर अंदाज करने की कोशिश न करें, डॉक्टर की सलाह लें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके स्वास्थ्य, लाभ, व्यक्तिगत प्रभाव, आकर्षण तथा कार्य क्षमताओं के विकास की पूर्ण संभावनाएं हैं। वजन भी बढ़ सकता है, इसलिए मक्खन, घी और मिठाई खाने से परहेज करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः प्रतिकूल रहेगा। अधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। पढ़ाई में भी अरुचि पैदा होने की संभावना है। प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफल होने की संभावनाएं बहुत कम हैं।

नौकरी करने वाले जातकों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध अनुकूल रहेगा। व्यापारियों की उन्नति का प्रबल योग बना हुआ है। किसी विशेष पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के लिए यह समय शुभ है। घर से दूर जाकर पढ़ाई करने का योग बन रहा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारंभ में आपकी यात्राएं होंगी। विदेश यात्रा का भी योग बन रहा है। इन यात्राओं से भाग्योन्नति भी होगी। यात्रा के दौरान आपको छोटी मोटी परेशानियों का भी

सामना करना पड़ सकता है।

जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से ज्यादा दूर हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष राहु के पंचम भाव में गोचर के चलते आपकी धार्मिक कार्यों में रुचि अधिक नहीं रहेगी। घर में साफ-सफाई, पूजा पाठ, पवित्र माहौल व माता की सेवा करने से राहु के अशुभ प्रभाव को कम किया जा सकता है। ऐसा करने से कार्यों में आने वाले व्यवधानों से तथा संतान संबंधी चिंताओं से भी छुटकारा मिल जाएगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में दान पुण्य व तीर्थ यात्राएं अधिक करेंगे। योग, ध्यान, पूजा पाठ, प्राणायाम आदि की ओर रुझान होगा। तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा।

- बृहस्पतिवार के दिन पीली वस्तुओं जैसे हल्दी, केला, बेसन के लड्डू, चने की दाल, पीला वस्त्र आदि का उपयोग अधिक से अधिक करना चाहिए जो आपके लिए शुभ रहेगा।
- दुर्गाबीसा यंत्र गले अथवा बाजू में धारण करने से दुर्गति से मुक्ति मिल जाएगी।
- गुरुवार के दिन पीली वस्तुओं का दान करें।
- बुधवार को राहु मंत्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। सप्तम भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में कुछ अच्छा करेंगे, जिससे आपकी आय में वृद्धि होगी। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। कोई नया व्यापार शुरु करने के लिए अच्छा समय है। लग्न का गुरु नवीन विचारधारा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं। इस समय आपका भाग्य भी आपके साथ है। इसलिए कम समय में अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके कार्यों में कुछ व्यवधान व परेशानियां आ सकती हैं। परन्तु आप अपने विवेक से उन सभी परेशानियों से बाहर निकल आएंगे तथा आपके शत्रु भी परास्त होंगे। सितम्बर के बाद आप किसी नए कार्य में धन निवेश करें तो अच्छा लाभ मिलेगा।

वर्षान्त में कोई बड़ा निवेश करने से बचें। पैसों के लेन-देन में भी सतर्कता बरतें क्योंकि किसी भरोसेमंद व्यक्ति से धोखा मिल सकता है। शेयर बाजार से जुड़े जातकों के लिए समय अच्छा नहीं है। भावनाओं में बहकर किसी भी प्रकार का निवेश करने से बचें। वर्ष के मध्य से आपको अच्छी प्रगति मिलने की संभावना है। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। अगर आपका स्थानान्तरण होता है, तो उसे स्वीकार कर लें क्योंकि आगे इससे आपको बहुत लाभ मिलने की संभावना है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी। एकादश स्थान का शनि आपके भाईयों से लाभ प्राप्त करा सकता है। आर्थिक प्रगति के लिए आप कोई नई योजना सोच सकते हैं। पुराना कर्ज अचानक वापस मिलने की भी संभावना है। विदेश या दूर स्थल से धन लाभ होने की भी संभावना है, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। परिवार में किसी सदस्य की सेहत खराब हो सकती है, जिसके इलाज में भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय निवेश के मामले में सावधान रहें यदि निवेश करना चाहते हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों का परामर्श अवश्य लें। इस वर्ष अचानक कोई बड़ा निर्णय न लें। योजनाबद्ध तरीके से ही कोई

कार्य संपन्न करें।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान का राहु पारिवारिक स्थिति के लिए अच्छा नहीं है। परिवार में भावनात्मक लगाव की कमी बनी रहेगी, जिससे परिवार में वैमनस्य व वैचारिक मतभेद की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। आपकी माताजी के लिए यह समय अच्छा नहीं है। उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी होती रहेगी, परन्तु आपके भाईयों के लिए समय शुभ है। उनकी उन्नति होगी। आप सभी परिस्थितियों का सामना धैर्यपूर्वक और सरलता के साथ करने में सक्षम रहेंगे।

जिन्दगी के प्रत्येक मोड़ पर जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। पिता के साथ संबंध मधुर रहेंगे तथा वे आर्थिक रूप से आपकी मदद भी करेंगे। 19 सितम्बर के बाद तृतीयस्थ राहु सामाजिक उत्थान के लिए श्रेष्ठ है। अतः आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज में मान-सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी।

संतान

संतान के दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके बच्चों की बौद्धिक शक्ति काफी अच्छी रहेगी। करियर का चुनाव करने के लिए वे विशेषज्ञों की सलाह लेंगे एवं इस दिशा में फैसला लेने के लिए सक्रिय रहेंगे।

30 जुलाई से 11 सितम्बर तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा। उसके बाद पुनः अनुकूल हो जाएगा। यदि आपकी संतान विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय और ज्यादा अनुकूल है। वे कुछ ऐसे कार्य करेंगे जिसके कारण आप अपने बच्चों पर गर्व करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य भी अच्छा बना रहेगा। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी दिनचर्या भी सही रखेंगे। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

30 जुलाई के बाद स्वास्थ्य के मामले में आपको थोड़ा सा संभलकर चलने की जरुरत है। कार्यों की अधिकता की वजह से आप शारीरिक तौर पर कमजोरी व थकान का अनुभव करेंगे। मौसम के बदलाव से पैदा होने वाली बीमारियों के प्रति सतर्क रहें। मोटापे से पीड़ित लोगों को मांसपेशियों में दर्द की शिकायत रह सकती है। छोटी-छोटी बीमारियों को नजरअंदाज करने की भूल न करें। जो लोग लंबे समय से बीमार हैं, उन्हें अपनी सेहत का खास

खयाल रखना होगा। योग एवं ध्यान पर विशेष जोर दें। सितम्बर के बाद समय पुनः अनुकूल हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से अनुकूल रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

सितम्बर के बाद आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में मनोवांछित सफलता प्राप्त करेंगे परन्तु सफलता प्राप्त करने हेतु आपको अथक परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी इसलिए अपने मनोबल को बनाए रखें एवं कार्यशील बने रहें। निश्चित तौर पर सफलता आपके कदम चूमेगी। तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने कार्यक्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त करेंगे एवं अपनी संस्था में सम्मान प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

चतुर्थ स्थान का राहु प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण करा सकता है, जिससे आपका मन विचलित रह सकता है। लेकिन धैर्य बनाए रखें क्योंकि कुछ दिन बाद उसी स्थान पर आपको आनन्द की अनुभूति होने लगेगी एवं नया स्थान आपके लिए सुखदायी रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी धार्मिक यात्राएं अधिक होंगी।

30 जुलाई के बाद आपके कार्य से सम्बन्धित यात्रा हो सकती है। जो व्यक्ति विदेश में रहकर कार्य करने की योजना बना रहे हैं इस अवधि में उनकी यह योजना कार्यान्वित हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। आप कोई बड़ा धार्मिक कार्य या धार्मिक यात्रा करेंगे। धर्मस्थल में जाकर दान-पुण्य एवं गुरुजनों एवं वृद्धो के प्रति आप अपनी भावनाओं को आदर सहित प्रदर्शित करेंगे जिससे गुरुजनों एवं वृद्ध लोगों का आपको आशीर्वाद प्राप्त होगा। पूजा पाठ के प्रति विशेष रुचि बढ़ेगी।

पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से ईश्वर में आपका अटूट विश्वास होगा। आप गुरु मन्त्र लेकर साधना कर सकते हैं। 30 जुलाई से 11 सितम्बर तक समय किंचित प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद पुनः अच्छा हो जाएगा।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके सामने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन काले कुत्ते को रोटी में गुड़ डाल कर खिलाएं।
- दुर्गा बीसा कवच अपने गले के धारण करें।
- प्रतिदिन सूर्य का जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं नवम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष सामान्यतः अच्छा रहेगा। यदि आप कोई कार्य मेहनत के साथ शुरु करेंगे तो उसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। सकारात्मक दृष्टिकोण से यह वर्ष आपके लिए कारगर सिद्ध होगा। आप कोई नई तकनीक या विधा सीखने की कोशिश कर सकते हैं, जिससे आपके कार्यों में विस्तार हो। द्वादश स्थान में शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके व्यापार में कुछ परेशानियां आएंगी लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्व ारा सभी परेशानियों का हल निकाल लेंगे। 16 फरवरी के बाद नौकरी करने वालों के लिए समय शुभ हो रहा है। ऑफिस में बॉस और सहकर्मियों का पूरा साथ मिलेगा तथा सभी लोग आपके कार्यों से संतुष्ट रहेंगे।

आपको व्यापार में लाभ मिलेगा लेकिन बहुत से कामों को एक साथ करने से बचें। अपने व्यवसाय में आप सम्मान और प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। आपका आत्मविश्वास आपको लगातार विजय दिलाएगा। व्यवसाय से सम्बन्धित लंबी दूरी की यात्रा आपके लिए लाभदायक रहेगी। आप कुछ नया करेंगे तथा अपनी आमदनी में बढ़ोत्तरी करेंगे। इस वर्ष आपको व्यापार में पैसों के लेन-देन करते समय सतर्क रहना होगा क्योंकि द्वादश स्थान का शनि नुकसान या हानि करा सकता है।

धन संपत्ति

यह वर्ष आर्थिक रूप से आपके लिए ठीक-ठाक रहने वाला है। धन संचय करने और कमाने में आप सक्षम रहेंगे। 16 फरवरी के बाद धन की चिंता से मुक्ति मिलेगी तथा अचानक धन की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई या मित्र से लाभ प्राप्त होगा। परिजनों व मांगलिक कार्यों में आपका अधिक खर्च होगा तथा आप अपनी भौतिक सुख सुविधाओं पर भी खूब खर्च करेंगे।

निवेश व लेन देन के मामले में आपको सावधानी बरतने की जरूरत है क्योंकि शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण धोखा-धड़ी होने की संभावना बन रही है। आपको अपने अनावश्यक खर्चों पर भी नियंत्रण रखना होगा।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपकी पारिवारिक स्थिति बेहतर रहने वाली है। परिजनों के साथ आप आनन्दित रहेंगे। 16 फरवरी के बाद परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार

में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा।

पत्नी के साथ सम्बन्धों में मधुरता बढ़ेगी तथा सभी कार्यों में उनका सहयोग मिलता रहेगा। वर्ष का हर एक दिन आप प्रफुल्लित महसूस करेंगे तथा किसी भी घरेलू समस्या का समाधान सुगमता से करने में सफल रहेंगे। तृतीय स्थान का राहु सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए बहुत ही शुभ है।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए उत्तम रहने वाला है। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश होगा। आप अपने बच्चों पर गर्व करेंगे।

नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उत्तम समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा है। यदि वे विवाह के योग्य है तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में हमेशा अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह प्रभाव के कारण मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी तथा आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे। यदि किसी कार्य में विलम्ब भी हो तो उसे ईश्वर के शुभ संकेत के रूप में स्वीकार करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

16 फरवरी के बाद कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता हैं जननांगों और मस्तिष्क में कुछ दिक्कतें हो सकती हैं। यदि स्वास्थ्य की उचित देख भाल नहीं करेंगे तो सरदर्द, बदहजमी और आखों में दर्द की संभावना बन सकती है। द्वादश स्थान का शनि आपको कोई बड ा रोग दे सकता है। अतः अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें तथा अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आप पढ़ाई लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है तथा 16 फररवरी के बाद आपको वांछित प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है।

बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की पूर्ण संभावना है। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी। कार्य में विस्तार हेतु या विद्यार्थी वर्ग उच्च शिक्षा की प्राप्ति हेतु विदेश जा सकते हैं।

तृतीयस्थ राहु के कारण छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी हो सकती हैं। इस वर्ष आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी तथा इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि के कारण आप निःस्वार्थ भाव से पूजा पाठ में रुचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन भी करेंगे। 16 फरवरी के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों को खाना खिलाना, धार्मिक स्थान पर भंडारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। वृद्धाश्रम एवं मंदिर के निमार्ण हेतु दान भी करेंगे।

- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- शनिवार के दिन शाम के समय पीपल के वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।
- पांच मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को अर्घ्य दें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(03/02/2014 - 03/02/2033)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपके जीवन में यह 03/02/2014 को आरम्भ और 03/02/2033 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि 11वें भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है जो अधिकांश लोगों में आतंक उत्पन्न करता है। हर क्षेत्र में विलम्ब और बाधा उत्पन्न करना इसकी प्रवृत्ति है। यह जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसे कठिन परिश्रम को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में 11वें भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि प्रथम, पंचम तथा अष्टम भावों पर है और यह उनके कार्य को सम्पादित कर रहा है। 11वा भाव, जिसमें यह स्थित है, मित्र, समुदाय, महत्त्वाकांक्षाओं, कामनाओं तथा उनकी पूर्ति, धन की प्राप्ति, लाभ, खुशहाली, बड़े भाई, भाग्योदय आदि का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी 11वें भाव में स्थित है और अपने भाव अर्थात् कामनाओं इच्छाओं की पूर्ति के भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है। इस दशा के दौरान आपको किसी गम्भीर बीमारी अथवा दुर्घटना नहीं होगी।

धन-सम्पत्ति :

शनि की वर्तमानों दशा में आपकी इच्छाओं की पूर्ति, लाभ और धन का संग्रह होगा। आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा और जीवन के हर क्षेत्र में लाभ मिलेगा। किन्तु, आपके लक्ष्यों की पूर्ति में बाधाएं भी उत्पन्न करेगा जिन पर आप अपने भाइयों तथा मित्रों की सहायता से विजय प्राप्त करेंगे।

व्यवसाय :

आप व्यवसाय में सफल होंगे और सरकारी स्रोतों से धन का उपार्जन करेंगे। आपके राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होने की अच्छी सम्भावना है जहाँ आपको आदर और सम्मान मिलेगा।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सुखी होगा क्योंकि आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे और पारिवारिक सुख-आनन्द का लाभ उठाने में आपकी सहायता करेंगे। आपके बच्च कम होंगे जो आज्ञाकारी होंगे और आपका आदर करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा के लिए यह दशा अनुकूल है। आप अपनी शिक्षा सफलता पूर्वक पूरी करेंगे और साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेंगे।

अंर्तदशा :- शनि - सूर्य
(26/01/2024 - 07/01/2025)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 03/02/2014 को प्रारंभ होकर 03/02/2033 को समाप्त होगी।

शनि महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 11 मास 12 दिन की होती है। आपके लिए यह 26/01/2024 को प्रारंभ होकर 07/01/2025 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी जन्मपत्रिका के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप उपेक्षित महसूस कर सकते हैं। कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं। संतान के कारण भी कठिनाइयां आ सकती हैं। निराश हो सकते हैं। किसी गैरकानूनी कार्य से संबद्ध हो सकते हैं जिससे नेत्रों की शक्ति क्षीण हो सकती है। यह अंतर्दशा शुभ नहीं रहेगी।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य के वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें। सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

अंर्तदशा :- शनि - चन्द्र
(07/01/2025 - 08/08/2026)

शनि महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास की होगी। आपके लिए यह 03/02/2014 को प्रारंभ होकर 03/02/2033 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। तृतीय भाव में स्थित होकर चंद्रमा आपकी कुंडली के 9वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी बुद्धिमत्ता में उन्नति होगी, साहसी बनेंगे। जीवन में उपलब्धियां प्राप्त होंगी जिससे व्यक्तित्व उत्तम बनेगा। भाई-बहनों से संबंध अच्छे रहेंगे। लक्ष्यप्राप्ति में बाधाएं आ सकती हैं, मगर आप हिम्मत नहीं हारेंगे और अंततः सफल होंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - मंगल
(08/08/2026 - 17/09/2027)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 03/02/2014 को प्रारंभ होकर 03/02/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास की

होगी जो आपके लिए 08/08/2026 को प्रारंभ होकर 17/09/2027 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 1, 4, 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको प्रत्येक कार्य में बाधाओं का सामना करना पड़ेगा, मगर धन खूब कमाएंगे और धनी बनेंगे। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं, मगर जल्दबाज और प्रशंसापसंद हो सकते हैं। वाहन सुख रहेगा। विज्ञान और तकनीकी में दक्ष बनेंगे। अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए 6 रत्ती का मूंगा चांदी की अंगूठी में कच्चे दूध से धोकर, मंगलवार के दिन प्रातःकाल में हनुमानजी, गणेशजी और शिवजी की उपासना के उपरांत धारण करें।

अंर्तदशा :- शनि - राहु
(17/09/2027 - 24/07/2030)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 03/02/2014 को प्रारंभ होकर 03/02/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु की अंतर्दशा 2 वर्ष 10 मास की होगी जो आपके लिए 17/09/2027 को प्रारंभ होकर 24/07/2030 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है।

इस अवधि में आपको कोई व्याधि हो सकती है। किसी कांड में फंस सकते हैं। कार्यक्षेत्र में बदनाम हो सकते हैं। हर कदम पर सावधानी आवश्यक है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु गायत्री मंत्र के 108 जाप प्रतिदिन करें।

अंर्तदशा :- शनि - गुरु
(24/07/2030 - 03/02/2033)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है आपके लिए यह 03/02/2014 को प्रारंभ होकर 03/02/2033को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 2 वर्ष 6 मास 12 दिन की होगी जो आपके लिए 24/07/2030 को प्रारंभ होकर 03/02/2033 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है।

महादशा :- बुध
(03/02/2033 - 03/02/2050)

बुध की महादशा 03/02/2033 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 03/02/2050 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध लग्न में स्थित है। बुध की दृष्टि सप्तम भाव पर है। इसके पहले आपकी 19 वर्ष की शनि की दशा चल रही थी। उस दशा के दौरान आपको समृद्धि की प्राप्ति, जीवन वृत्ति में प्रगति तथा यात्रा हुई होगी। बुध की इस दशा के दौरान जीवन का सुख, माता से लाभ, सुखमय वैवाहिक जीवन तथा जीवन में प्रगति होगी।

स्वास्थ्य :

बुध के अपनी ही राशि में होने के कारण आपको उत्तम स्वास्थ्य तथा जीवनी शक्ति की प्राप्ति होगी। आप में शक्ति तथा उत्साह होगा तथा आप अशावादी और प्रसन्न होंगे। आपका व्यक्तित्व व रंगरूप आकर्षक होगा। अधिक परिश्रम तथा थकावट के कारण कोई संक्रामक बीमारी, बुखार अथवा स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारी हो सकती है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आप स्वयं धनोपार्जन करेंगे। आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। जीविका तथा व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, वैभानिकी तथा मस्तिष्क से संबद्ध सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर और हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को अचानक लाभ होगा, कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और उच्च पद तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। आपको उच्चाधिकारियों का सद्भाव तथा अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपको कठिन परिश्रम करना होगा। व्यापारी वाणिज्य व्यापार में कुशल होंगे और उन्हें अच्छा लाभ मिलेगा। आर्थिक-समृद्धि तथा जीवन-वृत्ति में उन्नति के लिये यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में जीवन तथा वाहन का सुख मिलेगा। बुध की दशा के दौरान आपको सभी सुख, माता से लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और आपकी जमीन-जायदाद में भी वृद्धि होगी। सम्पत्ति के सभी लेन-देन लाभदायक होंगे। सूर्य की अन्तर्दशा में छोटी तथा शुक्र

की अन्तर्दशा में लम्बी यात्राएं होंगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपनी परीक्षा में सफल होंगे। आप विज्ञान, गणित तथा व्यापार में प्रवीण होंगे। आप तेज हैं और अपनी वाक्पटुता के कारण जाने जाएंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा ललितकला में भी आपकी रुची होगी। आप तेज, कूटनीतिज्ञ, व्यवहार कुशल, सर्वतोमुखी हैं और विविध विषयों में रुचि रखते हैं।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। आपके बच्चे बहुत अच्छा करेंगे और उन्हें समृद्धि की प्राप्ति होगी, उनकी शिक्षा उत्तम होगी और वे उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे। उनके साथ आपका संबंध बहुत सुन्दर रहेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा होगी और उन्हें सम्पत्ति तथा साझेदारी में लाभ की प्राप्ति होगी। जीवनसाथी के साथ आपका संबंध अत्यना मधुर रहेगा। आपकी माता का जीवन अत्यन्त सफल रहेगा और उन्हें सम्पत्ति, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके पिता का सट्टे तथा ऊँचे कारोबार में निवेश सफल रहेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को विभिन्न स्रोतों से लाभ, उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति तथा उनके मित्र प्रभावशाली होंगे। आपके बड़े भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और उन्हें सम्पत्ति तथा माता से लाभ की प्राप्ति होगी। उनके साथ आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर होंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की मुख्य दशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और आपको सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी। आगे केतु की अन्तर्दशा आपके लिए कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। शुक्र के कारण आपको बच्चों से सुख तथा सट्टे में लाभ मिलेगा। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्राएं होंगी जबकि उसके बाद आनेवाली चन्द्रदशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में लाभ तथा विरोधियों पर विजय मिलेगी जबकि राहु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु के फलस्वरूप आपको साझेदारों से लाभ तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान कुछ परिवर्तन होगा और धन तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

अंर्तदशा :- बुध - बुध
(03/02/2033 - 03/07/2035)

आपके लिए बुध की महादशा 03/02/2033 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बुध की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन होगी। आपके लिए यह 03/02/2033 को प्रारंभ होकर 03/07/2035 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, स्मृति और वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको अपने ज्ञान के कारण प्रसिद्धि मिलेगी। सद्गुणों में वृद्धि होगी। ज्ञानार्जन उत्तम होगा। वाक्शक्ति प्रभावशाली होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार में सफलता मिलेगी। जीवनसाथी और व्यापार में साझेदार से संबंध मधुर रहेंगे।

आपके जीवनसाथी नया व्यापार प्रारंभ कर सकते हैं या वर्तमान कार्य का विस्तार हो सकता है। आपके पिता को निवेश या सट्टेबाजी में लाभ हो सकता है। माता को कार्यों में सफलता मिलेगी, धन का लाभ होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए नये मित्र, धन, शिशु का जन्म, लघु यात्राएं, कार्यों में सफलता, नयी योजनाओं का संकेत है। आपकी संतान को उच्चशिक्षा के लिए प्रवेश मिल सकता है। अगर वे सेवारत हैं तो ज्ञान-विज्ञान के कार्यों से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद मिल सकता है; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों को अच्छा लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- बुध - केतु
(03/07/2035 - 29/06/2036)

आपके लिए बुध की महादशा 03/02/2033 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 03/07/2035 को प्रारंभ होकर 29/06/2036 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप धर्म में रुचि ले सकते हैं। यात्राएं हो सकती हैं। खर्चे बढ़ेंगे। अध्यात्म और संन्यास में प्रवृत्ति हो सकती है। दानधर्म में समय और धन खर्च करेंगे। शत्रुओं पर विजय होगी। सहकर्मी सहयोग करेंगे। मुकदमे में जीत होगी। मामापक्ष के लोगों से लाभ होगा। नौकरी सुचारु रूप से चलेगी।

आपके जीवनसाथी समस्याओं को सरलता से सुलझा सकेंगे। आपके पिता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं या पुश्तैनी जायदाद प्राप्त कर सकते हैं। माता भाग्यशाली होंगी, धनी बनेंगी, अध्यात्म में रुचि होगी। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, प्रसिद्धि, धनलाभ, सुखी घरेलू जीवन और उत्तम शिक्षा का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन हो सकता है, बाधाएं आ सकती हैं, उन्हे परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो तबादला हो सकता है; परिवर्तन और अप्रत्याशित लाभ की संभावना है।

अगर आप सेवारत हैं तो साझेदारी से लाभ होगा, यात्रा होगी, जनसंपर्क में सफलता मिलेगी। परामर्शदाताओं के कार्य में मामूली परिवर्तन आ सकता है; धनलाभ होगा। व्यापारियों को परिश्रम करना होगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। नेत्रों और पैरों की व्याधियों से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए कुत्ते को भोजन दें।

अंर्तदशा :- बुध - शुक्र
(29/06/2036 - 30/04/2039)

आपके लिए बुध की महादशा 03/02/2033 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 10 मास होगी। आपके लिए यह 29/06/2036 को प्रारंभ होकर 30/04/2039 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, शांति और समृद्धि का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। उच्चपद और सम्मान प्राप्त होंगे। सट्टेबाजी या निवेश से लाभ हो सकता है। आप धनी बनेंगे, खुद का मकान और वाहन हो सकते हैं। किस्मत साथ देगी। सुअवसर खूब मिलेंगे। कला में रुचि होगी। सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। घरेलू सुख होगा।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे, धनी बनेंगे, खुश रहेंगे और उच्चपद प्राप्त करेंगे। आपके पिता प्रसन्न और समृद्ध होंगे। माता के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, अचानक धनागम होगा, सुख के साधन क्रय करेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, पिता से मधुर संबंध, खुशी, धन, कला में रुचि, सौभाग्य, घर और कार्यालय में सुखद वातावरण और सुखी जीवन का संकेत है।

आपकी संतान को कार्यों में सफलता मिलेगी, परिश्रम से लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो साझेदारी से लाभ होगा, व्यापार में फ़ायदा होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में प्रसन्नता व्याप्त रहेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा। व्यापारी सौभाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कानों में मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- बुध - सूर्य
(30/04/2039 - 05/03/2040)

आपके लिए बुध की महादशा 03/02/2033 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चौथी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 30/04/2039 को प्रारंभ होकर 05/03/2040 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य स्वास्थ्य, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप अध्यात्म और दर्शन में रुचि लेंगे। स्पर्धी आपको परेशान करने की कोशिश करेंगे मगर आप विजयी रहेंगे। कार्यक्षेत्र में बाधाएं आ सकती हैं। विदेश यात्रा हो सकती है। शत्रु परास्त होंगे; उत्तम स्वास्थ्य, धन, उच्च पद, प्रसन्नता, सफलता और लाभ का संकेत है। मुकदमे में जीत होगी। मातहत सहयोग करेंगे; कार्यालय में सुविधाएं उत्तम होंगी।

आपके जीवनसाथी को धन, उच्चपद, विरोधियों पर विजय का संकेत है। आपके पिता के लिए अचल संपत्ति, सरकार से लाभ और सब सुखों का योग है। माता को अध्यात्म में रुचि होगी, भाग्य साथ देगा, यात्रा होगी।

आपके भाई-बहनों की साख अच्छी होगी, कार्यक्षेत्र में सफलता, उच्चपद, धनलाभ, उत्तम शिक्षा और खुशी का संकेत है। आपकी संतान के वातावरण में परिवर्तन हो सकता है, शिक्षा पूर्ण होगी। अगर वे सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो सामूहिक प्रयास से सफल हो सकते हैं। परामर्शदाता प्रगति करेंगे। व्यापारियों को लाभ होगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- बुध - चन्द्र
(05/03/2040 - 05/08/2041)

आपकी बुध की महादशा 03/02/2033 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी, जिसकी अवधि 1 वर्ष 5 मास होगी। आपके लिए यह 05/03/2040 को प्रारंभ होकर 05/08/2041 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, सरकारी कृपा और चेहरे की चमक का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न रहेंगे। सक्रियता बढ़ेगी। कला, साहित्य, संचार साधनों में सफलता मिल सकती है। सामाजिक जीवन उत्तम रहेगा; बहुत से मित्र होंगे। माता-पिता से लाभ हो सकता है। समाजसेवी संस्था की स्थापना में सक्रिय हो सकते हैं। दूरस्थ स्थान से संपर्क से लाभ होगा। संतान से सुख मिलेगा।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे और धनी बनेंगे। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। माता के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी, अध्यात्म में रुचि लेंगी।

आपके भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम होगा, धन, संतान से प्रसन्नता, उत्तम शिक्षा का संकेत है। शिशु का जन्म हो सकता है। आपकी संतान की आकांक्षाएं पूर्ण होंगी, शिक्षा में सफल होंगे। अगर वे सेवारत हैं तो उच्चपद, सरकार से लाभ और धन का योग है।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। परामर्शदाता धन कमाएंगे ; उच्चपद पर आसीन होंगे। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गले में मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए भैरव मंदिर में दूध अर्पित करें।

अंर्तदशा :- बुध - मंगल
(05/08/2041 - 02/08/2042)

आपके लिए बुध की महादशा 03/02/2033 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। यह 05/08/2041 को प्रारंभ होकर 02/08/2042 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्ध होंगे। कार्यक्षेत्र में, खास तौर पर तकनीकी विषयों में सफलता मिलेगी। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। सत्कार्य करेंगे। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, शिक्षा उत्तम होगी, जायदाद से आय में वृद्धि होगी, संतान से सुख मिलेगा। बाधाओं को पार करने के लिए आत्मविश्वास, इच्छाएं और प्रतिरोधक शक्ति मौजूद रहेंगे। वांछित कार्य पूर्ण होंगे और उत्साह उत्तम रहेगा। आपके जीवनसाथी की आय उत्तम होगी; जायदाद और वाहन का सुख मिलेगा। आपके पिता को धनलाभ होगा, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, परिवार में खुशियां और सब सुविधाएं होंगी। माता को निवेश से लाभ होगा, उत्साह उत्तम होगा।

आपके जीवनसाथी की आय उत्तम होगी; जायदाद और वाहन का सुख मिलेगा। आपके पिता को धन का लाभ होगा, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, परिवार मं खुशियां और सब सुविधाएं होंगी। माता को निवेश से लाभ होगा, उत्साह उत्तम होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए अचानक लाभ, वसीयत से लाभ, सेवानिवृत्ति से धनागम, उत्तम कार्यक्षमता, अनावश्यक खर्चे और यात्रा का संकेत है।

आपकी संतान स्पर्धियों पर विजयी होगी, तकनीकी और बारीकी के कार्यों में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो मातहतों का सहयोग मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, आय अच्छी होगी। परार्शदाता आत्मविश्वास के साथ प्रगति करेंगे। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंर्तदशा :- बुध - राहु
(02/08/2042 - 18/02/2045)

आपके लिए बुध की महादशा 03/02/2033 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 02/08/2042 को प्रारंभ होकर 18/02/2045 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आप धनी और प्रतिष्ठित होंगे। उच्चपद प्राप्त होगा। सेवारत जातकों के कार्यालय उत्तम सुविधाओं से पूर्ण होंगे। स्पर्धा में विजय होगी, मुकदमे में जीत होगी।

आपको मामापक्ष के लोगों से लाभ होगा। खेलकूद आदि में भाग ले सकते हैं। मातहत सहयोग करेंगे। किरायेदार भी सहयोग करेंगे। तीर्थयात्रा हो सकती है, नयी मित्रता से लाभ होगा, कार्य में प्रगति करेंगे। विदेश में निवास हो सकता है।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं हो सकती हैं, खर्चे बढ़ेंगे और विदेशियों से संपर्क होगा। आपके पिता प्रसिद्ध होंगे। माता की इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपके छोटे भाई-बहनों के लिए अचल संपत्ति, उत्तम शिक्षा, सरकार से लाभ और खुशी का संकेत है।

बड़े भाई-बहनों को अचानक लाभ होगा।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, पारिवारिक सुख रहेगा। अगर वे कार्यरत हैं तो धन का लाभ होगा। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी।

आपका स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे। शुभत्व में वृद्धि के लिए काले उड़द, नीले वस्त्र और सतनजा दान दें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2025

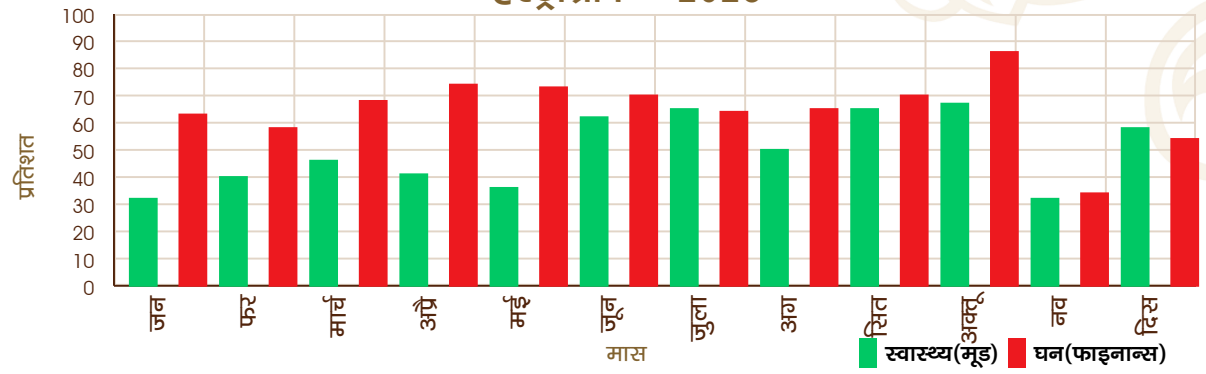

एस्ट्रोग्राफ - 2026

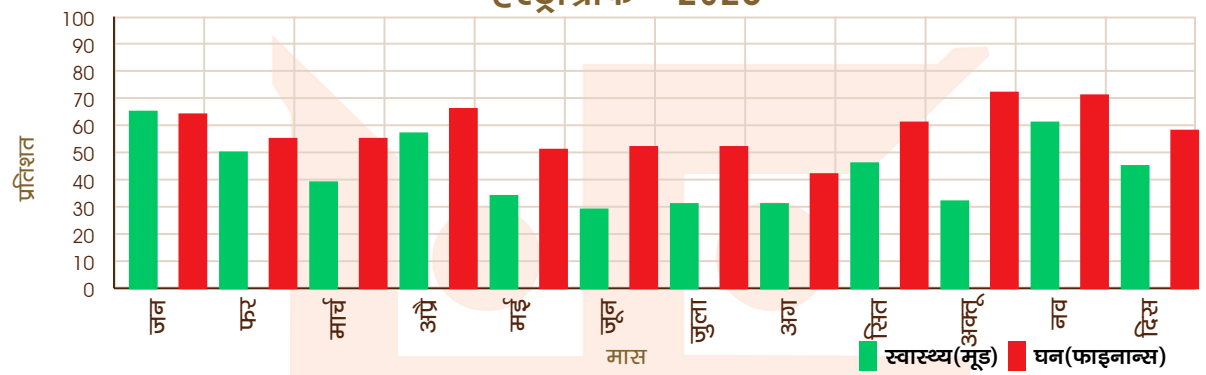

एस्ट्रोग्राफ - 2027

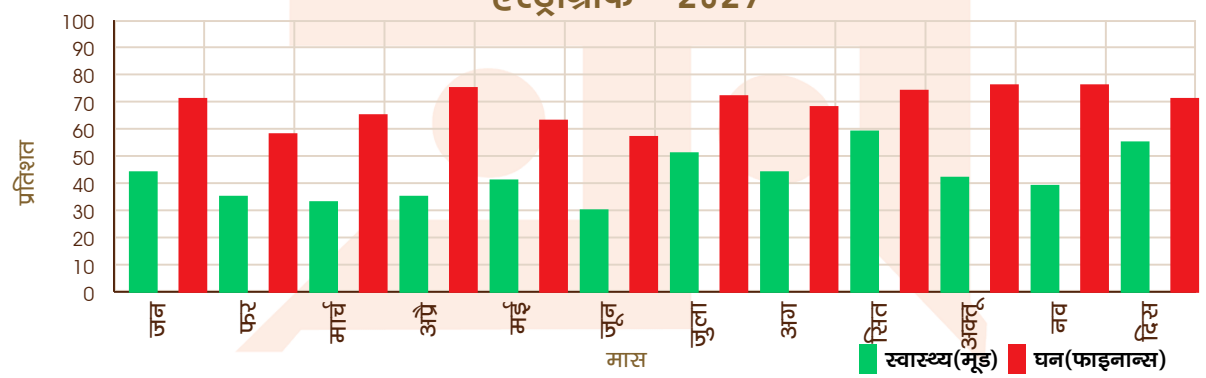

एस्ट्रोग्राफ - 2028

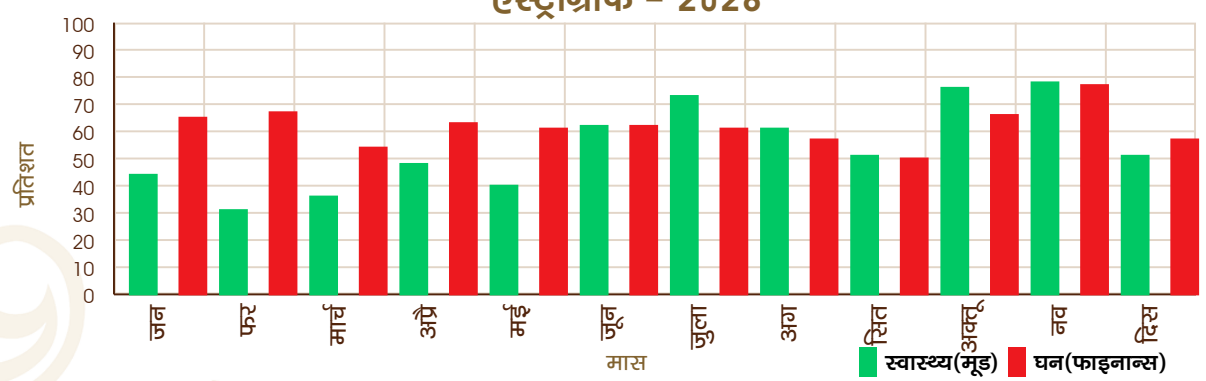

एस्ट्रोग्राफ - 2029

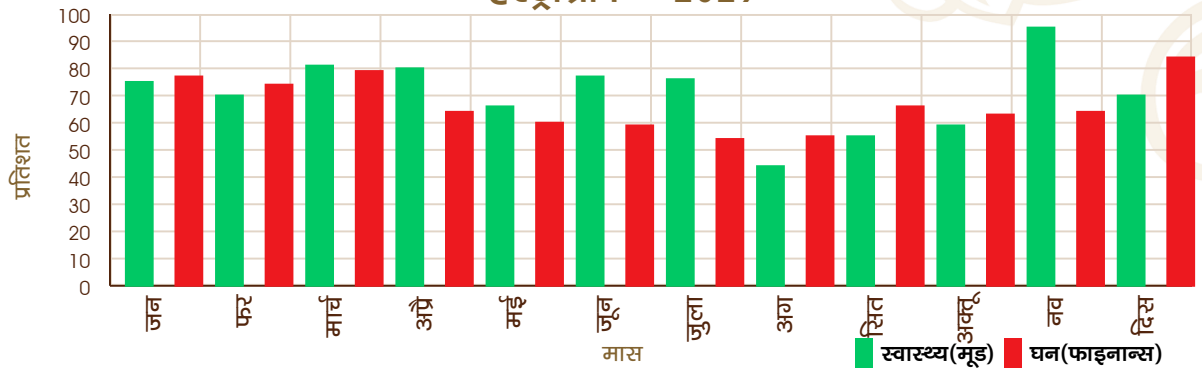

एस्ट्रोग्राफ - 2030

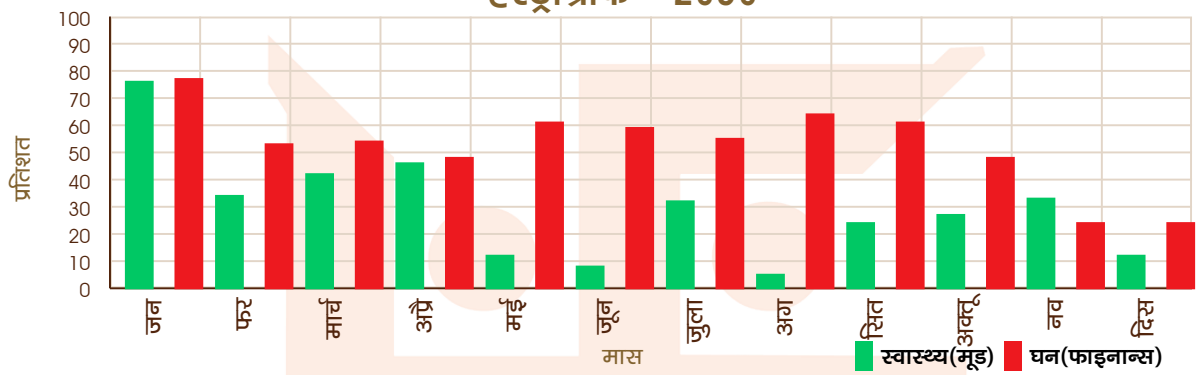

एस्ट्रोग्राफ - 2031

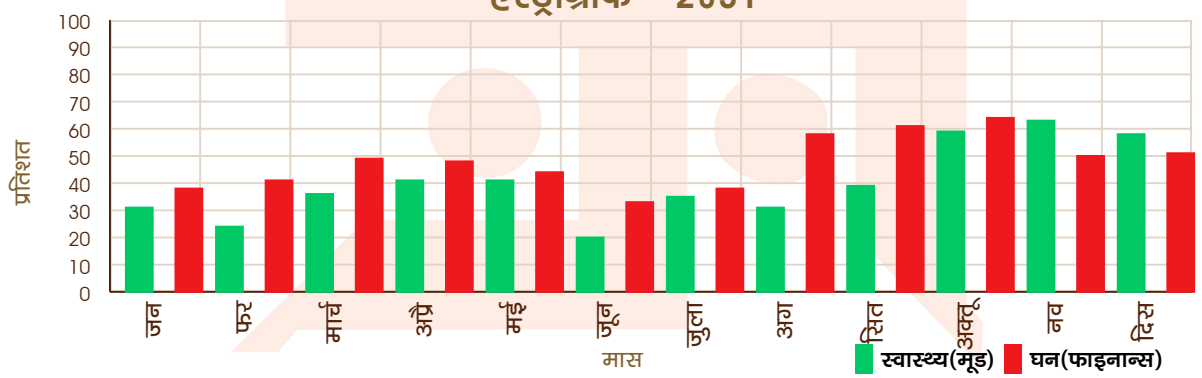

एस्ट्रोग्राफ - 2032

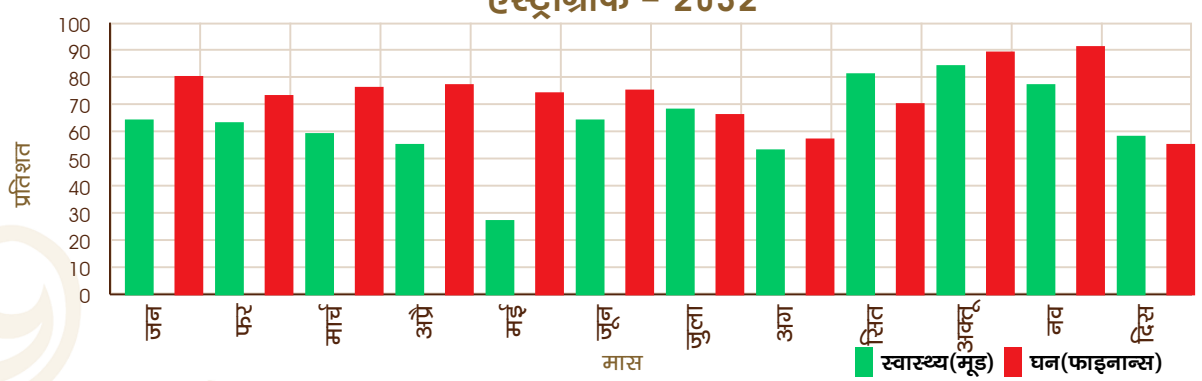

एस्ट्रोग्राफ - 2033

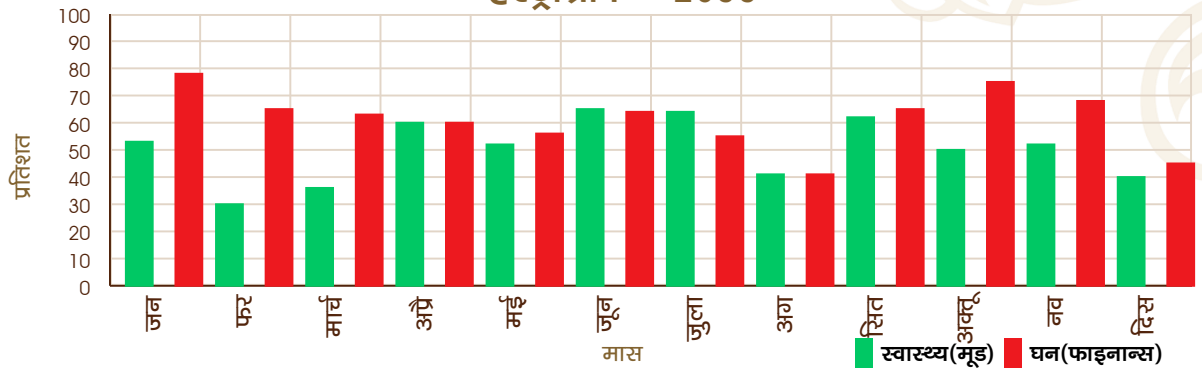

एस्ट्रोग्राफ - 2034

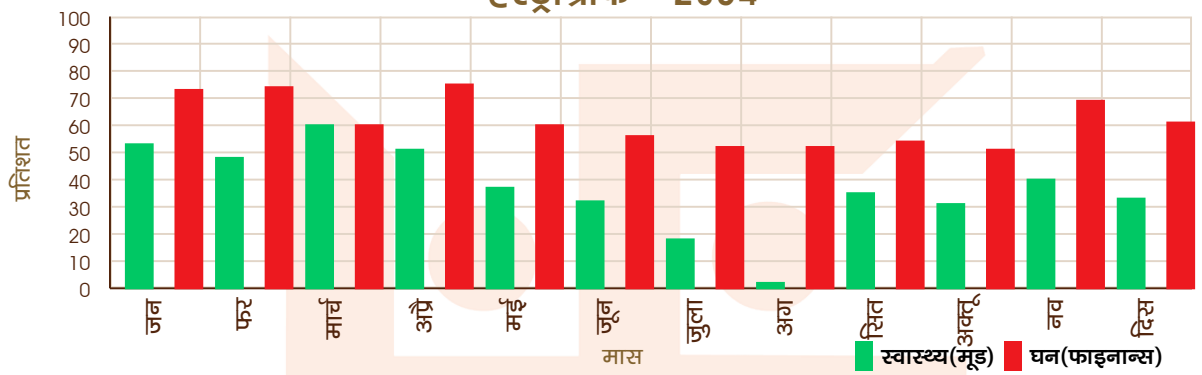

एस्ट्रोग्राफ - 2035

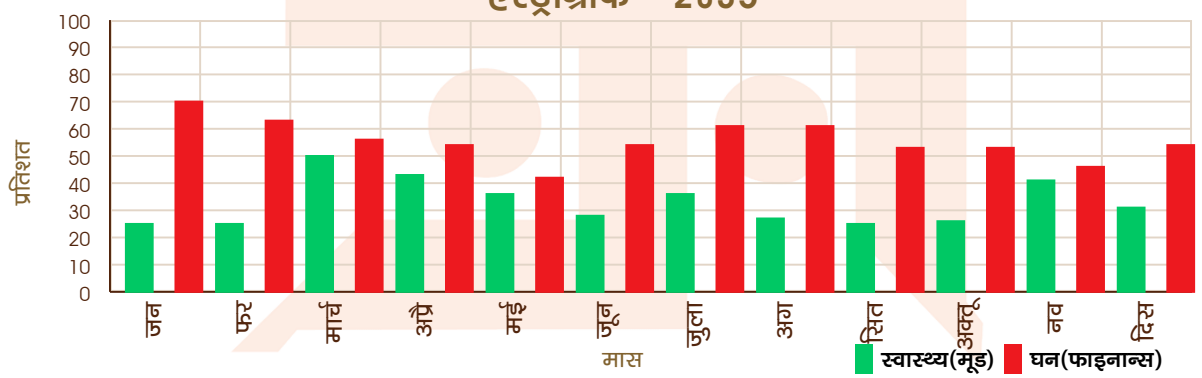

एस्ट्रोग्राफ - 2036

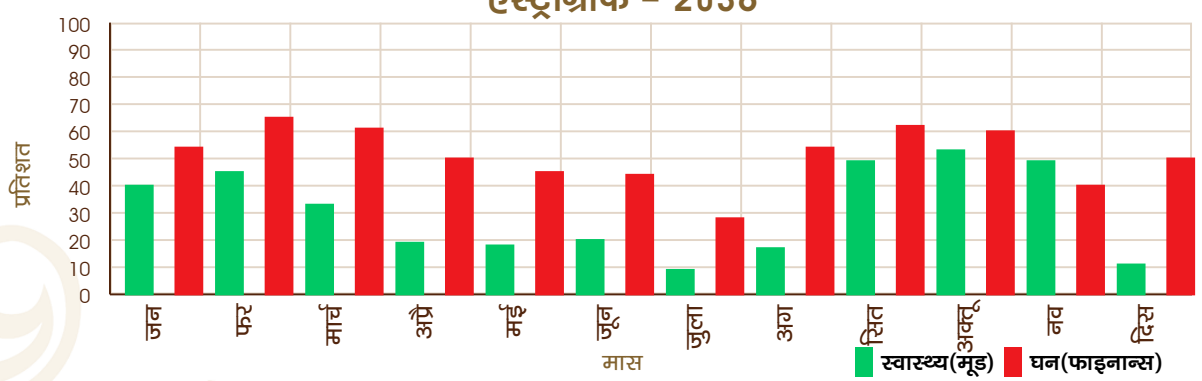

एस्ट्रोग्राफ - 2037

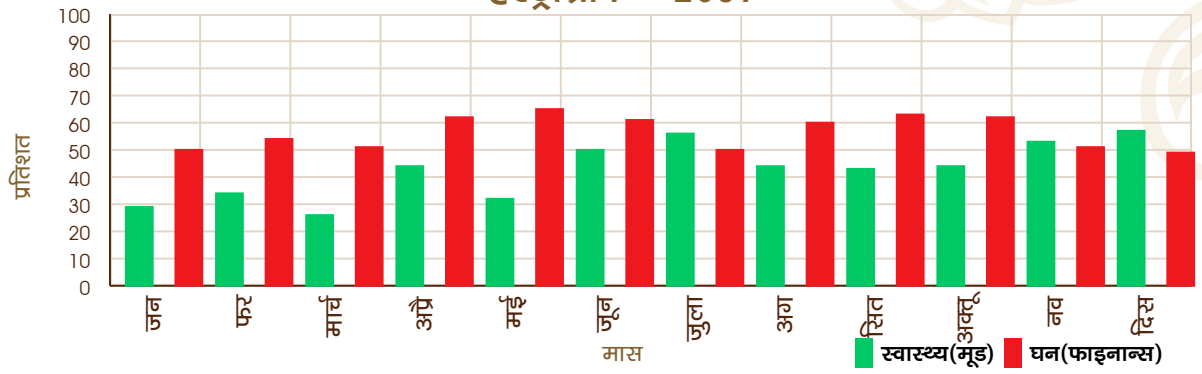

एस्ट्रोग्राफ - 2038

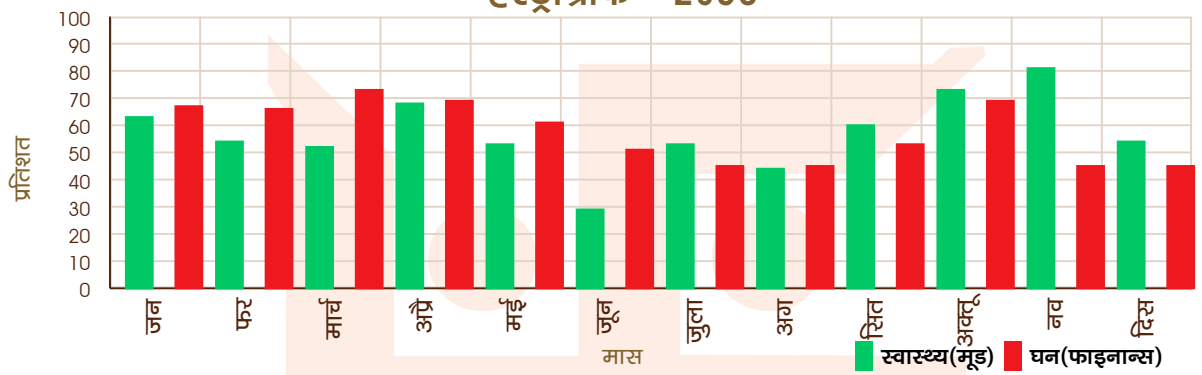

एस्ट्रोग्राफ - 2039

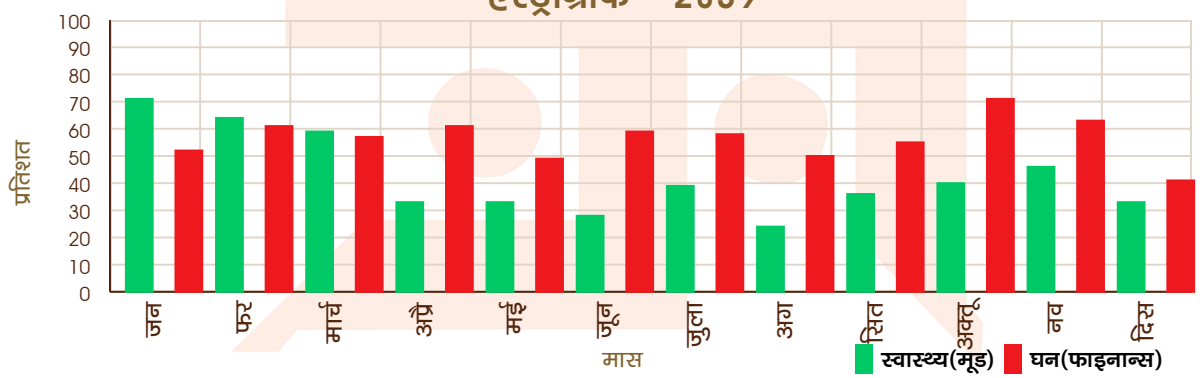

एस्ट्रोग्राफ - 2040

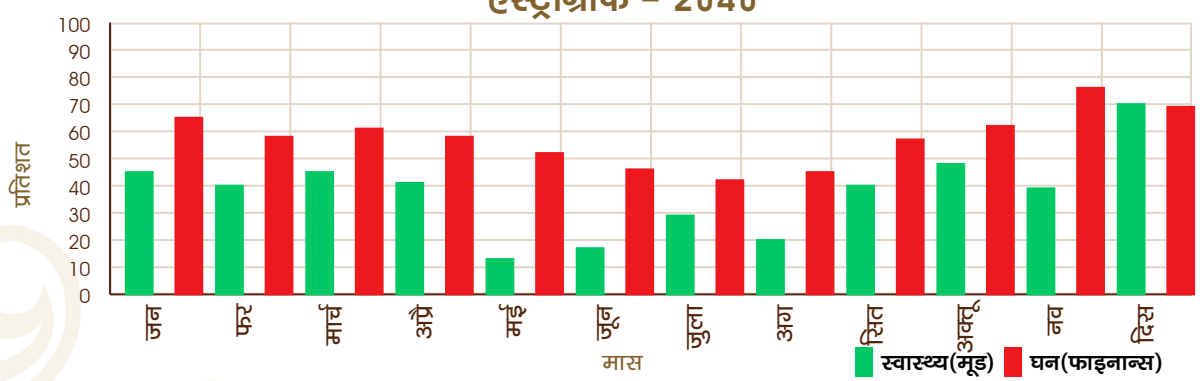

एस्ट्रोग्राफ - 2041

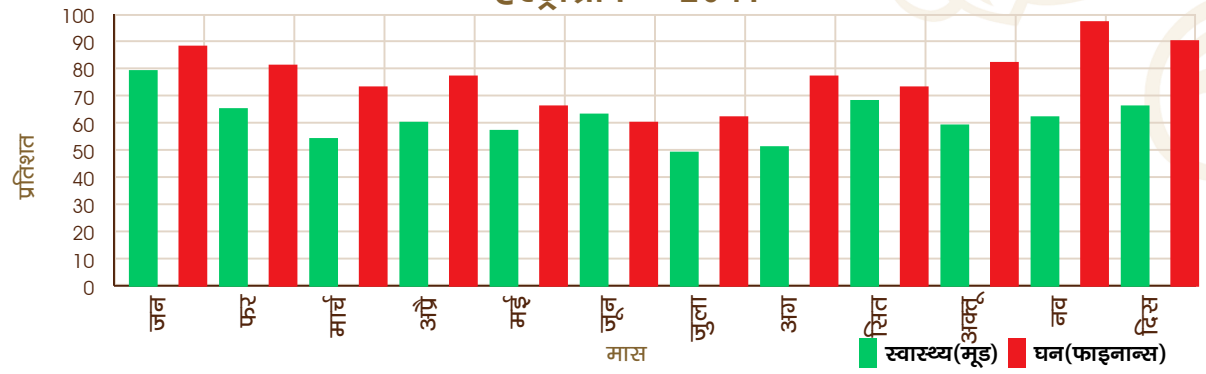

एस्ट्रोग्राफ - 2042

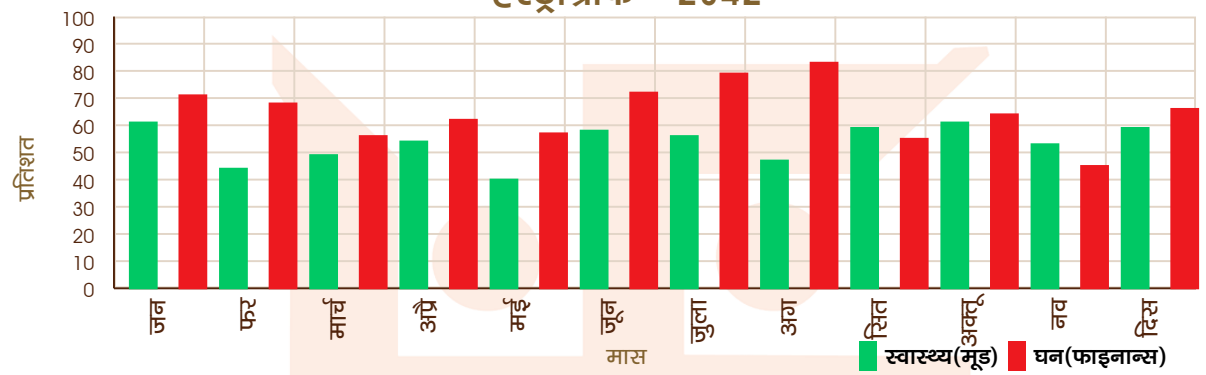

एस्ट्रोग्राफ - 2043

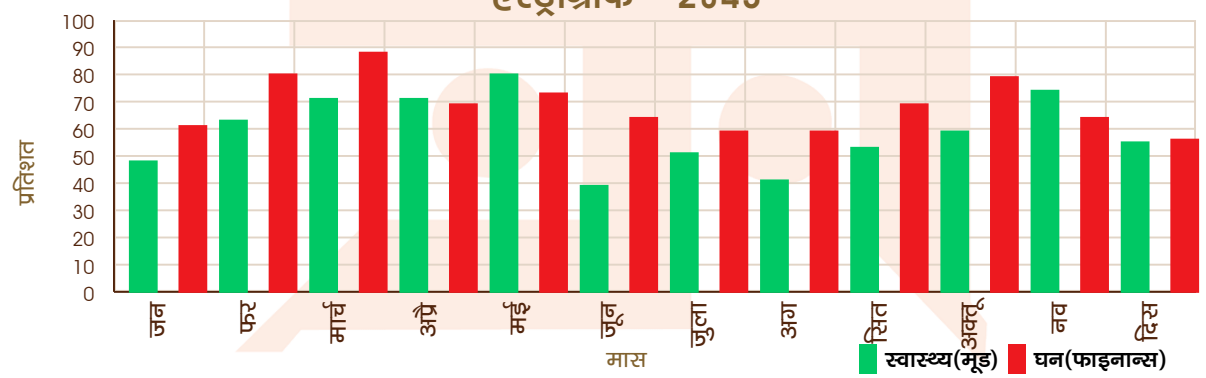

एस्ट्रोग्राफ - 2044

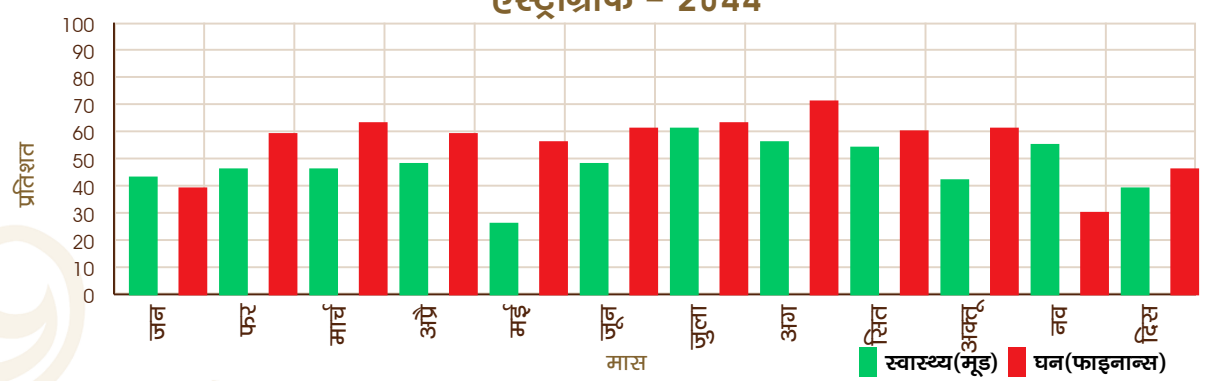

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,शनि,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

शौर्ययोग

भावैः सौम्ययुतेक्षिततैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
कीर्तिमद्भिरनुजैरभिष्टुतो लालितो महितविक्रमयुक्तः।
शौर्यजो भवति राम इवासौ राजकार्यनिरतोऽतियशस्वी।।

।। फलदीपिका ।। अ.6/श्लोक 44, 47।।

यदि जन्मपत्रिका में सहजस्थान में शुभ ग्रह हों अथवा तीसरे भाव पर शुभ ग्रह की दृष्टि पड़ रही हों तथा तृतीयेश अस्त न हो और अपनी राशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में हो तो शौर्ययोग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक बहुत पराक्रमी होता है और उसके छोटे भाई यशस्वी और भ्रातृयुक्त होता है। इसके भाई लोग इसकी प्रशंसा करते हैं। तात्पर्य यह है कि तृतीय स्थान का भाई, वहन, पराक्रम संबंधी पूर्ण सुख प्राप्त होता है। ऐसे जातक स्वयं भी अत्यधिक यशस्वी होता है और राज्य कर्म में रत रहता है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के समान पराक्रमी होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शनि योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्तम राजयोग प्राप्त कर शौर्यशाली व्यक्ति होंगे।

दीर्घायु भ्रातृ योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.-285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभग्रह हो तो दीर्घायु भाई होते हैं।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाई दीर्घायु होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

भवन नाश योग

गेहाधिपे नाशगते यदि स्यात्पापेक्षिते तद्गृहनाशमत्र ।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-63 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सुखभाव का स्वामी द्वादश भाव में पाप ग्रह से युत हो तो भवन नष्ट हो जाता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु योग की संभावना : 48 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको भवन सुख से वंचित होना पड़े ऐसा प्रतीत होता है।

भवन नाश योग

गेहेशसंयुक्तनवांशनाथे नाशस्थिते स्यादपि गेहनाशः ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-63 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थ भाव का स्वामी जिस ग्रह के नवांश में हो और वह ग्रह द्वादश भावस्थ हो तो भवन नष्ट हो जाता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भवन का नाश हो ऐसा प्रतीत होता है।

अनेक वाहन प्राप्ति योग

सौख्याधिपे शोभनखेचरेण भाग्येश्वरेणापि युतेथ वा स्यात् ।
सेनाबहुत्वं समुपैति जातो बहुत्वदेशाभरणानि यानम् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-161 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थेश शुभ ग्रह हो तथा भाग्येश से भी युक्त हो तो जातक बहुत सेना तथा देश-विदेश के वस्त्राभरणभूषणवाहनादि से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु,सूर्य योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सभी सुखों से युक्त होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रहीन योग

शुक्रेन्दुवर्गे सुतभे विलग्नाच्छुक्रेण चन्द्रेण युतेऽथ दृष्टे ।
शन्यारदृष्टे सति पुत्रहीनः ।।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-10 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्न से पंचम भाव शुक्र या चंद्रमा से दृष्ट, युक्त और वर्ग में हो और उसपर शनि एवं मंगल की दृष्टि हो तो पुत्रहीन योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध,मंगल,शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप पुत्रहीन होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

दन्त रोग योग

वाक्स्थानपे षष्ठगते सराहौ राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा।
दन्तस्य रोगं पतनं च तेषां भुक्तौ तयोर्वा प्रवदन्ति तज्ज्ञाः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.- 3/श्लो.-113।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वितीयेश राहु के साथ षष्ठ स्थान में हो अथवा राहु जिस राशि में है उसके स्वामी से युक्त हो तो उसकी दशान्तर्दशा में दातों का रोग होता है तथा दन्तहीन हो जाता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,शनि योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जब राहु स्थित भावस्वामी की दशान्तर्दशा आएगी तब दन्त रोग होकर आपको दन्तहीन कर देगा। ऐसा प्रतीत होता है।

तालु रोग योग

तदीश्वरेणापि युतेन्दुपुत्रे सराहुकेतावरिभायुक्ते।
राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा भुक्तौ तदा तालुभवः स रोगः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-3/श्लो.-116।।

यदि जन्मकुंडली में द्वितीयेश से युक्त बुध राहु या केतु सहित षष्ठस्थान में हो अथवा जिस राशि में राहु है उसके स्वामी से युक्त हो तो तालु स्थान में रोग द्वितीयेश की दशा में होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,शनि योग की संभावना : 864 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको उपर्युक्त ग्रहों की दशा का काल में तालु स्थान में रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका

मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : शुक्र,शनि योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-15 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

अतिकामी योग

पापव्योमचरान्वितौ तनुरिपुस्थानाधिपौ कामुकः।
।। जातकपारिजात ।। अ.-14/श्लो.-3।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठेश पाप ग्रह से युक्त हो तथा लग्नेश भी पापग्रह से युक्त हो तो अति कामी योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु योग की संभावना : 16 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अतिकामी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

देवतुल्य अति दीर्घायु योग

न च केन्द्रगताः पापा न त्रिकोणे न नैधने।
तस्यायुरमरप्रख्यं निश्चयेन च कीर्त्यते।।
।। सारावली ।। अ.10/श्लो.-97।।

यदि जन्मपत्रिका में केन्द्र त्रिकोण या अष्टम भाव में पाप ग्रह न हों तो जातक की देवतुल्य आयु होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि,राहु,केतु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,बुध,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''
।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

सिंहासनांश योग

''सिंहासनस्थः कुरुते विभूतिम् ''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "सिंहासनांश" भाग में ग्रह स्थित हो, तो वह प्राणी ऐश्वर्य देता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "सिंहासनांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप विभूति (धन-दौलत, राज-पाट) से युक्त सभी प्रकार से राजसुख से युक्त होंगे। अर्थात् आप ग्राम प्रखण्ड एवं जिला प्रधान होंगे।

केमद्रुम योग

''चेत्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।
प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 43 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो "केमद्रुम" योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "केमद्रुम" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,शनि,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो

जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।